॥ सर्वदेव प्रतिष्ठा विधि ॥

॥ विषय अनुक्रमाणिका ॥

❖ प्राप्त पद्धतियों में

- पद्धतियों में कई स्थलों पर शिल्पी के पूजन की विधि लिखी है, किन्तु आज-कल बनी-बनायी मूर्त्ति खरीद कर लाई जाती है, अथवा आदेश देकर मूर्त्ति बनवाई जाती है, अतः शिल्पी मूर्तिकार के घर पर करने वाली पूजा-अर्चना-हवन आदि की विधि-प्रक्रिया इस पद्धति में नहीं दे रहा हूँ।
- प्राप्त पद्धतियों में पर्याप्त भेद मिलता है। मन्त्रों में भेद, प्रक्रिया में भेद, कुछ लोकाचार भी है। एक ही देवता के लिए एक ही कार्य के लिए किसी ने कोई मन्त्र दिया है, किसी ने दूसरा मन्त्र दिया है। यद्यपि दोनों मन्त्र सही है, फिर भी कठिनाई होती है। मैंने प्रयत्न किया है, कि यह कठिनाई दूर हो सके।

❖ प्रतिष्ठा प्रकाश

- मूर्ति प्रतिष्ठा की विधि मुख्यतः **अग्नि पुराण** में वर्णित है।
- मत्स्य आदि अन्य पुराणों में भी देव प्रतिष्ठा विधि का उल्लेख है।
- देव प्रतिष्ठा कर्म सात दिन, पांच दिन, दोन दिन, एक दिन में अपनी शक्ति और सुविधानुसार किया जा सकता है यह उल्लेख धर्मशास्त्रों में किया गया है।
- मूत्ति प्रतिष्ठा २ प्रकार की होती है
  १. चर (चल) प्रतिष्ठा - इसमें मूर्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है।
  २. अचल (स्थिर) - इसमें मूर्ति को हटाया नहीं जा सकता है।
- मूर्तियाँ मिट्टी, लकड़ी, लोहा, रत्न, पत्थर, चंदन आदि की बनायी जा सकती है, यह अग्निपुराण के ४३ अध्याय में वर्णित है।
- मूर्त्तियों की अचल प्रतिष्ठा के लिए मन्दिर (प्रासाद) बनवाना चाहिए।
- मन्दिर किसी नदी-तालाब या कुआँ के पूर्व-उत्तर या पश्चिम की ओर होना चाहिए।
- मन्दिर यदि गांव के बीच में हो तो उसका द्वार पश्चिम की ओर रखे।
- गांव के पूर्व में मन्दिर बनवाने पर भी मन्दिर का द्वार पश्चिम की ओर रखे।
- यदि गांव के किसी कोण में मन्दिर बनवाया जाय तो मन्दिर का द्वार गांव की ओर रहे।
- गांव से दक्षिण, उत्तर या पश्चिम दिशा में मन्दिर बनवाया जाय तो मन्दिर का द्वार पूर्व की ओर रखे इसका विस्तृत वर्णन अग्निपुरा में किया गया है।
- अग्निपुराण के ३९ अध्याय में लिखा है कि देवताओं को नगराभिमुख स्थापित करे, नगर-गाँव की ओर उनका पृष्ठ भाग नहीं रहे।
- ब्रह्माजी का मन्दिर नगर-गांव के ईशान कोण में ही बनवाना चाहिए।
- चण्डी, शिव का मन्दिर नगर-गांव के ईशान कोण में बनवाना चाहिए।
- विष्णु का मन्दिर सभी ओर बनवाया जा सकता है।
- यह सभी नियम सार्वजनिक मन्दिर के लिए है यदि कोई विशिष्ट व्यक्ति निजी रूप में मन्दिर बनवाया है तो नगर-गांव से तात्पर्य उसके निवास स्थान से लेना चाहिए
- घर में ६ अंगुल से १२ अंगुल तक की मूर्ति की ही पूजा करनी चाहिये।

❖ देवप्रतिष्ठा मुहूर्त

- श्लोक **जलाशयाराम सुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे।**
  दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात्पक्षे सिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा॥ मु.चि. ६१
  - **जलाशय** (तालाब, पोखरा, वापी, कूप), **आराम** (उपवन, बगीचा, उद्यान), **सुर** (देव) की प्रतिष्ठा, **सौम्य** (उतर) अयन में गुरू, शुक्र, चन्द्र, के **उदय** (दृश्य) रहने पर **मृदु** (मृगशीर्ष, रेवती, चित्रा, अनुराधा), **क्षिप्र** (हस्त, आश्विनी, पुष्य), **चर** (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), **ध्रुव** (उ.फा., उ.षा., उ.भा., रोहिणी) नक्षत्रो में शुक्लपक्ष में की जाती है। इन १६ नक्षत्रों में देवप्रतिमा की प्रतिष्ठा की जाती है।

- श्लोक **रिक्तारवर्जे दिवसेऽतिशस्ता शशाङ्कपापैस्त्रिभवाङ्ग संस्थैः॥**
  व्यन्त्याष्टगैः सत्खपरैर्मृगेन्द्रे सूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः॥ मु.चि. ६२
  शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च देव्यः क्षुद्राश्चरे सर्व इमे स्थिरर्क्षे।
  पुष्ये ग्रहा विघ्नपयक्षसर्पभूताद दयोऽन्त्ये श्रवणे जिनश्च॥ मु.चि. ६३
  - जलाशय एवं बगीचा की प्रतिष्ठा में शुभ लग्न मात्र विचार्य है, ग्रहयोग की विशेषता नहीं। देवप्रतिष्ठा में चन्द्रमा तथा पापग्रह ३। ६। ११ में शुभ ग्रह ८। १२ भाव रहित स्थान शुभ होते हैं। विशेषता यह है कि, सूर्यकी प्रतिष्ठा सिंह लग्न में, ब्रह्माकी कुम्भमें, विष्णु की कन्यामें, शिवकी मिथुनमें, देवीकी मिथुन, कन्या, धन, मीनमें, तथा दक्षिणामूर्त्यादिकों की चर लग्नमें, (क्षुद्र) चतुःषष्टियोगिनी आदिकों की (अनुक्त) इन्द्रादि की स्थिर लग्नो में स्थापना करनी तथा चंद्रादि ग्रह पुष्य नक्षत्र में, उपलक्षण में सूर्य हस्तमें, शिव, ब्रह्मा - पुष्य, श्रवण, अभिजित् में, कुबेर, स्कन्द - अनुराधा में, दुर्गा आदि मूलमें, सप्तर्षि व्यास बाल्मीकि आदि जिन नक्षत्रों में सप्तर्षि देखे जाते हैं अथवा पुष्यमें। गणेश, यश, नाग, भूत, विद्याधर, अप्सरा, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्धादि रेवती में। (जिन) बुद्ध श्रवण में, कुबेर वर्जित लोकपाल धनिष्ठा में, शेष देवता तीनों उत्तरा, रोहिणी में प्रतिष्ठा युक्त करने चाहिये॥

- ग्राह्य माह **देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुतरायणे।**
  माघादिपच्जमासेषु कृष्णेप्यापच्जमीदिनम्॥
  - कतिपय ग्रन्थों में माघादि पॉच महीनों में कृष्णपक्ष की पंचमी तिथि तक देवप्रतिष्ठा वहित मानी गयी है।
  - देव प्रतिष्ठा माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (हरिशयन पूर्व) पॉच मासों में की जाती है। कुछ लोग चैत्र माह में भी करते है।
  - विष्णु को छोड़कर अन्य देवों की प्रतिष्ठा माघ में प्रशस्त है।
  - विष्णु की प्रतिष्ठा चैत्र, आश्विन, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और पौष में हो सकती है।

- ग्राह्य पक्ष **मुहूर्तचिन्तामणि** में पक्षेसिते कहकर शुक्लपक्ष को देव प्राणप्रतिष्ठा हेतु स्वीकार किया है।
    - **मत्स्यपुराण** में भी शुक्ल पक्ष में ही प्रतिमा प्राणप्रतिष्ठा करने को कहा गया है- **प्राप्यपक्षं शुभं शुक्लमतीते चौतरायणे।**
- ग्राह्य अयन उग्र देवों की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी होती है जैसे- काली, नृसिंह, वराह, वामन, भैरव, महिषवाहिनी, महाविद्या, श्मशानदेवता, मातृ, देवी आदि।
- ग्राह्य तिथि **द्वितीयसादिद्वयोः पच्जम्यादितः तिसृषु क्रमात्।**
  दशम्यादिचतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः॥
    - **देवर्षि नारद** के मत से द्वितया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी ओर पूर्णिमा को देवप्रतिष्ठा करनी चाहिए।
    - **मुहूर्त चिन्तामणि** के अनुसार प्रतिमा प्रतिष्ठा रिक्ता तिथि (४, ९, १४) को छोड़कर सभी तिथियों में की जाती है - **रिक्ता तिथि वर्जते**।
- ग्राह्य नक्षत्र अश्विनी रोहिनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा., रेवती (१६ नक्षत्र)
- वर्जित देवप्रतिष्ठा में मंगलवार, रिक्ततिथि तथा अमावास्या वर्जित है।
    - आचार्य, पुरोहित, गुरु से मुहूर्त लेकर देव मूर्ति प्रतिष्ठा करे।

देवता	**नक्षत्र**	**लग्न**
सूर्य	हस्त	2, **5,** 8, 11
ब्रह्मा	पुष्य, श्रवण, अभिजित्	2, 5, 8, **11**
विष्णु	पुष्य, श्रवण, अभिजित्	2, 5, **6,** 8, 11
शिव	पुष्य, श्रवण, अभिजित्	2, **3,** 5, 8, 11
देवी	मूल	2, **3,** 5, **6,** 8, **9,** 11, **12**
चन्द्रादि ८ ग्रह	पुष्य	2, 5, 8, 11
कुबेर, कार्तिकेय	अनुराधा	2, 5, 8, 11
सप्तर्षि आदि	सप्तर्षि नक्षत्र, पुष्य	
गणेश, यक्ष, नाग, भूत, विद्याधर, अप्सरा, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्धादि	रेवती	
बुद्ध (जिन)	श्रवण	
इंद्र, कुबेर, लोकपाल	धनिष्ठा	
शेष देवता	तीनो उत्तरा, रोहिणी	

❖ मण्डप निर्माण

- मन्दिर बन जाने पर शुभ मुहूर्त में देव (मूर्ति) प्रतिष्ठा करनी चाहिए।
- शास्त्रों के अनुसार मन्दिर के पूर्व, पश्चिम अथवा उत्तर की ओर सुविधानुसार जहाँ स्थान हो वहां महामण्डप अथवा छाया मण्डप बनाना चाहिए।
- इसी मण्डप में पांचों पीठों (वास्तु, नवग्रह, योगिनी, क्षेत्रपाल, प्रधान) की पूजा एवं हवन आदि सम्पूर्ण कर्म इसी मण्डप में करनी चाहिये।
- आज कल यदि मन्दिर के प्रासाद में (मंदिर के भीतर दालान-हाल आदि में) यदि पर्याप्त स्थान रहता है तो यहीं पर इन वेदियों को बनाते है। अलग से मण्डप नहीं बनाते है।
- प्रसाद के भीतर अथवा मंडप में वेदी पूजन आदि करने का उल्लेख **लघुदर्पणकार** ने लिखा है।
- यदि मंडप बना कर पीठ पूजन किया जाय तो मण्डप निर्माण के लिए भूमि-शोधन, भूमि पूजन करना चाहिये उसके बाद मण्डप बनाना चाहिये।
- यदि मंदिर के प्रासाद (दलान अथवा हाल) में पूजन करता है, तो मंडप पूजन नहीं होता है।

❖ मण्डप निर्माण विधि

- पहली प्रक्रिया **सांगोपांग मण्डप**
  - मंडप २० अथवा १६ हाथ लम्बा चौड़ा चौकोर होना चाहिए। यजमान या आचार्य के हाथ से।
  - शास्त्रों में १२ अथवा ८ हाथ का भी मंडप बनाने का उल्लेख तो मिलता है, किन्तु उसे प्रशस्त अच्छा नहीं माना जाता।
  - ४ बांस चारों कोने लगा कर तथा २-२ बांस चारो ओर बीच में लगा कर द्वार बनाया जाता है।
  - इस तरह १२ बांस बाहर लगा कर उसके उपर सरपत आदि से छा देना चाहिये।

- दूसरी प्रक्रिया **छाया मंडप**
  - चारो कोने ४ बांस तथा चारों ओर बीच में २-२ बांस लगाकर ऊपर सरपत आदि छा देना चाहिए।
  - चारों ओर बीच में जो दो-दो बांस रहता है, वह द्वार बनाने के लिए लगाया जाता है।
  - इन द्वारों की चौड़ाई २ हाथ ८ अंगुल होनी चाहिए।
  - छाया मंडप में कुल १२ बांस जमीन में गाड़ा जाता है।

- मंडप सज्जा
  - मंडप को केला का पत्ता, आम्रपल्लव आदि से सजा देना चाहिए।
  - मंडप के भीतर की भूमि को साफ कर गोबर से लीप दे।
  - मंडप की पूरी भूमि को सूत या डोरी से नाप कर ९ भागों में बांट दे।
  - पूर्व से पश्चिम तीन भाग एवं दक्षिण से उत्तर तीन भागों में विभाजित कर ले।
  - यदि मंडप नहीं बनाया गया है, दालान अथवा हाल में ही बेदी पूजन करना है, तो १६ हाथ का चौकोर स्थान साफ कर लें, उसी को मंडप स्थल मान कर वेदी बनाए।

❖ वेदी निर्माण
मंडप के भीतर क्रमशः यथा निर्दिष्ट स्थानों में देवताओं की वेदी बनाए।

- ईशानकोण- पूर्व-उत्तर नवग्रह तथा रुद्र कलश
- अग्निकोण- पूर्व-दक्षिण गौरी-गणेश, षोडश मातृका, स्थल मातृका, घृत मातृका, ६४ योगिनी
- नैऋत्यकोण- दक्षिण-पश्चिम वास्तुपीठ
- वायव्यकोण- पश्चिम-उत्तर क्षेत्रपाल
- पूर्व मध्य प्रधान पीठ
- मण्डप के मध्य हवन कुण्ड
    - कुछ लोग नवग्रह-क्षेत्रपाल के बीच वाले भाग में (उत्तर की ओर मध्य भाग में) हवन कुण्ड लिखते हैं।
    - कुछ लोग मंडप के बीचो बीच प्रधान पीठ तथा शय्याधिवास लिखते हैं।
    - लघुदर्पण के अनुसार महामंडप के बीच में ५ हाथ लम्बी-चौड़ी १ हाथ ऊंची महावेदी बनाये और उसके पश्चिम १ हाथ लम्बा-चौड़ा कुण्ड बनाना चाहिए।
- पश्चिम भाग हवन कुंड के पश्चिम यजमान सपरिवार बैठते है।
- दक्षिण भाग षोडश मातृका-वास्तु पीठ के बीच में ब्राह्मण गण बैठेंगे।
- उत्तर मध्य भाग में स्नान वेदी बनाए।
- जलाधिवास क्षेत्रपाल पीठ के निकट ही जलाधिवास करें।
    - शास्त्र के अनुसार महामंडप के पश्चिम ४ हाथ का चौकोर एक द्वार का पृथक् जलाधिवास मंडप बनाना चाहिए।
- शय्याधिवास नवग्रह तथा प्रधान पीठ के बीच पूर्व वाले शेष भाग में शय्याधिवास करें।
- अन्नाधिवास नैऋत्यकोण में वास्तुपीठ के पास ही अन्नाधिवास करे।
- स्नान मण्डप शास्त्र के अनुसार महामंडप के उत्तर ८ अथवा ४ हाथ का चौकोर चार द्वार का एक अलग स्नान मंडप बनाना चाहिए।

❖ प्रतिष्ठा एवं पूजन विधि
- सात दिन, पांच दिन अथवा तीन दिन में प्रतिष्ठा होती है।
- शास्त्रों के अनुसार सर्वप्रथम मंडप के लिए भूमि शोधन तथा भूमि पूजन किया जाता है।
- फिर मंडप बनाया जाता है, मंडप के भीतर सभी वेदी बनाई जाय।
- शास्त्रों के अनुसार जलयात्रा, प्रायश्चित्त, दशदान, के उपरान्त मंडप प्रवेश होता है।
- मूर्ति स्थापना के पूर्व वेदी-पूजन, हवन, अन्नाधिवास, जलाधिवास, शय्याधिवास किया जाता है।
- शिवलिंग प्रतिष्ठा में शिव-पार्वती विवाह की भी प्रथा है।
- इस पद्धति में सभी विधियाँ क्रम-बद्ध लिखी गयी है। इसी के अनुसार मूर्ति प्रतिष्ठा करानी चाहिये।
- प्रतिदिन के पूजन में स्थापित पीठों का आवाह्नादि नहीं होता केवल पंचोपचार पूजन करना चाहिये।

॥ भूमि पूजन ॥

❖ भुमि शोधन् पूजन

- मण्डप के लिए भूमि शोध कर उसे बराबर कराले।
- उस भूमि से अपवस्तुओं को (ढेला, कंकड़ आदि निषिद्ध चीजों को) हटवा कर साफ करवा ले।
- यजमान पूजा सामग्री तथा आचार्य के साथ मंडप भूमि में जाकर सर्वप्रथम भूमि पूजन करे।
- मंडप भूमि के मध्य में पूर्व मुख यजमान सपत्नीक बैठे।
- उत्तर मुख करके आचार्य पुरोहित बैठें।
- सर्व प्रथम गौरी गणेश की पूजा करे।

❖ भुमि पूजन प्रारंभ

- पवित्रकरणम् — **ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।**
  य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥
- आचम्य — **ॐ केशवाय नम:, ॐ माधवाय नम:, ॐ नारायणाय नम:** आचमन करें
  ॐ हृषीकेशाय नम: हाथ धो लें
- आसन शुद्धि — **ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।**
  त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
- पवित्र धारणम् — **ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्काम: पूने तच्छकेयम् ॥**
- यज्ञोपवित — **ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।**
  आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेज: ॥
- शिखाबन्धन — **ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज: समन्विते।**
  तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥
- तिलक / चन्दन — **चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्।**
  आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥
  - **ॐ आदित्या वसो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणा:।**
    तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥
  - **ॐ स्वस्तिस्तु याऽ विनशाख्या धर्म कल्याण वृद्धिदा।**
    विनायक प्रिया नित्यं तां स्वस्तिं भो ब्रवंतु न: ॥

- रक्षाबन्धनम्

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

- येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल: ।
तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचल: ॥

- स्वस्ति-वाचन

आ नो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिद: ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ ॥ १ ॥

- देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम् ।
देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयु: प्रतिरन्तु जीवसे ॥ ॥ २ ॥

- तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती न: सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥

- तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौ: ।
तद् ग्रावाण: सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥

- तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये ॥ ॥ ५ ॥

- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्वेवेदा: ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॥ ६ ॥

- पृषदश्वा मरुत: पृश्निमातर: शुभं य्यावानो विदथेषु जग्मय: ।
अग्निजिह्वा मनव: सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह ॥ ॥ ७ ॥

- भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्रा: ।
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायु: ॥ ॥ ८ ॥

- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तो: ॥ ॥ ९ ॥

- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्र: ।
विश्वे देवा अदिति: पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥१०॥

- द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय:
शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति:
सर्व ७ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामा शान्तिरेधि ॥ ॥११॥

- यतो यत: समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शन्न: कुरु प्रजाभ्योऽभयन्न: पशुभ्य: ॥ ॥१२॥

१. श्रीमन महागणाधीपतये नमः ।
२. इष्ट देवताभ्यो नमः ।
३. कुल देवताभ्यो नमः ।
४. ग्राम देवताभ्यो नमः ।
५. स्थान देवताभ्यो नमः ।
६. वास्तु देवताभ्यो नमः ।
७. वाणी-हिरण्यगर्भाभ्याम नमः ।
८. लक्ष्मी-नारायणाभ्याम नमः ।
९. उमा महेश्वराभ्याम नमः ।
१०. शची पुरंदाराभ्याम नमः ।
११. मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।
१२. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
१३. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
१४. एतत-कर्म-प्रधान देवताभ्यो नमः ।

- सुमुखश्चै कदंतश्च कपिलो गजकर्णकः ।
  लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ॥ १ ॥
- धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
  द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ ॥ २ ॥
- विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
  संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ॥ ३ ॥
- शुक्लाम्बर धरम देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम ।
  प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ॥ ॥ ४ ॥
- अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
  सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ॥ ५ ॥
- सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥ ॥ ६ ॥
- सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम ।
  येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरीः ॥ ॥ ७ ॥
- तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
  विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्घ्री युगं स्मरामि ॥ ॥ ८ ॥
- लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
  येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ॥ ९ ॥
- यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
  तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मम ॥ ॥१०॥
- अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपास्ते ।
  तेषां नित्याभि युक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ॥११॥

- स्मृते: सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
  पुरूषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ॥ ॥१२॥
- सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः ।
  देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥ ॥१३॥
- विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
  वन्द काशीं गुहां गंगां भवनीं मणिकर्णिकाम् ॥ ॥१४॥
- वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ ।
  निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ ॥१५॥

- संकल्प

हरिः ॐ तत् सत् । विष्णु र्विष्णु विष्णुः ॥ अद्य ॐ नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मगोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टा विंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मा वर्त्तैक देशे पुण्य क्षेत्र विक्रम-शके वौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम-संवत्सरे, यथायने-सूर्ये, यथा-ऋतौ च महामांगल्यप्रदे मासे अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, यथा-नक्षत्रे, यथा-राशि स्थिते सूर्ये, यथा-यथा राशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथा लग्न, मुहूर्त, योग, करणान्वितायां एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ श्रुति-स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति कामः अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं (सपत्नीकोऽहम्) करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा कर्माङ्गत्वेन मण्डपादि निर्माणं कर्तुम् अविघ्नता परि समाप्त्यर्थम् भूमि कूर्मानन्त वाराह, विश्वकर्मणां पूजनं तेभ्यः सदीप दध्यादि वलिदानं च करिष्ये । तत्रादौ गणपतिपूजनं करिष्ये ॥

❖ पृथिवी पूजन

- पृथिवी पर ३ बार जल छोड़ कर कुमकुम, अक्षत, फूल चढ़ा दें ।
  - ॐ भस्यै नमः ॥ ॐ भूम्यै नमः ॥
  - प्रार्थना

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

❖ गौरी - गणेश पूजन (सक्षिप्त)

- गणेश ध्यानम् — **ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धि-बुद्धि सहिताय गणेशाय नम: । गणपतिम् आ०, स्था०, पू०।
- गौरी ध्यानम् — **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन । ससत्स्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्यै नम: । गौरीम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।
- प्राणप्रतिष्ठा — **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु । विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवत ।
- आचमनीयम् — **ॐ ततो विराड जायत विराजोऽ अधि पूरुष: । स जातोऽ अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुर: ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: पादयो: पाद्यं हस्तयोर्घ्यम् मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि ।
- पंचामृत स्नानम् — **ॐ पंच नद्य: सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतस: । सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । पञ्चामृतं समर्पयामि ।
- शुद्धोदक स्नानम् — **ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्यऽ अश्विना:। श्वेत: श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । शुद्ध स्नानीयं जलं समर्पयामि ।
- चंदनम्, कुमकुम — **ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । रक्तचन्दनं समर्पयामि ।
- अक्षतम् — **ॐ अक्षन्न मीमदन्त ह्यवप्प्रियाऽ अधुषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती वोजान्विन्द्रतेहरी ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । अक्षतं समर्पयामि ।
- सिन्दूरम् — **ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमिय: पतयन्ति यह्वा: । घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभि: पिन्वमान: ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: अम्बिकाय नम: । सिन्दूरं समर्पयामि ।

- वस्त्रम् — **ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।**
  मयो पपादि ते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।
- यज्ञोपवीतम् — **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।**
  आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
- पुष्प-पुष्पमालाम् — **माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।**
  मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यतां॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। पुष्पं, पुष्पमाल्यांच समर्पयामि।
- दुर्वा — **ॐ काण्डात काण्डात प्ररोहन्ती परुषःपरुषस्परि।**
  एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाय नमः। दुर्वाम् समर्पयामि।
- सौभाग्य द्रव्यम् — **ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुन् ज्यावा हेतिम् परिबाधमानः।**
  हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान पुमा ଓ सं परिपातु विश्वतः॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।
- धुपम् — **ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वामः।**
  देवानामसि वह्नितमं ଓ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। धूपम् आघ्रापयामि।
- दीपम् — **आज्यं च वर्ति संयुक्तम् वह्निना योजितम् मया।**
  दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यति मिरापहम्॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकयो नमः। दीपं दर्शयामि।
- नैवद्यम् — **ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ଓ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।**
  पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥
  - प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा।
- ऋतुफलम् — **इदं फलं मया देव स्थापितम् पुरतस्तव।**
  तेन मे सफला वाप्तिर्भवेत जन्मनि जन्मनि॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकयो नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि।
- ताम्बूलम् — **ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।**
  वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
  - ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकयो नमः। ताम्बूलं समर्पयामि।

- दक्षिणा **ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् ।**
  स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकयो नम: । दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि ।
- विशेषार्घ्य एक ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखलें ।
  - **रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।**
    भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
  - **द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।**
    वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥
  - **अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।
- कपूर आरती **ॐ इद ॐ हवि: प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ॐ सर्वगण ॐ स्वस्तये ।**
  आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्य भयसनि: ।
  अग्नि: प्रजां बहुलं मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽ अस्मासु धत्त ॥
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । आरार्तिकं समर्पयामि ।
- पुष्पांजलि **ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।**
  ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ॥
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।
- प्रदक्षिणा **ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिण: ।**
  तेषा ॐ सहस्र योजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥
- प्रार्थना **विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।**
  नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
  - **त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया ।**
    सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतु: ॥
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: । प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।
- अर्पण अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

❖ कूर्म-अनन्त पूजन

- यजमान अपने सामने भूमि पर एक पीठ या पत्ता पर कपड़ा विछाकर ५ जगह अक्षत पूंज रख दे।
- इसी अक्षत पर कूर्म, अनन्त, वराह, विश्वकर्मा का आवाहन पूजन करे।

- भूमि स्पर्श **ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वद्याया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।**
  - **पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ७ ह पृथिवीं माहि ७ सी॥**

- प्रार्थना **ॐ कूर्मपृष्ठोपरि स्थितां शुक्ल वर्णाम् चतुर्भुजाम्।**
  पद्म शंख चक्र शूल धरां प्रसन्नाननाम्॥
  - **आगच्छ सर्व कल्याणि वसुधे लोकधारिणि।**
    पृथिवि ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता॥ फूल भूमि पर छोड़ दें।

- प्रतिष्ठा **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥**
  १. **ॐ भूम्यै नमः। भूम्यम् आवाह्यामि॥**
  २. **ॐ कूर्माय नमः। कूर्मम् आवाह्यामि॥**
  ३. **ॐ अनन्ताय नमः। अनन्तम् आवाह्यामि॥**
  ४. **ॐ वराहायनमः। वराहम् आवाह्यामि॥**
  ५. **ॐ विश्वकर्मणेनमः। विश्वकर्माणम् आवाह्यामि॥**
  ॐ भूम्यादि देवताभ्योनमः॥ अक्षत – अक्षत पुञ्ज पर छोड़ दे।

- कूर्म - अनन्त देवतावों की पंचोपचार पूजा कर दे। **पृष्ठ क्र. 00** देखें।

- अर्पण **ॐ अनेन पूजनेन भूम्यादि देवताः प्रीयन्तां न मम॥**

- अर्घ पात्र में जल, दूध, कुशा, अक्षत, तिल, जव, सरसों, फल, द्रव्य लेकर अर्घ दे।
  - **ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतवाहुना।**
    दंष्टाग्रैर्लीलयादेवि यज्ञार्थम् त्वं प्रतिष्ठिता॥
  - **व्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च।**
    पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दं वैश्रवणेन च॥
  - **यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।**
    मण्डपम् कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वम् शुभ लक्षणम्॥
  - **गृहाणार्घमिमं देवि प्रसन्ना वरदा भव॥** पीठ के सामने जल-अक्षतादि चढ़ा दें।

- प्रार्थना
  ॐ उपचाराणि मां स्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि।
  भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः॥
  - **सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च मनं रूपं च पूजिते।**
    करिष्यमाणां पूजां मे गृहाणानुग्रहं कुरु॥ फूल भूमि पर छोड़ दें।

- बलिदान
  पत्ता पर खीर, उरद, दही, गन्ध, फूल रखकर १ बत्ती जला ले।
  - **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः॥**
  - **ॐ कूर्मानन्तवराह विश्वकर्मादिभिः सह भूम्यै सांगाय सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीप दधि-पायस बलिं समर्पयामि॥**

- प्रार्थना
  ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्।
  तस्मै देवा अधिब्रुवन् नयं च ब्रह्मणस्पतिः॥ ॐ कूर्माय नमः।
  - **ॐ विश्वकर्मा ह्यजनिष्टदेव आदिद् गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः।**
    तृतीयः पिता जन तोषधीनाम पां गर्भम् व्यवधात् पुरुत्रा॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः।
  - **ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वाकृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसा मिन्द्रा यः सुकरः सि ७ हो मारुतः। कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः॥** ॐ वराहाय नमः।
  - **ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।**
    ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ अनन्ताय नमः।
  - **ॐ समुद्र वसने देवि पर्वत स्तन-मण्डले।**
    विष्णु-पत्नि नमस्तुभ्यं भूमिदेव नमोऽस्तुते॥ ॥ १ ॥
  - **नन्दे नन्दय वाशिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।**
    जय भार्गव दायादे प्रजानां जय साह॥ ॥ २ ॥
  - **पुर्णे गिरिश दायादे पुर्ण-कामं कुरुष्व मे।**
    भद्रे काश्यप दायादे कुरुभद्रां मतिं मम॥ ॥ ३ ॥
  - **सर्वबीज समायुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते।**
    रुचिरे नन्दने नन्दे वाशिष्ठे रम्यतामिह॥ ॥ ४ ॥
  - **प्रजापति सुते देवि चतुरस्त्र महीयसि।**
    सुभगे सुवृते देवि गृहे काश्यपि रम्यताम्॥ ॥ ५ ॥
  - **पूजिते परमाचार्यै गन्धमाल्यैरलंकृते।**
    भवभूतिकरी देवि गृहे भार्गवि रम्यताम्॥ ॥ ६ ॥
  - **अव्यक्ते चाहते पूर्णे शुभे चांगरिसः सुते।**
    दृष्टदे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वं प्रतिष्ठापयाम्यहम्॥ ॥ ७ ॥

- **देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे ।**
  मनुष्यधन हस्त्यश्व पशुवृद्धिकरीभव ॥ ॥ ८ ॥
- पृथिवी कूर्मानन्तादि पूजाविधौ यन्यूनाति रिक्तं तत्सर्वम् परिपूर्ण मस्तु ॥
- हाथ का फूल पंच देवताओं के आगे चढ़ा दें ।

- दक्षिणा — आचार्य, पुरोहित, ब्राह्मणों को गोदान, हिरण्यदान, दक्षिणादान दे ।
  - संकल्प — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा मण्डप कर्म परिपूर्णता वाप्तये इदम् गोनिष्क्रयी भूतं द्रव्यं हिरण्यं तन्निष्क्रयी द्रव्यं वा आचार्याय अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां च दातु मह मुत्सृजे ॥**
  - प्रार्थना — **ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।**
    स्मरणादेव तदं विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः ॥
- **यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु ।**
  न्यूनं सम्पूर्णता याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
- ॐ विष्णवे नमः । विष्णवे नमः । विष्णवे नमः ॥

॥ इति भूमि पूजन ॥

- कुछ लोग कन्नी, वसूली, शंकु (कीला), रज्जू (पानी भरने के लिए रस्सी) की भी पूजा लिखते है ।
- लघुदर्पण में आयुध-खनित्री की प्रार्थना भी दी गई है ।

  - प्रार्थना - आयुध — **ॐ अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषास्युश्चानयोद् भवा ।**
    नाशय त्वं हि तान् सर्वान् विश्वकर्मन् नमोऽस्तुते ॥
  - प्रार्थना - खनित्री — **ॐ त्वष्ट्रा विनिर्मितं पूर्व लोकानां हितकाम्यया ।**
    पूजिताऽसि खनित्रित्वं सिद्धिदा भव नोऽधुना ॥

- कुछ लोग भूयसी दक्षिणा देने को भी लिखते हैं ।

- **इसके बाद मंडप निर्माण करे । सभी पीठ वेदी बनाए ।**

॥ प्रायश्चित्त पूजनं - दशदान ॥

- यजमान नित्य कृत्य से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण कर घर, प्रासाद अथवा मन्दिर परिसर में आसन पर पूर्व मुख बैठे एवं पत्नी को दाहिनी ओर बिठा ले।
- आचार्य पति-पत्नी की गांठ (ग्रन्थी बन्धन) बांध दे।
- यजमान अपने सामने गौरी-गणेश तथा घी का दीपक जलाकर रख ले।

- **पवित्र, आचमन, पवित्री (पैंती), स्वस्तिवाचन** पृष्ठ क्र. 07 देखें।

  - संकल्प **हरिः ॐ तत् सत् विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः अद्य ॐ नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त-मानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रारार्द्धे द्वितीय यामे तृतीय मुहूर्त श्री श्वेत वाहनाम्नि प्रथम कल्पे स्वायंभुव स्वरोचिसोत्तम तामस रैवत चाक्षुषेति षण्मन् नामति क्रम्यमाणे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैक देशे पुण्य क्षेत्रे वौद्धावतारे अमुक-नाम्नि संवत्सरे,** अमुक-**अयने सूर्ये,** अमुक-**ऋतौ, महा-मांगल्य प्रदे** अमुक-**मासे,** अमुक-**पक्षे,** अमुक-**तिथौ,** अमुक-**नक्षत्रे,** अमुक-**वासरे,** अमुक-**राशि स्थिते सूर्य तथा च यथा-यथा राशि स्थान स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथा लग्न-मुहूर्त-योग-करणान्वितायाम् एवं ग्रह-गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य पर्वणि** अमुक-**गोत्रः,** अमुक-**नामाऽहं सपत्नीकोऽहं ममात्मनः सभार्यस्य-सपरिवारस्य सकल पाप-क्षय पूर्वकं दशावरान् दशापरान् आत्मना सहैक विंशति पुरुषान् पितृतो मातृतश्चोद्धर्तु कामनया क्षेम स्थैर्य दीर्घायु-आरोग्य-एश्वर्य स्थिर लक्ष्मी पुत्र-पौत्र-धन धान्यादि सम्पदभिर्वृद्धि पूर्वकं निरतिशय सानन्द ब्रह्मपद प्राप्ति श्री सर्वफलाक्षय्य सुख प्राप्त्यर्थम् च श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्ति कामनया धर्मार्थकाम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धि द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थम् - स्वकृत शैल प्रासाद प्रतिष्ठा सहितां (शिवादि-मूर्तीनाम्, विष्णवादि-मूर्त्तीनाम्, रामचन्द्रादि-मूर्तीनाम्, श्री हनुमद् देव-मूर्तीनां, श्री राधा-कृष्णादि-मृर्त्तीनाम्-) स्थिर-प्रतिष्ठां (चल-प्रतिष्ठां) यथाकाले कर्त्तुं कामनया अद्य अधिकार प्राप्त्यर्थम् शरीर शुद्ध्यर्थम् च प्रायश्चित्त निमित्तकं दश-दानादिकं नादिकं च करिष्ये।**
  - **तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थम् गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये॥**
  - जिस देवता का मन्दिर स्थापित करना है उस देव मूर्ति का नाम पढ़ना चाहिए।

❖ **गौरी-गणेश पूजन** (संक्षिप्त) पृष्ठ क्र. 11 देखें।

॥ दशदान (प्रायश्चित प्रयोग) ॥

- सभी प्रकार के दान के लिए पहले ब्राह्मण वरण करे।
- धर्मशास्त्रों में प्रत्यक्ष गौ देने का विधान है।
- दश दान अथवा इनके लिए निष्क्रय मूल्य देना चाहिए।
- कुछ लोग भगवान् की प्रार्थना के साथ-साथ शालिग्राम की पूजा भी करते हैं।

1. **गो दान**
2. **भूमि दान**
3. **तिल दान**
4. **सुवर्ण दान**
5. **घृत दान**
6. **वस्त्र दान**
7. **सप्तधान्य दान**
8. **गुड़ दान**
9. **रजत** (चांदी) **दान**
10. **लवण (नमक) दान**

- संकल्प — **अद्य हर ॐ विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहं, करिष्यमाण** अमुक-**मूर्त्ति प्रतिष्ठा कर्माधिकार प्राप्त्यर्थम् मत् सकल पातक निवृत्त्यर्थं च शरीर शुद्ध्यर्थम् प्रायश्चित्तं करिष्ये ॥**

- प्रार्थना - विष्णु — **ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।**
  विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ॥
  लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
  वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् ॥ ॥ १ ॥
  - **त्वमेव जगतां नाथ अन्तर्यामी त्वमेव च।**
    शास्त्राणां च कवीशश्च वक्ता त्वं च जगत्पते ॥ ॥ २ ॥
  - **वन्दे विष्णुं प्रभुं साक्षात् लोकत्रय सुखप्रदम्।**
    विश्वेशं विश्वकर्त्तारं पुराणं पुरुषोत्तमम् ॥ ॥ ३ ॥

- आचार्य, पुरोहित, ब्राह्मणों की पूजा कर के प्रार्थना करे।
  - प्रार्थना — **ॐ समस्त सम्पत् समवाप्ति हेतवः, समुत्थिता यत् कुल धूम केतवः।**
    अपार संसार समुद्रसेतवः, पुनन्तु मां ब्राह्मण-पाद पांसवः ॥
    - **आपद् धनध्वान्त सहस्रमानवः, समोहितार्थार्पण कामधेनवः।**
      समस्त तीर्थाम्बु पवित्र मूर्त्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मण-पाद पांसवः ॥
    - **विप्रौघ दर्शनात् क्षिप्रं क्षीयन्ते पापराशयः।**
      वन्दनान्मंगलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम् ॥
    - **आधिव्याधिहरं नृणांमृत्युदारिद्रय नाशनम्।**
      श्री पुष्टि कीर्तिदं वन्दे विप्राणां पाद पंकजम् ॥

- **भो ब्राह्मणाः ! मम जन्म प्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाता-ज्ञात कामा-काम सकृदसकृत कृत कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत, सकल-पातकाति-पातकोप-पातक-गुरुलघु-सूक्ष्म-पातक, संकरी-करण, मलिनी-करण, अपात्री-करण, जाति-भ्रंशकर, प्रकीर्णक पातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थम् अनुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः ॥**
- **सर्वे धर्म विवेक्तारो गोप्तारः सकलाद्विजाः ।**
  ममदेहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः ॥
- **मयाकृतंमहाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम् ।**
- **प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत ॥**
- **पूज्यं: कृतपवित्रोऽहं भवेयं द्विज सत्तमैः । मामनुगृह्णन्तु भवन्तः ॥**

- ब्राह्मण — **उपदिशामः ॥ अनुगृह्णीमः ॥**

- एकतंत्रेण दशदान पृथक्-पृथक् नहीं करना हो तो दश वस्तु के निमित्त द्रव्य लेकर एक ही साथ संकल्प करे।
  - संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि प्रतिष्ठा अधिकारार्थं प्रायश्चित्त नैमित्तिकं दश-द्रव्य-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ।**
  - ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि ।**
  - संकल्प — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् तथा च प्रतिष्ठा कर्माधिकारार्थम् विष्णु दैवतं सदक्षिणाकं गो, भू, तिल, हिरण्य, आज्य, वासो, धान्य, गुड़, रजत, लवण, इति दशद्रव्य निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।**
  - ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति ।**
  - प्रार्थना — **ॐ इमानि दशदानानि दत्तानि मल शुद्धये ।**
    दानेन यज्ञ पुरुषः प्रीयतां न ममेति च ॥
    यन्मयाकृत ममुक प्रायश्चित्तं तदच्छिद्रमस्तु ।

१. गो दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त गौ दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण गौ दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं गौ दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-गौ — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा अधिकार सिद्ध्यर्थम् सर्वप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विहितमिदं यथाशक्ति गोवृष (तन् निष्क्रयीभूतं द्रव्यं) अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- संकल्प-सांगता — **अद्य कृतैतत् गो-दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- अर्पण — **अनेन श्री पापापहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम।**

२. भूमि दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त भूमिदान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण भूमि-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं भूमि-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-भूमि — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक- नामाऽहम् षष्टिसहस्रवर्षमितं वैकुण्ठे विष्णु लोकवाप्तिकामनया करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा प्रतिष्ठार्थम् इमां भूमिं (तन्निष्क्रयी द्रव्यम्) सांगता सहितां अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- प्रार्थना — **ॐ सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता।**
  अनन्त सस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
  - **यस्यां रोहन्ति बीजानि वर्षाकाले महीतले।**
    भूमेः प्रदानात् सफला मम सन्तु मनोरथाः॥

३. तिल दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त तिलदान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- तिलपात्र के निमित्त निष्क्रयीभूत द्रव्य भी दिया जा सकता है।
- कुछ लोग तिलपात्र की परिक्रमा भी लिखते है।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण तिल-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं तिल-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-तिल — **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, मम सकल पापक्षय द्वारा श्री विष्णु लोकावाप्ति कामनया करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा प्रतिष्ठार्थम् इमान् तिलान् सांगता सहितान् च अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- प्रार्थना — **ॐ विष्णोर्देह समुद्भूताः कुशाः कृष्णतिलास्तथा।
धर्मस्य रक्षणायार्थमेत्प्राहुर्दिवौकसः॥**
  - **महर्षे गोत्र संभुताः काश्यपस्त तिलाः स्मृताः।
तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु॥**

४. सुवर्ण दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त सुवर्ण-दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक- नामाऽहम् करिष्यमाण सुवर्ण-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं सुवर्ण-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-सुवर्ण — **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा परिपूर्णता वाप्तये पापक्षय पूर्वक पितृ तारण कामनया अक्षय स्वर्ग प्राप्ति कामनया च इदं सुवर्णम् (तन्निष्क्रयी भूतं द्रव्यम्) सांगता सहितम् च अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- प्रार्थना — **ॐ हिरण्य गर्भ-गर्भस्थं हेम बीजं विभावसो।
अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥**

५. आज्य (घृत) दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त घृत-दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक- नामाऽहम् करिष्यमाण आज्य(घृत)-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं आज्य(घृत)-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-घृत — **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा संसिद्ध्यर्थम् गोलोकावाप्ति कामनया श्री विष्णु देवता प्रीतये सदक्षिणाकम् इदं आज्यम् सोमदैवत्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- संकल्प-सांगता — **अद्य कृतैतत् आज्यम्-दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- प्रार्थना — **ॐ कामधेनोः समुद्भूतं सर्वक्रतुषु संस्थितम्।
देवानामाज्यमाहारमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥**

६. वस्त्र दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त वस्त्र-दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण वस्त्र-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं वस्त्र-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-वस्त्र — **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् इदं वस्त्र द्वयं बृहस्पति दैवतं सदक्षिणाकं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- संकल्प-सांगता — **अद्य कृतैतत् वस्त्र-दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- प्रार्थना — **ॐ शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जया रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्र मतः शान्तिं प्रयच्छ में॥**

७. धान्य दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त धान्य-दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक- नामाऽहम् करिष्यमाण धान्य-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं धान्य-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-धान्य — **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा परिपूर्णता वाप्तये अक्षय पुण्य फल प्राप्ति कामनया इदं धान्यं सदक्षिणाकं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- संकल्प-सांगता — **अद्य कृतैतत् धान्य-दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- प्रार्थना — **ॐ सर्व देवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकर महत्।**
प्राणिनां जीवनं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

८. गुड़ दान

ब्राह्मण वरण उपरान्त गुड़-दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक- नामाऽहम् करिष्यमाण गुड़-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं गुड़-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-गुड़ — **अद्य शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि अधिकार प्राप्तये शुभता सिद्ध्यर्थं च इदं गुड़म् सदक्षिणाकं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे — **स्वस्ति।**
- संकल्प-सांगता — **अद्य कृतैतत् गुड़-दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- प्रार्थना — **ॐ यथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसोमतः।**
मम तस्मात् परां लक्ष्मीं ददस्व गुड़ सर्वदा॥

९. रजत (चाँदी) **दान** ब्राह्मण वरण उपरान्त चाँदी-दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक- नामाऽहम् करिष्यमाण चाँदी-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं चाँदी-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-रजत **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि सकल पातक निवृत्यर्थम् कर्माधि कारार्थञ्च सदक्षिणाकं रजतं (तन्निष्क्रयी भूतं द्रव्यम्) अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे **स्वस्ति।**
- संकल्प-सांगता **अद्य कृतैतत् रजत-दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- प्रार्थना **ॐ प्रीतिर्यत्र पितृणाञ्च विष्णु शंकरयोः सदा।**
  शिव नेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

१०.लवण (नमक) **दान** ब्राह्मण वरण उपरान्त नमक-दान संकल्प अथवा तन्निष्क्रय द्रव्यदान करे।

- संकल्प-वरण **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः अमुक- नामाऽहम् करिष्यमाण लवण-दान कर्मणि अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं ब्राह्मणं लवण-दान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे **वृतोऽस्मि।**
- संकल्प-लवण **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, करिष्यमाण अमुक देव प्रतिष्ठा कर्माधिकारार्थम् विष्णुदैवतं सांगता सहितं लवण अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- ब्राह्मण कहे **स्वस्ति।**
- संकल्प-सांगता **अद्य कृतैतत् लवण-दान कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**
- प्रार्थना **ॐ यस्मादन्नरसाः सर्वेनोत्कृष्टं लवणं विना।**
  शम्भोः प्रीतिकरं नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

॥ इति दशदान ॥

- संकल्प-दक्षिणा **अद्य शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं कृतस्य प्रायश्चित्तादि कर्मणः सिद्ध्यर्थम् फलावाप्तये च आचार्याय इमां दक्षिणां वानुमहमुत्सृजे।**
- आचार्य कहे **स्वस्ति।**

- भूयसी-दक्षिणा **अद्य कृतस्य प्रायश्चित्तादि कर्मणः न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसीं दक्षिणां यथा-काले यथा-नामेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

- आचार्य यजमान को तिलक-अक्षत लगा कर मन्त्राक्षत (प्रसाद) दे।

- प्रार्थना **ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता-ध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्-विष्णुः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुति॥**
  - **यस्य स्मृत्याच नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्॥**
  - ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

- लोकाचार में यजमान पत्नी गौर (गौरी) को सिन्दुर चढ़ा कर सोहाग लेती है।
- आचार्य यजमान (पति-पत्नी) की गाँठ खोल दे।
- दोनों सपरिवार सुहासिनी स्त्रियों तथा ब्राह्मणों के साथ मंगल स्नान के लिए नदी या जलाशय को जायँ।

॥ जलयात्रा - मंगलस्नान - मंडप प्रवेश ॥

- यजमान अपनी पत्नी तथा ब्राह्मणों और सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ पवित्र नदी या तालाब पर जाय।
- जलाशय यात्रा में ८ या ९ कलश लेकर जाने का उल्लेख मिलता है।
- नदी-जलाशय के तट पर इन कलशों की स्थापना और उनमें वरुण पूजनन की विधि प्राप्य है।
- नदी तट पर जलमातृका एवं जीवमातृका के पूजन के लिए दो वस्त्र पर ७-७ जगह अक्षत पुंज रखकर पूजन का उल्लेख भी कुछ लोगों ने किया है, जो शिष्टाचार देशाचार है।
- कहीं-कहीं पर दिक्पाल-क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करते है, एवं हवन करते है।
- कुछ लोगों ने दशविध स्नान की प्रक्रिया लिखी है।
- कुछ लोगों ने मंगल स्नान के पूर्व बाल बनवाने की विधि भी लिखी है।
- नदी के किनारे यजमान सपत्नीक पूर्वमुख बैठ कर आचमन प्राणायाम कर ले।

- प्रतिज्ञा-संकल्प **अद्य शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण अमुक-देव प्रतिष्ठा अधिकार सिद्ध्यर्थम् जलमातृः पूजनं वरुण पूजनं मंगल स्नानं च करिष्ये।**

- वरुण-ध्यान **ॐ एहि-एहि यादोगण वारिधानां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः।**
  विद्याधरेन्द्रामर गीयमानः पाहित्व मस्मान् भगवन्नमस्ते॥
  - **तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगतिर्दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम्।**
    प्रचण्ड पाशाङ्कुश वज्रहस्तं भजामि देवं कुल वृद्धि हेतोः॥
  - **आवाह्याम्यहं देवं वरुणं यादसां पतिम्।**
    प्रतीचीशं जगत् प्राण सेवितं पाशहस्तकम्॥
  - ॐ वरुणाय नमः। ध्यायामि। पूजयामि॥ फूल नदी के जल में छोड़ दे।

- मातृका-ध्यान ध्यान करके फूल नदी में डाल दे।

1. **ॐ मत्स्यै नमः।** मत्सीं पूजयामि॥
2. **ॐ कूर्म्यै नमः।** कूर्मीं पूजयामि॥
3. **ॐ वाराह्यै नमः।** वाराहीं पूजयामि॥
4. **ॐ दर्दुर्यै नमः।** दर्दुरीं पूजयामि॥
5. **ॐ मकर्यै नमः।** मकरीं पूजयानि॥
6. **ॐ जलूक्यै नमः।** जलूकीं पूजयामि॥
7. **ॐ तन्तूक्यै नमः।** तन्तुकीं पूजयामि॥
8. **ॐ ऊर्म्यै नमः।** ऊर्मिं पूजयामि॥
9. **ॐ लक्ष्म्यै नमः।** लक्ष्मीं पूजयामि॥
10. **ॐ महामायायै नमः।** महामायां पूजयामि॥
11. **ॐ पानदेव्यै नमः।** पानदेवी पूजयामि॥
12. **ॐ वारुण्यै नमः।** वारुणीं पूजयामि॥
13. **ॐ निर्मलायै नमः।** निर्मलां पूजयामि॥
14. **ॐ गोधायै नमः।** गोधां पूजयामि॥

- समुद्र-ध्यान **ॐ समुद्राद्दूर्मिर्मधु मां उदार दुपा ७ सुना सम मृतत्वमानट् ।**
  घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥
  - ॐ सप्तसागरं ध्यायामि । पूजयामि ॥ फूल नदी के जल में छोड़ दे ।

- नदी जल के देवतावों की पंचोपचार पूजा कर दे ।

- नदी-जलाशय स्तुति **ॐ नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेत हाराय सुमंगलाय ।**
  सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधि नाथाय नमो नमस्ते ॥
  - **प्रतीचीशं नमस्तुभ्यं सर्वाधौष निषूदन ।**
    पवित्रं कुरु मां देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥
  - **ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान् विधि रनुष्ठितः ।**
    स सर्वस्त्वत् प्रसादेन पूर्णो भवत्वपांपते ॥ फूल जल में छोड़ दे ।

- नदी के जल को माथ लगा कर तीन बार आचमन करे एवं स्नान करे ।
- सन्ध्या-चंदन-तर्पण-मार्जन आदि नित्य नैमित्तिक कृत्य करे ।
- यजमान सौभाग्यवती स्त्रियों को हल्दी, पान तथा मंगल वस्तुएँ दे ।
- एक मिट्टी के कलश में जल भरकर सौभाग्यवती स्त्री को दे ।
- सुहासिनी स्त्री तथा ब्राह्मणों को आगे कर घर वापस आना चाहिए ।
- आधे मार्ग में क्षेत्रपाल के लिए दही-उरद तथा एक दीप जलाकर चुपचाप बलि प्रदान कर दे ।
- मंगलगान करती हुई स्त्रियों के साथ भगवान् का ध्यान करते हुए यजमान मंडप के पश्चिम द्वार पर आकर खड़ा हो जाय ।
- यजमान यजमान पत्नी की गांठ बांध दे ।
- ब्राह्मण एक ताँबा पात्र में जल-फूल-चंदन-कुशा डालकर अर्घपात्र बना ले ।
- यजमान दोनों हाथों में इस अर्घपात्र को लेकर पश्चिम द्वार से प्रारम्भ कर मंडप की एक परिक्रमा करे ।
- ब्राह्मण गण शान्ति पाठ करें ।

- शान्तिपाठ **भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।**
  स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥
  - **द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥**
  - ॐ शान्तिः । शान्तिः । शान्ति । सुशान्तिर्भवतु ॥

- शान्ति पाठ के बाद यजमान पश्चिम द्वार से अर्घपात्र लिये हुँ दाहिना पैर भीतर रखते हुए मण्डप में प्रवेश करे ।

- सुहासिनी स्त्री जो जल यात्रा से जल भरा कलस लाई है उसे मण्डप में ईशान कोण में रख दे।
- कुछ लोग अग्नि कोण में स्त्रियों द्वारा लाए गए कलश को रखने को लिखते हैं।
- यजमान प्रधान वेदी के पास पूर्व मुख एवं ब्राह्मण उत्तर मुख होकर आसन पर बैठ जाये।
- अर्घपात्र सामने भूमि पर रख दे।

  - पृथिवी-ध्यान **ॐ पृथिवीं चतुर्भुजां शुक्लां कूर्मपृष्ठो परिस्थिताम्।**
    शंख-पद्म धरां चक्र शूलहस्तां धरां भजे॥
    - **पृथिवि त्वं ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाऽभि वन्दिता।**
      आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोक धारिणि॥
    - ॐ भूम्यै नमः | आवाह्यामि। पूजयामि। अक्षत भूमि पर छोड़ दे।

- भूमि का पंचोपचार पूजा कर दे।

  - भूमि ध्यान **ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः।**
    - ॐ भूम्यै नमः।

- यजमान दाहिने हाथ में अर्घपात्र लेकर ध्यान करे।
- कुछ लोग मण्डप द्वार पर ही अर्घ देने को लिखते है।

  - मंत्र **ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयो रभिस्त्रवन्तु नः॥**
    - **ॐ ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च।**
      पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्द वैश्रवणेन च॥
    - **देवेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।**
      गृहाणार्घ मिमं देवि ! प्रसन्ना वरदा भव॥ अर्घ भूमि पर चढ़ा दे।
  - पृथिवी-प्रार्थना **ॐ उपचारामिमां तुभ्यं ददानि परमेश्वरि।**
    भक्त्यागृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः॥
    - **उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतवाहना।**
      दंष्ट्राग्रेलींलया देवि यज्ञार्थम् प्रणमाम्यहम्॥ भूमि का जल माथे पर लगायें।
  - प्रार्थना **ॐ अन्यथा शरण्यं नास्ति त्वमेव शरणमम।**
    तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर॥

- यजमान और उसकी पत्नी की गाँठ खोल दे।
- दोनो उठकर आचार्य एवं ब्राह्मणों को प्रणाम कर दक्षिणा दें।
- अग्निपुराण में इन सौभाग्यवती स्त्रियों को गुड़-नमक-धान्य देने को लिखा है।

॥ इति जलयात्रा-मंडप प्रवेश॥

॥ प्रतिष्ठा पूजन प्रारम्भ ॥

- पवित्रकरणम् — ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा ।
  यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
- आचम्य — ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः आचमन करें
  ॐ हृषीकेशाय नमः हाथ धो लें
- आसन शुद्धि — ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
  त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
- पवित्र धारणम् — ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण
  सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पूने तच्छकेयम् ॥
- यज्ञोपवित — ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।
  आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः ॥
- शिखाबन्धन — ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
  तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥
- तिलक / चन्दन — चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम् ।
  आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥
  - ॐ आदित्या वसो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
    तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥
  - ॐ स्वस्तिस्तु याऽ विनशाख्या धर्म कल्याण वृद्धिदा ।
    विनायक प्रिया नित्यं तां स्वस्तिं भो ब्रवंतु नः ॥
- रक्षाबन्धनम् — ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
  दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥
  - येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलः ।
    तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचलः ॥
- स्वस्ति-वाचन — आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
  देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ ॥ १ ॥
  - देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम् ।
    देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ ॥ २ ॥

- तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्त्रिधम्।
  अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥
- तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
  तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥
- तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
  पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॥ ५ ॥
- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
  स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॥ ६ ॥
- पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो विदथेषु जग्मयः ।
  अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह ॥ ॥ ७ ॥
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
  स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ॥ ८ ॥
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम् ।
  पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः ॥ ॥ ९ ॥
- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः ।
  विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥१०॥
- द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
  शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
  सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ॥११॥
- यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
  शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ ॥१२॥

१५. श्रीमन महागणाधीपतये नमः ।
१६. इष्ट देवताभ्यो नमः ।
१७. कुल देवताभ्यो नमः ।
१८. ग्राम देवताभ्यो नमः ।
१९. स्थान देवताभ्यो नमः ।
२०. वास्तु देवताभ्यो नमः ।
२१. वाणी-हिरण्यगर्भाभ्याम नमः ।
२२. लक्ष्मी-नारायणाभ्याम नमः ।
२३. उमा महेश्वराभ्याम नमः ।
२४. शची पुरंदाराभ्याम नमः ।
२५. मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।
२६. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
२७. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
२८. एतत-कर्म-प्रधान देवताभ्यो नमः ।

- सुमुखश्चै कदंतश्च कपिलो गजकर्णकः ।
  लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ॥ १ ॥
- धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
  द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ ॥ २ ॥
- विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
  संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ॥ ३ ॥
- शुक्लाम्बर धरम देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम ।
  प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ॥ ॥ ४ ॥
- अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
  सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ॥ ५ ॥
- सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥ ॥ ६ ॥
- सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम ।
  येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरीः ॥ ॥ ७ ॥
- तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
  विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्घ्री युगं स्मरामि ॥ ॥ ८ ॥
- लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
  येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ॥ ९ ॥
- यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
  तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मम ॥ ॥१०॥
- अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपास्ते ।
  तेषां नित्याभि युक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ॥११॥
- स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
  पुरूषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ॥ ॥१२॥
- सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः ।
  देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥ ॥१३॥
- विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
  वन्द काशीं गुहां गंगां भवनीं मणिकर्णिकाम् ॥ ॥१४॥
- वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ ।
  निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ ॥१५॥

- १ से ४ तक में जिस देवता की मूर्ति स्थापित करनी हो प्रतिज्ञा संकल्प में उसे पढ़े शेष छोड़ दे।
- ५ संकल्प में (अमुक-अमुक) लिखा गया है यहाँ पर जिस देव की प्रतिष्ठा हो उसका नाम जोड़ ले।
- चर प्रतिष्ठा। स्थिर प्रतिष्ठा में जैसी प्रतिष्ठा हो एक पढ़े।

- **संकल्प** **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु:, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेत-वाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे, अष्टाविंशति-तमे युगे कलियुगे, कलि-प्रथम चरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक-देशे अमुकक्षेत्रे, अमुकदेशे, अमुकनाम्नि नगरे वा ग्रामे, अमुक-शके, बौद्धावतारे, अस्मिन्वर्तमाने, अमुक नाम संवत्सरे, अमुकायने-सूर्ये, अमुक-ऋतौ, महामांगल्यप्रदे अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-नक्षत्र, यथा राशि-स्थिते-सूर्ये, यथा-यथा राशि-स्थितेषु-शेषेषु ग्रहेषु सत्सु, यथा-लग्न-मुहूर्त-योग-करणान्वितायाम् एवं ग्रह-गुण-विशेषण विशिष्टायां शुभ पुष्प तिथौ श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्तिकाम:, अमुक-गोत्र:, अमुक-नामाऽहम् स्वकीय जन्म-लग्नतो वा दु:स्थानगत ग्रह-जन्य सकलारिष्ट निवृत्यर्थम्, उत्पन्न-उत्पत्स्यमान-अखिलारिष्ट निवृत्तये-दीर्घायुष्यसतत् आरोग्यता प्राप्तये, धन-धान्य समृद्ध्यर्थम् च कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक चतुर्विध पुरुषार्थ प्राप्त्यर्थम् च धन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि अनवच्छिन्न सत्संगति-लाभार्थम्, शत्रु-पराजय, बहु-कीर्त्यादि अनेकानेक अभ्युदय फल प्राप्त्यर्थम् यथा कालाधिवासन पक्षेण....**

१. **सप्रासाद सवृष शिवादि पंचायतन-देवानां स्थिर प्रतिष्ठा सहित मचल लिंग प्रतिष्ठां करिष्ये।**
२. **अनयो: राधाकृष्ण मूर्त्यो: देव-कला सान्निध्यार्थम् सप्रासाद श्रीकृष्ण राधिका मूर्त्यो: प्रतिष्ठां करिष्ये।**
३. **आसु श्रीरामचन्द्र जानकी लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, मारुति मूर्त्तिषु देव-कला सान्निध्यार्थम् श्रीरामचन्द्रादि मूर्तीनां प्रतिष्ठां करिष्ये।**
४. **आसु लक्ष्मीनारायण आदि मूर्त्तिषु देव-कला सान्निध्यार्थम् लक्ष्मीनारायणादि प्रतिष्ठां करिष्ये।**
५. **आसु अमुक-अमुक मूर्त्तिषु देव-कला सान्निध्यार्थम् अमुक मूर्तीनां चर प्रतिष्ठां (स्थिर प्रतिष्ठाम्) यथाकाले करिष्ये।**

- **तदंगत्वेन स्वस्ति, पुण्याहवाचनं, मातृकादिपूजनं, ग्रहपूजनं, नांदी श्राद्धादिकं तथा चान्यान्यदेवानां पूजनं करिष्ये**
- तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थम् गणेशाम्बिकयो: पूजनं करिष्ये।

- पृथ्वी ध्यानम्

ॐ पृथिव त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

- ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञ मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

- रक्षा विधानम्

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

- अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे॥
- यदत्र संस्थितं *भूतं* स्थान माश्रित्य सर्वतः।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥
- भूत प्रेत पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद् व्रजन्त्यन्यत्स्वी करोमि भुवं त्विमाम्॥
- भूतानि राक्षसा वापि येत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्व प्यपगच्छन्तु देव पूजां करोम्यहम्॥

- दिप ध्यानम्

दीपज्योतिः परब्रह्मः दीपज्योतिः जनार्दनः।
दीपोहरतिमे पापं दीपज्योतिर् नामोस्तुते॥

- शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम्।
मम बुद्धि विकाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते॥
- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहं॥
- भो दीप देव रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यबिघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात तावत्वं सुस्थिरो भव॥
- ॐ अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान्।
सहस्रदा ऽ असि सहस्राय त्वा॥

- सूर्य ध्यानम्

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

- शंख ध्यानम्

ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्नो शंखः प्रचोदयात्॥

- त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करें।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते॥

- घंटी ध्यानम्

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत॥

॥ गौरी - गणपति पूजन ॥

- **गणेश-आवाहनम्** **ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥**
  - **गजाननम्भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फलचारु भक्षणम् । उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धि-बुद्धि सहिताय गणपतये नम: । गणपतिम् आ०, स्था०, पू०।
- **गौरी-आवाहनम्** **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन । ससत्स्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥**
  - **ॐ हेमद्रितनायां देवीं वरदां शंकरप्रियां । लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाह्याम्यहम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्यै नम: । गौरीम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।
- **प्राणप्रतिष्ठा** **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु । विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥**
  - **अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन ॥**
  - ॐ भूर्भुव:स्व: गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम् ।
- **पूजनम्** पुरु-सूक्त मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें । पृष्ठ क्र. 49 देखें । आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, अभिषेक, वस्त्रं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं-पमष्पमालां, नानापरिमलं, सुगन्धित द्रव्यं (इत्रं), धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, दक्षिणा, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम् ।
  - मातृकाओं पर यज्ञोपवित न चढ़ावें तथा विशेषार्घ्य न दें ।
- **अभिषेक स्नानम्** गणेशजी का अथर्वशीर्ष या अन्य गणेश स्तोत्रों से अभिषेक करें ।

॥ संकटनाशन गणेश स्तोत्रम् ॥

- **नारद उवाच** **प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् । भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु: कामार्थ सिद्धये ॥** ॥ १ ॥
  - **प्रथमं वक्रतुंण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् । तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥** ॥ २ ॥

- लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
  सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥ ॥ ३ ॥
- नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु गजाननम्।
  एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥ ॥ ४ ॥
- द्वादशैतानि नामामि त्रिसन्ध्यं य: पठेन्नर:।
  न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो॥ ॥ ५ ॥
- विद्यार्थी लभते विद्यां, धनार्थी लभते धनम्।
  पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्॥ ॥ ६ ॥
- जपेद गणपतिस्तोत्रं षडभिर्मासै: फलं लभेत्।
  संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशय:॥ ॥ ७ ॥
- अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा य: समर्पयेत।
  तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादत:॥ ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीनारद-पुराणे श्रीसंकट नाशन गणेश स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ गणेश अथर्वशीर्षम्॥

- हरि: ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्व साक्षादात्मासि नित्यम् ॥१॥
- ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि ॥२॥
- अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि-पाहि समन्तात् ॥३॥
- त्वं वाङ्मयस् त्वं चिन्मय:। त्वम् आनंदमसयस् त्वं ब्रह्ममय:। त्वं सच्चिदा-नन्दा द्वितीयोऽषि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्माषि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञान-मयोऽषि ॥४॥
- सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽ नलोऽ निलो नभ:। त्वं चत्वारि वाक्-पदानि ॥५॥
- त्वं गुणत्रयातीत:। त्वम् अवस्थात्रयातीत:। त्वं देहत्रयातीत:। त्वं कालत्रयातीत:। त्वं मूलाधार-स्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्ति-त्रयात्मक:। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यं। त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णुस्, त्वं रूद्रस्, त्वं इंद्रस्, त्वं अग्निस्, त्वं वायुस्, त्वं सूर्यस्, त्वं चंद्रमास्, त्वं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम् ॥६॥

- **गणादिन्-पूर्व-मुच्चार्य वर्णादींस्-तदनन्तरम् । अनुस्वार: परतर: । अर्धेन्दु-लसितम् । तारेण रुद्धम् । एतत्तव मनुस्व-रूपम् । गकार: पूर्व-रूपम् । अकारो मध्यम-रूपम् । अनुस्वारश्चान्त्य-रूपम् । बिन्दुत्तर-रूपम् । नाद: सन्धानम् । स ७ हिता सन्धि: । सैषा गणेश विद्या । गणक ऋषि: । निचृद्-गायत्री-छन्द: । गणपतिर्देवता । ॐ गं गणपतये नम: ॥७॥**
- **एकदन्ताय विद्महे । वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती: प्रचोदयात् ॥८॥**
- **एकदन्तं चतुर्हस्तं पाश-मंकुश-धारिणम् । रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषक ध्वजम् । रक्तं लम्बोदरं शूर्प कर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धाऽनु लिप्तागं रक्तपुष्पै: सुपुजितम् । भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्-कारण मच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् । एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वर: ॥९॥**
- **नमो व्रातपतये । नमो गणपतये । नम: प्रमथपतये । नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय । विघ्ननाशिने शिवसुताय । श्रीवरदमूर्तये नमो नम: ॥१०॥**

- विशेषार्घ्य — एक ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखलें ।
  - **रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।**
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
  - **द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।**
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥
  - **अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।**
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।
- प्रार्थना — **विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।**
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
  - **त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया ।**
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।
- अर्पण — अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

॥ कलश स्थापनम् ॥

- भूमि स्पर्श — ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
  पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ७ ह पृथिवीं माहि ७ सीः ॥
- धान्य प्रक्षेप — ॐ ओषधयः समवदन्त, सोमेन सह राज्ञा।
  यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ७ राजन् पारयामसि ॥
- कलशं स्थापयेत — ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः।
  सहस्रन् धुक्ष्वो रुधारा पयस्वतिः पुनर्म्मा विशताद्रयिः॥
- कलशे अक्षत पूरणम् — ॐ इमं में वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके ॥
- जल पूरणम — ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ऽऋत सदन्यसि। वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद् ॥
- कुश प्रक्षेप — ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥
- गन्ध प्रक्षेप — ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाँ बृहस्पतिः।
  त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत ॥
- सप्तधान्य प्रक्षेप — ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा।
  दीर्घामनु प्रसिति-मायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः
  प्रति गृभ्णा-त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥
- सर्वौषधी प्रक्षेप — ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा।
  मनैनु बब्भ्रूणावह ७ शतं धामानि सप्त च ॥
- दूर्वा प्रक्षेप — ॐ काण्डात काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
  एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥
- पंच-पल्लव प्रक्षेप — ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
  गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥
- सप्तमृत्तिका प्रक्षेप — ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥
- सुपारी प्रक्षेप — ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ ह सः ॥
- पंचरत्न प्रक्षेप — ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

- हिरण्य प्रक्षेप **ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक ऽआसीत।**
  स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
- कलश में सूत्र लपेटे **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्मवरूथमासदत्स्व:।**
  वासोअग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो॥
- कलश पर पूर्णपात्र रखें **ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।**
  वस्नेव विकृणावहा इषमूर्ज ७ शतक्रतो॥ ऊपर जव भरा प्याला रखे।
  - पूर्णपात्र एक पियाले में जव, अक्षत, पीली सरसो, दही, दूब, मौली।
- कलश पर नारीयल रखें **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।**
  इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥ पूर्णपात्र पर नारियल रखें।
- कलश पर दीपक रखें **ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा।**
  अग्निवर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा।
  ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा॥
- कलश-आवाहन **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भि:।**
  अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ समा न आयु: प्र मोषी:॥
  - अस्मिन कलशे वरुणं सांङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाह्यामि।
- दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलि (जिसमें पवित्री पहिनी है) उससे कलश को छुकर प्रार्थना करे।
- कलश प्रार्थना **कलशस्य मुखे विष्णु: कंठे रुद्र समाश्रिता:।**
  मूलेतस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मात्र गणा स्मृता:॥
  - **कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्विपा वसुंधरा।**
    ऋग्वेदो यजुर्वेदो सामवेदो अथर्वणा:॥
  - **अङैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिता:।**
    अत्र गायत्री सावित्री शान्ति: पुष्टिकरी तथा॥
  - **आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारका:,**
    गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
    नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु॥
  - ॐ भूभुर्व: स्व: भो वरुण ! इहा-गच्छ, इह-तिष्ठ स्थापयामि, पूजयामि मम पूजां गृहाण, ॐ अपां पतये वरुणाय नम:।
- प्राणप्रतिष्ठा **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७**
  समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥
  - कलशे वरुणाद्यावाहितदेवता:। सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

- ध्यानम् **ॐ आश्रित्य यं भवति धन्यतरा प्रतीची, रत्नाकरत्वमुपयाति, समूहः।**
  पाशश्च यस्य भवपाशविनाशकारी त पाश धारिणमहं हृदि चिन्तयामि॥
  - ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि।
- आवाहनम् **यद् दृष्टिकोणरहिता वसुधा सदैव, बन्ध्येव भाति विफली कृतबीज शक्तिः।**
  तं वारि वारिणमहं वरुणं सदैव, धराधरं सुखकरं प्रिय माह्यामि॥
  - ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।
- **पूजनम्** पुरु-सूक्त मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। **पृष्ठ क्र. 49** देखें। आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, अभिषेक, वस्त्रं, गंधं, कलश चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत् अक्षतं, पुष्पं-पमष्पमालां, नानापरिमलं, सुगन्धित द्रव्यं (इत्रं), धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, दक्षिणा, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम्।
- कलश चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत् कलश के चारो तरफ कुंकुम एवं चावल लगा दें

1. पूर्व	**ऋग्वेदाय नमः।**	4. उत्तर	**अथर्वेदाय नमः।**
2. दक्षिण	**यजुर्वेदाय नमः।**	5. कलश के ऊपर	**ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः।**
3. पश्चिम	**सामवेदाय नमः।**		

- प्रार्थना **देव-दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।**
  उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
  - **त्वत् तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।**
    त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
  - **शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।**
    आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
  - **त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।**
    त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव॥
  - **सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।**
    क्षेमकर्त्ता, तुष्टिकर्त्ता, पुष्टिकर्त्ता, वरदो भव॥
  - **नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेत-हाराय सुमङ्गलाय।**
    सुपाश-हस्ताय झषासनाय जलाधि-नाथाय नमो नमस्ते॥
  - ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।
- अर्पण एतानि गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, पूंगीफल, दक्षिणा, द्रव्येण अनया पूजया वरुणादि आवाहित देवताः प्रीयन्तां न मम।

॥ पुण्याहवाचनम् ॥

- अपने सामने पृथिवी पर रोली या हल्दी से अष्टदल कमल बनाए।
- कमलदल के उपर पुण्याहवाचन के लिए एक मिट्टी, ताँबे या चाँदी का कलश स्थापित करे।
- कलश स्थापन विधि हेतु पृष्ठ क्रं. 42 देखें।

❖ ब्राह्मण वरण

- संकल्प देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रो, अमुक शर्मा, अमुक कर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये एभिर्ब्राह्मणैः पुण्याहं वाचयिष्ये, तदंगतया ब्राह्मणानां पूजनं वरणं च करिष्ये।
  - **भुमि देवाग्र जन्मासि त्वं विप्र पुरुषोत्तम।**
    प्रत्यक्षो यज्ञपुरुषो ह्यर्णोर्घोयं प्रतिगृह्यताम्॥ ब्राह्मण के हाथ में जल दें।
- ब्राह्मण-वरण **नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे।**
  सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटी युग धरिणे नमः॥
- यजमान एभिर्गन्धाक्षत पुष्प पूंगीफल द्रव्यैः अमुक-देव प्रतिष्ठा कर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये पुण्याहवाचनार्थं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे।
- ब्राह्मण **वृतोस्मि**
- ब्राह्मण-ध्यान **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विषीमतः सुरुचोव्वेन आवः।**
  स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः शतश्च योनिम शतश्च व्विवः॥ नमस्कार करे
- वरुण-प्रार्थना **ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।**
  पुण्यावाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

- यजमान दोनों पैर का घुटना मोडकर बैठ जाय। दोनों हाँथों को कमल के समान बनाकर पुण्याहवाचन कलश को उठा लें एवं कलश को सिर पर स्पर्श कर ब्राह्मणों से प्रार्थना करें।
  - यजमान **ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।**
    तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥ आशीर्वाद मांगे।
    ब्राह्मण **अस्तु दीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः।**
  - यजमान **ॐ त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।**
    तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इत भवन्तो ब्रुवन्तु॥
    ब्राह्मण **पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।** दो बार सिर से कलश का स्पर्श कर रख दें।
  - यजमान - जल **ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।**
    ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः॥

- ॐ शिवा आपः सन्तु । — यजमान ब्राह्मणों के हाथों में जल दे ।

ब्राह्मण — सन्तु शिवा आपः ।

- यजमान - पुष्प — लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे ॥
- सौमनस्यमस्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें ।

ब्राह्मण — अस्तु सौमनस्यम् ।

- यजमान - अक्षत — अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥
- अक्षतं चारिष्टं चास्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में चावल दें ।

ब्राह्मण — अस्त्वक्षतमरिष्टं चं ।

- यजमान - चंदन — गन्धाः पान्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में चन्दन दें ।

ब्राह्मण — सौमङ्गल्यं चास्तु ।

- यजमान - अक्षत — अक्षताः पान्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में पुनः चावल दें ।

ब्राह्मण — आयुष्यमस्तु ।

- यजमान - पुष्प — पुष्पाणि पान्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें ।

ब्राह्मण — सौश्रियमस्तु ।

- यजमान - सुपारी — सफलताम्बूलानि पान्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में सुपारी-पान दें ।

ब्राह्मण — ऐश्वर्यमस्तु ।

- यजमान - दक्षिणा — दक्षिणाः पान्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में दक्षिणा दें ।

ब्राह्मण — बहुदेयं चास्तु ।

- यजमान - जल — आपः पान्तु । — ब्राह्मणों के हाथ में पुनः जल दें ।

ब्राह्मण — स्वर्चितमस्तु ।

- यजमान - प्रार्थना — ॐ दिर्घमायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं
बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु । — हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ब्राह्मण — अस्तु । ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिचास्तु ।

- यजमान — यं कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते,
तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं
भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । — अक्षत लेकर

ब्राह्मण — वाच्यताम् ।

- ऐसा कहकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे ....

- ऋग्वेद मंत्रः ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनस्य प्रयंसत् ।
  द्रविणोदा वीरवती मिषन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ॥ ॥ १ ॥
  - सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात सविता धरातात् ।
    सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नां रासतान् दीर्घमायुः ॥ २ ॥
  - नवो नवो भवति जायमानो ऽहान्कोतुरुषसामेत्यग्रम् ।
    भागं देवेभ्यो विद्धात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ ॥ ३ ॥
  - उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्तुर्ये अश्वदाः सह ते सूर्येण ।
    हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्रतिरन्त आयुः ॥ ४ ॥

- यजुर्वेद मंत्रः ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
  स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ १ ॥
  - देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम् ।
    देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥
  - दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।
    अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥ ॥ ३ ॥

- सामवेद मंत्रः ॐ देवो ३ वो द्रविणो दाः पूर्णा विवष्ट्वा सिचम् ।
  ऊद्धा १ सिञ्चा २ । ध्वमुपवापृणध्वम् । आदिद्वोदे २ ।
  व ऊहते । इडा २,३ भा ३,४,३ । ऊं २,३,४,५ इ । डा ॥ ॥ १ ॥
  - अद्यनो देव सवितः । ओ हो वा । इह श्रुधायि । प्रजावा २,३ त्सा ।
    वीः सौभगाम् । परादू २,३ ष्वा ३ । हो वा ३ हा ।
    प्रिय ७ सु २,३,४,५ वा ६,५,६ दक्षा ३ या २,३,४,५ ॥ ॥ २ ॥

- अथर्वेद मंत्रः धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर् निधिपतिर्नोऽ अग्निः ।
  त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो यजमानाय द्रविणं दधातु ॥ ॥ १ ॥
  - येन देवं सवितारं पति देवा अधारयन् ।
    तेनेमम् ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन ॥ ॥ २ ॥
  - नवोनवो भवसि जयमानोऽ ह्वां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।
    भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ ॥ ३ ॥
  - उच्चैर्घोषो दुन्दुभिः सन्त्वनायन् वानस्पत्यः सम्भृत उस्रियाभिः ।
    वाचं क्षुणुवानो दमयन्तसपत्नन्त्सिंह इव जेष्यमभि षंस्तनीहि ॥ ४ ॥

- ब्राह्मण **करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातय: ।**
  सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ ॥ १ ॥
  - **ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथ: ।**
    तुभ्यं राजर्षय: सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ॥ ॥ २ ॥
  - **स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च ।**
    स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्य: स्वस्ति ते सदा ॥ ॥ ३ ॥
  - **स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वंतु ते सदा ।**
    करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे ॥ ॥ ४ ॥
  - **लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ ।**
    असितो देवलश्चैव विश्वामित्र स्तथाङ्गिरा: ॥ ॥ ५ ॥
  - **वसिष्ठ: कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ।**
    धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वरा: ॥ ॥ ६ ॥
  - **स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्च षण्मुख: ।**
    विवस्वान् भगवान् स्वस्ति कतोतु तव सर्वदा ॥ ॥ ७ ॥
  - **दिग्गजाश्चैव चत्वार: क्षितिश्च गगनं ग्रहा:।**
    अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि य: ॥
    शेषश्च पन्नग श्रेष्ठ: स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु ॥ ॥ ८ ॥

- यजमान **व्रत-जप-नियम-तप: स्वाध्याय क्रतु शम-दम-दया-दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मन: समाधीयताम् ।**
  ब्राह्मण **समाहितमनस: स्म: ।**

- यजमान **प्रसीदन्तु भवन्त: ।**
  ब्राह्मण **प्रसन्ना: स्म: ।**

- यजमान अपने सामने २ मिट्टी का प्याला (पात्र) रखे । यजमान पुण्याह-वाचन वाले कलश को उठाकर निम्न मंत्रो द्वारा कलश का जल १-१ बूंद क्रमश: पियाले में गिराए । ब्राह्मण बोलते जाय ।

- **प्रथम** (दाहिने) **पात्र** ब्राह्मण हर वचन पर अस्तु कहता रेहे ।

1. **ॐ शान्तिरस्तु ।**
2. **ॐ पुष्टिरस्तु ।**
3. **ॐ तुष्टिरस्तु ।**
4. **ॐ वृद्धिरस्तु ।**
5. **ॐ अविघ्नमस्तु ।**
6. **ॐ आयुष्यमस्तु ।**
7. **ॐ आरोग्यमस्तु ।**
8. **ॐ शिवमस्तु ।**
9. **ॐ शिवं कर्मास्तु ।**
10. **ॐ कर्म समृद्धिरस्तु ।**
11. **ॐ धर्म समृद्धिरस्तु ।**
12. **ॐ वेद समृद्धिरस्तु ।**
13. **ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु ।**
14. **ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु ।**
15. **ॐ पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु ।**
16. **ॐ इष्ट सम्पदस्तु ।**

- **द्वितीय** (बाएं) **पात्र** ॐ अरिष्ट निरसन मस्तु।
ॐ यत्पापं रोगोऽ शुभम कल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु।

- **प्रथम** (दाहिने) **पात्र**

1. ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु।
2. ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु।
3. ॐ उत्तरोत्तर महरहरभि वृद्धिरस्तु।
4. ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्।
5. ॐ तिथि करण मुहुर्त नक्षत्र ग्रह सम्पदस्तु।
6. ॐ तिथि करण मुहुर्त नक्षत्र ग्रह लग्नादि देवताः प्रीयन्ताम्।
7. ॐ तिथि करणे समुहुर्त सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्।
8. ॐ दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयेताम्।
9. ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।
10. ॐ इंद्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्।
11. ॐ वसिष्ठ पुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्।
12. ॐ माहेश्वरी पुरोगा उमा मातरः प्रीयन्ताम्।
13. ॐ अरुन्धति पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्।
14. ॐ ब्रह्म पुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्।
15. ॐ विष्णु पुरोगा सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्।
16. ॐ ऋषय श्छंदास्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्।
17. ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्।
18. ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्।
19. ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्।
20. ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयेताम्।
21. ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयेताम्।
22. ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयेताम्।
23. ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्।
24. ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयेताम्।
25. ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयेताम्।
26. ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्।
27. ॐ सर्वा:कुलदेवताः प्रीयन्ताम्।
28. ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्।
29. ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

- **द्वितीय** (बाएं) **पात्र**

1. ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः।
2. ॐ हताश्च परिपन्थिनः।
3. ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः।
4. ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु।
5. ॐ शाम्यन्तु घोराणि।
6. ॐ शाम्यन्तु पापानि।
7. ॐ शाम्यन्त्वीतयः।
8. ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

- **प्रथम** (दाहिने) **पात्र**

1. ॐ शुभानि वर्धन्ताम्।
2. ॐ शिवा आपः सन्तु।
3. ॐ शिवा ऋतवः सन्तु।
4. ॐ शिवा अग्नयः सन्तु।
5. ॐ शिवा आहुतयः संतु।
6. ॐ शिवा ओषधयः सन्तु।
7. ॐ शिवा वनस्पतयः संतु।
8. ॐ शिवा अतिथयः संतु।
9. ॐ अहोरात्रे शिवे स्त्याताम्।

- **यजुर्वेदः** ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः
पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

- यजमान

1. ॐ शुक्रांगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम सहिता आदित्य पुरोगा सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम्।
2. ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम्।
3. ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्।
4. ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु।
5. ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु।
6. ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु।
7. ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

- यजमान कलश को अपनी जगह पृथिवी पर रख कर हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे –

  - यजमान — ॐ एतत् कल्याण युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

    ब्राह्मण — वाच्यताम्।

  - यजमान-पुण्याहं — ॐ ब्राह्म्यं पुण्यं महर्यच्च सृष्टि-उत्पादन कारकम्।
    वेद वृक्षोद्भवं नित्यं तत् पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥
    - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य देवप्रतिष्ठा कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

    ब्राह्मण — ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्।
    - ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
      पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ यजुः

  - यजमान-कल्याणं — ॐ पृथिव्या मुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
    ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥
    - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य देवप्रतिष्ठा कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

    ब्राह्मण — ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्।
    - ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या ७ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

  - यजमान-ऋद्धिं — ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृताः।
    सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रबुवन्तु नः ॥
    - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य देवप्रतिष्ठा कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

    ब्राह्मण — ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्। ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्। ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।
    - ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम।
      दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥

  - यजमान-स्वस्ति — ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा।
    विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥
    - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य देवप्रतिष्ठा कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण — ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति।
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

- यजमान-श्री — ॐ समुद्रमथनाज् जाता जगदानन्द कारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥
  - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य देवप्रतिष्ठा कर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण — ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः।
  - ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण॥

- यजमान — ॐ मृकण्डु सूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

ब्राह्मण — ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः। ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः। ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।
  - ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम्। पुत्रासो
यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या री रिषतायुर्गन्तोः॥

- यजमान — ॐ शिव गौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि॥

ब्राह्मण — ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः।
  - ॐ मनसः काम माकूतिं वाचः सत्यमशीय।
पशूना ७ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम् मयि स्वाहा॥

- यजमान — प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः॥

ब्राह्मण — ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। ॐ भ.प्र.प्री.। ॐ भ.प्र.प्री.।
  - ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वय ममुष्य पिता सावस्य
पिता व्यय ७ स्याम पतयो रयीणाम् ७ स्वाहा॥

- यजमान — आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

ब्राह्मण — ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति।
  - ॐ प्रति पन्था मपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु॥ ॐ पुण्याहवाचन समृद्धिरस्तु॥

- यजमान ॐ अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुप विष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपति प्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

  ब्राह्मण **ॐ अस्तु परिपूर्णः।**

- द्वितीय (बाएं) पात्र में जो जल गिराया है उस नाई या किसी नौकर से बाहर फिंकवा दे।

- प्रथम (दीहिने) पात्र के जल से ४ ब्राह्मण यजमान और यजमान पत्नी को वाम (बायीं) भाग में बैठाकर तथा सकुटुम्ब को दूर्वा या आम्रपल्लवों से अभिषेक करें, एवं बचे जल को घर में चारों तरफ छिड़क दे।

- अभिषेक : **द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥**
  - **ॐ सुरास्त्वामभषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।**
    वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ ॥ १ ॥
  - **प्रद्युम्नश्चा निरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।**
    आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥ ॥ २ ॥
  - **वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा विभुः।**
    ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ॥ ३ ॥
  - **कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।**
    बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥ ॥ ४ ॥
  - **एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।**
    आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध जीव सितार्क जाः॥ ॥ ५ ॥
  - **ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च देवताः।**
    देव दानव गन्धर्वाः यक्ष राक्षस पन्नगाः॥ ॥ ६ ॥
  - **ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।**
    देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥ ॥ ७ ॥
  - **अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।**
    औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥ ॥ ८ ॥
  - **सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।**
    एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्म कामार्थ सिद्धये॥ ॥ ९ ॥

- दक्षिणा संकल्प ॐ अद्य शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् अस्य कृतस्य पुण्याह वाचन कर्मणः तत्सम्पूर्ण फल-प्राप्त्यर्थंम् मनोसद्दिष्टां दक्षिणां दातु मह मुत्सृजे।
- ब्राह्मण **ॐ स्वस्ति।**
- अर्पण ॐ पुण्याहवाचनेन कर्मांग देवताः प्रीयन्ताम्।

॥ षोडश मातृका पूजनम् (अग्निकोण) ॥

आत्मनः कुलदेवता 16	लोकमातरः 12	देव सेना 8	मेधा 4
तुष्टिः 15	मातरः 11	जया 7	शची 3
पुष्टिः 14	स्वाहा 10	विजया 6	पद्मा 2
धृतिः 13	स्वधा 9	सावित्री 5	गणेश + गौरी 1

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ।
ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं ॥
गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

1. गणेश गौरी
2. पद्मा
3. शची
4. मेधा
5. सावित्री
6. विजया
7. जया
8. देव सेना
9. स्वधा
10. स्वाहा
11. मातरः
12. लोकमातरः
13. धृतिः
14. पुष्टिः
15. तुष्टिः
16. आत्मनः कुल देवताः

1. **गणेशम्**

ॐ गणानांत्वा गणपति ও हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ও हवामहे,
निधीनां त्वा निधिपति ও हवामहे ।
वसो: मम आहमजानि गर्भधम् त्वमजासि गर्भधम् ॥

- **ॐ समिपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्न हरं सदा ।**
त्रैलोक्य पूजितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः गणपतये नमः । गणपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

1. **गौरीम्**

ॐ आयं गौः पृश्नीरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

- **हिमाद्रि तनयां देविं वरदां दिव्य शंकरप्रियाम् ।**
लंबोदरस्य जननीं गौरिं आवाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः गोर्यै नमः । गौरीम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

2. **पद्माम्**

ॐ हिरण्यरूपा उषयो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च ।
अरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिञ्च मित्रोसिवरुणोसि ॥

- **सुवर्णाभांपद्महस्तांविष्णो र्वक्षस्थल स्थितां ।**
त्र्यैलोक्य पूजितां देंविं पद्मां आवाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः पद्मायै नमः । पद्माम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

3. **शचीम्**

ॐ निवेशनः संगमनो वसूनां विश्वा रुपाभिचष्टे शचीभिः ।
देव इव सविता सत्यधर्म्मेन्द्रो न तस्त्थौ समरे पथीनाम् ॥

- **दिव्यरुपां विशालाक्षीं शुचिं कुंडल धारिणीम् ।**
रक्त मुक्ता द्यलंकारां शचि मावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः शच्यै नमः । शचीम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

4. **मेधाम्**

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥

- विश्वेस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जर सेविताम्।
  बुध्दि प्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधाम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

5. **सावित्रीम्**

ॐ सविता त्वा सवाना ७ सुवतामग्नि-,र्गृहपतीना ७ सोमो वनस्पतीनाम्।
बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः, पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्॥

- जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणव मातृकाम्।
  वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रिं स्थामयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः। सावित्रीम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

6. **विजयाम्**

ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ऽउत।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः॥

- सर्वास्त्र धारिणीं देवीं सर्वाभरण भूषिताम्।
  सर्वदेव स्तुतां वन्द्या विजयां स्थापयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः विजयायै नमः। विजयाम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

7. **जयाम्**

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥

- दैत्यरक्षःक्षय करीं देवानामभयप्रदां।
  गीर्वाण वंदिता देवीं जया मावाहयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः जयायै नमः। जयाम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

8. **देवसेनाम्**

ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेना नामभि भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥

- मयूर वाहनां देवीं खड्ग शक्ति धनुर्धराम।
  आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः। देवसेनाम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

9. **स्वधाम्**

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः,
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः,
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन् पितरोऽ मीमदन्त, पितरोती तृपन्त पितरः, पितरः शुन्धध्वम्॥

- अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं प्रतिष्ठिता।
  पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधा मावाहयाम्यहम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः स्वधायै नमः। स्वधाम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

10. स्वाहाम्

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥

- हविर्गृहित्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति । तां दिव्यरुपां वरदां स्वाहा मावाहयाम्यहम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः । स्वाहाम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

11. मातृ

ॐ आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु । विश्व ७ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूतएमि । दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा ७ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णम पुष्यन ॥

- आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोक पूजिताः । सर्वकल्याण रूपिण्यो वरदा दिव्य भूषिताः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः । मातृम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

12. लोकमातृ

ॐ रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टंचमे पुष्टिश्चमे विभुचमे प्रभुचमे पूर्णंचमे पूर्णतरंचमे कुयवंचमे क्षितंचमे न्नंचमे क्षुच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥

- आवाहये ल्लोकमातृर्जयंतीप्रमुखाःशुभाः । नानाभीष्टप्रदाः शांता सर्वलोकहिता वहाः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः । लोकमातृम् आ० स्थापयामि पूजयामि ।

13. धृतिम्

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

- नमःस्तुष्टिकरीं देवीं लोकानुग्रहकर्मणी । स्वकामस्यच सिध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहं ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः धृत्यै नमः । धृतिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

14. पुष्टिम्

ॐ त्वाष्टा तुरीयो अभ्युत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना । द्विपदा धन्दा इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः ॥

- आवाहयाम्यहं पुष्टि जगद्विघ्न विनाशिनी । ज्ञात्वा पुष्टि करिं देवीं रक्षणाया ध्वरे मम ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः । पुष्टिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

15. तुष्टिम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥

- सौम्यरुपे सुवर्णाभे विद्युज्वलीतकुंडले । धर्मतुष्टिकरीं देवीं मस्मिन्यज्ञे हितायवै ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः । तुष्टिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

16. **आत्मनः कुलदेवताम्**

ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

- **त्वमात्मासर्व देवानां देहिनांमंत्र सर्वगां।**
  वंशवृध्दि करीं देवीं कुलदेवीं प्रपूजयेत्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवताम् आ०स्था०पू०।

- प्राणप्रतिष्ठा — **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥**
  - **अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।**
    अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥
  - गौर्याद्याः कुल देववान्त मातरो गणपति सहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।
- आवाहन — ॐ दारिदद्य दावानल नाशिकाः सदा, भजाम्यहं दुःख निधौ निमग्नः।
  कृपा कटाक्षं मयि मन्दबुद्धौ, मदर्थ मायान्तु निपात्य मातरः॥
- आसन — ॐ सिहासनं सुन्दर शोभनञ्च, सुसज्जितं तन्मणिभिः सुसौम्यम्।
  शिवप्रदः षोडश संख्यकाश्च, गृह्णन्तु देवासुर पूज्यमानाः॥
- पाद्य — ॐ अनेक तीर्थोपहृतानि नीराणि, आदाय गन्धान्वितमद्य पाद्यम्।
  सम्पादितं सारयुतं सुरम्यं गुह्णन्तु चोत्फुल्ल सरोज नेत्राः॥
- अर्घ — ॐ जलज चम्पक पुण्य गणान्वितं, रुचिर मर्ध्य मधन्य करस्थितम्।
  सकल सारमयं हि यदुत्तमं, कुरुत स्वीकरणं मम मातरः॥
- आचमन् — ॐ सकल गन्धयुतं सुमनोहरं, सकल रोग विनाशकरं शुभम्।
  ललित माचमनं सुख पूर्वकम्, कुरुत स्वीकृत मज्ञ सुमातरः॥
- पंचामृत स्नान — ॐ पंचविकार नाशकं दुग्धादिभिर्निर्मित मद्य सुन्दरम्।
  निःशेष पायान्तक मच्छ दर्शनं, गृह्णन्तु दासस्य सदा सुमातरः॥
- स्नान — ॐ स्नानीयचूर्ण सकलेन विराजितेन, गन्धान्वितेन कुसुमैश्च सुवासितेन।
  स्नानं विधेय मधुना रुचिरेण नीरेणात्यन्त मुग्ध हृदयेऽपि कृपा विधेय॥
- वस्त्र — ॐ कौशेय मच्छं हि सुवस्त्र मेतद् वन्धाः स्थितं वै पुरतः सुमञ्चे।
  ददामि गन्धेन युतं ममापि प्रिपञ्च कुर्वन्तु सदा पुराणाः॥
- कुंकुम् — ॐ प्रभात कालस्य रवेः समानं श्रीरक्त चूर्णम् मनसा ददामि।
  धूपादिकेनाति सुगन्धितं तद् गृह्णन्तु प्रीत्याखिल लोकवन्द्याः॥
- चंदन — ॐ गन्धं प्रकामं रचिरं सुवन्द्याः ददाम्यहं चात्र भवत् प्रियार्थम्।
  लोकैक कूपे पतितं क्वणन्तं रक्षन्तु चाज्ञान विनाशिकाः माम्॥

- **अक्षत** ॐ तण्डुलास्तु भवदर्थ मिहाद्य चार्पिता:, कुरुत वै स्वीकरणम् तथैव। पूजिता: सफल लोकसाहाय्या: सौख्यदा: पापहराश्च देव्य: ॥
- **फूल** ॐ पुष्पाणि सन्तीह सुगन्धवन्ति, चाघ्राय सानन्दतरा भवन्तु। सन्ताप युक्तं निजमद्यभक्तं, नक्तं दिवं धन्यतमा: पुनन्तु ॥
- **धूप** ॐ मनुष्य देवासुर सान्द्र सौख्यदं, लवंगपाटी रजचूर्ण संयुतम्। सद्य: सुगन्धी कृत हर्म्य कोष्ठकं, धूपं प्रियार्थं प्रददामि मातर: ॥
- **दीप** ॐ लोकान्ध कारस्य विनाशदक्षं, सद् वर्त्ति सद्पूर्त्ति युतं प्रदीपम्। प्रज्वालय सानन्द अमुं ददामि, गृह्णन्तु चाज्ञान विनाशिका मे ॥
- **नैवेद्य** ॐ पवित्रपात्रे विधिवत् प्रसारितं, सुगन्ध द्रव्यैश्च सुगन्धितं मुदा। सुधाशना: स्वीकुरुत प्रियं तथा, नैवेद्य मेतन् मनसा सुमातर: ॥
- **ताम्बुल** ॐ एला लवंग निचय रति गन्ध युक्तं, ताम्बूल मद्य हृदयेन ददामि रम्यम्। गृह्णन्तु भद्रमधिकं वितरन्तु मह्य, सह्येन लोक इह वैज्वलनं कदापि ॥
- **दक्षिणा** ॐ देवासुरैर्नित्य मशेषकाले, सुगीयमाना मम मातरश्च। गृह्णन्तु सद्य: प्रियदक्षिणां वै, ध्यायेन तथ्ये मयि वर्तितव्यम् ॥
- **नीराजन** ॐ नीराजनां षोडश संख्याका मुदा, करोमि दु:खस्य विनाशिकामहम्। अनेक पापार्दित मानवं च या, पवित्र मत्रा तनुते जगद् युगे।
- **प्रदक्षिणा** ॐ प्रदक्षिणा मद्य करोमि सद्य:, पदे-पदे दु:ख विनाश कारिणीम्। जनौघ पापस्य करोति नाशं, दासस्य या सा मुद मादधाति ॥
- **पुष्पाजंलि** ॐ ज्ञात्वा सुखं सुरुचिरं भुवने मया नो, भ्रान्तं सदापि नव योनि समुद्भवेन। शान्ति र्न चात्र विलपामि धनांधकारे, युक्त्या कयापि कलयन्तु ममापि भद्रम् ॥
- **प्रार्थना** ॐ समख्ये देव्या धिया सन दक्षिणयो रुक्षसा। माम ऽ आयु: प्रमोषीर्मो ऽ अहन्त ववीरं विदेय तवदेवि सन्दृशि ॥
  - ॐ गणेश पूर्विका देव्यो गौर्यादि प्रमुखा: स्मृता:। प्रसीदन्तु हि कण्याण्यो निर्विघ्नं कुरुताध्वरम् ॥
  - ॐ आयुरारोग्य मैश्वर्यम् ददध्वं मातरो मया। निविघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपा: ॥
  - न चार्चनं पुण्यतमं शुभ प्रदम्, जानाम्यहं धन्यतमा: सुमातर:। सुरप्रिया: षोडशमातृका: मम, भूयास रज्ञान विनाश कारिका: ॥
- **अर्पण** एतानि गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, पूंगीफल, दक्षिणा, द्रव्येण अनया पूजया प्रीयन्ताम् न मम्।

॥ सप्तस्थल मातृका पूजनम् ॥

- षोडश मातृका के बगल में ७ खाना बनाकर सप्तस्थल मातृका का आवाहन करें।

1. **ॐ ब्राह्मयै नमः** **ब्राह्मीम्** आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
2. **ॐ माहेश्वर्यै नमः** **माहेश्वरीम्** आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
3. **ॐ कौमार्यै नमः** **कौमारीम्** आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
4. **ॐ वैष्णव्यै नमः** **वैष्णवीम्** आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
5. **ॐ वाराह्यै नमः** **वाराहीम्** आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
6. **ॐ इन्द्राण्यै नमः** **इन्द्राणीम्** आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।
7. **ॐ चामुण्डायै नमः** **चामुण्डाम्** आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

- प्राणप्रतिष्ठा **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥**
  - **अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥**
  - सप्तस्थल मातृका सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।

- सप्तस्थल मातृकाओं का पंचोपचार या षोडशोपचार पूजा कर दे। **पृष्ठ क्र. 00** देखें।

- अर्पण एतानि गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, पूंगीफल, दक्षिणा, द्रव्येण अनया पूजया प्रीयन्ताम् न मम्।
  - ॐ क्षेमकर्त्री, तुष्टिकर्त्री, पुष्टिकर्त्री, वरदात्री भव।

॥ सप्तघृत मातृका (वसोर्धारा) पूजनम् ॥

- षोडश मातृका एवं सप्तघृत मातृका के बगल में सफेद कपड़े पर २८ बिन्दु बनाकर आवाहन करें।

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माग्ङल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥

1. **श्रीयम्**
2. **लक्ष्मीम्**
3. **धृतिम्**
4. **मेधाम्**
5. **स्वाहाम्**
6. **प्रज्ञाम्**
7. **सरस्वतीम्**

- ॐ भूभुर्वः स्वः सप्तघृत मातृका मण्डल देवताभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

1. **श्रीयम्**

ॐ मनसः काममाकुतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां ७ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

- **ॐ सुवर्णाभां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षस्थल स्थितां।**
त्र्यैलोक्यवल्लभां देवी श्रियमावा हयाम्यहं॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः श्रियै नमः। श्रियम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

2. **लक्ष्मीम्**

ॐश्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम।
ईष्णन्निषाण मुं मइषाण सर्वलोकम् मइषाण॥

- **ॐ शुभ लक्षण संपन्नां क्षीरसागर संभवां।**
चंद्रस्यभगिनींसौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहं॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

3. **धृतिम्**

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां ७ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

- **ॐ संसारधारणपरां धैर्य लक्षण संयुताम्।**
सर्वसिद्धि करीं देवीं धृति मावाहयाम्यहं॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः धृत्यै नमः। धृतिम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

4. **मेधाम्**

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥

- **ॐ सदसत्कार्यकरणंक्षमाबुद्धिविलासिनी।**
मम कार्ये शुभकरी मेधा मावाहयाम्यहं॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः मेधायै नमः। मेधाम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

5. **स्वाहाम्** **ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।**
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

- **ॐ सौम्यरुपांसुवर्णाभां विद्युज्वलित कुंडलाम्।**
जननीं पुष्टि करीणीं पुष्टिं मावा हयाम्यहं॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः। स्वाहाम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

6. **प्रज्ञाम्** **ॐ आयं गौः पृश्रीरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥**

- **ॐ भूतग्राम मिदंसर्व मजेन श्रद्धयाकृतम्।**
श्रद्धयाप्राप्यते सत्यं श्रद्धा मावाहयाम्यहं॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः। प्रज्ञम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

7. **सरस्वतीम्** **ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥**

- **ॐ प्रणवस्यैव जननीं रसना ग्रस्थिता सदा।**
प्रगल्भ दात्रि चपलां वाणीं मावाहयाम्यहं॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- सभी बिन्दुओं पर घी की धारा बारी-बारी से दे।
  - घृतधारा **ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारम्।**
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥
  - **ॐ नमोस्तु वसु-मातृभ्यो घृत-मातृभ्य एव च।**
कर्मण्यस्मिन् सिद्ध्यर्थं धारां दास्यामि मातरः॥

- बतासा या गुड के टुकड़े से सातों धाराओं को मिला दे।
  - धारा एकीकरण **श्री पूवम् सप्तमातृश्च घृतमातृस्तथैव च।**
गुडेन मेलयिष्यामि ताः सर्वार्थ प्रसाधिकाः॥
  - प्राणप्रतिष्ठा **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥**
  - **अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।**
अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥
  - सप्तघृत मातृका सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।

- सप्तघृत मातृकाओं का पंचोपचार या षोडशोपचार पूजा कर दे। **पृष्ठ क्र. 00** देखें।
- अर्पण एतानि गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, पूंगीफल, दक्षिणा, द्रव्येण अनया पूजया वसोर्धारा देवता प्रीयन्ताम् न मम्।

॥ आयुष्य मंत्र ॥

- यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु ।
  दुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ ॥ १ ॥
- दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः ।
  अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥ ॥ २ ॥
- सत्यानि पञ्चभूतानि विनाश रहितानि च ।
  अविनाश्या युषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥ ॥ ३ ॥
- ॐ आयुष्यं वर्चस्य ७ रायस्पोष मौद्भिदम् ।
  इदं ७ हिरण्यं वर्चस्व जैत्राया विशत दुमाम् ॥ ॥ ४ ॥
- ॐ न तद् रक्षां ७ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानाभोजः ।
  प्रथम ज ७ ह्येतत् । यो विभर्ति दाक्षायण ७ हिरण्य ७ ।
  स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः । स मनुष्ये षु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ॥ ५ ॥
- ॐ यदावध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ७ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
  तन्य आवघ्नामि शत शारदा यायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥ ॥ ६ ॥

॥ आभ्युदयिक नान्दीमुख श्राद्धम् ॥
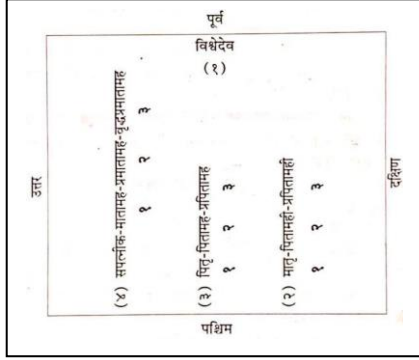
न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम च चोच्चरेत् ।
न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः ॥
न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यमन्त्र विवर्जितम् ।
अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित् ॥

आचम्य प्राणानायम्य पवित्र धारणं के उपरान्त आभ्युदयिक नान्दीमुख षोडशमातृका के समक्ष पूर्वाभिमुख सव्य रहकर ही पितरों की अर्चना करने का विधान है।

- **संकल्प:** ॐ तत्सदद्य मासोत्तमे अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक कर्मांग भूतं आभ्युदयिक नान्दी श्राद्ध अहं करिष्ये।

- **पाद-प्रक्षालनम्** पाद-प्रक्षालन हेतु आसन पर जल छोड़े।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नांदिमुख: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दि: ।
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्य: नांदिमुख्य: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दि: ।
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नांदिमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दि: ।
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहा: सपत्निका: नांदिमुखा: ।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृध्दि: ।

- **आसनदानम्** विश्वेदेवा तथा सभी पूर्तों के लिए आसन दें।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दिमुखाः भूर्भुवः स्वः इदम् आसनं वो नमः ।**
   - नांदिश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दिमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदम् आसनं वो नमः ।**
   - नांदिश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दिमुखाः भूर्भुवः स्वः इदम् आसनं वो नमः ।**
   - नांदिश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दिमुखाः भूर्भुवः स्वः इदम् आसनं वो नमः ।**
   - नांदिश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ॥

- **जलाऽक्षत पुष्प प्रदानम्** जल, पुष्प, चावल सभी आसनों पर चढायें।

1. जल चढ़ावे **ॐ शिवा आप: सन्तु।**
2. चन्दन चढ़ावे **ॐ गन्धा: पान्तु।**
3. अक्षत चढ़ावे **ॐ अक्षतं चारिष्ट मस्तु।**
4. फूल चढ़ावे **ॐ सौमनस्य मस्तु।**

- **गन्धाद्यर्चन हेतु ४ बार जल छोड़े।**

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्य: नांदिमुख्य:।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव:स्व: इदं गंधाद्यर्चन: स्वाहा संपद्यतां वृद्धि: ॥

- **भोजन निष्क्रय दानम्** भोजन निष्क्रय निमित्त दक्षिणा दें।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं भोजन निष्क्रयभुतं द्रव्यम्-अमृत-रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामहिभ्य: नांदिमुखिभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं भोजन निष्क्रयभुतं द्रव्यम्-अमृत-रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहेभ्य नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं भोजन निष्क्रयभुतं द्रव्यम्-अमृत-रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: इदं भोजन निष्क्रयभुतं द्रव्यम्-अमृत-रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:॥

- **सक्षिर यव जलानि दद्यात** दुध, जव, जल मिलाकर अर्पण करें।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञका: विश्वेदेवा: नांदिमुखा:।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपिताहिभ्य: नांदिमुखिभ्य:।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नांदिमुखा:।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहा: सपत्नीका: नांदिमुखा:।** ॐ भूर्भुव:स्व:प्रीयंताम् ॥

- **जलधारा दानम्** पितरों के लिए अँगुठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।
  - यजमान कहे **ॐ अघोरा: पितर: सन्तु:।**
  - ब्राह्मण कहे **सन्त्वघोरा: पितर:।**

- **आशिष ग्रहणम्** यजमान हाथ जोड़कर प्राथना करें। ब्राह्मण कहें।
  - **गोत्रंन्नोभि वर्धंतां। अभिवर्धंतांवो गोत्रम्॥**
  - **दातारोनोभि वर्धंतां। अभिवर्धंतांवो दातार:॥**
  - **संततिर्नोभि वर्धंतां। अभिवर्धंतांव:संतति:॥**
  - **श्रद्धाचनोमाव्यगमत। माव्यगमत्श्रद्धा॥**
  - **अन्नचनोबहुभवेत्। भवतुवोबह्वन्नम्॥**
  - **अतिथिंश्चलभेमहि। लभतांवोतिथय:॥**
  - **वेदाश्चनोभि वर्धंतां। अभिवर्धंतावो वेदा:॥**
  - **मायाचिष्मकंचन। मायाचध्वं कंचन॥**
  - **एता:आशिष:सत्या:संन्तु। सन्त्वेता: सत्या: आशिष:॥**

- **दक्षिणा दान संकल्प** मुन्नका, आँवला, यव, अदरक, मूल, तथा दक्षिणा लेकर।

1. **ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥
2. **ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामहिभ्य: नांदिमुखिभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥
3. **ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहेभ्य: नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥
4. **ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहेभ्य: सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्य:।**
   - ॐ भूर्भुव: स्व: कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे॥

- सीधा दान संकल्प **अद्य मयाचरितस्य अमुक कर्मण: कर्मागंत्वेन नान्दीश्राद्ध नैमित्तकेन च ब्राह्मण भोजन पर्याप्तामान्नं तद् फल सिध्यर्थं दक्षिणां च गोत्रीय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।** कुछ लोग सीधा दान करते है।

- यजमान **ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते।**
  - **ॐ इडामग्ने पुरुद ७ स ७ सनिं गोः शश्वत्तम ७ हव मानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥**
  - **अनेन नांदिश्राद्धं संपन्नं।**
- ब्राह्मण **ॐ सुसंपन्न।**
- प्रार्थना **ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृता ऽ ऋतज्ञाः। अस्य मद्धवः पिबत मादयद्धवं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥**
  - **ॐ आमा वाजस्य प्रसवो जगम्या देमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे। आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्॥**
  - **विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।**
  - **माता-पितामहा चैव तथैव प्रपितामही। पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥**
  - **मातामहस्तत् पिता च प्रमाता महकादयः। एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम्॥**
- यजमान **मया चरिते सांकल्पिक नान्दिश्राद्धे न्युनातिरिक्तो यो विधिः सः भवद् वचनात् गणपति प्रसादात् च परिपुर्णोस्तु।**
- ब्राह्मण **अस्तु परिपुर्णः॥**
- अर्पण अनेन नांदिश्राद्धाख्येन कर्मणः नंदमुख नंदपितरः प्रियंतां वृद्धिः॥

॥ आचार्य / जापक वरणम् ॥

- यजमान आचार्य का वरण करे।
- यजमान ब्राह्मण का तीन बार पाँव धो ले।
  - **ॐ आपद् घनध्वान्त सहस्रभानवः समीहितार्थार्पण कामधेनवः।**
    समस्त तीर्थाम्बु पवित्र मूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राहाण पाद पांसवः॥
- यजमान ब्राहाण के माथे में चंदन, अक्षत लगा कर फूलमाला पहना दें।
  - **ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम्।**
    ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥
- ब्राह्मण प्रार्थना — **ॐ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रा दीनां बृहस्पतिः।**
  तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥ ॥ १ ॥
  - **यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः।**
    तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तम्॥ ॥ २ ॥
- संकल्प - वरण — कुश, अक्षत, द्रव्य, जल, धोती, लोटा, अंगौछा, सुपारी, जनेऊ लेकर
  - **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् अस्मिन् कर्मणि शुभता सिध्यर्थम् आचार्य कर्म कर्तृत्वेन एभिः वरण सामग्रीभीः अमुक-गोत्रं, अमुक-शर्माणं त्वाम् अहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **ॐ वृतोऽस्मि।** संकल्प लेकर
- ब्राह्मण-आशिर्वाद — **व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम्।**
  दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ यजमान पर जल छिड़क दे।
- जापक वरण — गणेश जप हेतु ब्राह्मण वरण।
- संकल्प - वरण — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् मूर्ति-प्रतिष्ठा कर्मणी निर्विघ्न समाह्यर्थम् यथा-संख्यकं गणेश मन्त्र जपार्थम् अमुक-गोत्रं, अमुक-नामाकं, ब्राह्मणं त्वाम् अहं वृणे।**
- ब्राह्मण कहे — **ॐ वृतोऽस्मि।** संकल्प लेकर
- ब्राह्मण उत्तराभिमुख बैठ कर गणेश मन्त्र का पूर्णाहूति तक जाप करे।

॥ पंचगव्य करणम् ॥

- एक पात्र में गोमूत्र, गोबर, गौ-दूध, गो-दही, गो-घी पाचों चीजें कुश के द्वारा मिला दें।

- **गोमूत्र** — **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**
- **गोबर** — **ॐ मानस्तोके तनये मानऽ आयुषि मानो गोषु मानोऽ अश्वेषु रीरिषः। मानो व्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्ह विष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥**
- **दूध** — **ॐ आप्याय स्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् भवा वाजस्य संगथे ॥**
- **दधि** — **ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयु ८ षितारिषत् ॥**
- **घी** — **ॐ तजोसि शुक्र मस्य मृतमसि धाम नामासि प्रियं । देवानां मना धृष्टन्देव यजन मसि ॥**
- **कुशोदक** — **ॐ देवस्त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥**

- मंत्र — निम्न मंत्रो के द्वारा कुश से पूजा स्थल, सामग्री एवं अपने उपर पंचगव्य छिडके।
  - **ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे । यो वः शिव तमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः । तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनय था च नः** ॥ १ ॥
  - **ॐ गो शरीरात् समुद्भूतं पंचगव्यं सुपावनम् । प्रोक्षणम् मण्डपस्यैव करिष्यामि सुरार्थकम् ॥** ॥ २ ॥
  - **ॐ मण्डपाभ्यन्तरे देवाः सदेव्यः सगणाधिपः । तस्मात् संप्रोक्षणार्थेन सन्तुष्टा वरदाः सदा ॥** ॥ ३ ॥
  - **ॐ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः समन्वितम् । सर्वपाप विशुद्ध्यर्थम् पञ्चगव्यं पुनातु माम् ॥** ॥ ४ ॥

- प्रार्थना — **ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥**
  - देवाः आयान्तु। यातुधाना अपायान्तु। विष्णवे नमः। विष्णोः इमं सत्रं रक्षस्व।

॥ मण्डप पूजनम् ॥

- प्रधान वेदी (मध्य-वेदी) के चारो कोनों पर ४ तथा मण्डप के बाहर चारो तरफ १२ अर्थात कुल १६ स्तम्भों की पंचोपचार पूजा मण्डप के भीतर से पूर्व अथवा उत्तर मुख होकर करनी चाहिये।
- संकल्प अमुक याग कर्मणि मण्डपाधिष्ठातृ देवता स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

1. ईशान कोणे मध्यवेदी ब्रह्माणम् रक्त वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् द्विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः। स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्चव्विवः॥**
  - **हंसपृष्ठ समारुढ देवता गण सेवितः। आगच्छ भगवन् ब्रह्मन् प्रथम स्तम्भ संस्थितः॥**
  - ॐ ब्रह्मणे नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।
  - अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदी ईशानकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्तां न मम।

2. आग्नेय कोणे विष्णुम् कृष्ण वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मष्य पा ७ सुरे स्वाहा॥**
  - **गरुडञ्च समारुढ लक्ष्मी गण समायुतम्। आगच्छ भगवन् विष्णो द्वितीय स्तम्भ संस्थितः॥**
  - ॐ विष्णवे नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।
  - अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदी अग्निकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्तां न मम।

3. नैर्ऋत्य कोणे शंकरम् श्वेत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः॥**
  - **गंगाधर महादेव पार्वती प्राणवल्लभ। आगच्छ भगवन् इश तृतीय स्तम्भ संस्थितः॥**
  - ॐ शिवाय नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।
  - अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदी नैर्ऋत्यकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्तां न मम।

4. वायव्य कोणे इन्द्रम् पीत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।**
  - **शचीपते महाबाहो सर्वाभरण भूषित। आगच्छ भगवन् इन्द्र चतुर्थस्य स्तम्भ संस्थितः॥**
  - ॐ इन्द्राय नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।
  - अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदी वायव्यकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्तां न मम।

5. बाह्य इशान कोणे सूर्यम् रक्त वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।**
  हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
  - **सप्त हस्त महाबाहो सप्तश्वेता श्ववाहना ।**
    आगच्छ भगवन् भानो पंचम स्तम्भ संस्थित: ॥
  - ॐ सूर्याय नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-ईशानकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

6. इशान पूर्व मध्ये गणेशम् श्वेत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ गणानांत्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ७ हवामहे,**
  निधीनां त्वा निधिपति ७ हवामहे ।
  वसो: मम आहमजानि गर्भधम् त्वमजासि गर्भधम् ॥
  - **लम्बोदर महाकाय गजवक्त्र चतुर्भुज ।**
    आगच्छ गणनाथस्त्वं षष्ठ स्तम्भ समाश्रित: ॥
  - ॐ गणपतये नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-ईशानपूर्व मध्ये स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

7. पूर्व अग्नयोर्मध्ये यमम् कृष्ण वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे । देवस् त्वा सविता**
  मध्वानक्तु पृथिव्या: स ७ स्पृशस्पाहि । अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥
  - **ॐ यमायत्त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म षित्रे ॥**
  - **चित्रगुप्तादि संयुक्त दण्ड मुद्गर धारम ।**
    आगच्छ भगवन् धर्म सप्त स्तम्भ संस्थित: ॥
  - ॐ यमाय नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-पूर्व-अग्नयोर्मध्ये स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

8. अग्नये कोण नागराजम् कृष्ण वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।**
  येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: ॥
  - **आशीविषसमोपेत नाग कन्या विराजित ।**
    आगच्छ नागराजेन्द्र अष्टम स्तम्भ संस्थित: ॥
  - ॐ नागराजाय नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-अग्नयेकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

9. अग्नि दक्षिणयोर्मध्य स्कन्दम् श्वेत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।**
  श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥
  - **मयूर वाहनं शक्तिपाणिं वै ब्रह्म चारिणम् ।**
    आगच्छ भगवन् स्कन्द नवम स्तम्भ संस्थितः ॥
  - ॐ स्कन्दाय नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-अग्नि-दक्षिणयोर्मध्य स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

10. दक्षिण नैर्ऋत्ययोर्मध्य वायुम् धुम्र वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥**
  - **ध्वज हस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तर चारिणम् ।**
    आगच्छ भगवन् वायो दशम स्तम्भ संस्थितः ॥
  - ॐ वायव्यै नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-दक्षिण नैर्ऋत्ययोर्मध्य स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

11. नैर्ऋत्ये सोमम् पीत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ॥**
  - **सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्य प्रीतिकारम् ।**
    आगच्छ भगवन् सोम एकादश स्तम्भ संस्थितः ॥
  - ॐ सवित्र्यै नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-नैर्ऋति कोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

12. नैर्ऋत्य-पश्चिमयो र्मध्ये वरुणम् श्वेत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ इमं मे वरुण श्श्रुधी हवमद्याचमृडय । त्वामवस्युराचके ॥**
  - **कुम्भीरथ समारुढ मणिरत्न समन्वितम् ।**
    आगच्छ देव वरुण द्वादश स्तम्भ संस्थितः ॥
  - ॐ वरुणाय नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
  - अनेन कृतार्चनेन बाह्य-नैर्ऋत्य पश्चिमकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

13. पश्चिम-वायव्यान्तराले अष्टवसून् श्वेत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा दित्येभ्यस्त्वा**
  संजानाथाम् द्यावापृथिवी मित्रा वरुणो त्वा वृष्ट्यावताम् ।
  व्यन्तु वयोक्त ७ रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा
  पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह । चक्षुष्पा अग्नेसि चक्षुर्मे पाहि ॥

- **अश्वारुढान् दिव्यवस्त्रान् सर्वालंकार भूषितान ।**
  वसवो ष्टावा गच्छन्तु त्रयोदश समाश्रिताः ॥
- ॐ विनतायै नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
- अनेन कृतार्चनेन बाह्य-पश्चिम वायव्य कोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

14. वायव्ये धनदम् पीत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ सोमो धेनु ७ सोमो अर्वन्तमाशु ७ सोमो वीरं कर्मण्य ददाति ।**
  सादन्यं विदत्थ्यं ७ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै ॥
- **दिव्यमालाम्बर धरं गदाहस्तं महाभुजम् ।**
  आगच्छ यक्षराज त्वं शक्र स्तम्भे समाश्रितः ॥
- ॐ आदित्यायै नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
- अनेन कृतार्चनेन बाह्य-वायव्यकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

15. उत्तर वायव्ययोरन्तराले गुरुम् पीत वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु ।**
  यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा त तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
- **शंकु च कलशं चैव पाणिभ्यां हेमविभ्रमम् ।**
  बृहस्पते समागच्छ स्तम्भेस्मिन् सन्निधो भव ॥
- ॐ बृहस्पतये नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
- अनेन कृतार्चनेन बाह्य-उत्तर-वायव्यकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

16. उत्तर ईशानयोर्मध्य विश्वकर्माणं रक्त वर्ण स्तम्भे

- आवाहन **ॐ विश्वकर्मन हविषा वर्द्धनेन, त्रातारमिन्द्रम कृणोरवद्धयम ।**
  तस्मै विशः समनमन्त, पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥
- **त्रैलोक्य सूत्र कर्त्तारम् द्विभुजम् विश्वदर्शितम् ।**
  आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं स्तम्भेस्मिन् सन्निधो भव ॥
- ॐ विश्वकर्मणे नमः । सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।
- अनेन कृतार्चनेन बाह्य-उत्तर-ईशानकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ वलिका (स्तम्भ शिरसि) पूजन ॥

- यजमान मण्डप के पश्चिम द्वार से बाहर आकर मण्डप के सामने पूर्व मुख खड़ा हो।
- अक्षत - फूल लेकर बारहों खम्भों के ऊपरी भाग में (जहाँ बन्धन है) नागमाता का ध्यान करे।

- मंत्र **ॐ आयं गौ पृश्नि रक्रमीद सदन् मातरंपुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥**
  - **ॐ सर्वेषां नाग-राजानां पाताल-तल वासिनाम् ।**
  - **नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिराः ॥** ॐ नाग मात्रे नमः आ.पू. ।

- प्रार्थना **ॐ नमोऽस्तु वलिकावन्ध सुदृढ्त्वं शुभाप्तिदम् ।**
  एनं मंडप सत्रन्तु रक्ष रक्ष निरन्तरम् ॥
  - **शेषादि नाग-राजानः समस्ता मम मण्डपे ।**
  पूजां गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि ॥ फूल बन्धन के ऊपर चढ़ा दे।

- प्रार्थना **ॐ भूमि भूमि मवगान्माता यथा मातरमप्यगात् ।**
  भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्योनो द्वेष्टिस भिद्यताम् ॥
  - **नमस्ते पुण्डरो काक्ष नमस्ते विश्वभावन ।**
  नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वंज ॥ मण्डप भूमि का स्पर्श कर ले।

॥ द्वारपाल पूजन ॥

१. पूर्व द्वारपाल पूजन

- पूर्व द्वार पर आकर उत्तर की ओर मुख करके आसन पर बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
  - संकल्प — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुष्पतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं करिष्यमाण अमुक मूर्तीनां स्थिर प्रतिष्ठा कर्मणि मण्डपाधिष्ठित स्तम्भादि देवतानां द्वारपालानां पूजनं करिष्ये।**
- पूर्व द्वार के दोनों खम्भों के पास १-१ कलश स्थापित कर पंचोपचार पूजा करें। पृ.क्र. 42 देखें।
- कलश स्थापन के बाद दोनों कलशों पर द्वारपाल का आवाहन करे।
  - दाहिने कलश — **ॐ प्रशान्ताय नमः ॥**
  - बायें कलश — **ॐ शिशिराय नमः ॥ पूर्वद्वारपालाभ्यां नमः ॥**
  - प्रतिष्ठा — **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो-त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥**
  - अर्पण — **अनया पूजया पूर्वद्वारपालौ प्रीयेतां न मम ॥**
  - प्रार्थना — **अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।**
    सुप्रसन्नैश्च कर्त्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम् ॥
    - **पूर्व-द्वारपालौ क्षेकर्त्तारौ, तुष्टिकर्त्तारौ वरदौ भवतम् ॥**

२. दक्षिण द्वारपाल पूजन

- दक्षिण द्वार के दोनों खम्भों के पास १-१ कलश स्थापित कर पंचोपचार पूजा करें। पृ.क्र. 42 देखें।
- कलश स्थापन के बाद दोनों कलशों पर द्वारपाल का आवाहन करे।
  - दाहिने कलश — **ॐ पर्जन्याय नमः ॥**
  - बायें कलश — **ॐ अशोकाय नमः ॥ ॐ दक्षिण-द्वारपालाभ्यां नमः ॥**
  - प्रतिष्ठा — **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो-त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥**
  - अर्पण — **अनया पूजया दक्षिण-द्वारपालौ प्रीयेतां न मम ॥**
  - प्रार्थना — **अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।**
    सुप्रसन्नैश्च कर्त्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम् ॥
    - **दक्षिण-द्वारपालौ क्षेकर्त्तारौ, तुष्टिकर्त्तारौ वरदौ भवतम् ॥**

३. पश्चिम द्वारपाल पूजन

- पश्चिम द्वार के दोनों खम्भों के पास १-१ कलश स्थापित कर पंचोपचार पूजा करें। पृ.क्र. 42 देखें।
- कलश स्थापन के बाद दोनों कलशों पर द्वारपाल का आवाहन करे।

  - दाहिने कलश **ॐ भूतर्सजीवनाय नमः ॥**
  - बायें कलश **ॐ अमृताय नमः ॥ ॐ पश्चिम-द्वारपालाभ्यां नमः ॥**
  - प्रतिष्ठा **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो-त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥**
  - अर्पण **अनया पूजया पश्चिम-द्वारपालौ प्रीयेतां न मम ॥**
  - प्रार्थना **अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।**
    सुप्रसन्नैश्च कर्त्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम् ॥
    - **पश्चिम-द्वारपालौ क्षेकर्त्तारौ, तुष्टिकर्त्तारौ वरदौ भवतम् ॥**

४. उत्तर द्वारपाल पूजन

- उत्तर द्वार के दोनों खम्भों के पास १-१ कलश स्थापित कर पंचोपचार पूजा करें। पृ.क्र. 42 देखें।
- कलश स्थापन के बाद दोनों कलशों पर द्वारपाल का आवाहन करे।

  - दाहिने कलश **ॐ धनदाय नमः ॥**
  - बायें कलश **ॐ श्रीपदाय नमः ॥ ॐ उत्तर-द्वारपालाभ्यां नमः ॥**
  - प्रतिष्ठा **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो-त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥**
  - अर्पण **अनया पूजया उत्तर-द्वारपालौ प्रीयेतां न मम ॥**
  - प्रार्थना **अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।**
    सुप्रसन्नैश्च कर्त्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम् ॥
    - **उत्तर-द्वारपालौ क्षेकर्त्तारौ, तुष्टिकर्त्तारौ वरदौ भवतम् ॥**

- जिस आसन पर बैठे हैं उसके नीचे जल छोड़कर उठे।

॥ तोरण (वन्दवार) पूजन ॥

- मण्डप के चारों द्वारा पर तोरण (वन्दनवार) बांधे और उनकी पंचोपचार पूजा करें। पृष्ठ क्र. 00 देखें।
- कुछ पद्धतियों में चारों द्वार पर तोरण पूजन के लिये २-२ कलश स्थापित करने को लिखा है।

❖ पूर्वद्वार तोरण पूजन

- आवाहन — **ॐ आयाहि वज्रसंधात पूर्व द्वार कृताधिप।**
  ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽतुते ॥
  - **प्राचीं तु दिशमाश्रित्य सुदृढो नामतोरणः।**
    महावीर्यो महाकाय इन्द्रायुध समप्रभ ॥ ॐ सुदृढ़ तोरणाय नमः ॥
- प्रार्थना — **ॐ यथा मेरुगिरेः श्रृंगे देवनामालयः सदा।**
  तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानिकोभव ॥

❖ दक्षिण-द्वार तोरण पूजन

- आवाहन — **ॐ औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरण मुत्तमम्।**
  रक्षार्थंञ्चैव वध्नामि कर्मण्य स्मिन् सुखायनः ॥ ॐ सुभद्र तोरणाय नमः ॥
- प्रार्थना — **ॐ यथा मेरुगिरेः श्रृंगे देवनामालयः सदा।**
  तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानिको भव ॥

❖ पश्चिम-द्वार तोरण पूजन

- आवाहन — **ॐ प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरुणं स्वर्ण सन्निभम्।**
  रक्षार्थंञ्चैव वध्नामि कर्मण्य स्मिन् सुखायनः ॥ ॐ सुभीम् तोरणाय नमः ॥
- प्रार्थना — **ॐ यथा मेरुगिरेः श्रृंगे देवनामालयः सदा।**
  तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानिको भव ॥

❖ उत्तर-द्वार तोरण पूजन

- आवाहन — **ॐ न्यग्रोध तोरण मिव उत्तरे च शशि प्रभम्।**
  रक्षार्थंञ्चैव वध्नामि कर्मण्य स्मिन् सुशोभितम् ॥ ॐ सुहोत्र तोरणाय नमः ॥
- प्रार्थना — **ॐ यथा मेरुगिरेः श्रृंगे देवनामालयः सदा।**
  तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानिको भव ॥

॥ दश-दिक्पाल पूजनम् ॥

१. पूर्व द्वार **इन्द्र** पूर्व द्वार पर उत्तर की ओर मुख करके आसन पर बैठ जाये।

- संकल्प — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुष्पतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि मण्डप पूजनान्तर्गत दिक्पालानां पूजनं करिष्ये।

- कलश की स्थापन कर **इन्द्रदेव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।
  - आवाहन — **ॐ सयोषा इन्द्र सगणो मरुद्धिः सोमम् पिद वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रून् रप मृधो नुदा स्वथा भयं कृणुहि विश्वतो नः ॥**
    - **एहि-एहि सर्वामर सिद्ध संघै रभिष्टुतो वज्रधरा मरेश। संवीज्य मानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥**
    - **गजस्कन्ध समारुढं वज्रहस्तं पुरन्दरम्। देवराजं सहस्राक्ष मिन्द्रम् आवाह्याम्यहम् ॥**
    - ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आवाह्यामि पूजयामि ॥
  - अर्पण — **अनया पूजया पूर्व-दिक्पाल इन्द्रो देवः प्रीयेतां न मम ॥**
  - प्रार्थना — **ॐ इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः। शत यज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥**

- कलश के पास १ पीले रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना — **ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम्। ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥**
    - **इमां पातकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभितम्। आलभामि सुरेशाय शचीपत्यै नमोनमः ॥** जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - ॐ कुमुदाक्षाय नमः। आवाह्यामि-पूजयामि ॥ अक्षत झण्डी के पास छोड़ दे।
  - अर्पण — **अनया पूजया प्रीयतां न मम ॥**
  - प्रार्थना — **ॐ इन्द्रस्तु सहसा दीप्तः सहदेवाधिपो भवेत्। वज्रहस्तो महाबाहुस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥**

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर — ॐ इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ॥
  - प्रार्थना — **माष भक्त बलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥**

२. अग्निकोण अग्नि

- अग्निकोण में उत्तर की ओर मुंह करके आसन पर बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **अग्निदेव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।

  - आवाहन — **ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाणस्तव व्रते॥**
    - **एहि-एहि सर्वामर हव्यवाह मुनि प्रवीरै रभितोऽभिजुष्ट। तेजोवता लोकगणेन सार्धम् ममाध्वरं पाहि कवे ! नमस्ते॥**
    - **शक्तिहस्तं ज्वलद्रूपं छागारूढं सुरोत्तमम्। आवाह्यामि तज्ज्वलनं पूजेयं प्रतिगृह्यताम॥**
    - अग्नये नमः। अग्निम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि॥
  - अर्पण — अनया पूजया अग्निकोणस्य-दिक्पाल अग्नि देवः प्रीयेतां न मम॥
  - प्रार्थना — **ॐ सर्वतेजो मयश्चैव रक्तवर्णो महाबलः। शक्तिहस्तो महावीर्यो वैश्वानर नमोऽस्तु ते॥**

- कलश के पास १ लाल रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना — **ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ७ रेता ७ सिजिन्वति॥**
    - **पताका मग्नये रक्तां गन्ध-माल्यादि भूषिताम्। स्वाहा युक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे॥** जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - **ॐ कुमुदाय नमः। आवाह्यामि-पूजयामि॥** अक्षत झण्डी के पास छोड़ दे।
  - अर्पण — **अनया पूजया प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना — **ॐ आग्नेय पुरुषोरक्तः सर्वदेव मयोऽव्ययः॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥**

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर — **ॐ अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥**
  - प्रार्थना — **इमं माष बलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥**

३. दक्षिण द्वार यम

- दक्षिण द्वार पर आकर उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **यमदेव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।

- आवाहन **ॐ यमाय त्वां-गिरस्वते पितृमते स्वाहा।**
  स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पितृमते॥
  - **एहि-एहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरै रर्चित धर्ममुर्त्ते।**
  - **सुरा-सुराणा मधिप प्रजेश यमाय नः पाहि क्रतुं, नमस्ते॥**
  - **महा-महिष मारुढं दण्ड-हस्तं महाबलम्।**
  - **आवाह्यामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥**
  - यमाय नमः। यमम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि॥
- अर्पण **अनया पूजया दक्षिण-दिक्पाल यम देवता प्रीयतां न मम॥**
- प्रार्थना **ॐ दण्डः हस्तः कृष्णवर्णो धर्माध्यक्षो महाबलः।**
  प्रेताधि पतये सततं धर्मराजाय ते नमः॥

- कलश के पास १ काले रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना **ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मद्ध्वा नक्तु पृथिव्याः स ७ स्पृशस्पाही। अर्चि रसि शोचि रसि तपोऽसि॥**
    - **कृष्णवर्णा पताकां च कृष्ण-वर्ण ध्वजं तथा।**
      अन्तका यालभा मीह सत्रकर्माणि साक्षिणे॥ जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - **ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। आवाह्यामि-पूजयामि॥** अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण **अनया पूजया प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ यमश्चोत्पल वर्णाभः किरीट दण्डधृक् सदा।**
    धर्माध्यक्षो विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमोनमः॥

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर **ॐ यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥**
  - प्रार्थना **इमं माष बलिं देव गृहाणान्तक वै यम।**
    सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

४. नैऋत्य निर्ऋति

- नैर्ऋत्य (दक्षिण+पश्चिम) कोण पर आकर उत्तर मुंह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **निर्ऋति देव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।
  - आवाहन — **ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेन-स्येत्या यन्विहि तस्करस्य। अन्य मस्म दिच्छ-सातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥**
    - **ॐ एहि-एहि रक्षोगण नायकस्त्वं विशाल वेताल पिशाच संघैः। ममाध्वरं रक्ष शुभाधिनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन् नमस्ते॥**
    - **ॐ निर्ऋतिं खड्ग-हस्तं च सर्व लोकैक पावनम्।**
    - **आवाह्यामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥**
    - ॐ नैर्ऋतये नमः। निर्ऋतिम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि॥
  - अर्पण — **अनया पूजया नैर्ऋत्य कोणस्य-दिक्पाल निर्ऋतिदेवः प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना — **ॐ यो वै यक्षाधिपो देवो निर्ऋतिर्नील विग्रहः। महाखड्गधरो नित्यं तस्मै निर्ऋतये नमः॥**

- कलश के पास १ नीले रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना — **ॐ नमः सुते निर्ऋते तिग्म तेजोऽयस्मयं विवृता बन्धमेतम्। यमेन त्वं यम्या संविदानोत्तमे नाके अधिरोह यैनम्॥**
    - **ॐ पताकां निर्ऋतिञ्चैव नीलवर्णध्वजं तथा।**
    - **पिशाच गणनाथाय आलभामि ममाध्वरे॥** जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - ॐ वामनाय नमः। आवाह्यामि-पूजयामि॥ अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण — **अनया पूजया प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना — **ॐ निर्ऋतिस्तु पुमान् कृष्णः सर्वरक्षाधिपो महान्। खड्गहस्तो महासत्त्वस् तस्मै नित्यं नमोनमः॥**

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर — **ॐ निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥**
  - प्रार्थना — **इमं माष बलिं यक्षो गृहाण निर्ऋति प्रभो। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥**

५. पश्चिम द्वार वरुण

- पश्चिम द्वार पर आकर पूर्व मुह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **वरुण देव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।
  - आवाहन **ॐ वरुणः प्राविता मुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः॥**
    - **ॐ एहि-एहि पाथोगण नायकस्त्वं गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः।**
      विद्याधरेन्द्रो रग गीयमान पाहि त्व मस्मान् भगवन्नमस्ते॥
    - **ॐ शुद्ध स्फटिक संकाशं जलेशं यादसां पतिम्।**
      आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥
    - ॐ वरुणाय नमः। वरुणम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि॥
  - अर्पण **अनया पूजया पश्चिम-दिक्पाल वरुणदेवः प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ वरुणः सोऽचलो विष्णुः पुरुषो निम्नगाधिपः।**
    पाश हस्तो महातेजस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥

- कलश के पास १ सफेद रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना **ॐ इमं मे वरण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥**
    - **श्वेतवर्णाम् पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्।**
      वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये॥ जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - ॐ शंकुकर्णाय नमः। आवाह्यामि-पूजयामि॥ अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण **अनया पूजया प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसां पतिरीश्वरः।**
    पद्मिनी जीवनाथो हि तस्मै नित्यं नमोनमः॥

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर **ॐ वरुणाय निम्नगाधिपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥**
  - प्रार्थना **माष भक्त बलिं देव गृहाण निम्नगाधिप।**
    सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

६. वायव्यकोण वायु

- वायव्य (पश्चिम+उत्तर) कोण पर आकर पूर्व मुह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **वायु देव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।
  - आवाहन **ॐ वातो वा मनोवा गन्धर्वाः सप्तवि ७ शतिः अग्रेऽश्व मयुञ्जस्ते ऽस्मिन् जव मा दधुः ॥**
    - **ॐ एहि-एहि श्राद्धे मम रक्षणाय मृगाधिरूढ़ः सह सिद्ध संघैः । प्राणाधिपः कालकवेः सहायो गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।**
    - **ॐ अनाकारं महोजञ्च सर्वगन्धवहं प्रभुम् । आवाह्यामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥**
    - ॐ वायवे नमः । वायुम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि ॥
  - अर्पण **अनया पूजया वायव्यकोण-दिक्पाल वायुदेवः प्रीयतां न मम ॥**
  - प्रार्थना **ॐ सर्वप्राणाधिपो नित्यं सर्वजन्तु व्यवस्थितः । ध्वजहस्ते मेघवर्णश्च तस्मै नित्यं नमोनमः ॥**

- कलश के पास १ धूम्र (धुएं) रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना **ॐ वायुरग्ने गा यज्ञ प्रीः साकं गन्मनसां यज्ञम् । शिवो नियुद्धिः शिवाभिः ॥**
    - **पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा । आलभा म्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च ॥** जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - ॐ सर्व नैत्राय नमः । आवाह्यामि-पूजयामि ॥ अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण **अनया पूजया प्रीयतां न मम ॥**
  - प्रार्थना **ॐ वातस्तु सर्ववर्णो यः सर्वगन्ध वहः शुचिः । पुरुषो ध्वज हस्तश्च तस्मै नित्यं नमोनमः ॥**

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर **ॐ वाताधिपाय सर्वप्राणाधिपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि । बलिं भक्ष । सत्रं रक्ष । मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ॥**
  - प्रार्थना **माष भक्त बलिं वायो मया दत्त गृहाण भो । सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥**

७. उत्तर द्वार सोम

- उत्तर द्वार पर आकर पूर्व मुह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **सोम-कुबेर देव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।
  - आवाहन **ॐ वय ७ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥**
    - **ॐ एहि-एहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत् नक्षत्र गणेन सार्धम्।**
      सर्वौषधोभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥
    - **यक्षस्कन्ध समारूढं गदाहस्तं महाबलम्।**
      आवाह्यामि देवेशं पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥
    - ॐ सोम-कुबेराय नमः। सोम-कुबेरम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि॥
  - अर्पण **अनया पूजया उत्तर-दिक्पाल सोम-कुबेर देवः प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ गौरोपम पुमान् स्थूलः सर्वौषधि रसादयः।**
    नक्षत्राधिपतिः सोमः तस्मै नित्यं नमो नमः॥

- कलश के पास १ सफेद रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना **ॐ कुविदंग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनु पूर्णम् वियूय॥**
    इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नम उक्ति यजन्ति॥
    - **श्वेतवर्णाम् पताकां च श्वेत-वर्णमयं ध्वजम्।**
      सोमाय लभाम्येव पूजये च सदार्थिना॥ जल झण्डी के पास छोड़ दे।
  - आवाहन ॐ सुमुखाय नमः। सुमुखम् आवाह्यामि-पूजयामि॥ अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण **अनया पूजया प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ गौरस्त्वं च युगे जातः सर्वौषधि समन्वित।**
    नक्षत्राधिपतिः सौम्यः तस्मे नित्यं नमो नमः॥

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर **ॐ नक्षत्राधिपतये सोमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥**
  - प्रार्थना **माष भक्त बलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद।**
    सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

८. ईशानकोण ईशान (शिव)

- ईशान (उत्तर+पूर्व) कोण पर आकर पूर्व मुह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **शिव (ईशान) देव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।
  - आवाहन **ॐ तमीशानं जगतस् तस्थु षस्पतिं धियञ्जिन्वम से हूमहे वयं। पूषानो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये॥**
    - **ॐ एहि-एहि विश्वेश्वर सिद्धसंधैस् त्रिशूल खट्वांग धरेणसार्धम्। लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥**
    - **सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्। आवाहये तमीशानं लोकाना मभय प्रदम्॥**
    - ॐ शिवाय नमः। ईशानाय नमः। आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि॥
  - अर्पण **अनया पूजया ईशानकोण-दिक्पाल ईशान देवता प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ सर्वदेवाधिपो देवः ईशानः शुक्ल विग्रहः। शूलपाणि र्विरुपाक्षो तस्मै नित्यं नमोनमः॥**

- कलश के पास १ सफेद रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना **ॐ अमित्वा शूरनो नुमोऽदुग्धा इवा धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृश ईशानमिन्द्रतस्थुषः॥**
    - **ॐ ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां समनोहराम्। आलभामि महेशाय वृषारुढ़ाय शूलिने॥** जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - ॐ ईशानाय नमः। ईशानम् आवाह्यामि-पूजयामि॥ अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण **अनया पूजया प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ ईशानः पुरुषः शुक्लः सर्वदेवाधिपो महान्। शूलहस्तो विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥**

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर **ॐ ईशानाय सर्वदेवाधिपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥**
  - प्रार्थना **ॐ इमं माष बलिं देव गृहाणेशान शंकर। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥**

९. नैर्ऋत्य-पश्चिम के मध्य अनन्त

- नैर्ऋत्यकोण और पश्चिम द्वार के बीच आकर पूर्व मुह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **अनन्त देव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।
  - आवाहन **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।**
    ये अन्तरिक्षे ये दिनितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥
    - **ॐ एहि-एहि पाताल धराधरेन्द्र नागांगना किन्नर गीयमाना।**
      यक्षो रगेन्द्राप्सर लोकसंघै रनन्त रक्षाध्वर मस्मदीयम् ॥
    - **निःशेष जगदाधार मशेष सुर पूजितम्।**
      आवाह्यामि सत्रेऽस्मिन् पुजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥
    - ॐ अनन्ताय नमः। अनन्तम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि ॥
  - अर्पण **अनया पूजया अनन्त-दिक्पाल देवता प्रीयतां न मम ॥**
  - प्रार्थना **ॐ पन्नागाधिपतिर्देव अनन्तो नाम धूम्रक।**
    पाताले वसते नित्यम् अनन्ताय नमो नमः ॥

- कलश के पास १ धूम्र (धुए) रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना **ॐ ये वामीरोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु।**
    येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥
    - **ॐ मेघवर्णाम पताकां च मेघवर्ण ध्वजं तथा।**
      आलभामि ह्यनन्ताय धरिणी धारिणे नमः ॥ जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - ॐ धात्रे नमः। धात्रीम् आवाह्यामि-पूजयामि ॥ अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण **अनया पूजया प्रीयतां न मम ॥**
  - प्रार्थना **ॐ इदं योऽनन्त रूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम्।**
    पुष्पवद् धारयेन् मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर **ॐ अनन्ताय सर्व यज्ञाधिपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु ॥**
  - प्रार्थना **ॐ इमं माष बलिं शेष गृहाणानन्तपन्नग।**
    सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

१०.पूर्व द्वार और ईशानकोण के बिच ब्रह्मा

- ईशानकोण और पूर्व द्वार के बीच आकर उत्तर मुह करके बैठ जाय एवं आचमन-प्राणायाम करे।
- कलश की स्थापन कर **ब्रह्मा देव** का कलश पर आवाहन एंव पंचोपचार पूजा करें।

  - आवाहन **ॐ बह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सवध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः॥**
    - **ॐ एहि-एहि विश्वाधियते सुरेश लोकेन सार्धम् पितृदेवताभिः। सर्वस्य धाताऽस्यमित प्रभावो विश्वाध्वरं नः सततं शिवाय॥**
    - **श्वेतहंस समारुढ़ पद्मयोनिं जगद् गुरुम्। आवाह्यामि सत्रेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥**
    - ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि॥
  - अर्पण **अनया पूजया ब्रह्मा-दिक्पाल देवता प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदाधारः पितामः। यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥**

- कलश के पास १ लाल रंग का पताका (झण्डी) लगा दे एवं पंचोपचार पूजा कर दें।
  - प्रार्थना **ॐ ब्रह्मात इन्द्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिद् भुता।**
    - **इमा जुषस्व हर्यश्व योजनेन्द्र याते अमन्महि॥**
    - **पद्मवर्णाम् पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा।**
    - **आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्त शक्तये॥** जल झण्डी के पास छोड़ दे।
    - ॐ विधात्रे नमः। विधात्रीम् आवाह्यामि-पूज्यामि॥ अक्षत छोड़ दे।
  - अर्पण **अनया पूजया प्रीयतां न मम॥**
  - प्रार्थना **ॐ पाताल कुसुमाकारो ब्रह्मसर्वार्थ सूत्रधृक्। सर्वलोक पतिर्ज्येष्ठस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥ पुष्पवद् धारयेन् मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमोनमः॥**

- १ पत्ता पर दही, उरद, घी की वत्ती जला कर कलश के पास रख दे।
  - जल लेकर **ॐ ब्रह्मणे सर्वलोकाधिपतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सतोय दधि, माष, भक्त बलिम् समर्पयामि। बलिं भक्ष। सत्रं रक्ष। मम (यजमानस्य) कल्याणं कुरु॥**
  - प्रार्थना **ॐ इमं माष बलिं ब्रह्मन् गृहाणा कमलाशन। सत्र संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥**

॥ इति दिक्पाल पूजन॥

॥ इन्द्रध्वज पूजनम् ॥

- आवाहनम् — **ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ सुर मिन्द्रम् ।**
  ह्वयामि शक्रम् पुरुहूत मिन्द्र ७ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥
  - ध्वजा का पंचोपचार पूजन करें ।
- प्रार्थना — **ॐ इमं रक्तवर्णन्तु तथा हस्त सुविस्तृतम् ।**
  इन्द्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥
  - **अमुमिन्द्र ध्वजं चित्रं सर्व विघ्न विनाशकम् ।**
    अस्मिन मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने ॥
- अर्पण — अनया पूजया इन्द्रध्वज देवता प्रीयतां न मम् ।

॥ गृह शिख्यादि वास्तु मण्डल देवतानाम् आवाहनम् होम: (नैर्ऋत्य) ॥
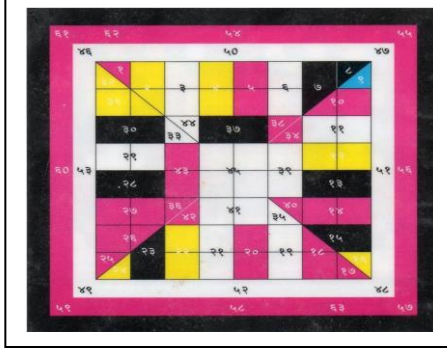
ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा न:।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो ।
मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें।

1. ॐ शिखिने नम:
2. ॐ पर्जन्याय नम:
3. ॐ जयन्ताय नम:
4. ॐ कुलिशायुधाय नम:
5. ॐ सूर्याय नम:
6. ॐ सत्याय नम:
7. ॐ भृशाय नम:
8. ॐ आकाशाय नम:
9. ॐ वायवे नम:
10. ॐ पूष्णे नम:
11. ॐ वितथाय नम:
12. ॐ गृहक्षताय नम:
13. ॐ यमाय नम:
14. ॐ गन्धर्वाय नम:
15. ॐ भृंगराजाय नम:
16. ॐ मृगाय नम:
17. ॐ पितृभ्यो नम:
18. ॐ दौवारिकाय नम:
19. ॐ सुग्रीवाय नम:
20. ॐ पुष्पदंताय नम:
21. ॐ वरुणाय नम:
22. ॐ असुराय नम:
23. ॐ शोषाय नम:
24. ॐ पापाय नम:
25. ॐ रोगाय नम:
26. ॐ अहये / नागाय नम:
27. ॐ मुख्याय नम:
28. ॐ भल्लाटाय नम:
29. ॐ सोमाय नम:
30. ॐ सर्पाय / उरगाय नम:
31. ॐ अदितये नम:
32. ॐ दित्यै नम:
33. ॐ आपाय / अद्भयो नम:
34. ॐ सावित्राय नम:
35. ॐ जयाय नम:
36. ॐ रुद्राय नम:
37. ॐ अर्यम्णे नम:
38. ॐ सवित्रे नम:
39. ॐ विवस्वते नम:
40. ॐ बिबुधाधिपाय नम:
41. ॐ मित्राय नम:
42. ॐ राजयक्ष्मणे नम:
43. ॐ पृथ्वीधराय नम:
44. ॐ आपवत्साय नम:
45. ॐ ब्रह्मणे नम:
46. ॐ चरक्यै नम:
47. ॐ विदार्यै नम:
48. ॐ पूतनायै नम:
49. ॐ पापराक्षस्यै नम:
50. ॐ स्कंदाय नम:
51. ॐ अर्यम्णे नम:
52. ॐ जृम्भकाय नम:
53. ॐ पिलिपिच्छाय नम:
54. ॐ इंद्राय नम:
55. ॐ अग्नये नम:
56. ॐ यमाय नम:
57. ॐ निर्ऋतये नम:
58. ॐ वरुणाय नम:
59. ॐ वायवे नम:
60. ॐ सोमाय / कुबेराय नम:
61. ॐ ईशानाय / ईश्वराय नम:
62. ॐ ब्रह्मणे नम:
63. अनन्ताय नम:

- गृह वास्तु प्रयोग विशेष

64. ॐ उग्रसेनाय नम:
65. ॐ डामराय नम:
66. ॐ महाकालाय नम:
67. ॐ पिलिपिच्छाय नम:
68. ॐ हेतुकाय नम:
69. ॐ त्रिपुरान्तकाय नम:
70. ॐ अग्निवैतालाय नम:
71. ॐ असिवैतालाय नम:
72. ॐ कालाय नम:
73. ॐ करालाय नम:
74. ॐ एकपादाय नम:
75. ॐ भीमरुपाय नम:
76. ॐ खेचराय नम:
77. ॐ तलवासिने नम:

- संकल्प — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् सपत्नीकोऽहं, अमुक-देव / देवी प्रतिष्ठा याग कर्मणि मण्डपांग श्री वास्तु पीठे शिख्यादि वास्तु मण्डल देवतानाम् आवाहनम् स्थापनम् पूजनंच करिष्ये।

- **शंकु (लोहे का कीला) रोपणम्**
- वास्तुपीठ के चारों कोनों पर (अग्नि, नैर्ऋत्य, वायव्य, ईशान) शंकु (लोहे) की कीला गाड़ दे।

  - **ॐ विशन्तु भूतले नागा लोक-पालाश्च सर्वतः।**
    मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु आयुर्बल कराः सदा॥

- कीला गाड़कर १-१ पत्ता में दही-उरद-जल लेकर चारों कोने में [जहाँ कीला गाड़ा है] रख दे।

१. अग्नि कोण में — **ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्वेभ्यो ये चान्येतत् समाश्रिताः।**
वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम्॥

२. नैर्ऋत्यकोण में — **ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः।**
वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम्॥

३. वायव्यकोण में — **ॐ वायव्याधि पतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः।**
वलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुष्पमोदन मुत्तमम्॥

४. ईशानकोण में — **ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तत् समाश्रिताः।**
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सतोत्सुकाः॥

- पूजनम् — शंकु देवताओं का पंचोपचार से पूजन करें।
  - **ॐ शंकु देवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।**

- अर्पण — अनेन शंकुरोपण पूर्वक बलिदानेन चतस्त्र आग्नेयादि शंकु देवता प्रीयन्ताम् न मम।

- यदि मंदिर परिसर में वेदी पूजन हो रहा है, मंदिर की जमीन पक्की है, तो वहाँ कीला गाड़ना सम्भव नहीं होगा, अतः मन्दिर के बाहर चारों कोने में यह कीला गड़वा दे।
- अग्निपुराण में मंदिर प्रासाद के चारों ओर ही कीला (शंकु) गाड़ने को लिखा है।

- **इसके बाद वास्तु पीठ पूजा करे।**

- **रेखा देवता पूजनम्** बाएं हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना पीठ की रेखा (लाइन) ६४ खाना बनाने के लिए जो खींची है उस पर छोड़ें।

- प्रथम प्रागन्ता पूर्व से पश्चिम वाली रेखा पर नाम मंत्र से अक्षत छोड़े।

1. **ॐ लक्ष्म्यै नमः।**
2. **ॐ यशोवत्यै नमः।**
3. **ॐ कान्तायै नमः।**
4. **ॐ सुप्रियायै नमः।**
5. **ॐ विमलायै नमः।**
6. **ॐ शिवायै नमः।**
7. **ॐ सुभगायै नमः।**
8. **ॐ सुमत्यै नमः।**
9. **ॐ इडायै नमः।**

- द्वितीय उद्गन्ता उत्तर से दक्षिण वाली रेखा पर नाम मंत्र से अक्षत छोड़े।

1. **ॐ धन्यायै नमः।**
2. **ॐ प्राणायै नमः।**
3. **ॐ विशालायै नमः।**
4. **ॐ स्थिरायै नमः।**
5. **ॐ भद्रायै नमः।**
6. **ॐ जयायै नमः।**
7. **ॐ निशायै नमः।**
8. **ॐ विरजायै नमः।**
9. **ॐ विभवायै नमः।**

- पूजनम् रेखा देवताओं का पंचोपचार से पूजन करें।
  - ॐ रेखा देवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि स० नमस्करोमि।
  - भो रेखा देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवत।

❖ वास्तु मण्डल के बाहरी ३२ पदों के देव

1. **शिखिने** ईशान शिरसि भगवान शंकर
   - **ॐ तमीशानं जगतस् तस्थुषस्पति न्धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः शिखिने नमः। शिखिनम् आ० स्था०। भो शिखिन् इहागच्छ इहतिष्ठ।
2. **पर्जन्याय** ई.+अ. १ पद दक्षिण नेत्र वर्षा के देव वृष्टिमान
   - **ॐ महाँ२ इन्द्रोय ओजसा पर्जन्यो वृष्ट्टिमाँ २ इवा स्तोमैर्वत्त्सस्य वावृधे। उपयाम गृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः। पर्जन्यम् आ० स्था०। भो पर्जन्य इहागच्छ इहतिष्ठ।
3. **जयन्ताय** ई.+अ. २ पद दक्षिण श्रोत्र भगवान कश्यप
   - **ॐ उदुत्यन् जातवेदसन् देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः जयन्ताय नमः। जयन्तम् आ० स्था०। भो जयन्त इहागच्छ इहतिष्ठ।
4. **कुलिशायुधाय** ई.+अ.३ पद दक्षिण अंसे देवराज इंद्र
   - **ॐ इन्द्र आसान् नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेना नामभि भञ्जती नाञ्जयन्ती नाम्मरुतो यन्त्वग्रम्॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः कुलिशायुधाय नमः। कुलिशायुधम् आ०स्था०। भो कुलिशायुध इ०इ०।

5. **सूर्याय** ई.+अ. ४ पद दक्षिण बाहौ भगवान सूर्य
- **ॐ सूर्य रश्मिर्हरिकेश: पुरस्तात् सविता ज्योति रुदयां२ अजस्रम् । तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान् सम्पशश्यन् विश्वा भुवनानि गोपा: ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः सूर्याय नम: । सूर्यम् आ० स्था० । भो सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ ।

6. **सत्याय** ई.+अ. ५ पद दक्षिण प्रबाहौ धर्मराज
- **ॐ व्रतेन दीक्षा माप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः सत्याय नम: । सत्यम् आ० स्था० । भो सत्य इहागच्छ इहतिष्ठ ।

7. **भृशाय** ई.+अ. ६ पद दक्षिण कूर्परे कामदेव
- **ॐ भायै दार्वाहारम् प्रभायाऽ अग्न्येधम् ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन् देवलोकाय पेशितारम् मनुष्यलोकाय प्रकरितार ७ सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमव ऋत्त्यैवधायो पमन्थितारम् मेधाय वास:पल्पूलीम् प्रकामाय रजयित्रीम् ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः भृशाय नम: । भृशम् आ० स्था० । भो भृश इहागच्छ इहतिष्ठ ।

8. **आकाशाय** ई.+अ. ७ पद दक्षिण प्रबाहौ अंतरिक्ष नभोदेव
- **ॐ ह ७ स: शुचिषद् वसुरन्त रिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद् वरसदृत सद्द्यो म सदब्जा गोज ऋतजा अद्रिजा ऋतम् वृहत् ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः आकाशाय नम: । आकाशम् आ० स्था० । भो आकाश इहा० इह० ।

9. **वायवे** अग्निकोण दक्षिण प्रबाहौ मारुत, अनिल, वायुदेव
- **ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुद्ध्यसे । गर्भे संजायसे पुन: ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः वायवे नम: । वायुम् आ० स्था० । भो वायो इहागच्छ इहतिष्ठ ।

10. **पूष्णे** अ.+नै. १ पद मणिबंध मातृगण
- **ॐ पूषा पंचाक्षरेण पंच दिश उदजयत्ता उज्जेष ७ सविता षडक्षरेण षड्तूनुदजयतानुज्जेषम् मरुत: सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशूनुदजयँस्तानुज्जेम् बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्री मुदजयत्ता मुज्जेषम् ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः पूष्णे नम: । पूषणम् आ० स्था० । भो पूषन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

11. **वितथाय** अ.+नै. २ पद दक्षिण पार्श्व अधर्म
- **ॐ सविता प्रथमे हन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमा: पञ्चम ऋतु: षष्ठे मरुत: सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे । मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः वितथाय नम: । वितथम् आ० स्था० । भो वितथ इहागच्छ इहतिष्ठ ।

12. गृहक्षताय अ.+नै. ३ पद दक्षिण पार्श्व बुध देव

- **ॐ गृहामा बिभीत मा वेद्ध्वमूर्जम् विभ्रत एमसि।**
  ऊर्जम् बिभ्रद्वः सुमनाःसुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः।
- ॐ भुर्भुवः स्वः गृहक्षताय नमः। गृहक्षतम् आ० स्था०। भो गृहक्षत इहागच्छ इहतिष्ठ।

13. यमाय अ.+नै. ४ पद दक्षिण उरुभागे यमराज

- **ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन।**
  असि सोमेन समया विपृक्तऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः यमाय नमः। यमम् आ० स्था०। भो यम इहागच्छ इहतिष्ठ।

14. गन्धर्वाय अ.+नै. ५ पद दक्षिण जानौ पुलम, गातु

- **ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान् ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽ ईडितः॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वम् आ० स्था०। भो गन्धर्व इहागच्छ इहतिष्ठ।

15. भृंगराजाय अ.+नै. ६ पद दक्षिण जंघायां नैऋति देव

- **ॐ कस्त्वा युनक्ति सत्वा युनक्ति कस्मैत्वा युनक्ति तस्मैत्वा युनक्ति।**
  कर्मणे वां वेषाय वाम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः भृंगराजाय नमः। भृंगराजम् आ० स्था०। भो भृंगराज इहा० इह०।

16. मृगाय अ.+नै. ७ पद दक्षिण स्फिचि

- **ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।**
  श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः मृगाय नमः। मृगम् आ० स्था०। भो मृग इहागच्छ इहतिष्ठ।

17. पितृभ्यो नैर्ऋत्य कोण दक्षिण पादतले पितृलोक के देव

- **ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधा यिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधा यिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरो तीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः। पितृन् आ० स्था०। भो पितरः इहागच्छ इहतिष्ठ।

18. दौवारिकाय नै.+वा. १ पद वाम स्फिचि भगवान नंदी, द्वारपाल

- **ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति व्याधी महारथो जायतान् दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान् निकामे**

निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः दौवारिकाय नमः । दौवारिकम् आ० स्था० । भो दौवारिक इहा० इह० ।

19. सुग्रीवाय नै.+वा. २ पद वाम जंघायां प्रजापति मनु

- **ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतन् तीव्र जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवम् आ० स्था० । भो सुग्रीव इहागच्छ इहतिष्ठ ।

20. पुष्पदंताय नै.+वा. ३ पद वाम जानौ वायुदेव

- **ॐ नक्षत्रेभ्यः स्वाहा, नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा, होरात्रेभ्यः स्वाहा, धमासेभ्यः स्वाहा, मासेभ्यः-स्वाहा, ऋतुभ्यः-स्वाहा, र्तवेभ्यः-स्वाहा, संवत्सराय स्वाहा, द्यावापृथिवीभ्या ७ स्वाहा, चन्द्राय-स्वाहा, सूर्याय-स्वाहा, रश्मीभ्यः-स्वाहा, वसुभ्यः-स्वाहा, रुद्रभ्यः-स्वाहा, दित्येभ्यः-स्वाहा, मरुद्धभ्यः-स्वाहा, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, मूलेभ्यः स्वाहा, शाखाभ्यः स्वाहा, वनस्पतिभ्यः-स्वाहा, पुष्पेभ्यः-स्वाहा, फलेभ्यः-स्वाहा, औषधीभ्यः-स्वाहा ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः पूष्पदन्ताय नमः । पुष्पदन्तम् आ० स्था० । भो पुष्पदन्त इहा० इह० ।

21. वरुणाय नै.+वा. ४ पद वाम उरौ जल, समुद्र के देव लोकपाल

- **ॐ वरुणस्योत्तम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो । वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन मासीद ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः वरुणाय नमः । वरुणम् आ० स्था० । भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ ।

22. असुराय नै.+वा. ५ पद वाम पार्श्वे सिंहीका पूत्र राहु

- **ॐ ये रुपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्नि ष्टाँल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात् ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः असुराय नमः । असुरम् आ० स्था० । भो असुर इहागच्छ इहतिष्ठ ।

23. शोषाय नै.+वा. ६ पद वाम पार्श्वे शनिश्चर

- **ॐ असवे स्वाहा, वसवे स्वाहा, विभुवे स्वाहा, विवस्वते स्वाहा, गणश्रिये स्वाहा, गणपतये स्वाहा, भिभुवे स्वाहा, धिपतये स्वाहा, शूषाय स्वाहा, स ७ सर्पाय स्वाहा, चन्द्राय स्वाहा, ज्योतिषे स्वाहा, मलिम्लुचाय स्वाहा, दिवा पतयते स्वाहा ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः शोषाय नमः । शोषम् आ० स्था० । भो शोष इहागच्छ इहतिष्ठ ।

24. पापाय नै.+वा. ७ पद वाम बाहौ क्षय

- **ॐ अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः । अरं वहन्ति मन्यवे ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः पापाय नमः । पापम् आ० स्था० । भो पाप इहागच्छ इहतिष्ठ ।

25. **रोगाय** वायव्य कोण वाम बाहौ ज्वर

- **ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखन्त्विषि: केशाश्च श्मश्रुणि।**
राजा मे प्राणो अमृत ७ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः रोगाय नमः। रोगम् आ० स्था०। भो रोग इहागच्छ इहतिष्ठ।

26. **अहये / नागाय** वा.+ई. १ पद वाम प्रबाहौ नाग, वाशुकी

- **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु।**
ये अन्तिरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः अहये नमः। अहिम् आ० स्था०। भो अहे इहागच्छ इहतिष्ठ।

27. **मुख्याय** वा.+ई. २ पद वाम कूर्परे भगवान विश्वकर्मा

- **ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघ श ७ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः मुख्याय नमः। मुख्यम् आ० स्था०। भो मुख्य इहागच्छ इहतिष्ठ।

28. **भल्लाटाय** वा.+ई. ३ पद वाम बाहौ येति, चन्द्रदेव

- **ॐ घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद ऽ आसीद घृताच्य-स्युपभृन् नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद - आसीद घृताच्यसिद् ध्रुवा नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद ऽ आसीद प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद ऽ आसीद। ध्रुवा असद नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञम् पाहि यज्ञपतिम् पाहि मां यज्ञन्यम्॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः भल्लाटाय नमः। भल्लाटम् आ० स्था०। भो भल्लाट इहा० इह०।

29. **सोमाय** वा.+ई. ४ पद वाम बाहौ भगवान कुबेर

- **ॐ वय ७ सोम व्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोमम् आ० स्था०। भो सोम इहागच्छ इहतिष्ठ।

30. **सर्पाय** वा.+ई. ५ पद वाम अंसे भगवान शेषनाग, भुजग

- **ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजा ७ सि।**
यो अस्कभायदुत्तर ७ सधस्थं विचक्रमाण स्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सर्पाय नमः। सर्पम् आ० स्था०। भो सर्प इहागच्छ इहतिष्ठ।

31. **अदितये** वा.+ई. ६ पद वाम श्रोत्र देवमाता, मतांतर से देवी लक्ष्मी

- **ॐ अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः।**
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः अदितये नमः। अदितिम् आ० स्था०। भो अदिते इहागच्छ इहतिष्ठ।

32. दित्यै वा.+ई. ७ पद वाम नेत्रे दैत्यमाता

- **ॐ ये देवा देवेष्वधि देवत्व मायन्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य । येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधिस्नुषु ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः दित्यै नमः । दितिम् आ० स्था० । भो दिते इहागच्छ इहतिष्ठ ।

33. अद्भयो / आपाय ईशान वाम मुखे हिमालय

- **ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः । अपः आ० स्था० । भो आप इहागच्छ इहतिष्ठ ।

34. सावित्राय आग्नेय दक्षिण हस्ते गंगा

- **ॐ वसोः पवित्रामसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः सावित्राय नमः । सावित्रम् आ० स्था० । भो सावित्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

35. जयाय नैर्ऋत्य नैर्ऋत्यपद उत्तरार्धे हरि इंद्र

- **ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातन्ते अर्वन् ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः जयाय नमः । जयम् आ० स्था० । भो जय इहागच्छ इहतिष्ठ ।

36. रुद्राय वायव्य वाम हस्ते भगवान महेश्वर

- **ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽ पापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभि चाकशीहि ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः रुद्राय नमः । रुद्रम् आ० स्था० । भो रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

37. अर्यम्णे पूर्व दक्षिण स्तने आदित्य देव

- **ॐ अर्यमणम् बृहस्पतिं इन्द्रं दानाय चोदय । वाचं विष्णुं ७ सरस्वतीं ७ सवितारं च वाजिन ७ स्वाहा ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः । अर्यमणम् आ० स्था० । भो अर्यमन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

38. सवित्रे आग्नेय दक्षिण हस्ते वेदमाता गायत्री

- **ॐ उदुत्यन् जातवेदसन् देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः सवित्रे नमः । सवितारम् आ० स्था० । भो सवितः इहागच्छ इहतिष्ठ ।

39. विवस्वते दक्षिण दक्षिण जठर मृत्युदेव

- **ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्तऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः विवस्वते नमः । विवस्वन्तम् आ० स्था० । भो विवस्वन् इहा० इह० ।

40. बिबुधाधिपाय नैर्ऋत्य नैर्ऋत्यपद पूर्वार्धे

- **ॐ सबोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन् ।**
  युयोद्ध्य स्मद्द्वेषा ७ सि विश्वकर्मणे स्वाहा ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः विबुधाधिपाय नमः । विबुधाधिपम् आ० स्था० । भो विबुधाधिप इहा० इह० ।

41. मित्राय पश्चिम वाम जठर हलदर

- **ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोवो देवस्य सानसि । द्युम्नचित्र श्श्रवस्तमम् ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः मित्राय नमः । मित्रम् आ० स्था० । भो मित्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

42. राजयक्ष्मणे वायव्य वाम हस्ते भगवान कार्तिकेय

- **ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शस ऽ उपचितामसि ।**
  अथो शतस्य यक्ष्माणाम् पाकारोरसि नाशनी ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः पावनाय नमः । पावनम् आ० स्था० । भो पावन इहागच्छ इहतिष्ठ ।

43. पृथ्वीधराय उत्तर वाम स्तने भगवान अनन्त शेषनाग

- **ॐ यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये ।**
  यदेनश्चकृमा वयमिदन् तदव यजामहे स्वाहा ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः पृथ्वीधराय नमः । पृथवीधरम् आ० स्था० । भो पृथ्वीधर इहा० इह० ।

44. आपवत्साय ईशान उरसि भगवान शिव की अर्धांगिनी उमा

- **ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः आपवत्साय नमः । आपवत्सम् आ० स्था०। भो आपवत्स इहा० इह०।

45. ब्रह्मणे **मध्य** हृद-नाभ्यां

- **ॐ ब्रह्म यज्ञानम् प्रथमम् पुरस्ताद्विसीमतः सुरुची वेन आवः ।**
  सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिम सतश्चविवः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मामणम् आ० स्था० । भो ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

❖ **वास्तु मण्डल के बाहर प्रथम मेखला यानि श्वेत परिधि ईशानादि क्रम से**

46. चरक्यै - ईशान **ॐ इन्धानास्त्वा शत ७ हिमा द्युमन्त ७ समिधीमहि ।**
वयस्वन्तो वयस्कृत ७ सहस्वन्तः सहस्कृतम् ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः चरक्यै नमः । चरकीम् आ० स्था० । भो चरकि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

47. विदार्यै - अग्निकोण **ॐ असुन्वन्तम यजमानम् इच्छस्ते नस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।**
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः विदार्यै नमः । विदारीम् आ० स्था० । भो विदारि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

48. पूतनायै नैर्ऋत्यकोण

- **ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः पूतनायै नमः। पूतनाम् आ० स्था०। भो पूतने इहागच्छ इहतिष्ठ।

49. पापराक्षस्यै वायव्यकोण

- **ॐ इन्द्र आसान् नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेना नामभि भञ्जती नाञ्जयन्ती नाम्मरुतो यन्त्वग्रम्॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः। पापराक्षसीम् आ० स्था०। भो पापराश्रसि इहा० इह०।

❖ **वास्तु मण्डल के बाहर प्रथम मेखला यानि श्वेत परिधि पूर्वादि क्रम से**

50. स्कन्दाय - पूर्व **ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँ ऽ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दम् आ० स्था०। भो स्कन्द इहागच्छ इहतिष्ठ।

51. अर्यम्णे - दक्षिण **ॐ यदद्य सूर उदितेऽ नागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविताभगः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः। अर्यमणम् आ० स्था०। भो अर्यमन इहागच्छ इहतिष्ठ।

52. जृम्भकाय - पश्चिम **ॐ सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय केवर्त्तन् तीर्थेभ्य आन्दं विषमेभ्यो मैनाल ऽ स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरात ऽ सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भकाय नमः। जृम्भकम् आ० स्था०। भो जृम्भक इहा० इह०।

53. पिलिपिच्छाय उत्तर

- **ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिद् महन्तं वलागमुत्किरामि यम्मेनिष्टयो पममात्यो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यम समानो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यस्मे सबन्धुर्यम संबधुर्निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि।**
- ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छाय नमः। पिलिपिच्छम् आ० स्था०। भो पिलिपिच्छ इहा०इह०।

❖ **वास्तु मण्डल के बाहर द्वितीय मेखला यानि रक्तपरिधी के इन्द्रादी दशदिक्पाल देव**

54. इन्द्राय - पूर्व **ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र ऽ हवेहवे सुहव ऽ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ऽ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आ० स्था०। भो इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ।

55. अग्नये - अग्निकोण **ॐ त्वन्नो अग्ने तव देव पायुभिम्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाणस्तव व्रते ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः अग्नये नमः। अग्निम् आ० स्था०। भो अग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ।

56. यमाय - दक्षिण **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः यमाय नमः। यमम् आ० स्था०। भो यम इहागच्छ इहतिष्ठ।

57. निर्ऋतये नैर्ऋत्य कोण

- **ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छ स्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ- सात ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिम् आ० स्था०। भो निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ठ।

58. वरुणाय - पश्चिम **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ समा न आयुः प्रमोषीः॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणम् आ० स्था०। भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ।

59. वायवे - वायुकोण **ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ७ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुम् आ० स्था०। भो वायो इहागच्छ इहतिष्ठ।

60. सोमाय - उत्तर **ॐ वय ७ सोम व्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोमम् आ० स्था०। भो सोम इहागच्छ इहतिष्ठ।

61. ईशानाय - ईशान **ॐ तमीशानं जगतस्त स्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम। पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानम् आ० स्था०। भो ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ।

62. ब्रह्मणे - ई.+पूर्व मध्य **ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ७ सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणम् आ० स्था०। भो ब्रह्मन इहागच्छ इहतिष्ठ।

63. अनन्ताय प.+नैर्ऋत्य मध्य

- **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः। अनन्तम् आ० स्था०। भो अनन्त इहागच्छ इहतिष्ठ।

64. वास्तुपुरुष प.+नैर्ऋत्य मध्य

- ॐ भुर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः। वास्तोष्पतिम् आ०स्था०। भो वास्तु इहा०इह०।

❖ **कलश स्थापनम्** वेदी के मध्य में सप्तधान्य या अक्षत पुंज रखकर कलश को स्थापित करें।

- मंत्र **ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमाना तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।**
अहेडमानो बोरुणेह बोध्यरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः॥
  - कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः। शिख्यादि वास्तु मण्डल देवताभ्यो नमः।
सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।

❖ अग्न्युतारण / प्राण प्रतिष्ठा विधि

- यदि वास्तु पुरूष की मूर्ति हो तो उसका अग्न्युतारण कर स्थापित कर पूजन करें।
- वास्तु मूर्ति को एक पात्र में पान के पत्ते पर रखकर उसमें घी लगाकर संकल्प कर अग्न्युतारण करें।

- संकल्प ॐ पूर्वोच्चरित एवं ग्रह-गुण-गण विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ, अमुक-गोत्र, अमुक-नामाऽहं अस्यां वास्तु मूर्तौ अवधातादिदोष-परिहारार्थम् अग्न्युतारणं देवता सान्निध्यर्थं च प्राण-प्रतिष्ठां करिष्ये।

- अब मूर्ति में घृत का लेपन कर दुग्धयुक्त जलधारा प्रदान करें।
  - **ॐ समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥१॥**
  - **ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्यायामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥२॥**
  - **ॐ उप ज्मन्मुप वेत सेऽवत्तर नदीष्वा।**
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमं नो यज्ञ पावकवर्ण ७ शिवं कृधि ॥ ३ ॥
  - **ॐ अपामिदं न्ययन ७ समुद्रस्य निवेशनम्।**
अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ४ ॥
  - **ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वा। आ देवान् वसि यक्षि च ॥ ५ ॥**
  - **ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ २ ऽइहा वहा। उप यज्ञ ७ हविश्च नः ॥ ६ ॥**
  - **ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामंत्रु रुच ऽउषसो न भानुना।**
तूर्वन्न यामनेतस्य नू रण ऽआयो घृणेन ततृषाणो ऽअजरः॥ ॥ ७ ॥
  - **ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे।**
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ८ ॥
  - **ॐ नृषदेवेडप्सुषदे-वेड् बर्हिषदे-वेड् वनसदे-वेट् स्वर्विदे-वेट्॥ ॥ ९ ॥**
  - **ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ७ संवत्सरोणमुप भागमासते।**
अहुतादो हविषो यज्ञें ऽअस्मिन् स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ ॥१०॥
  - **ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रम्हाणः पुर ऽएतारो ऽअस्य।**
येभ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न प्रथिव्या ऽअधिस्नुषु ॥११॥

- **ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदा: ।**
  अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतय: पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव ॥ ॥१२॥

❖ **प्राण-प्रतिष्ठा** मूर्ति को बायें हाथ पर रखें तथा दायें हाथ से ढक कर प्राणप्रतिष्ठा करें।

- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य वास्तु मूर्ते प्राणा इह प्राणा: ।**
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य वास्तु मूर्ते जीव इह स्थित: ।**
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य वास्तु मूर्ते वाङ मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्र-जिव्हा-घ्राण पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।**
  - **अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च ।**
    अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन ॥

- आह्वान विशेष आवहन् विधि (वेदी पूजन) पुस्तक से लें।
  - **ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रुपाण्याविशन् ।**
    सखा सुशेव एधि न:॥ अक्षत चढायें।
  - ॐ शिख्यादि वास्तु मंडल देवताभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि ॥

- पूजनम् पुरुष-सूक्त मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। **पृष्ठ क्र. 07** देखें।
  - पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, वस्त्रं, यज्ञोपवितं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं-पमष्पमालां, नानापरिमलं, इत्रं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, द्रव्य, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम् ।

- अर्घ्यम् **पूज्योसि त्रिषु लोकेषु यज्ञ रक्षार्थ हेतवे ।**
  तद् विनार्चनं सिद्धयन्ति यज्ञ दानान्यनेकश: ॥
  - **अयोने भगवन भर्ग ललाटस्वेद सम्भव ।**
    गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तो: स्वामिन् नमोस्तुते ॥
  - शिख्यादि वास्तु मंडल सहित वास्तु पुरुषाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

- प्रार्थना **पूजितोऽसि मयावास्तो हेमाद्यैरर्चनै: शुभै: ।**
  प्रसीद पाहि विश्वेश देहिमे सुखमोत्तमम् ॥
  - **नमस्ते वास्तु पुरुष भू शय्याभिरत प्रभो ।**
    मद्गृहे धन धान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा ॥
  - **स शैल सागरां पृथिवीं यथा वहसि मूर्धनि ।**
    तथा मां वह कल्याण सम्पत् सन्ततिभि: सह ॥
  - **यथामेरुगिरे: श्रृंगे देवानामालय: सदा ।**
    तथा ब्रह्मादि देवानां प्रसादेऽस्मिन् स्थिरो भव ॥

- **नमस्ते वास्तु देवेश सर्वदोष हरो भव ।**
  शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे ॥
- शिख्यादि वास्तु मंडल सहित वास्तु पुरुषाय नमः । प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि ।

- अर्पण — अनेन यथाशक्ति ध्यान आवाहनादि षोडशोपचारै अन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन ॐ शिख्यादि वास्तु मण्डल देवता सहितो वास्तु पुरुषः प्रीयन्ताम् न मम ।

- बलिदानम् — कहीं-कहीं पर बलि का विधान है । एक पत्ता पर दही, उरद, जल लेकर बलि दें ।
- **ॐ नाना पक्वान्न संयुक्तं नाना गन्ध समन्वितम् ।**
  बलिं गृहाण देवेश वास्तु दोष प्रणाशक ॥

- संकल्प — ॐ भूर्भुवः स्वः शिख्यादि वास्तुमंडल देवता सहितं वास्तुपुरुषं पूजयामि ।
- मंडल देवता सहिताय वास्तुपुरुषाय सांगाय । सपरिवाराय । सायुधाय ।
  सशक्तिकाय इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि ॥

- हाथ जोडकर रखें — भो भो मंडल देवता सहित वास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु । मम गृहे आयु: कर्ता । क्षेमकर्ता । शांतिकर्ता । पुष्टिकर्ता । तुष्टिकर्ता । निर्विघ्नकर्ता । कल्याणकर्ता वरदो भव ।

- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन मंडल देवता सहित वास्तुपुरुषः प्रीयतां न मम् ।

- पावमान सुक्त का पाठ करते हुए मण्डप के बाहर से त्रिसूत्री वेष्टन करें ।

- पावमान सूक्त — **ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः । पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः । पवित्रेण शतायुषा विश्वम् आयुर्व्यश्नवै ॥** ॥ १ ॥
- **ॐ अग्ने आयू ७ षि पवस आसु वोर्जमिषं च नः ।**
  आ रे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ॥ २ ॥
- **ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।**
  पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनाहिमा ॥ ॥ ३ ॥
- **ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् ।**
  अग्ने क्रत्वा क्रतूं रनु ॥ ॥ ४ ॥
- **ॐ यत्ते पवित्रम् अर्चिष्यग्ने वितत मन्तरा ।**
  ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ ॥ ५ ॥
- **ॐ पावमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षिणि ।**
  यः पोता स पुनातु मा ॥ ॥ ६ ॥

॥ क्षेत्रपाल मण्डल देवतानां पूजनम् (वायव्यकोण-पश्चिम-उत्तर) ॥
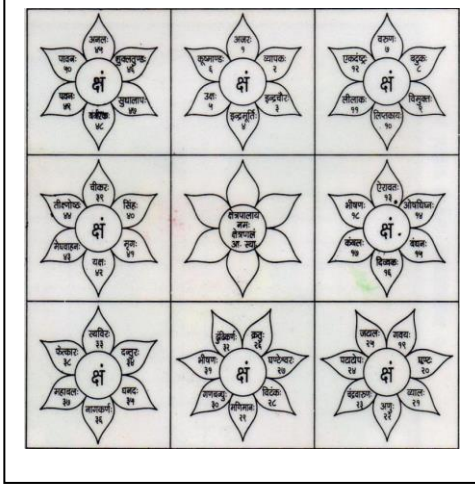
ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु।
ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यो : सर्पेभ्यो नमः ॥

यं यं यं यक्ष रूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ती शुभ मुकुट जटाशेखरम् चन्द्रबिम्बम् ॥

दं दं दं दीर्घकायं विकृतनख मुखं चौर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥

१. ॐ क्षेत्रपालाय नमः
२. ॐ अजराय नमः
३. ॐ व्यापकाय नमः
४. ॐ इन्द्रचौराय नमः
५. ॐ इन्द्रमूर्तये नमः
६. ॐ उक्षाय नमः
७. ॐ कूष्माण्डाय नमः
८. ॐ वरुणाय नमः
९. ॐ बटुकाय नमः
१०. ॐ विमुक्ताय नमः
११. ॐ लिप्तकायाय नमः
१२. ॐ लीलाकाय नमः
१३. ॐ एकदंष्ट्राय नमः
१४. ॐ ऐरावताय नमः
१५. ॐ ओषधिघ्नाय नमः
१६. ॐ बन्धनाय नमः
१७. ॐ दिव्यकाय नमः
१८. ॐ कम्बलाय नमः
१९. ॐ भीषणाय नमः
२०. ॐ गवयाय नमः
२१. ॐ घण्टाय नमः
२२. ॐ व्यालाय नमः
२३. ॐ अणवे नमः
२४. ॐ चन्द्रवारुणाय नमः
२५. ॐ पटाटोपाय नमः
२६. ॐ जटालाय नमः
२७. ॐ क्रतवे नमः
२८. ॐ घण्टेश्वराय नमः
२९. ॐ विटंकाय नमः
३०. ॐ मणिमानाय नमः
३१. ॐ गणबन्धवे नमः
३२. ॐ डामराय नमः
३३. ॐ ढुण्ढिकर्णाय नमः
३४. ॐ स्थविराय नमः
३५. ॐ दन्तुराय नमः
३६. ॐ धनदाय नमः
३७. ॐ नागकर्णाय नमः
३८. ॐ महाबलाय नमः
३९. ॐ फेत्काराय नमः
४०. ॐ चीकराय नमः
४१. ॐ सिंहाय नमः
४२. ॐ मृगाय नमः
४३. ॐ यक्षाय नमः
४४. ॐ मेघवाहनाय नमः
४५. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः
४६. ॐ अनलाय नमः
४७. ॐ शुक्लतुण्डाय नमः
४८. ॐ सुधालापाय नमः
४९. ॐ बर्बरकाय नमः
५०. ॐ पवनाय नमः
५१. ॐ पावनाय नमः

- ॐ भूभुर्वः स्वः क्षेत्रपाल मण्डल देवताभ्यो नमः। क्षेत्रपालम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

❖ **मध्य चतुरस्त्रे अष्टदल पद्मे क्षेत्रपाल मुर्तिं निधाय क्षेत्रपालं स्थापयेत् ॥**

- **संकल्प** अद्यपूर्वोच्चारित एवं शुभ पुण्य तिथौ मया प्रारब्धस्य देव प्रतिष्ठा कर्मणि अजरादि मण्डल देवता सहित एकोन पंचाशत् क्षेत्रपाल देवानां स्थापन प्रतिष्ठा पूजनानि करिष्ये।

1. **क्षेत्रपालाय** **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।**
ये अन्तिरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: ॥
   - ॐ भुर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः। क्षेत्रपालम् आ० स्था०। भो क्षेत्रपाल इहा० इह०।

❖ **पूर्व दिशा** प्रथम कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे)

2. **अजराय** **ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्त्रु रुच ऽ उषसो नभानुना।**
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽ आ यो घृणे न ततृषाणो अजर: ॥
   - ॐ भुर्भुवः स्वः अजराय नमः। अजरम् आ० स्था०। भो अजर इहागच्छ इहतिष्ठ।

3. **व्यापकाय** **ॐ प्रथमा वा ७ सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा।**
अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योति: प्रदिशा दिशन्ता ॥
   - ॐ भुर्भुवः स्वः व्यापकाय नमः। व्यापकम् आ० स्था०। भो व्यापक इहा० इह०।

4. **इन्द्रचौराय** **ॐ इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभि:।**
सेमान्नो हव्यदाति जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय ॥
   - ॐ भुर्भुवः स्वः इन्द्रचौराय नमः। इन्द्रचौरम् आ० स्था०। भो इन्द्रचौर इहा० इह०।

5. **इन्द्रमूर्तये** **ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कै:।**
स न स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभि: सदा न: ॥
   - ॐ भुर्भुवः स्वः इन्द्रमूर्तये नमः। इन्द्रमूर्तिम् आ० स्था०। भो इन्द्रमूर्ते इहा० इह०।

6. **उक्षाय** **ॐ उक्षा समुद्रो अरुण: सुपर्ण: पूर्वस्य योनिम् पितुरा विवेश।**
मध्ये दिवो निहित: पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ॥
   - ॐ भुर्भुवः स्वः उक्षाय नमः। उक्षम् आ० स्था०।। भो उक्ष इहागच्छ इहतिष्ठ।

7. **कूष्माण्डाय** **ॐ यद्देवा देव हेडनन् देवासश्च कृमावयम्।**
आग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचन्त्व ७ हस: ॥
   - ॐ भुर्भुवः स्वः कूष्माण्डाय नमः। कूष्माण्डम् आ० स्था०। भो कूष्माण्ड इहा० इह०।

❖ **अग्निकोण** द्वितीय कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे)

8. **वरुणाय** **ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके ॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणम् आ० स्था०। भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ।

9. **बटुकाय** **ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद वैश्वानरात पुर एतारमग्ने:।**
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवा॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः बटुकाय नमः। बटुकम् आ० स्था०। भो बटुक इहागच्छ इहतिष्ठ।

10. **विमुक्ताय** **ॐ मुंचन्तु मा शपथ्या दथो वरुण्यादुत।**
अथो यमस्य पड्वीशात् सर्वस्माद्देवकिल्विषात्॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः। विमुक्तम् आ० स्था०। भो विमुक्त इहागच्छ इहतिष्ठ।

11. **लिप्तकामाय** **ॐ कुर्वन्ने वेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ७ समाः।**
एवन्त्व यिनान्यथे तोस्तिन कर्म लिप्यते नरे॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः लिप्तकामाय नमः। लिप्तकायम् आ० स्था०। भो लिप्तकाय इहा० इह०।

12. **लीलाकाय** **ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्टयै गोपालं वीर्यायाविपालन् तेजसे जपाल मिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहप ७ श्रेयसे वित्तधमा ध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः लीलाकाय नमः। लीलाकम् आ० स्था०।। भो लीलाक इहा० इह०।

13. **एकदंष्ट्राय** **ॐ सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता।**
यत्रानरः संच विचन्द्र वन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्मय ७ सन॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः। एकदंष्ट्रम् आ० स्था०। भो एकदंष्ट्र इहा० इह०।

❖ **दक्षिण दिशा** तृतीय कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे)॥

14. **ऐरावताय** **ॐ प्रजापतये च, वायवे च, गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गवयी क्षिप्रश्यनाय वर्तिका नीलंगोः कृमिः समुद्राय शिशुमारो हिमवते हस्ती॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः ऐरावताय नमः। ऐरावतम् आ० स्था०। भो ऐरावत इहागच्छ इहतिष्ठ।

15. **ओषधिघ्नाय** **ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सहराज्ञा।**
यस्मै कृणोति ब्राह्माणस्त ७ राजन् पारयामसि॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः ओषधिघ्नाय नमः। ओषधिघ्नम् आ० स्था०। भो ओषधिघ्न इहा० इह०।

16. **बन्धनाय** **ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्।**
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः। बन्धनम् आ० स्था०। भो बन्धन इहागच्छ इहतिष्ठ।

17. **दिव्यकाय** **ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञम् प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।**
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः दिव्यकाय नमः। दिव्यकम् आ० स्था०। भो दिव्यक इहागच्छ इहतिष्ठ।

18. कम्बलाय — **ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णा सूत्रेण कवयो वयन्ति।**
अश्विना यज्ञ ७ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यम्॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः। कम्बलम् आ० स्था०। भो कम्बल इहागच्छ इहतिष्ठ।

19. भीषणाय — **ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।**
संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शतं ७ सेना अजयत् साकमिन्द्रः॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः भीषणाय नमः। भीषणम् आ० स्था०। भो भीषण इहागच्छ इहतिष्ठ।

❖ **नैर्ऋत्य कोण** — चतुर्थ कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे)

20. गवयाय — **ॐ इम ७ साहस्र ७ शतधारमुत्सं व्यच्यमान ७ सरिरस्य मध्ये।**
घृतन् दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हि ७ सीः परमे व्योमन्॥
गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो नीषीद।
गवयन्ते शुगृच्छतु यन्द्विष्मस्तन्ते शुगृच्छतु।

- ॐ भुर्भुवः स्वः गवयाय नमः। गवयम् आ० स्था०। भो गवय इहागच्छ इहतिष्ठ।

21. घण्टाय — **ॐ कुम्भोवनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे, योऽन्यां गर्भोऽयतः।**
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽ उत्सो दुहे न, कुम्भी स्वधाम् पितृभयः॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः घण्टाय नमः। घण्टम् आ० स्था०। भो घण्ट इहागच्छ इहतिष्ठ।

22. व्यालाय — **ॐ आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्ठनिहि दुरिता बाधमानः।**
अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः व्यालाय नमः। व्यालम् आ० स्था०। भो व्याल इहागच्छ इहतिष्ठ।

23. अणवे — **ॐ इन्द्रयाहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः अणवे नमः। अणुम् आ० स्था०। भो अणो इहागच्छ इहतिष्ठ।

24. चन्द्रवारुणाय — **ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।**
रयिम् पिशङ्गम् बहुलम् पुरुस्पृह ७ हरिरेति कनिक्रदत्॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः। चन्द्रवारुणम् आ० स्था०। भो चन्द्रवारुण इहा० इह०।

25. पटाटोपाय — **ॐ स्वांकृतोसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्य स्त्वा मरीचिपेभ्यो देवा ७ शो यस्मै त्वेडे तत् सत्य मुपरिप्लुता भङ्गेन हतो सौ फट् प्राणायत्वा व्यानायत्वा॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः पटाटोपाय नमः। पटाटोपम् आ० स्था०। भो पटाटोप इहा० इह०।

❖ **पश्चिम दिशा** — पंचम कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे) ।

26. जटालाय — **ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ७ सौव्रत्येन रुद्रन् दौर्व्रत्यनेन्द्रम् प्रक्रीडन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा । भवस्य कण्य ७ रुद्रस्यान्त:पार्श्वम् महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः जटालाय नमः । जटालम् आ० स्था० । भो जटाल इहागच्छ इहतिष्ठ ।

27. क्रतवे — **ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् । अग्ने क्रत्वा क्रतूँ १ रनु ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः क्रतवे नमः । क्रतुम् आ० स्था० । भो क्रतो इहागच्छ इहतिष्ठ ।

28. घण्टेश्वराय — **ॐ आजिघ्र कलशम् मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्तस्व सानः सहस्रन् धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः । घण्टेश्वरम् आ० स्था० । भो घण्टेश्वर इहा० इह० ।

29. विटंकाय — **ॐ वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रन् दिविष्टिषु । आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः विटंकाय नमः । विटंकम् आ० स्था० । भो विटंक इहागच्छ इहतिष्ठ ।

30. मणिमानाय — **ॐ दैव्या होतारा भिषजेन्द्रेण सयुजा युजा । जगती च्छन्द ऽ इन्द्रियम नड्वान् गौर्वयो दधुः ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः मणिमानाय नमः । मणिमानम् आ० स्था० । भो मणिमान इहा० इह० ।

31. गणबन्धवे — **ॐ त्रीणित आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे । उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं जनित्रम् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः गणबन्धवे नमः । घणबन्धुम् आ० स्था० । भो गणबन्धो इहा० इह० ।

❖ **वायव्य कोण** — षष्ठम कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे) ।

32. डामराय — **ॐ प्रतिश्रुत्काया ऽ अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनम नन्ताय मूक ७ शब्दाया डम्बराघातम् महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्मम वरस्पराय शंखध्मं वनाय वनपमन् न्यतोरण्याय दावपम् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः डामराय नमः । डामरम् आ० स्था० । भो डामर इहागच्छ इहतिष्ठ ।

33. दुण्ढिकर्णाय — **ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः ढुण्ढिकर्णाय नमः । दुण्ढिकर्णम् आ० स्था० । भो ढुण्ढिकर्ण इहा० इह० ।

34. स्थविराय — **ॐ बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान ऽ उग्रः । अभिवीरो ऽ अभिसत्वा सहोजा जैत्र मिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः स्थविराय नमः । स्थविरम् आ० स्था० । भो स्थविर इहागच्छ इहतिष्ठ ।

35. दन्तुराय — **ॐ सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्रसूता।**
यत्रा नरः संच वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म य ७ सन्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः। दन्तुरम् आ० स्था०। भो दन्तुर इहागच्छ इहतिष्ठ।

36. धनदाय — **ॐ अग्नेऽ अच्छा वदेहनः प्रतिनः सुमनाभव।**
प्रनो यच्छ सहस्त्र जित्त्व ७ हि धनदाऽ असि स्वाहा॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः। धनदम् आ० स्था०। भो धनद इहागच्छ इहतिष्ठ।

37. नागकर्णाय — **ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः॥**
स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवा ७ सस्तनूभि व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः नागकर्णाय नमः। नागकर्णम् आ० स्था०। भो नागकर्ण इहा० इह०।

❖ **उत्तर दिशा** — सप्तम कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे)

38. महाबलाय — **ॐ बाहू मे बलमिन्द्रिय ७ हस्तौ मे कर्म वीर्य्यम्। आत्मा क्षत्र मुरो मम॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः। महाबलम् आ० स्था०। भो महाबल इहा० इह०।

39. फेत्काराय — **ॐ अपाम् फेनेन नमुचेः शिरः इन्द्रोदवर्त्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः। फेत्कारम् आ० स्था०। भो फेत्कार इहागच्छ इहतिष्ठ।

40. चीकराय — **ॐ इद ७ हविः प्रजननम् मे अस्तु दशवीरः सर्वगण ७ स्वस्तये।**
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजाम्
बहुलाम् मे करोत्वन्नम् पयो रेतो अस्मासु धत्त॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः चीकराय नमः। चीकरम् आ० स्था०। भो चीकर इहागच्छ इहतिष्ठ।

41. सिंहाय — **ॐ या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकञ्च रक्षति।**
श्येनम् पतत्रिण ७ सि ७ ह ७ सेमम् पात्व ७ हसः॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः। सिंहम् आ० स्था०। भो सिंह इहागच्छ इहतिष्ठ।

42. मृगाय — **ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।**
सृक ७ स ७ शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि व्मि मृधो नुदस्व॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः। मृगम् आ० स्था०। भो मृग इहागच्छ इहतिष्ठ।

43. यक्षाय — **ॐ देवहूर्यज्ञ ऽ आ च वक्षत्सुम्नहूर्यज्ञ ऽ आ च वक्षत्।**
यक्षदग्निर्देवो देवाँ२ आ च वक्षत्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षाय नमः। यक्षम् आ० स्था०। भो यक्ष इहागच्छ इहतिष्ठ।

44. मेघवाहनाय — **ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे।**
अनाविद्धया तन्वा जय त्व ७ स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः। मेघवाहनम् आ० स्था०। भो मेघवाहन इहा० इह०।

❖ **ईशान दिशा** अष्टम कोष्टक (ईशान कोण से पूजा करते हुवे)

45. तीक्ष्णोष्ट्राय **ॐ तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयोश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः ।**
अवक्रामन्तः प्रपदैर मित्रान्क्षिणन्ति शत्रूँ १ रनपव्ययन्तः ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः तीक्ष्णोष्ट्राय नमः । तीक्ष्णोष्ट्रम् आ०स्था० । भो तीक्ष्णोष्ट्र इहा०इह० ।

46. अनलाय **ॐ वायुष्ट्वा पचतैरवत्व सितग्रीवश्छा गैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्धया ।**
एष स्य राथ्यो वृषा पड्भिश्चतुर्भिरेदगन् ब्रह्मा कृष्णश्च नोवतु नमोग्नये ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः अनलाय नमः । अनलम् आ० स्था० । भो अनल इहागच्छ इहतिष्ठ ।

47. शुक्लतुण्डाय **ॐ अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम् म्यन्तरिक्षस्य धर्त्री विष्टम्भनी**
न्दिशामधिपत्नी भुवनानाम् । ऊर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त
ऋषिरश्विनाद् ध्वर्यु सादयतामिह त्वा ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः शुक्लतुण्डाय नमः । शुक्लतुण्डम् आ० स्था० । भो शुक्लतुण्ड इहा० इह० ।

48. सुधालापाय **ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रम्पृणातु ते ।**
सूर्यस्तु नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः सुधालापाय नमः । सुधालापम् आ० स्था० । भो सुधालाप इहा० इह० ।

49. बर्बरकाय **ॐ सम्बर्हिरङ्क्ता ७ हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः ।**
समिन्द्रो विश्वदेवे भिरङ्क्तान् दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः बर्बरकाय नमः । बर्बरकम् आ० स्था० । भो बर्बरक इहागच्छ इहतिष्ठ ।

50. पवनाय **ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः पवनाय नमः । पवनम् आ० स्था० । भो पवन इहागच्छ इहतिष्ठ ।

51. पावनाय **ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।**
इमं यज्ञन् नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्यवत्ते ॥

- ॐ भुर्भुवः स्वः पावनाय नमः । पावनम् आ० स्था० । भो पावन इहागच्छ इहतिष्ठ ।

- वेदी के मध्य में सप्तधान्यादि रखकर एक सुसज्जित कलश स्थापित कर प्रतिष्ठा करें ।
- प्राण-प्रतिष्ठा ॐ **अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।**
अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन ॥
    - ॐ अजरादि क्षेत्रपाल देवाः सुप्रतिष्ठता वरदा भवन्तु ।

- पीठ पूजनम् पुरुष सूक्त के मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें ।
- अर्पण अजरादि मण्डल देवताः प्रीयन्ताम् न मम् ।

- **पीठ पर ताम्र कलश स्थापित करे।**
- वेदी के मध्य में सप्तधान्य या अक्षत पुंज रखकर पहले से सुसज्जित कलश को स्थापित करें।
- मंत्र **ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमाना तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो बोरुणेह बोध्यरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः॥**
  - कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः। अजरादि क्षेत्रपाल मण्डल देवताभ्यो नमः। सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।

- **अग्न्युतारण / प्राण प्रतिष्ठा विधि**
- कलश के ऊपर क्षेत्रपाल की सुवर्ण प्रतिमा या सोपारी या नारियल सविधि स्थापित करें।
- क्षेत्रपाल मूर्ति को एक पात्र में पान के पत्ते पर रखकर उसमें घी लगाकर संकल्प कर अग्न्युतारण करें।
- संकल्प ॐ पूर्वोच्चरित एवं ग्रह-गुण-गण विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ, अमुक-गोत्र, अमुक-नामाऽहं अस्यां क्षेत्रपाल मूर्तौ अवधातादिदोष-परिहारार्थम् अग्न्युतारणं देवता सान्निध्यर्थं च प्राण-प्रतिष्ठां करिष्ये।

- अब मूर्ति में घृत का लेपन कर दुग्धयुक्त जलधारा प्रदान करें।
  - **ॐ समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव ॥१॥**
  - **ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्यायामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव ॥२॥**
  - **ॐ उप ज्मन्मुप वेत सेऽवत्तर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेभं नो यज्ञ पावकवर्ण ७ शिवं कृधि ॥ ३ ॥**
  - **ॐ अपामिदं न्ययन ७ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ४ ॥**
  - **ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वा। आ देवान् वसि यक्षि च ॥ ५ ॥**
  - **ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ २ ऽइहा वहा। उप यज्ञ ७ हविश्च नः ॥ ६ ॥**
  - **ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामंत्रु रुच ऽउषसो न भानुना। तूर्वन्न यामनेतस्य नू रण ऽआयो घृणेन ततृषाणो ऽअजरः॥ ॥ ७ ॥**
  - **ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ८ ॥**
  - **ॐ नृषदेवेडप्सुषदे-वेड् बर्हिषदे-वेड् वनसदे-वेट् स्वर्विदे-वेट्॥ ॥ ९ ॥**
  - **ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ७ संवत्सरोणमुप भागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञें ऽअस्मिन् स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ ॥१०॥**
  - **ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रम्हाणः पुर ऽएतारो ऽअस्य।**

येभ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न प्रथिव्या ऽअधिस्नुषु ॥११॥

- **ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदा: ।**
  अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतय: पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव ॥ ॥१२॥

- **प्राण-प्रतिष्ठा**
- मूर्ति को शुद्ध जल से धोकर बायें हाथ पर रखें तथा दायें हाथ से ढक कर प्राणप्रतिष्ठा करें।
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य वास्तु मूर्ते प्राणा इह प्राणा: ।**
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य वास्तु मूर्ते जीव इह स्थित: ।**
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य वास्तु मूर्ते वाङ मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्र-जिव्हा-घ्राण पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।**
  - **अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च ।**
    अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन ॥

- क्षेत्रपाल मूर्ति को पंचामृत से स्नान कराकर पुरुष-सुक्त के मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें।

- आवाहन
  ॐ नहिस्पश मविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात् पुर एतार मग्ने: ।
  एमे नम बृघन्न मृता अमर्त्यम् वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवा: ॥
  - **ॐ भूतप्रेत पिशाचाद्यैराबृतं शूल पाणिनम् ।**
    आवाहये क्षेत्रपालंतु कर्मण्यस्मिन् सुखायन: ॥
  - ॐ भूर्भुव: स्व: क्षेत्रपालाय नम: क्षेत्रपालं आवाहयामि स्थापयामि । भो क्षेत्रपाल इहागच्छ इहतिष्ठा ।

- प्रार्थना
  कौलिरे चित्रकूटे हिमगिरिविवरे शस्त्रजालांधकारे,
  सौराष्ट्रे सिंधुदेशे मगधपुरवरे कोसले वा कलिंगे ।
  कर्णाटे कोकणे वा भृगुसुतनगरे कान्यकुब्जस्थिते वा,
  सर्वस्मात् सर्वदा वा हयपमृति भयत: पातु व: क्षेत्रपाल: ॥

- अर्पण
  अनेन कृतार्चनेन अजरादि क्षेत्रपाल देवता प्रीयतां न मम ।

- अजरो व्यापकश्चैव इन्द्रचौरस्तृतीयक: ।
  इन्द्रमूर्तिश्चतुर्थस्तु उक्ष: पंचमउच्यते ।
  षष्ठ: कूष्माण्ड नामा च वरुण: सप्तम: स्मृत: ।
  अष्टमो बटुकश्चैव विमुक्तो नवमस्तथा ।
  लिप्तकायस्तु दशमो लीलाक: रुद्रसंख्यक: ।
  एकदंष्ट्र: द्वाद्शकस्तथा च ऐरावत: स्मृत: ।
  आषधिघ्नस्तत: प्रोक्तो बंधनो दिव्यकस्तथा ।
  कंबलो भीषणश्चैव गवयो घंट एव च ।
  व्यालश्चैव तथाणुश्च चंद्रवारुण एव च ।
  पटाटोपश्चतुर्विंश: जटाल: पंचविंशक: ।
  क्रतु नामा च षड्विंश: तथा घंटेश्वर:स्मृत. ।
  विटंको मणिमानश्च गणबंधुश्च डामर: ।
  ढुंढिकर्णोऽपर: प्रोक्त: स्थविरस्तु तत: पर: ।
  दंतुरो धनदश्चैव नागकर्णो महाबल: ।
  फेत्कारश्चीकर सिंह: मृगो यक्षस्तथा पर: ।
  मेघवाहन नामा च तीक्ष्णोष्ठो हयनलस्तथा ।
  शुक्लतुंड: सुंधालाप: तथा बर्बरक:स्मृत: ।
  पवन: पावनश्चैव हयेवं क्षेत्राधिपा:स्मृता: ॥

॥ इति क्षेत्रपाल मण्डल देवता स्थापनम् पूजनम् समाप्तम् ॥

॥ चतु:षष्ठि योगिनी मण्डलम् (अग्निकोण) ॥

महाकाली ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

महालक्ष्मी ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। ईष्णन्निषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण॥

महासरस्वती ॐ पावका न: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसु:॥

स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें।

1. ॐ गजाननायै नम:
2. ॐ सिंह मुख्यै नम:
3. ॐ गृध्रास्यै नम:
4. ॐ काक तुण्डिकायै नम:
5. ॐ उष्ट्र ग्रीवायै नम:
6. ॐ हय ग्रीवायै नम:
7. ॐ वाराह्यै नम:
8. ॐ शरभाननायै नम:
9. ॐ उलूकिकायै नम:
10. ॐ शिवारावायै नम:
11. ॐ मायूर्यै नम:
12. ॐ विकटाननायै नम:
13. ॐ अष्ट वक्त्रायै नम:
14. ॐ कोटराक्ष्यै नम:
15. ॐ कुब्जायै नम:
16. ॐ विकटलोचनायै नम:
17. ॐ शुष्कोदर्यै नम:
18. ॐ ललज्जिह्वायै नम:
19. ॐ श्वदंष्ट्रायै नम:
20. ॐ वानराननायै नम:
21. ॐ रुक्षाक्ष्यै नम:
22. ॐ केकराक्ष्यै नम:
23. ॐ बृहत्तुण्डायै नम:
24. ॐ सुरा प्रियायै नम:
25. ॐ कपाल हस्तायै नम:
26. ॐ रक्ताक्ष्यै नम:
27. ॐ शुक्यै नम:
28. ॐ श्येन्यै नम:
29. ॐ कपोतिकायै नम:
30. ॐ पाश हस्तायै नम:
31. ॐ दण्ड हस्तायै नम:
32. ॐ प्रचण्डायै नम:
33. ॐ चण्ड विक्रमायै नम:
34. ॐ शिशुघ्न्यै नम:
35. ॐ पाप हन्त्र्यै नम:
36. ॐ काल्यै नम:
37. ॐ रुधिर पायिन्यै नम:
38. ॐ वसा धयायै नम:
39. ॐ गर्भ भक्षायै नम:
40. ॐ शव हस्तायै नम:
41. ॐ आन्त्र मालिन्यै नम:
42. ॐ स्थूल केश्यै नम:
43. ॐ बृहत्कुक्ष्यै नम:
44. ॐ सर्पास्यायै नम:
45. ॐ प्रेत वाहनायै नम:
46. ॐ दन्द शूक करायै नम:
47. ॐ क्रौञ्च्यै नम:
48. ॐ मृगशीर्षायै नम:
49. ॐ वृषाननायै नम:
50. ॐ व्यात्तास्यायै नम:
51. ॐ धूमनि: श्वासायै नम:
52. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नम:
53. ॐ तापिन्यै नम:
54. ॐ शोषणीदृष्ट्यै नम:
55. ॐ कोटर्यै नम:
56. ॐ स्थूल नासिकायै नम:
57. ॐ विद्युत्प्रभायै नम:
58. ॐ बलाकास्यायै नम:
59. ॐ मार्जार्यै नम:
60. ॐ कटपूतनायै नम:
61. ॐ अट्टाट्टहासायै नम:
62. ॐ कामाक्ष्यै नम:
63. ॐ मृगाक्ष्यै नम:
64. ॐ मृगलोचनायै नम:

❖ योगिनी मण्डलस्य मध्य कोष्टके महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीनां स्थापनम्

- **संकल्प** — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती पूजन पूर्वक दिव्यादि चतुःषष्टि योगिनीनां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

- **महाकालि** — **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥**
  - ॐ भुर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः। महाकालीम् आ० स्था०। भो महाकालि इहा० इह०।

- **महालक्ष्मी** — **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। ईष्णान्निषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण॥**
  - ॐ भुर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीम् आ० स्था०। भो महालक्ष्मि इहा० इह०।

- **महासरस्वती** — **ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥**
  - ॐ भुर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः। महासरस्वतीम् आ० स्था०। भो महासरस्वति इहा० इह०।

❖ **प्रथम कोष्टक - पूर्व** — **ॐ विजयायै नमः। विजयाम आ० स्था ०।**

1. **गजाननायै** - ईशान — **ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः गजाननायै नमः। गजाननाम् आ० स्था०। भो गजानने इहा० इह०।

2. **सिंहमुख्यै** - दक्षिणे — **ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽ तिवयाधी महारथो जायतान् दोग्ध्री धेनुर्वोढान ड्ढानाशः सप्पित पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्टाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः सिंहमुख्यै नमः। सिंहमुखीम् आ० स्था०। भो सिंहमुखि इहा० इह०।

3. **गृध्रास्यै** - पश्चिम — **ॐ महाँ२ इंद्रोय ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ२ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः गृध्रास्यायै नमः। गृध्रास्याम् आ० स्था०। भो गृध्रास्ये इहा० इह०।

4. काकतुण्डिकायै- पश्चिम — **ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम भवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृत हविरदन्तु देवाः॥**
   - ॐ भुर्भुवः स्वः काकतुण्डिकायै नमः। काकतुण्डिम् आवाह्यामि स्थापयामि। भो काकतुण्डिके इहागच्छ इहतिष्ठ।

5. **उष्ट्रग्रीवायै** - उत्तर **ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्धि सहस्रस्य प्रतिमा विश्वरूपम् । परिवृङ्घ हरसा माभिमस्था शतायुषं कृणुहि चीयमानः॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः उष्ट्रग्रीवायै नमः । उष्ट्रग्रीवाम् आ० स्था० । भो उष्ट्रग्रीवे इहा० इह० ।

6. **हयग्रीवायै** - उत्तर **ॐ स्वर्ण धर्म स्वाहा, स्वर्णार्क स्वाहा, स्वर्ण शुक्रः स्वाहा, स्वर्ण ज्योति स्वाहा, स्वर्ण सूर्य स्वाहा ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः हयग्रीवायै नमः । हयग्रीवाम् आ० स्था० । भो हयग्रीवे इहा० इह० ।

7. **वाराह्यै** - पूर्व **ॐ सत्यंच मे, श्रद्धाच में, जगच्च में, धनंच मे, विश्वंच मे, महश्च में, क्रीडाच मे, मोदश्च मे, जातंच मे, जनिष्यमाणंच मे, सूक्तंच मे, सुकृतंच मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः । वाराहीम् आ० स्था० । भो वाराही इहागच्छ इहतिष्ठ ।

8. **शरभाननायै** - पूर्व **ॐ भार्यै दार्वाहारम् प्रभाया अग्न्येधम् ब्रद्धनस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वार्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन् देवलोकाय पेशितारम् मनुष्य लोकाय प्रकरितारः सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमव ऋत्यै वधायो पमन्थितारम् मेधाय वासः पल्पूलीम् प्रकामायरजयित्रीम् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः शरभाननायै नमः । शरभाननाम् आ० स्था० । भो शरभानने इहा० इह० ।

❖ **द्वितीय कोष्टक - अग्नि कोण** **ॐ अजितायै नमः । अजिताम आ० स्था ० ।**

9. **उलूकिकायै**-ईशान **ॐ जिह्वा में भद्रं वाङ्मयहो मनो मन्युः स्वराड्भामः । मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रम् मे सहः ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः उलूकिकायै नमः । उलूकिकाम् आ० स्था० । भो उलूकिके इहा० इह० ।

10. **शिवारावायै**-दक्षिण **ॐ हिंकाराय स्वाहा, हिंकृताय स्वाहा, क्रन्दते स्वाहा, वक्रन्दाय स्वाहा, प्रोथते स्वाहा, प्रप्रोथाय स्वाहा, गन्धाय स्वाहा, घ्राताय स्वाहा, निविष्टाय स्वाहो, पविष्टाय स्वाहा, सन्दिताय स्वाहा, वल्गते स्वाहा, सीनाय स्वाहा, शयानाय स्वाहा, स्वपते स्वाहा, जाग्रते स्वाहा, कूजते स्वाहा, प्रबुद्धाय स्वाहा, विजृम्भमाणाय स्वाहा, विचृताय स्वाहा, स ७ हानाय स्वाहो, पस्थिताय स्वाहा, यनाय स्वाहा, प्रायणाय स्वाहा ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः शिवारावायै नमः । शिवारावाम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो शिवारावे इहा० इह० ।

11. **मयूर्यै** - पश्चिम **ॐ अग्निश्चम, आपश्चमे, वीरुधश्चम, ओषधयश्चमे, कृष्टपच्याश्चमे, कृष्टपच्याश्चमे, ग्राम्याश्चमे, पशव आरण्याश्चमे, वित्तञ्चमे, वित्तिश्चमे, भूतञ्चमे, भूतिश्चमे, यज्ञेन कल्ल्पन्ताम् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः मयूर्यै नमः । मयूरीम् आ० स्था० । भो मयूरि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

12. **विकटाननायै**-पश्चिम **ॐ पूषन्तव व्रते वयन्नरिष्येम कदाचन् । स्तोतारस्त ऽइहस्मसि ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः विकटाननायै नमः । विकटाननाम् आ० स्था० । भो विकटानने इहा० इह० ।

13. **अष्टवक्रायै** - उत्तर **ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम् । यूपेन यूप आप्यते प्रणीतोऽ अग्निरग्निना ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवक्रायै नमः । अष्टवक्राम् आ० स्था० । भो अष्टवक्रे इहा० इह० ।

14. **कोटराक्ष्यै** - उत्तर **ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः । मूर्द्धा कवी रयीणाम् ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः कोटराक्ष्यै नमः । कोटराक्षीम् आ० स्था० । भो कोटराक्षि इहा० इह० ।

15. **कुब्जायै** - पूर्व **ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः कुब्जायै नमः । कुब्जम् आ० स्था० । भो कुब्जे इहागच्छ इहतिष्ठ ।

16. **विकटलोचनायै**-पूर्व **ॐ यमा यत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहाः घर्मः पित्रे ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः विकटलोचनायै नमः । विकटलोचनाम् आ० स्था० । भो विकटलोचने इहा० इह० ।

❖ **तृतीय कोष्टक - दक्षिण** **ॐ अपराजितायै नमः । अपराजिताम आ० स्था ० ।**

17. **शुष्कोदर्यै**-ईशान **ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदद्यातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्नि-रिडईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्नि-रिडईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान् ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडईडितः ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः शुष्कोदर्यै नमः । शुष्कोदरीम् आ० स्था० । भो शुष्कोदरि इहा० इह० ।

18. **ललजिह्वायै**-दक्षिण **ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोवो देवस्य सानसि । द्युम्नञ्चित्रश्रवस्तमम् ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः ललजिह्वायै नमः । ललजिह्वम् आ० स्था० । भो ललजिह्वे इहा० इह० ।

19. **श्वदंष्ट्रायै** - पश्चिम **ॐ अग्ने ब्रह्म ग्रभ्णीष्व धरूणमस्यन्तरिक्षन्दृ ७ हब्रह्मवनित्त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्यवधाय । धर्त्रमसिदिवन्दृ ७ ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय । विश्वाभ्यस्त्वा शाभ्य उपदधामि चितस्थोर्द्धचितो भृगूणा मङ्गिरसान् तपसा तप्यद्ध्वम् ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः श्वदंष्ट्रायै नमः । श्वदंष्ट्राम् आ० स्था० । भो श्वदंष्ट्रे इहागच्छ इहतिष्ठ ।

20. **वानराननायै**-पश्चिम **ॐ भगप्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान् धियमुदवा ददन्नः । भग प्रनो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः वानराननायै नमः । वानराननाम् आ० स्था० । भो वानरानने इहा० इह० ।

21. **ऋक्षाक्ष्यै** - उत्तर **ॐ सुपर्णोसि गुरुत्कमान पृष्ठे पृथिव्याः सीद।**
भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिश उद ७ ह॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः रुक्षाक्ष्यै नमः। रुक्षाक्षीम् आ० स्था०। भो रुक्षाक्षि इहागच्छ इहतिष्ठ।

22. **केकराक्ष्यै** - उत्तर **ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मद्धयमाः पितरः सोम्यसः।**
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः केकराक्ष्यै नमः। केकराक्षीम् आ० स्था०। भो केकराक्षि इहा० इह०।

23. **बृहत्तुण्डायै** - पूर्व **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्ज्जनीस्थो। वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः बृहत्तुण्डायै नमः। बृहत्तुण्डाम् आ० स्था०। भो बृहत्तुण्डे इहा० इह०।

24. **सुराप्रियायै** - पूर्व **ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतान्नः सुराधसः॥**
- ॐ भुर्भुवः स्वः सुराप्रियायै नमः। सुराप्रयाम् आ० स्था०। भो सुराप्रिये इहा० इह०।

❖ **चतुर्थ कोष्टक - नैर्ऋत्य** **ॐ क्षेम कर्त्र्यै नमः। क्षेमकर्त्रीम आ० स्था ०।**

25. **कपालहस्तायै**-ईशान **ॐ ह ७ सः शुचिषद्द्व सुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।**
नृषद्वरसदृतसद्व्योम सदब्जा गोजाऽ ऋतजाऽ अद्रिजाऽ ऋतम् बृहत्॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः कपालहस्तायै नमः। कपालहस्ताम् आ० स्था०। भो कपालहस्ते इहा० इह०।

26. **रक्ताक्ष्यै** - दक्षिण **ॐ सुसन्दृशन् त्वा वयम् मघवन् वन्दिषीमहि।**
प्रनूनम् पूर्ण वन्धुर स्तुतो यासिवशाँ२ अनुयोजान्विन्द्रतेहरी॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः रक्ताक्ष्यै नमः। रक्ताक्षीम् आ० स्था०। भो रक्ताक्षि इहागच्छ इहतिष्ठ।

27. **शुष्क्यै** - पश्चिम **ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा**
सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोसि तेजसे त्वा॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः शुक्यै नमः। शुक्रीम् आ० स्था०। भो शुकि इहागच्छ इहतिष्ठ।

28. **श्येन्यै** - पश्चिम **ॐ देवीर् द्वारो ऽ अश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती।**
प्राणन्न वीर्यन्नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः श्येन्यै नमः। श्येनीम् आ० स्था०। भो श्येनि इहागच्छ इहतिष्ठ।

29. **कपोतिकायै**-उत्तर **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।**
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्टवा साम्राज्येना
भिषिञ्चाम्यसौ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः कपोतिकायै नमः। कपोतिकाम् आ० स्था०। भो कपोतिके इहा० इह०।

30. पाशहस्तायै - उत्तर **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येना भिषिञ्चामि॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः पाशहस्तायै नमः। पाशहस्ताम् आ० स्था०। भो पाशहस्ते इहा० इह०।

31. दण्डहस्तायै - पूर्व **ॐ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धान न्दधिषे स्वर्षा ञ्जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डहस्तायै नमः। दण्डहस्ताम् आ० स्था०। भो दण्डहस्ते इहा० इह०।

32. प्रचण्डायै - पूर्व **ॐ कदाचन स्तरीरसिनेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेनु मघवन् भूय इनु ते दान न्देवस्य पृच्यते॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डायै नमः। प्रचण्डाम् आ० स्था०। भो प्रचण्डे इहागच्छ इहतिष्ठ।

❖ **पंचम कोष्टक - पश्चिम** **ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीम् आ० स्था ०।**

33. चण्ड विक्रमायै-ईशान **ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः॥ स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डविक्रमायै नमः। चण्डविक्रमाम् आ० स्था०। भो चण्डविक्रमे इहा० इह०।

34. शिशुघ्न्यै - दक्षिण **ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघश ७ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः। शिशुघ्नीम् आ० स्था०। भो शिशुघ्नि इहा० इह०।

35. पापहन्त्र्यै - पश्चिम **ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासन्देव यजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः पापहन्त्र्यै नमः। पापहन्त्रीम् आ० स्था०। भो पापहन्त्रि इहा० इह०।

36. काल्यै - पश्चिम **ॐ असुन्वन्तम यजमानम् इच्छस्ते नस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मद् इच्छसात इत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः। कालीम् आ० स्था०। भो कालि इहागच्छ इहतिष्ठ।

37. रुधिर पायिन्यै-उत्तर **ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन् तन्न आ सुव॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः रुधिरपायिन्यै नमः। रुधिरपायिनीम् आ० स्था०। भो रुधिरपायिनि इहा० इह०।

38. वसाधयायै - उत्तर **ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमेर्कश्चमे सूर्यश्चमे प्राणश्चमे अश्वमेधश्चमे पृथिवीचमे दितिश्चमे, दितिश्चमे, द्यौश्चमेङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्चमे यज्ञेन कल्यन्ताम्॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः वसाधयायै नमः। वसाधयाम् आ० स्था०। भो वसाधये इहा० इह०।

39. **गर्भ भक्षायै - पूर्व** **ॐ बह्वीनाम्पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः गर्भभक्षायै नमः। गर्भभक्षम् आ० स्था०। भो गर्भभक्षे इहा० इह०।

40. **शव हस्तायै- पूर्व** **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः शवहस्तायै नमः। शवहस्ताम् आ० स्था०। भो शवहस्ते इहा० इह०।

❖ **षष्ठ कोष्टक - वायव्य** **ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीम् आ० स्था ०।**

41. **आन्त्र मालिन्यै- ईशान** **ॐ ऋतवस्ते यज्ञं वितन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः। संवत्सरस्ते यज्ञन् दधातुनः प्रजाञ्च परि पातु नः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः। शिशुघ्नीम् आ० स्था०। भो शिशुघ्नि इहा० इह०।

42. **स्थूल केश्यै - दक्षिण** **ॐ ते आचरन्ती सिमनेव योषा मातेव पुत्रम् बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यता ꣳ संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलकेश्यै नमः। स्थूलकेशीम् आ० स्था०। भो स्थूलकेशि इहा० इह०।

43. **बृहत्कुक्ष्यै - पश्चिम** **ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूपऽ आप्यते प्रणीतोऽ अग्निरग्निना॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः बृहत्कुक्ष्यै नमः। बृहत्कुक्षीम् आ० स्था०। भो बृहत्कुक्षि इहा० इह०।

44. **सर्पास्यायै - पश्चिम** **ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पास्यायै नमः। सर्पास्याम् आ० स्था०। भो सर्पास्ये इहा० इह०।

45. **प्रेत वाहनायै- उत्तर** **ॐ अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यः सम्भ्रिया समंघ्रिणा विष्णो मा त्वा वक्रमिषं वसुमतीमग्ने तेच्छायामुपस्थेषं विष्णो स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यम कृणोदूर्द्धो द्धर आस्थात्॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः प्रेतवाहनायै नमः। प्रेतवाहनाम् आ० स्था०। भो प्रेतवाहने इहा० इह०।

46. **दन्द शूक करायै-उत्तर** **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहाः घर्मः पित्रे॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः दन्दशूककरायै नमः। दन्दशूककराम् आ० स्था०। भो दन्दशूककरे इहा० इह०।

47. **क्रौञ्च्यै - पूर्व** **ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोंच्यै नमः। क्रोंचीम् आ० स्था०। भो क्रोंचि इहागच्छ इहतिष्ठ।

48. **मृगशीर्षायै - पूर्व** **ॐ उपयाम गृहीतोसि हीररिसहीर योजनो हरिभ्यान्त्वा। हर्योर्द्धाना स्त्थ सहसोमा ऽ इन्द्राय॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः मृगशीर्षायै नमः। मृगशीर्षाम् आ० स्था०। भो मृगशीर्षे इहा० इह०।

❖ **सप्तम कोष्टक - उत्तर** ॐ पार्वत्यै नमः। पार्वतीम् आ० स्था ०।

49. **वृषाननायै- ईशान** **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः वृषाननायै नमः। वृषाननाम् आ० स्था०। भो वृषानने इहा० इह०।

50. **व्यात्तास्यायै-दक्षिण** **ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः व्यात्तास्यायै नमः। व्यात्तास्याम् आ० स्था०। भो व्यात्तास्ये इहा० इह०।

51. **धूम निःश्वासायै पश्चिम** **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः धूमनिःश्वासायै नमः। धूमनिःश्वासाम् आ० स्था०। भो धूमनिःश्वासे इहा० इह०।

52. **व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे पश्चिम** **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्क्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। ईष्णन् निषाणा मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशम् आ० स्था०। भो व्योमैकचरणोर्ध्वदृक इहागच्छ इहतिष्ठ।

53. **तापिन्यै - उत्तर** **ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्त्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसी। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः तापिन्यै नमः। तापिनीम् आ० स्था०। भो तापिनी इहागच्छ इहतिष्ठ।

54. **शोषणीद्दष्टयै- उत्तर** **ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तम् पैतृमत्यमृषिमार्षेय ७ सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमा विशत॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः शोषणीद्दष्टयै नमः। शोषणीद्दष्टिम् आ० स्था०। भो शोषणीद्दष्टे इहा० इह०।

55. **कोटर्यै - पूर्व** **ॐ या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकञ्च रक्षति। श्येनम् पतत्रिण ७ सि ७ ह ७ सेमम् पात्व ७ हसः॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः कोटर्यै नमः। कोटरीम् आ० स्था०। भो कोटरि इहा० इह०।

56. **स्थूल नासिकायै- पूर्व** **एकाचमे तिस्रश्चमे तिस्रश्चमे, पञ्चचमे पञ्चचमे, सप्तचमे सप्तचमे, नवचमे नवचम, एकादशचम एकादशचमे, त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे, पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे, सप्तदशचमे सप्तदशचमे, नवदशचमे नवदशचम, एकवि ७ शतिश्चम एकवि ७ शतिश्चमे, त्रयोवि ७ शतिश्चमे त्रयोवि ७ शतिश्चमे, पञ्चवि ७ शतिश्चमे पञ्चवि ७ शतिश्चमे, सप्तवि ७ शतिश्चमे सप्तवि ७ शतिश्चमे, नववि ७ शतिश्चमे नववि ७ शतिश्चम, एकत्रि ७ शतिश्चम एकत्रि ७ शतिश्चमे, त्रयस्त्रि ७ शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥**
- ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलनासिकायै नमः। स्थूलनासिकाम् आ० स्था०। भो स्थूलनासिके इहा० इह०।

❖ **अष्टम कोष्टक** ईशान **ॐ जयायै नमः । जयाम् आ० स्था ० ।**

57. **विद्युत्प्रभायै-** ईशान **ॐ ब्रह्माणि मे मतयः श ७ सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः । आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः विद्युत्प्रभायै नमः । विद्युत्प्रभाम् आ० स्था० । भो विद्युत्प्रभे इहा० इह० ।

58. **बलाकास्यायै-**दक्षिण **ॐ अग्ने युक्ष्वा हियेत वाश्वा सो देव साधवः । अरं वहन्ति मन्यवे ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः बलाकास्यायै नमः । बलाकास्याम् आ० स्था० । भो बलाकास्ये इहा० इह० ।

59. **मार्जार्यै** - पश्चिम **ॐ सुपर्णोसि गुरुत्क्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद । भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिश उद्द ७ ह ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः मार्जार्यै नमः । मार्जारीम् आ० स्था० । भो मार्जारि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

60. **कट पूतनायै-**पश्चिम **याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तयानस्तन्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशीहि ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः कटपूतनायै नमः । कटपूतनाम् आ० स्था० । भो कटपूतने इहा० इह० ।

61. **अट्टाट्टहासायै-**उत्तर **ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः । मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः अट्टाट्टहासायै नमः । अट्टाट्टहासाम् आ० स्था० । भो अट्टाट्टहासे इहा० इह० ।

62. **कामाक्ष्यै** - उत्तर **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ७ सुरे स्वाहा ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै नमः । कामाक्षीम् आ० स्था० । भो कामाक्षि इहा० इह० ।

63. **मृगाक्ष्यै** - पूर्व **ॐ वृष्ण ऊर्मिमरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै देहि वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै देहि ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः मृगाक्ष्यै नमः । मृगाक्षीम् आ० स्था० । भो मृगाक्षि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

64. **मृगलोचनायै-**पूर्व **ॐ भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्ये धम्ब्रघ्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्ठारन् देवलोकाय पेशितारम् मनुष्यलोकाय प्रकरितार ७ सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमव ऋत्यै वधायोपमन्थितारम् मेधाय वासः पल्पूलीम् प्रकामाय रजयित्रीम् ॥**

- ॐ भुर्भुवः स्वः मृगलोचनायै नमः । मृगलोचनाम् आ० स्था० । भो मृगलोचने इहा० इह० ।

❖ **कलश स्थापनम्** वेदी के मध्य में सप्तधान्य या अक्षत पुंज रखकर कलश को स्थापित करें।

- मंत्र **ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमाना तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो बोरुणेह बोध्यरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः॥**
  - कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः। आवाह्यामि स्थापयामि।
- प्राण-प्रतिष्ठा **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥**
  - ॐ भूर्भुवः स्वः कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः। दिव्यादि चतुःषष्ठि योगिनिभ्यो नमः प्रतिष्ठापयामि। ॐ सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

❖ **अग्न्युतारण / प्राण प्रतिष्ठा विधि**

- श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, की सुवर्ण मूर्ति होतो उसका अग्न्युतारण करके कलश पर रखें।
- सुवर्ण प्रतिमा नहीं है तो नारियल में वस्त्र लपेट कर, उसी पर तीनों देवियों का आवाहन पूजन करें।

- संकल्प **ॐ पूर्वोच्चरित एवं ग्रह-गुण-गण विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ, अमुक-गोत्र, अमुक-नामाऽहं अस्यां महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती मूर्तौ अवधातादिदोष-परिहारार्थम् अग्न्युतारणं देवता सान्निध्यर्थं च प्राण-प्रतिष्ठां करिष्ये।**

- घृत लेपनम् अब मूर्ति में घृत का लेपन कर दुग्धयुक्त जलधारा प्रदान करें।
  - **ॐ समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥१॥**
  - **ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्यायामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥२॥**
  - **ॐ उप ज्मन्मुप वेत सेऽवत्तर नदीष्वा।**
    अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेभं नो यज्ञ पावकवर्ण ७ शिवं कृधि ॥ ३ ॥
  - **ॐ अपामिदं न्ययन ७ समुद्रस्य निवेशनम्।**
    अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ४ ॥
  - **ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वा। आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥**
  - **ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ २ ऽइहा वहा। उप यज्ञ ७ हविश्च नः ॥ ६ ॥**
  - **ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामंत्रु रुच ऽउषसो न भानुना।**
    तूर्वन्न यामनेतस्य नू रण ऽआयो घृणेन ततृषाणो ऽअजरः॥ ॥ ७ ॥
  - **ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे।**
    अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ८ ॥
  - **ॐ नृषदेवेडप्सुषदे-वेड् बर्हिषदे-वेड् वनसदे-वेट् स्वर्विदे-वेट्॥ ॥ ९ ॥**

- ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ७ संवत्सरोणमुप भागमासते।
  अहुतादो हविषो यज्ञें ऽअस्मिन् स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ ॥१०॥
- ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रम्हाण: पुर ऽएतारो ऽअस्य।
  येभ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न प्रथिव्या ऽअधिस्नुषु ॥११॥
- ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदा:।
  अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतय: पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥१२॥

❖ **प्राण-प्रतिष्ठा**

- मूर्ति को शुद्ध जल से धोकर बायें हाथ पर रखें तथा दायें हाथ से ढक कर प्राणप्रतिष्ठा करें।
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती मूर्ते प्राणा इह प्राणा:।**
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती मूर्ते जीव इह स्थित:।**
- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती मूर्ते वाङ मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्र-जिव्हा-घ्राण पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**
  - **अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च।**
    अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥

- पूजनम् — तीनों मूर्तियों का श्री-सूक्त के मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें।
- महाकाली आवाहन — **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन।**
  - **ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥**
  - **खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् शुलं भुशुण्डीं शिर:।**
    शंखं सन्दधतीं करेस्त्रिनयनां सर्वाड्ग भुषावृतान॥
  - **नीलाश्मद्युतिमास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकाम्।**
    यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥
- महालक्ष्मी आवाहन — **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। ईष्णन्निषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण॥**
  - **ॐ अक्षस्त्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां।**
    दण्ड शक्ति मसिंच चर्म-जलजं घण्टां सुराभाजनम्॥
  - **शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तै: प्रसन्नाननां।**
    सेवे सैरिभ मर्दिनी मिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

- महासरस्वती आवाहन **ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥**
  - **ॐ घंटा शूल हलानि शंख मुशले चक्रं धनुः सायकं।**
    हस्त्राब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतांशू तुल्य प्रभाम्॥
  - **गौरी देह समुद्भवां त्रिनयना माधार भूतामहां।**
    पूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम॥
  - ॐ भूर्भुवः स्वः चतुःषष्ठि योगिनीभ्यो नमः। आवाह्यामि स्थापयामि।

- पूजनम् श्री-सूक्त मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। **पृष्ठ क्र. 146** देखें।
  - पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, वस्त्रं, यज्ञोपवितं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं-पमष्पमालां, नानापरिमलं, इत्रं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, द्रव्य, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम्।

- प्रार्थना **देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।**
  प्रसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य॥
  - **विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं,**
    विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
    विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति,
    विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः॥

- अर्पण **अनेन ध्यान आवाहनादि षोडशोपचारै अन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन ॐ भुर्भुवः स्वः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिताभ्यो गजाननादि चतुःषष्ठि योगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।**

॥ इति चतुःषष्ठि योगिनी मण्डल देवता स्थापनम् पूजनम् समाप्तम्॥

॥ अग्नि स्थापन पूजन ॥

- संकल्प — अद्य अस्मिन कर्मणि, अस्मिन कुण्डे, कुण्डस्थ देवतानां आवाहनं पूजनं तथा च पंचभूसंस्कार पूर्वकं अग्नि स्थापनम् करिष्ये ।

❖ **विश्वकर्मा आवाहन कुण्डमध्ये** — **ॐ विश्वकर्मने हविषा वर्द्धनेन, त्रातारमिन्द्रम कृणोरवद्धयम । तस्मै विशः समनमन्त, पूवीरयमुग्रो विहव्यो यथासथ ॥ उपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्कर्मण एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥**

- ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः । विश्वकर्माणम् आ० स्था० पू० । भो विश्वकर्मन इहा० इह० ।

- प्रार्थयेत् — **ॐ ब्रह्म वक्त्रं भुजौ क्षत्रमूरू वैश्यः प्रकीर्तितः । पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः ॥**
  - **अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः । नाशय त्वखिलांस्तॉस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते ॥**

❖ **मेखला आवाहन**

- उपरि मेखला विष्णु - श्वेत — **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ७ सुरे स्वाहा ॥**
  - **ॐ विष्णो यखपते देव दुष्टदैत्य निषुदन । विभो चज्ञस्य रक्षार्थं कुंडे संनिहितो भव ॥**
  - ॐ भूर्भुवः स्वः उपरि मेखलायां श्वेत वर्णालं कृतायां विष्णवे नमः विष्णुं आ० स्था० पू० ।

- मध्य मेखला ब्रह्म - रक्त — **ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्, विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्या ऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः, सतश्च योनिमसतश्च विवः॥**
  - **ॐ हंसपृष्ठसमारुढ आदिदेव जगत्पते । रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव ॥**
  - ॐ भूर्भुवः स्वः मध्य मेखलायां रक्त वर्णालं कृतायां ब्रह्मणे नमः ब्रह्मन् आ० स्था० पू० ।

- अधो मेखला रुद्र - कृष्ण — **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतोतऽ इषवे नम : । बाहुभ्यामुत ते नम : ॥**
  - **ॐ गंगाधर महादेव वृषारुढ महेश्वर ।**
  - **आगच्छ मम यज्ञेस्मिन रक्षार्थं रक्षसां गणात् ॥**
  - ॐ भूर्भुवः स्वः अधो मेखलायां कृष्ण वर्णालं कृतायां रुद्राय नमः रुद्रम् आ. स्था. पू. ।

❖ **योन्या आवाहन** **ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि।**
मा त्वा हि ७ सिन्मा मा हि ७ सी: ॥

- **ॐ आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके।**
मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः योन्यै नमः योनिम् आ० स्था० पू० भो योनि इहागच्छ, इहतिष्ठ।

- प्रार्थयेत् **ॐ सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षि सिद्धमानवा: ॥**
चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्या: सरीसृपा: ॥
पशव: पक्षिण: सर्वे संसरन्ति यतो भुवि॥
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका॥
मनोभवयुता देवी रतिसौख्यप्रदायिनी॥
मोहयित्री सुराणांच जगद्धात्रि नमोस्तु ते॥
योने त्वं विश्वरुपासि प्रकृतिर्विश्वधारिणी॥
कामस्था कामरुपा च विश्वयोन्यै नमो नम: ॥

❖ **कण्ठ आवाहन** **ॐ नीलग्रीवा: शितिकण्ठा: शर्वा अध: क्षमाचरा:।**
तेषा ७ सहस्त्रयोजने वधन्वानितन्मसि॥

- **ॐ कुंडस्य कंठदेशोऽयं नीलजीमूत सन्निभ:।**
अस्मिन् आवाहये रुद्रं शितिकण्ठं कपालिनम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः कंठे रुद्राय नमः रुद्रम् आ० स्था० पू०। भो रुद्र इहागच्छ, इहतिष्ठ।

- प्रार्थयेत् **ॐ कंठ मेगल रुपेण सर्वकुंडे प्रतिष्ठित:।**
परिते मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा॥

❖ **नाभ्या आवाहन** **ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्।**
आनन्दनन्दावाण्डौ मे भआ: सौभाग्यं पस:।
जङ्घाभ्यां पदभ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठित: ॥

- **ॐ पद्माकारऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती।**
- **आधार: सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयामि ताम्।**
- ॐ भूर्भुव: स्व: नाभ्यै नम: नाभिम् आ० स्था० पू०। भो नाभे इहागच्छ इहतिष्ठ।

- प्रार्थयेत् **ॐ नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवै: प्रतिष्ठिता।**
अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव॥

❖ वास्तु-पुरुष आवाहन कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोण **ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् स्वावेशो ऽ अनमीवो: भवान् । यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥**

- **ॐ आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम् । देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल तलवासिनम् ॥**
- ॐ भूर्भुव: स्व: नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नम:। वास्तुपुरुषम् आ०स्था०पू०। भो वास्तुपुरुष इहा०इह०॥

- प्रार्थयेत् **ॐ यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमङ्गलम् । व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम् ॥ पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम् ॥**
  - **वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव । शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥**
  - एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाह्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत् ।

- हस्ते अक्षत **ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु । विश्वे देवा स इह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठा : ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ता: सर्वे कुण्डस्थदेवा: सुप्रतिष्ठिता वरदा भवेयु: ॥

- गन्धाक्षतपुष्प ॐ भूर्भुव: स्व: विश्वकर्मादि वास्तु-पुरुषान्तेभ्य कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पूष्पाणि समर्पयामि ॥ इति सम्पूज्य
  - एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं कुण्डाद्बहि: संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात् ।

- हस्ते जलं गृहीत्वा अनेन यथाशक्ति विश्वकर्मादि वास्तु पुरुषान्तानां कुण्डस्थ-देवानां पूजनेन बलिदानेन च विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थ देवाः प्रीयंतां न मम ॥

❖ **भूमिकूर्मान्त पूजनम् ॐ भूरसि भूमिरसि अदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धार्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ७ ह पृथ्वीं मा हि ७ सी:॥**

- **ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वं । तस्मै देवा अधि ब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पति: ॥**
- ॐ भूर्भुव: स्व: भूमिकूर्मानन्त देवताभ्यो नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पूष्पाणि सम. ।

❖ पंच भू संस्कार - अग्नि स्थापनम्

- संकल्प — अद्य अस्मिन कर्मणि पञ्चभू संस्कार पूर्वकम् अग्नि स्थापनम् करिष्ये।
- परिसमूह्य — दाहिने हाथ में कुशाएँ लेकर तीन बार पश्चिम से पूर्व की ओर या दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए निम्न मन्त्र द्वारा बुहारें, बाद में कुश को कुण्ड के इशानकोण में फेक दें।
  - **ॐ दर्भैः परिसमूह्य, परिसमूह्य, परिसमूह्य।**
  - **ॐ यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमा वयम्।**
    अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ७ हसः॥ ॥ १ ॥
  - **यदि दिवा यदि नक्तमेना ७ सि चकृमा वयम्म।**
    वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ७ हसः॥ ॥ २ ॥
  - **यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऐन ७ सि चकृमा वयम्म।**
    सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ७ हसः॥ ॥ ३ ॥
- उपलेपनम् — बुहारे हुए स्थल पर गोमय (गाय के गोबर) से पश्चिम से पूर्व की ओर या दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए लेपन करें और निम्न मन्त्र बोलते रहें।
  - **ॐ गोमयेन उपलिप्य, उपलिप्य, उपलिप्य।**
  - **ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः।**
    मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥
- उल्लेखनम् — लेपन हो जाने पर उस स्थल पर स्रुवा मूल से तीन रेखाएँ पश्चिम से पूर्व की ओर या दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए निम्न मन्त्र बोलते हुए खींचे।
  - **ॐ स्रुवमूलेन उल्लिखय्, उल्लिखय्, उल्लिखय्।**
  - **खादिरं स्फ्यं प्रकल्प्याथ तिस्रो रेखाश्च पंच वा।**
    स्थण्डिलोल्लेखनं कुर्यात्स्रुवेण च॥
- उद्धरण — रेखांकित किये गये स्थल के ऊपर की मिट्टी अनामिका और अङ्गुष्ठ के सहकार से निम्न मन्त्र बोलते हुए पूर्व या ईशान दिशा की ओर फेंके।
  - **ॐ अनामिकाङ्गुष्ठेन उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य।**
  - **विचरन्ति पिशाचा ये आकाशस्थाःसुखासनाः।**
    तेभ्यःसंरक्षणार्थाय उद्धृतं चैव कारयेत्॥
- अभ्युक्षण — पुनः उस स्थल पर निम्न मन्त्र बोलते हुए जल छिड़कें।
  - **ॐ उदकने अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य।**
  - **गङ्गादि सर्व तीर्थेषु समुद्रेषु सरित्सु च।**
    सर्वतश्चाप आदाय अभ्युक्षेच्च पुनःपुनः॥

- अग्नि स्थापन — वेदी पर बीच में एक त्रिकोण बनाकर उसके बीच में कुंकुम से (रं) लिख दे।
  - किसी सौभाग्यवती स्त्री (लोकाचार में बहन आदि पूज्य स्त्रियां) से कांसे, तांबे या मिट्टी के पात्र में अग्नि मंगाए।
  - हवन कर्ता स्वयं अग्नि पात्र को वेदी या कुण्ड के उपर तीन बार घुमाकर अग्निकोण में रखे अग्नि में से क्रव्यादांश निकाल कर नैऋत्य कोण में डाले दे तदन्तर अग्निपात्र को स्वाभिमुख करते हुए **"हुं फट्"** कहते हुए अग्नि को वेदी में स्थापित करें।

- अग्निं मंत्र — **ॐ अग्निं दूतं पूरो दधे हव्यवापमुहब्रुबे। देवों२ आ सादयादिह ॥**
  - ॐ अग्नये नमः। अग्निम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।
  - थाली में द्रव्य - अक्षत छोड कर अग्नि जिससे लिये हैं उन्हें देदें।

- अग्नि आवाहन — **ॐ रक्त माल्याम्बर धरं रक्त-पद्मासन-स्थितम्।**
  स्वाहा स्वधा वषट्कारै रंकितं मेष वाहनम् ॥
  - **शत मंगलकं रौद्रं वह्नि मावाह याम्यहम्।**
    त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिर मितद्युते ॥
  - आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन सन्निधो भव।

- मुद्राः प्रदर्शयेत् — **भो अग्ने त्वम् आवाहितो भव। भो अग्ने त्वं संन्निरुद्धो भव।**
  भो अग्नं त्वं सकलीकृतो भव॥ भो अग्ने त्वग् अवगुण्टितो भव।
  भो अग्नं त्वम् अमृतीकृतो भव। भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव॥
  इति ताः ताः मुद्राः प्रदर्श्य।
  - ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरः भूमि-मातः, वरुण-पितः, पश्चिम-चरण, पूर्व-शिर-स्कन्ध-ऊर्ध्व पाद, पाताल-दृष्टि, गोचर मेषध्वज प्रांमुख अग्ने त्वं स्वागतो भव॥

- सप्तजिह्वा आवाहनम् — चावल लेकर २-२ दाना अग्नि पर छिडके - सप्तजिह्वा का आवाहन करें।

१. ॐ कनकायै नमः
२. ॐ रक्तायै नमः
३. ॐ कृष्णायै नमः
४. ॐ उद्गारिण्यै नमः
५. ॐ सुप्रभायै नमः
६. ॐ बहुरूपायै नमः
७. ॐ अतिरिक्तायै नमः

- ध्यायेत् — **ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।**
  त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्या२ आविवेश॥ ॥ १ ॥
  - **रुद्रतेजः समुद्भूतं द्विमूर्धान द्विनासिकम्।**
    षण्णेत्रं च चतु : श्रोतं त्रिपादं सप्तहस्तकम्॥ ॥ २ ॥
  - **याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्।**
    स्त्रुवं स्त्रुचञ्च शक्तिञ्च ह्यक्षमालाञ्च दक्षिणे॥ ॥ ३ ॥

- **तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रञ्च वामके।**
  ब्रिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम्॥ ॥ ४ ॥
- **याम्यायने चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखम्।**
  द्वादश कोटि मूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम्॥ ॥ ५ ॥
- **आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैवं हुताशनम्।**
  गोत्रमग्नेस्तु शाण्डील्यं शाण्डिल्यासितदेवता:॥ ॥ ६ ॥
- **त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुण: पिता।**
  रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्॥ ॥ ७ ॥
- **स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम्।**
  शतमङ्गलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम्॥ ॥ ८ ॥
- **त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते।**
  आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव॥ ॥ ९ ॥
- **भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवरान्वित**
  भूमिमात: वरुणपित: मेषध्वज प्रांमुख मम सम्मुखो भव ॥१०॥

- प्रतिष्ठा — **ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्जस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ :।**
  - ॐ शतमङ्गल नामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।
  - ॐ भूर्भुव: स्व: शतमंगल नाम्ने वैश्वानराय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पूष्पाणि सम.।
  - इति कुण्डस्य नैर्ऋत्य कोणे मध्ये वा अग्निं सम्पूज्य।
- अग्नि पूजनम् — पंचोपचार अग्नि की पूजा कर दें।
- प्रार्थना — **ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनं।**
  हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखं॥
- अर्पण — **अनया पूजया अग्निदेवता प्रीयन्ताम् न मम्।**

मण्डप स्थित ब्राह्मण वरण

- मण्डप में जो ब्राह्मण हो (१,५,७ विषम संख्या होनी चाहिए) उनके माथे में तिलक लगा कर पूजा करे।
- ब्राह्मण वरण — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पूण्य तिथौ अमुक-गोत्र:, अमुक-नामाहं अस्मिन कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् यथानाम गोत्रान् युष्मान् ब्राह्मणान् त्वां वृणे।
- ब्राह्मण कहे — **ॐ स्वस्ति**

॥ नवग्रह मंण्डल पूजनम् ॥
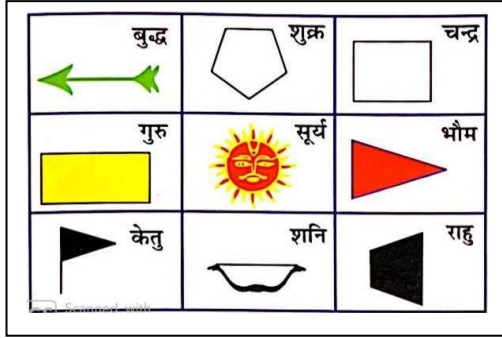
ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशि भूमि-सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ॥

१. सूर्यम्

मण्डल के मध्य में   लकडी - मदार   फल - द्राक्ष

- **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।**
  हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
- **जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।**
  तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपस गोत्र रक्त वर्ण भो सूर्य । इहागच्छ इहतिष्ठ सूर्याय नमः । सूर्यम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

२. चन्द्रम्

मण्डल के अग्निकोण में   लकडी - पलास   फल - गन्ना

- **ॐ इमं देवाऽअसपत्न ७ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा ॥**
- **दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।**
  नमामि शशिनं सोम शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयस गोत्र शुक्ल वर्ण भो चन्द्र । इहागच्छ इहतिष्ठ चन्द्रमसे नमः । चन्द्रमसम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

३. भौमम्

मण्डल के दक्षिण में   लकडी - खैर   फल - सोपारी

- **ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम् ।**
  अपा ७ रेता ७ सि जिन्वति ॥
- **धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ।**
  कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजस गोत्र रक्त वर्ण भो भौम । इहागच्छ इहतिष्ठ भौमाय नमः । भौमम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

४. बुधम् मण्डल के ईशान कोण में लकडी - चिचडी फल - नारंगी

- **ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ७ सृजेथा मयं च।**
  अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥
- **प्रियंगु कलिका श्यामं रुपेण प्रतिमं बुधम्।**
  सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयस गोत्र हरित वर्ण भो बुध। इहागच्छ इहतिष्ठ बुधाय नमः। बुधम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

५. बृहस्पतिम् मण्डल के उत्तर में लकडी - पीपल फल - निम्बु

- **ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।**
  यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा त तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
- **देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन सन्निभम्।**
  बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव अंगिरस गोत्र पीत वर्ण भो बृहस्पते। इहागच्छ इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः। बृहस्मतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

६. शुक्रम् मण्डल के पूर्व में लकडी - गूलर फल - बीजोरु

- **ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमम्प्रजापतिः।**
  ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान ७ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु ॥
- **हिम कुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।**
  सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवस गोत्र शुक्ल वर्ण भो शुक्र। इहागच्छ इहतिष्ठ शुक्राय नमः। शुक्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

७. शनिम् मण्डल के पश्चिम में लकडी - शमी फल - कमल गट्टा

- **ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः ॥**
- **नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं।**
  छाया मार्तण्ड संभूतं तन्नमामि शनैश्चरम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपस गोत्र कृष्ण वर्ण भो शनैश्चर। इहागच्छ इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः। शनैश्चरम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि

८. राहुम् मण्डल के नैर्ऋत्य कोण में लकडी – दुब फल - नारियल

- **ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥**
- **अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।**
  सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठीनस गोत्र कृष्ण वर्ण भो राहो। इहा० इह० राहवे नमः। राहुम् आ० स्था० पू०।

९. **केतुम्** मण्डल के वायव्य कोण में लकडी - कुशा फल - दाडिम

- **ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥**
- **पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम्।**
  रौद्रं रौद्रत्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम्॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिस गोत्र कृष्ण वर्ण भो केतु। इहागच्छ इहतिष्ठ केतवे नमः। केतुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- विशेष पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान, इत्यादि में नवग्रहों की स्थापना के उपरान्त अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल देवताओं का आवाहनादि करना चाहिये।

- **अधिदेवता** सूर्यादि ग्रहों के दाहिने (दक्षिण) तरफ अधिदेवताओं का आवाहनादि करें।

१. ईश्वरम् - सूर्य के **ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्।**
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
- ॐ रुद्राय नमः। रुद्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

२. उमाम् - चंद्र के **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रो पार्श्व नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।**
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥
- ॐ उमायै नमः। उमाम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

३. स्कन्दम् - मंगल के **ॐ यद क्रन्दः प्रथमं जायमानः उद्यन्तसमुद्रा दुत वा पुरीषात्।**
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन॥
- ॐ स्कन्दाय नमः। स्कन्दम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

४. विष्णुम् - बुध के **ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप् त्रेस्थो विष्णोः**
स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥
- ॐ विष्णवे नमः। विष्णुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

५. ब्रह्माणम् - गुरु के **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।**
सबुध्न्या उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसश्च विवः॥
- ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

६. इन्द्रम् - शुक्र के **ॐ सजोष इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्राहा शूर विद्वान्।**
जहि शत्रु२रप मृधो नुदस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः॥
- ॐ इन्द्राय नमः। इद्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

७. यमम् - शनि के **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रो ॥**

- ॐ यमाय नमः। यमम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

८. कालम् - राहु के **ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि। समापो ऽ अद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः ॥**

- ॐ कालाय नमः। कालम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

९. चित्रगुप्तम् - केतु के **ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥**

- ॐ चित्रगुप्ताय नमः। चित्रगुप्तम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- **प्रत्यधि देवता** सूर्यादि ग्रहों के बायें तरफ प्रत्यधि देवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें।

१. अग्निम् - सूर्य के **ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यवाहमु प ब्रुवे। देवाँ २ ऽआसादयादिह ॥**

- ॐ अग्नये नमः। अग्निम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

२. आपः - चन्द्र के **ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः। तस्माऽ अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ॥**

- ॐ जलाय नमः। जलम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

३. पृथ्वीम् - मंगल के **ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः ॥**

- ॐ भूम्यै नमः। भुमिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

४. विष्णुम् - बुध के **ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ७ सुरे स्वाहा ॥**

- ॐ विष्णवे नमः। विष्णुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

५. इन्द्रम् - गुरु के **ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम्। ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥**

- ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

६. इन्द्राणीम् - शुक्र के **ॐ अदित्यै रास्ना सीन्द्राण्या ऽउष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व ॥**

- ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

७. प्रजापतिम् - शनि के **ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वय ७ स्याम पतयो रयीणाम् ॥**

- ॐ प्रजापतये नमः। प्रजामतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

८. सर्प - राहु के **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।**
येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

- ॐ नागाय नमः। नागम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

९. ब्रह्मा - केतु के **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।**
सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

- ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- **पंच लोकपाल आवाहनम्**

१. गणेश - राहु के उत्तर **ॐ गणानान्त्वा गणपति ७ हवामहे**
प्रियाणान्त्वां प्रियपति ७ हवामहे
निधी नान्त्वा निधिपति ७ हवामहे
व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधं॥

- ॐ गणपतये नमः। गणपतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

२. दुर्गा - शनि के उत्तर **ॐ अंबेऽ अंबिकेऽ अम्बालिके न मा नयति कश्चन।**
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

- ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गाम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

३. वायु - सूर्य के उत्तर **ॐ आ नो नियुद्भिःशतिनीभिरध्वर ७ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।**
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

- ॐ वायवे नमः। वायुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

४. आकाश - शुक्र के पूर्व **ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः**
पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।
दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

- ॐ आकाशाय नमः। आकाशम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

५. अश्विनी - ग्रह के उत्तर **ॐ यावां कशा मधु मत्य अश्विना सूनृतावती।**
तया यज्ञं मिमिक्षत स्वाहा॥

- ॐ अश्विनी कुमाराय नमः। अश्विनी कुमारम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

- **दशदिक्पाल पूजनम्** मण्डल के ......

१. इन्द्र - म. के पूर्व **ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम् । ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥**

- ॐ इन्द्राय नमः । इन्द्रम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

२. अग्नि - म. के अग्नि **ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाणस्तव व्रते ॥**

- ॐ अग्नये नमः । अग्निम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

३. यम - म. के दक्षिण **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रो ॥**

- ॐ यमाय नमः । यमम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

४. नैऋत्य - म. के नैर्ऋत्य **ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ- सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥**

- ॐ निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

५. वरुण - म. के पश्चिम **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणे हबोध्युरूश ७ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥**

- ॐ वरुणाय नमः । वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

६. वायु - म. के वायव्य **ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ७ सहस्त्रिणी भिरुपया हियज्ञम् । वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥**

- ॐ वायवे नमः । वायुम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

७. सोम - म. के उत्तर **ॐ वय ७ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥**

- ॐ कुबेराय नमः । कुबेरम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

८. ईशान - म. के ईशान **ॐ तमीशानं जगतस् तस्थु षस्पतिं धियञ्जिन्वम से हूमहे वयं । पूषानो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥**

- ॐ ईशानाय नमः । ईशानम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

९. ब्रह्मा - ईशान+पूर्व **ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यश ७ सते स्तुवते धायि वज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः ॥**

- ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

१०.अनन्त - नैर्ऋत्य+पश्चिम **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः सर्मसप्रथाः ॥**

- ॐ अनन्ताय नमः । अनन्तम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ।

- **पीठ पर ताम्र कलश स्थापित करे।**

- ग्रहवेदी के मध्य में सप्तधान्यादि रखकर एक सुसज्जित कलश स्थापित करें।
- मंत्र **ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमाना तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।**
  अहेडमानो बोरुणेह बोध्यरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः॥
  - कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः।
  - सूर्यादि अनन्तान्त देवताभ्यो नमः। आवाह्यामि, स्थापयामि।
- प्राण-प्रतिष्ठा ॐ **अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।**
  अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥ कलश वेदी को स्पर्श करें।
  - ॐ कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः। आदित्यादि ग्रहमण्डल देवताः।
    प्रतिष्ठापयामि। सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।
- ध्यानम् **ॐ ग्रहा ऽ ऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्।**
  तेषां विशि प्रियाणां वोह मिष मूर्ज ७ समग्रभ उपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
  - ॐ सूर्यादि अनन्तान्त देवताभ्यो नमः। ध्यायामि।
- पीठ पूजनम् पुरुष-सूक्त मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। **पृष्ठ क्र. 00** देखें। पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, वस्त्रं, यज्ञोपवितं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं-पमष्पमालां, नानापरिमलं, इत्रं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, द्रव्य, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम्।
- प्रार्थना **ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी**
  भानुः शशि भूमि-सुतो बुधश्च।
  गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
  सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥
  - **यत्कृतं पूजनं देवा भक्ति-श्रद्धा विवर्जितम्।**
    ददतु धन-पुत्रान् में सर्वान् कामांश्च वै सदा॥
  - **आदित्यादि ग्रहाः सर्वे नाना वर्णाः पृथग्विधाः।**
    सुप्रच्छन्नाः प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा॥
- अर्पण ॐ अनेन नवग्रह मण्डलस्थ सूर्यादि देवानां पूजनेन ग्रह-मण्डलस्थाः सर्वे सूर्यादि देवताः प्रीयन्ताम् न मम्।

॥ रुद्रकलश स्थापन ॥

- ईशान कोण में नवग्रह पीठ के उत्तर रुद्रकलश की स्थापना करे।
- अक्षत लेकर असंख्यात रुद्र की प्रतिष्ठा पूजा करे।

- आवाहन — **ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।
  तेषा ७ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि ॥**
  - **मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥**
  - असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः। आवाह्यामि, स्थापयामि।

- पूजनम् — रुद्र-सुक्त के मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। **पृष्ठ क्र. 00** देखें।

- प्रार्थना — **ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
  भवे भवे नातिभवे भवस्य माम् भवोद् भवाय नमः ॥**
  - **ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो बृत्र हत्ये भर हूतौ सजोषाः।
    यः श ७ सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँन् अवन्तु देवाः ॥**
  - **प्रधानं पुरुषो यस्त्वं ब्रह्म ध्येयं तदक्षरम्।
    नमस्तुभ्यं महादेव कार्याय कारणाय च ॥**
  - **न्यूनाधिकं च यत्किंचित् कृतमज्ञानतो मया।
    त्वत् प्रसादेन यज्ञेश तत् सर्वम् परिपूरय ॥**
  - ॐ असंख्यात् रुद्रेभ्यो नमः।

- अर्पण — अनया पूजया असंख्यात् रुद्राः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ सर्वतोभद्र मण्डल देवतानां आवाहनम् होमः (मध्य पीठ) ॥
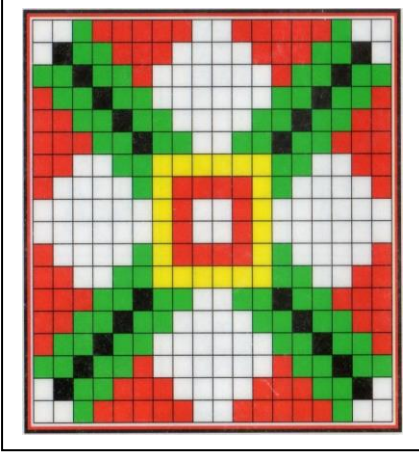
ॐ इमं रक्तवर्णन्तु तथाहस्त सुविस्तृतम्। इद्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥
अमुमिन्द्रध्वजं चित्रं सर्व विघ्न विनाशकम्। अस्मिन् मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम्। खण्डेदुस्त्रिपदैः कोणे श्रृंखला पंचभिः पदैः ॥
एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः। चतुर्विंशत्पदा वापी परिधिर्विंशतिः पदैः ॥
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम्। श्वेतेन्दुः श्रंखला कृष्णावली नीलेन पूरयेत् ॥
भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीतवर्णकः। बाह्यान्तर्दला श्वेत कर्णिका पीतवर्णिका ॥
परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्वं रजस्तमः। तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥
भद्रेण पूजनाशक्तौ कुर्यमष्टदलं शुभम्। गोधूमान्नेन तत्कार्यं तण्डुलेनाऽथवा शुभम् ॥

स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें।

१. ॐ ब्रह्मणे नमः
२. ॐ सोमाय नमः
३. ॐ ईशानाय नमः
४. ॐ इन्द्राय नमः
५. ॐ अग्नये नमः
६. ॐ यमाय नमः
७. ॐ नैर्ऋतये नमः
८. ॐ वरुणाय नमः
९. ॐ वायवे नमः
१०. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः
११. ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः
१२. ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः
१३. ॐ अश्विभ्यां नमः
१४. ॐ सपैतृक-विश्वेदेव नमः
१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः
१६. ॐ भूतनागेभ्यो नमः
१७. ॐ गन्धर्वाप्सेरोभ्यो नमः
१८. ॐ स्कंदाय नमः
१९. ॐ नन्दीश्वराय नमः
२०. ॐ शूलाय नमः
२१. ॐ महाकालाभ्यां नमः
२२. ॐ दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः
२३. ॐ दुर्गायै नमः
२४. ॐ विष्णवे नमः
२५. ॐ स्वधायै नमः
२६. ॐ मृत्यु रोगाभ्यां नमः
२७. ॐ गणपतये नमः
२८. ॐ अद्भ्यो नमः
२९. ॐ मरुदभ्यो नमः
३०. ॐ पृथिव्यै नमः
३१. ॐ गंगादि नंदीभ्यो नमः
३२. ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः
३३. ॐ मेरवे नमः
३४. ॐ गदायै नमः
३५. ॐ त्रिशूलाय नमः
३६. ॐ वज्राय नमः
३७. ॐ शक्तये नमः
३८. ॐ दण्डाय नमः
३९. ॐ खड्गाय नमः
४०. ॐ पाशाय नमः
४१. ॐ अंकुशाय नमः
४२. ॐ गौतमाय नमः
४३. ॐ भरद्वाजाय नमः
४४. ॐ विश्वामित्राय नमः
४५. ॐ कश्यपाय नमः
४६. ॐ जमदग्नये नमः
४७. ॐ वसिष्ठाय नमः
४८. ॐ अत्रये नमः
४९. ॐ अरुन्धत्यै नमः
५०. ॐ ऐन्द्रै नमः
५१. ॐ कौमार्यै नमः
५२. ॐ ब्राह्मयै नमः
५३. ॐ वाराह्यै नमः
५४. ॐ चामुण्डायै नमः
५५. ॐ वैष्णव्यै नमः
५६. ॐ माहेश्वर्यै नमः
५७. ॐ वैनायक्यै नमः

- ॐ भूभुर्वः स्वः सर्वतोभद्र मण्डल देवताभ्यो नमः। सर्वतोभद्रम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि।

- संकल्प — ॐ पूर्वोच्चारित एवं ग्रह-गुण-विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ, अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाहं देव प्रतिष्ठा याग कर्मणि सर्वतोभद्र मण्डल देवता आवाहनं पूजनं च करिष्ये ।

1. **ब्रह्मणे** - मध्य — **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।**
   सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च विवः ॥
   - ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणम् आ० स्था० पू० ।
2. **सोमाय** - उत्तर — **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ॥**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ, इहतिष्ठ सोमाय नमः । सोमम् आ० स्था० पू० ।
3. **ईशानाय** - ईशान — **ॐ तमीशानं जगतस्त स्त्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम ।**
   पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
   - ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ, इहतिष्ठ ईशानाय नमः । ईशानम् आ० स्था० पू० ।
4. **इन्द्राय** - पूर्व — **ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवेहवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम् ।**
   ह्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥
   - ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रे इहागच्छ । इहतिष्ठ इन्द्राय नमः । इन्द्रम् आ० स्था० पू० ।
5. **अग्नये** - अग्नि — **ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः ।**
   यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ७ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥
   - ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ । इहतिष्ठ अग्नये नमः । अग्निम् आ० स्था० पू० ।
6. **यमाय** - दक्षिण — **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रो ॥**
   - ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ । इहतिष्ठ यमाय नमः । यमम् आ० स्था० पू० ।
7. **नैर्ऋतये** - नैर्ऋत्य — **ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छ स्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य ।**
   अन्यमस्मदिच्छ- सात ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥
   - ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ । इहतिष्ठ निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिम् आ० स्था० पू० ।
8. **वरुणाय** - पश्चिम — **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।**
   अहेडमानो वरुणेह बोध्युरूश ७ समानऽ आयुः प्रमोषीः ॥
   - ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ । इहतिष्ठ वरुणाय नमः । वरुणम् आ० स्था० पू० ।
9. **वायवे** - वायव्य — **ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ७ सहस्त्रिणी भिरुपया हियज्ञम् ।**
   वायोऽ अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
   - ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ । इहतिष्ठ वायवे नमः । वायुम् आ० स्था० पू० ।

10. अष्टवसुभ्यो
वायु-सोम

ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा दित्येभ्यस्त्वा संजानाथां द्यावापृथिवी मित्रा वरुणौ त्वा वृष्टयावाताम्। व्यन्तु वयोक्त ७ रिहाणा मरुतां पृषनीर्गच्छ। वशा पृश्निर्भूत्वा दिवंगच्छ ततो नो वृष्टि मावह॥ चक्षुष्पा अग्नेसि चक्षुर्मे पाहि॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्य इहा० इह०अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसुभ्याम् आ० स्था० पू०।

11. एकादश रुद्रेभ्यो
सोम-ईशान

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादश रुद्र इहा०इह० एकादश रुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रान् आ०स्था पू०।

12. द्वादशादित्येभ्यो
ईशान-इन्द्र

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आवोर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ७ होश्चिद्या वरिवो वित्तरासत्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्य इहा०इह० द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यान् आ०स्था०पू०।

13. अश्विभ्यां
इन्द्र-अग्नि

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्य इहागच्छ, इहतिष्ठ अश्विभ्याम् नमः। अश्विनौ आ० स्था० पू०।

14. सपैतृक-विश्वेदेव
अग्नि-यम

ॐ विश्वे देवास आगत शृणुता म श्रृणुता म इम ७ हवम्। एद बर्हिर्निष एदं बर्हिर्निषीदत। उपयाम गृहीतोसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यं॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृक विश्वेदेव इहागच्छ, इहतिष्ठ सपैतृक विश्वेभ्यो देवभ्यो नमः। सपैतृक विश्वान देवान् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

15. सप्तयक्षेभ्यो
यम-नैर्ऋत्य

ॐ अभि त्वं देवं ७ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव ७ रत्नधामभि प्रियं कविम्। ऊद् घ्वां यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमत सुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाभ्यस्त्वा। प्रजास्त्वानु प्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणतु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्य इहा० इह० सप्तयक्षेभ्यो नमः। सप्तयक्षाणम् आ० स्था० पू०।

16. भूतनागेभ्यो
नैर्ऋत्य-वरुण

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु। ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः भूतनागेभ्य इहा० इह० भूतनागेभ्यो नमः। भूतनागान् आ० स्था० पू०।

17. गन्धर्वाप्सरोभ्यो
वरुण-वायु

ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्व, स्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदा नाम। स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्य इहागच्छ, इहतिष्ठ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरसः आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

18. स्कंदाय
ब्रह्म-सोम (उत्तर)

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंद इहागच्छ इहतिष्ठ स्कन्दाय नमः। स्कन्दम् आ० स्था० पू०।

19. नन्दीश्वराय
ब्रह्म-सोम (उत्तर)

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं ७ सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभ इहागच्छ, इहतिष्ठ वृषभाय नमः। वृषभम् आ० स्था० पू०।

20. शूल- उत्तर

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः शूल इहागच्छ, इहतिष्ठ शूलाय नमः। शूलम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

21. महाकालम्- उत्तर

ॐ नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरम् अव्ययम्।
सर्वव्यापिन-मीशानं रुद्र वै विश्व-रुपिणम्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल इहागच्छ, इहतिष्ठ महाकालाय नमः। महाकालम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

22. दक्षादि सप्तगणेभ्यो

ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च, सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च।
शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य ७ हा ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादि-सप्तगणेभ्य इहागच्छ, इहतिष्ठ दक्षादि-सप्तगणेभ्यो नमः। दक्षादि-सप्तगणान् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

23. दुर्गायै
ब्रह्म-इन्द्र (मध्य)

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ अम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ दुर्गायै नमः। दुर्गाम् आ० स्था० पू०।

24. विष्णवे
दुर्गा के पूर्व

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा ७ सुरे स्वाहा॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णु इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवे नमः। विष्णुम् आ० स्था० पू०।

25. स्वधायै
ब्रह्मा-अग्नि (मध्य)

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा। नमः पितामहेभ्यः स्वधा यिभ्यः स्वधा। नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधा यिभ्यः स्वधा। नमः अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरो तीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्धवम्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधा इहागच्छ इहतिष्ठ स्वधायै नमः। स्वधम् आ० स्था० पू०।

26. **मृत्यु रोगाभ्यां**
ब्रह्म-यम (मध्य)

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ७ रीरिषो मोत वीरान् ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोग इहा० इह० मृत्युरोगैभ्यो नमः । मृत्युरोगान् आ० स्था० पू० ।

27. **गणपतये**
ब्रह्म-नैर्ऋत्य मध्य

ॐ गणानान्त्वा गणपति ७ हवामहे प्रियाणान्त्वां प्रियपति ७ हवामहे
निधी नान्त्वा निधिपति ७ हवामहे
व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधं ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ गणपतये नमः । गणपतिम् आ० स्था० पू० ।

28. **अद्भ्यो**
ब्रह्म-वरुण (मध्य)

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्य इहागच्छ इहतिष्ठ अद्भ्यो नमः । अद्भ्याम् आ० स्था० पू० ।

29. **मरुदभ्यो**
ब्रह्म-वाय (मध्य)

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः ।
स सुगोपातमो जनः ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यः इहागच्छ इहतिष्ठ मरुद्भ्यो नमः । मरुद्भ्यम् आ० स्था० पू० ।

30. **पृथिव्यै**
ब्रह्मा के पाद (मूल)

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त इहागच्छ । इहतिष्ठ अनन्ताय नमः । अनन्तम् आ० स्था० पू० ।

31. **गंगादि नदीभ्यो**
उत्तर

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ।
त्वामवस्युरा चके ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः गंगादिनदी इहा० इह० गंगादिनदीभ्यो नमः । गंगादिनदीः आ० स्था० पू० ।

32. **सप्तसागरेभ्यो**
उत्तर

ॐ समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा ।
मरुतोसि मरुतां गणाः शम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा ।
अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरः इहा० इह० सप्तसागरेभ्यो नमः । सप्तसागरान् आ० स्था० पू० ।

33. **मेरवे**
कर्णिका परिधि

ॐ प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच ऽ इयानाः ।
ता ऽ आववृत्रन्नधरागुदक्ता ऽ अहिं बुध्न्यमनु रीयमाणाः ।
विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे इहागच्छ, इहतिष्ठ मेरवे नमः । मेरुम् आ० स्था० पू० ।

34. **गदायै**
सत्व के बाहर

ॐ गणानान्त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वां प्रियपति ७ हवामहे
निधी नान्त्वा निधिपति ७ हवामहे

व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधं ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः गदाये इहागच्छ, इहतिष्ठ गदायै नमः। गदाम् आ० स्था० पू०।

35. **त्रिशूलाय** - ईशान

ॐ त्रि ७ शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते।
प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूल इहागच्छ, इहतिष्ठ त्रिशूलाय नमः। त्रिशूलम् आ० स्था० पू०।

36. **वज्राय** सत्व परिधि पूर्वे

ॐ महाँ२ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि। उपयाम गृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय इहागच्छ, इहतिष्ठ वज्राय नमः। वज्रम् आ० स्था० पू०।

37. **शक्तये** सत्व परिधि-अग्नि

ॐ वसुचमे, वसतिश्चमे, कर्मचमे, शक्तिश्चमे, अर्थश्चम, एमश्चम, इत्याचमे, गतिश्चभे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये इहागच्छ, इहतिष्ठ शक्तये नमः। शक्तिम् आ० स्था० पू०।

38. **दण्डाय** सत्व परिधि-दक्षिण

ॐ इड एह्यदित एहि काम्या एत।
मयि वः कामधरणं भूयात् ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाये इहागच्छ। इहतिष्ठ दण्डाय नमः। दण्डम् आ० स्था० पू०।

39. **खड्गाय** सत्व परिधि-नैर्ऋत्य

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ७ हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः खड्ग इहागच्छ, इहतिष्ठ खड्गाय नमः। खड्गम् आ० स्था० पू०।

40. **पाशाय** सत्व परिधि-पश्चिम

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ७ श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः पाश इहागच्छ, इहतिष्ठ पाशाय नमः। पाशम् आ० स्था० पू०।

41. **अंकुशाय** सत्व परिधि-वायव्य

ॐ अ ७ शुश्च मे, रश्मिश्च मे, दाभ्यश्च मे, धिपतिश्च म, उपा ७ शुश्च मे, न्तर्यामश्च म, ऐन्द्रवायवश्च मे, मैत्रावरुणश्च मे, आश्विनश्च मे, प्रतिप्रस्थानश्च मे, शुक्रश्च मे, मन्थीच मे, यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अंकुश इहागच्छ, इहतिष्ठ अंकुशाय नमः। अंकुशम् आ० स्था० पू०।

42. **गौतमाय** रक्त परिधि-उत्तर

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः।
पितरंच प्रयन्त्स्वः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौतम इहागच्छ, इहतिष्ठ गौतमाय नमः। गौतमम् आ० स्था० पू०।

43. भरद्वाजाय
रक्त परिधि-ईशान

ॐ अयं दक्षिणा व्विश्वकर्म्मा तस्य मनो व्वैश्वकर्म्मणं ग्रीष्मो मानस स्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वार ७ स्वारा दन्तर्य्यामो न्तर्य्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशद् बृहद्भरद्वाज ऽऋषिः। प्प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाज इहा० इह० भरद्वाजाय नमः। भरद्वाजम् आ० स्था० पू०।

44. विश्वामित्राय
रक्त परिधि-पूर्व

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्र ७ सौव ७ शरच्छोत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ एडमैडान्मन्थी मन्थिन ऽएकवि ७ शाद् द्वैराजं व्विश्वामित्र ऽऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्वया श्श्रोत्रं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्य : ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्र इहा० इह० विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रम् आ०स्था०पू०।

45. कश्यपाय
रक्त परिधि-अग्नि

ॐ त्रायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्रायुषं।
यद्देवेषु त्रायुषं तन्नो अस्तु त्रायुषं ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यप इहागच्छ, इहतिष्ठ कश्यपाय नमः। कश्यपम् आ० स्था० पू०।

46. जमदग्नये
रक्त परिधि-दक्षिण

ॐ अयं पश्चा द्विवश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्व्वैश्रवव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्त्या ऽऋक्स्समम‍ृक्स्सामाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदश : सप्तदशाद्वैरुपं जमदग्नि ऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्प्रजाब्भ्य : ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्न इहा० इह० जमदग्नये नमः। जमदग्नम् आ० स्था० पू०।

47. वसिष्ठाय
रक्त परिधि-नैर्ऋत्य

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्प्राणो भौवायनो वसन्त : प्प्राणाय नो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपा ७ शुरुपा ७ शोस्त्रिवृत्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऽऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्वया प्प्राणं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्य ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठ इहागच्छ, इहतिष्ठ वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठम् आ० स्था० पू०।

48. अत्रये
रक्त परिधि-पश्चिम

ॐ अत्र पितरो मादयद्ध्वं यथाभागमावृषायद्ध्वम्।
अमीमदन्त पितरो यथाभागमा वृषायिषत ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रय इहागच्छ। इहतिष्ठ अत्रये नमः। अत्रिम् आ० स्था० पू०।

49. अरुन्धत्यै
रक्त परिधि-वायव्य

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर् भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः ॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्ध इहा० इह० अरुन्धत्यै नमः। अरुन्धतीम् आ० स्था० पू०।

50. ऐन्द्रयै
कृष्ण परिधि-पूर्व

ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः।
पूषासि घर्माय दीष्व ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र इहागच्छ, इहतिष्ठ ऐन्द्रयै नमः। ऐन्द्रीम् आ० स्था० पू०।

51. **कौमार्यै** — कृष्ण परिधि-अग्नि

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ अम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै इहागच्छ, इहतिष्ठ कौमार्यै नमः। कौमारीम् आ० स्था० पू०।

52. **ब्राह्मयै** — कृष्ण परिधि-दक्षिण

ॐ इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः।
उपब्रम्हाणि वाग्घतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्मय इहागच्छ, इहतिष्ठ ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मीम् आ० स्था० पू०।

53. **वाराह्यै** — कृष्ण परिधि-नैर्ऋत्य

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
पितरश्च प्रयन्त्स्वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह इहागच्छ, इहतिष्ठ वाराह्यै नमः। वाराहीम् आ० स्था० पू०।

54. **चामुण्डायै** — कृष्ण परिधि-पश्चिम

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ अम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डा इहागच्छ, इहतिष्ठ चामुण्डायै नमः। चामुण्डाम् आ० स्था० पू०।

55. **वैष्णव्यै** — कृष्ण परिधि-वायव्य

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवा वाजस्य संगथे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्य इहागच्छ, इहतिष्ठ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीम् आ० स्था० पू०।

56. **माहेश्वर्यै** — कृष्ण परिधि-उत्तर

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽ पापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शंतमया गिरि शन्ताभि चाकशीहि॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्य इहागच्छ, इहतिष्ठ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीम् आ० स्था० पू०।

57. **वैनायक्यै** — कृष्ण परिधि-ईशान

ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयो रुचक्षसा।
मा म ऽ आयुः प्रमोषीर्मोऽ अहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि॥

- ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्य इहागच्छ, इहतिष्ठ वैनायक्यै नमः। वैनायकीम् आ० स्था० पू०।

- प्राणप्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣸ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥

- ब्रह्माद्यावाहित सर्वतोभद्र मण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।

- सर्वतोभद्र मंडल एवं लिंगतोभद्र मण्डल के देवताओं का आवाहन कहीं-कहीं एक साथ होता है।
- रूद्र-कल्पद्रुम में ८ ही रूद्र देवताओं का उल्लेख हैं परन्तु अन्यत्र ३२ रूद्र देवताओं का उल्लेख है।
- यहाँ भी उनके नाम मंत्रों से आवाहनादि का उल्लेख किया जा रहा है।
- लिंगतोभद्र का प्रयोग विशेष रूप से शिव याग, प्रतिष्ठा या अनुष्ठान में ही किया जाता है।

॥ लिंगतो भद्र मण्डल देवतानां आवाहनम् होमः (मध्य पीठ) ॥
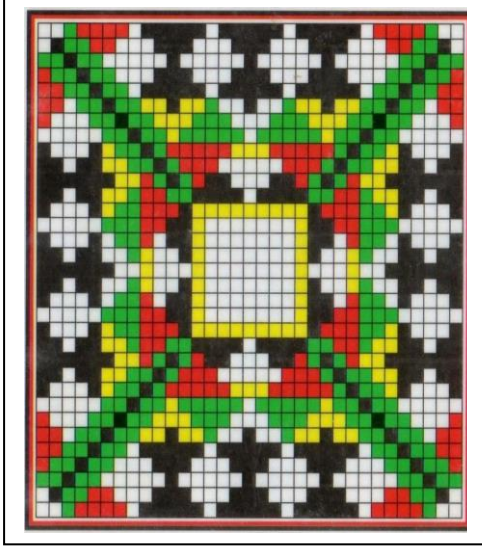
रेखा त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुलिंग समुद्भवे ।
कोणेन्दुस्त्रिपदः श्वेतस्त्रिपदैः कृष्ण श्रृंखला ॥ ॥१॥
वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ।
भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमष्टादशैः पदैः ॥ ॥२॥
शिवस्य पार्श्वतो वापीं कुर्यात् पंचपदां सिताम् ।
पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ॥ ॥३॥
शिरसि श्रृंखलायाश्च कुर्यात् पीदं पदत्रयम् ।
लिंगानां स्कन्धतः कोष्ठा विंशती रक्तवर्णका ॥ ॥४॥
परिधिः पीतवर्णेस्तु पदैः षोडशभिः स्मृता ।
पदैस्तु नवभिः पश्चाद् रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥ ॥५॥
स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें।

- **अष्ट भैरव** स्थापना (कृष्ण परिधि के बाहर पूर्व दिशा से)

१. असितांग भैरवाय
पूर्व

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः असितांग भैरवाय नमः । असितांगभैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

२. रूरू भैरवाय
अग्नि

ॐ श्वित्र आदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या अरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः । कवयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः रुरु भैरवाय नमः । रुरु भैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

३. चण्ड भैरवाय
दक्षिण

ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ७ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्यनेन्द्रं प्रक्रीडन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा । भवस्य कण्ठय ७ रुद्रस्यान्तः पाश्र्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः चण्ड भैरवाय नमः । चण्ड भैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

४. क्रोध भैरवाय
नैर्ऋत्य

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोदित्यै पाजस्यन् दिशान्जत्रवो दित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यान् दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभिरुपलान् प्लीह्ना वल्मीकान् क्लोमभिग्लौंभिर्गुल्मान् हिराभिः स्त्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्या ७ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोध भैरवाय नमः । क्रोध भैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

५. उन्मत्त भैरवाय पश्चिम

ॐ उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रावैष्णवा: उनत: शितिबाहु: शितिपृष्ठस्त ऐन्द्राबार्हस्पत्या: शुकरूपा वाजिना: कल्माषा आग्निमारूता: श्यामा: पौष्णा: ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: उन्मत्त भैरवाय नम: । उन्मत्त भैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

६. कपाल भैरवाय वायव्य

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी: ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: कपाल भैरवाय नम: । कपाल भैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

७. भीषण भैरवाय उत्तर

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिप: स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: भीषण भैरवाय नम: । भीषण भैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

८. संहार भैरवाय ईशान

ॐ नम: शम्भवाय च मयो भवाय च, नम: शङ्कराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: संहार भैरवाय नम: । संहार भैरवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

- **भव आदि अष्ट शिवों** का स्थापना (कृष्ण परिधि में अष्टभैरव के आगे पूर्व दिशा से)

१. भवाय नम: पूर्व

ॐ नम: श्वभ्य: श्वपतिभ्यश्च वो नमो, नमो भवाय च रुद्राय च, नम: शर्वाय च पशुपतये च, नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: भवाय नम: । भवम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

२. सर्वाय नम: अग्नि

ॐ अग्नि: हृदयेनाशनि ७ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्न हृदयेन भवं यक्ना । शर्व मतस्ना भ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्त: पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनु: शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: सर्वाय नम: । सर्वम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

३. पशुपतये नम: दक्षिण

ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ७ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्र प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा । भवस्य कण्ठय ७ रुद्रस्यान्त: पाश्र्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठु: पशुपते: पुरीतत् ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: पशुपतये नम: । पशुपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

४. ईशानाय नम: नैर्ऋत्य

ॐ तमीशानं जगतस् तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायर दब्ध स्वस्तये ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: ईशानाय नम: । ईशानम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

५. रुद्राय नमः पश्चिम

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः। रुद्रम् आवाह्यामि स्थापयामि।

६. उग्राय नमः वायव्य

ॐ उग्रश्च भीमश्च, ध्वान्तश्च धुनिश्च।
सासह्वाँश्चा भियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः उग्राय नमः। उग्रम् आवाह्यामि स्थापयामि।

७. भीमाय नमः उत्तर

ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्त मादित्य वर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भीमाय नमः। भीमम् आवाह्यामि स्थापयामि।

८. महते नमः ईशान

ॐ मानो महान्त-मुत मानो अर्भकं मान उक्षन्त मुत मान उक्षितम्।
मानो वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तनवो रुद्ररीरिषः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महते नमः। महान्तम् आवाह्यामि स्थापयामि।

- **अष्ट कुल नागों** की स्थापना (भवादि आठ के बाहर पूर्व दिशा से)

१. अनन्ताय नमः पूर्व

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।
ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः। अनन्तम् आवाह्यामि स्थापयामि।

२. वासुकये नमः अग्नि

ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वासुकये नमः। वासुकिम् आवाह्यामि स्थापयामि।

३. तक्षकाय नमः दक्षिण

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्चवो नमो, नमः कुलालेभ्यः
कर्मारेभ्यश्चवो नमो, नमो निषादेभ्यः पुंजिष्ठेभ्यश्चवो नमो,
नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्चवो नमः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तक्षकाय नमः। तक्षकम् आवाह्यामि स्थापयामि।

४. कुलिशाय नमः नैर्ऋत्य

ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां
कृकवाकु सावित्रो ह ७ सो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्ते
कूपारस्य ह्रियै शल्यकः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः। कुलिशम् आवाह्यामि स्थापयामि।

५. कर्कोटकाय नमः पश्चिम

ॐ सोमाय कुलुङ्ग ऽ आरण्योजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा
मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वी न्यङ्कुः कक्कटस्ते ऽ नुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै
चक्रवाकः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कर्कोटकाय नमः। कर्कोटकम् आवाह्यामि स्थापयामि।

६. **शंखपालाय नमः** वायव्य

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्।
उपयाम गृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽ एष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शंखपालाय नमः। शंखपालम् आवाह्यामि स्थापयामि।

७. **कम्बलाय नमः** उत्तर

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णा सूत्रेण कवयो वयन्ति।
अश्विना यज्ञ ७ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः। कम्बलम् आवाह्यामि स्थापयामि।

८. **अश्वतराय नमः** ईशान

ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽ आग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्या ७ सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पाश्र्वयस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छ इंद्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वतराय नमः। अश्वतरम् आवाह्यामि स्थापयामि।

- **अष्ट शिव की स्थापना**

१. **शूलाय नमः** ईशान+इन्द्र मध्ये

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो, नमो भवाय च रुद्राय च।
नमः शर्वाय च पशुपतये च, नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः। शूलम् आवाह्यामि स्थापयामि।

२. **चन्द्रमौलिने नमः** इन्द्र+अग्नि मध्ये

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमौलिने नमः। चन्द्रमौलिन् आवाह्यामि स्थापयामि।

३. **चन्द्रमसे नमः** अग्नि+यम मध्ये

ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
रपि पिशंग बहुलं पुरुस्पृह ७ हरिरेति कनिक्रदत् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः। चन्द्रमसम् आवाह्यामि स्थापयामि।

४. **वृषभध्वजाय नमः** यम+नैर्ऋत्य मध्ये

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनां।
संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ७ सेना अजयत्साकमिंद्रः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभध्वजाय नमः। वृषभध्वजम् आवाह्यामि स्थापयामि।

५. **त्रिलोचनाय नमः** नैर्ऋत्य +रुण मध्ये

ॐ सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेद ७ सवनं जुषाणाः।
भरमाणा वहमाना हवी ७ ष्यस्मे धत वसवो वसूनि स्वाहा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय नमः। त्रिलोचनम् आवाह्यामि स्थापयामि।

६. **शक्तिधराय नमः** वरुण+वायु मध्ये

ॐ रुद्राः स ७ सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे।
तेषां भानुरजस्र ऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तिधराय नमः। शक्तिधरम् आवाह्यामि स्थापयामि।

७. महेश्वराय नमः — वायु+सोम मध्ये

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महेश्वराय नमः । महेश्वरम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

८. शुलपाणये नमः — सोम+इशान मध्ये

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शूलपाणये नमः । शूलपाणम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

- प्राणप्रतिष्ठा — **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु । विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥**
  - लिंगतोभद्र मण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ।
- पीठ पुजन — पुरुष-सूक्त मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें । **पृष्ठ क्र. 00** देखें ।
- प्रार्थना — **ॐ ब्रह्माद्यावाहित देवाः सर्वतोभद्र मण्डले ।**
  पूजां गृह्णीत् मद् दत्तां सर्वदा मे प्रसीदत ॥
  - **ॐ पूजितोऽसि मया देव कुर्वन्तु मम मंगलम् ।**
    अस्य यज्ञस्य संसिद्ध्यै क्षमध्वमनयाअर्चया ॥
- अर्पण — अनया पूजया ब्रह्माद्यावाहित सर्वतोभद्र मण्डल देवताः एवं लिंगतोभद्र मण्डल देवताः प्रीयन्तां न मम ।

- **पीठ पर ताम्र कलश स्थापित करे ।**
- वेदी के मध्य में अक्षत पुंज रखकर सुसज्जित कलश को स्थापित करें ।
- मंत्र — **ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमाना तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो बोरुणेह बोध्यरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः ॥**
  - कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः । सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत ।

- **अग्न्युतारण / प्राण प्रतिष्ठा विधि**
- प्रधान देवता की मूर्ति हो तो उसका अग्न्युतारण पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा कर पूजन करें ।
- प्रधान मूर्ति को एक पात्र में पान के पत्ते पर रखकर उसमें घी लगाकर संकल्प कर अग्न्युतारण करें ।
- संकल्प — ॐ पूर्वोच्चरित एवं ग्रह-गुण-गण विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ, अमुक-गोत्र, अमुक-नामाऽहं अस्यां अमुक-मूर्तौ अवधातादिदोष-परिहारार्थम् अग्न्युतारणं देवता सान्निध्यर्थं च प्राण-प्रतिष्ठां करिष्ये ।

- अब मूर्ति में घृत का लेपन कर दुग्धयुक्त जलधारा प्रदान करें।
    - ॐ समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव ॥१॥
    - ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्यायामसि। पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव ॥२॥
    - ॐ उप ज्मन्मुप वेत सेऽवत्तर नदीष्वा।
      अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेभं नो यज्ञ पावकवर्ण ७ शिवं कृधि ॥ ३ ॥
    - ॐ अपामिदं न्ययन ७ समुद्रस्य निवेशनम्।
      अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतय: पावको ऽ अस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ४ ॥
    - ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वा। आ देवान् वसि यक्षि च ॥ ५ ॥
    - ॐ स न: पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ २ ऽइहा वहा। उप यज्ञ ७ हविश्च न: ॥ ६ ॥
    - ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामंत्रु रुच ऽउषसो न भानुना।
      तूर्वन्न यामनेतस्य नू रण ऽआयो घृणेन ततृषाणो ऽअजर:॥ ॥ ७ ॥
    - ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे।
      अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतय: पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥ ८ ॥
    - ॐ नृषदेवेडप्सुषदे-वेड् बर्हिषदे-वेड् वनसदे-वेट् स्वर्विदे-वेट्॥ ॥ ९ ॥
    - ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ७ संवत्सरोणमुप भागमासते।
      अहुतादो हविषो यज्ञें ऽअस्मिन् स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ ॥१०॥
    - ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रम्हाण: पुर ऽएतारो ऽअस्य।
      येभ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न प्रथिव्या ऽअधिस्नुषु ॥११॥
    - ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदा:।
      अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतय: पावको ऽअस्मभ्य ७ शिवो भव॥ ॥१२॥

- **प्राण-प्रतिष्ठा**
- मूर्ति को शुद्ध जल से धोकर बायें हाथ पर रखें तथा दायें हाथ से ढक कर प्राणप्रतिष्ठा करें।
- ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य अमुक-मूर्ते प्राणा इह प्राणा:।
- ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य अमुक-मूर्ते जीव इह स्थित:।
- ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं स: सोऽहं अस्य अमुक-मूर्ते वाङ मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्र-जिव्हा-घ्राण पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।
    - अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च।
      अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥

- प्रधान मूर्ति को पंचामृत से स्नान कराकर पंचोपचार या षोडशोपचार पुरुषसूक्त मंत्रो से पूजन करें।

॥ पंचोपचार - षोडशोपचार सर्व देवता पूजनम् ॥

पंचोपचार गन्ध, पुष्प, धुप, दीप, नैवेद्य

षोडशोपचार पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तवन पाठ, तर्पण, नमस्कार

- **प्राणप्रतिष्ठा** ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो-त्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥
  - अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन ॥

- **आह्वानम्** ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वाऽ त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम् ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥ श्रीसुक्त
  - आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधौ भव ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । आवाहनं समर्पयामि ।

- **आसनम्** ॐ पुरुषऽएवेदं ७ सर्व य्यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उताम‍ृ तत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मी-मनप-गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ श्रीसुक्त
  - रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । आसनार्थ अक्षतं समर्पयामि ।

- **पाद्यम्** ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ कां-सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ श्रीसुक्त
  - उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्। पाद प्रक्षाल नार्थाय दत्तं ते प्रति गृह्यताम् ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । पादयो: पाद्यं समर्पयामि ।

- **अर्घ्यम्**
  - ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽ स्येहा भवत्पुनः।
    ततो विष्ष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
    श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ श्रीसुक्त
  - अर्घ्य गृहाण देवश गन्ध पुष्पाक्षतैः सह ।
    करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्य नमोस्तु ते ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । हस्तयोर्घ्य समर्पयामि ।
- **आचमनीयम्**
  - ॐ ततो विराड जायत विराजोऽ अधि पूरुषः ।
    स जातोऽ अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम् ।
    तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽ लक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ श्रीसुक्त
  - सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम् ।
    आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । आचमनीयम जलं समर्पयामि ।
- **सर्वांग स्नानम्**
  - ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्व हुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
    पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽ धिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
    तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ श्रीसुक्त
  - मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
    तदिदं कल्पिते देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । : स्नानीयं जलं समर्पयामि ।
- **दुग्ध स्नानम्**
  - ॐ पयः पृथिव्याम् पय ओषधीषु पयो दिव्यन् तरिक्षे पयोधाः ।
    पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम ।।
  - कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
    पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानाय गृह्यताम् ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः। पयः स्नानं समर्पयामि । तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।
- **दधि स्नानम्**
  - ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
    सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ७ षि तारिषत् ॥
  - पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
    दध्यानितं मया देव स्ननार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः। दधिस्नानं समर्पयामि । तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

- **घृत स्नानम्** ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घिते श्रितो घृतम् वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥
  - नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः। घृतस्नानम समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

- **मधु स्नानम्** ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माद्धवीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधु नक्त मुतो षसो मधुमत् पार्थिव ಆ रजः। मधु द्यौरस्तुनः पिता।
मधुमान्नो व्वनस्पतिर् मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
  - पुष्प रेणु समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

- **शर्करा स्नानम्** ॐ अपा ಆ रसमुद् वयस ಆ सूर्ये सन्तः ಆ समाहितम।
अपा ಆ रसस्य यो रसस्तम् वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो सिन्द्राय
त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
  - इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका।
मलापहारिका दिव्य स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

- **पंचामृत स्नान** ॐ पंच नद्यः सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित॥
  - पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः। पंचामृतस्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

- **गन्धोदक स्नानम्** ॐ गन्धर्व्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातुविस्वस्यारिष्टयै।
यजमानस्य परिधिरस्याग्निरिडऽ ईडितः॥
  - मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरू संयुत्तम्।
चन्दनं च मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

- **शुद्धोदक स्नानम्** ॐ शुद्धवालः सर्व-शुद्धवालो मणि-वालस्तऽ आश्विनः। श्वेतः श्वेताक्षो
रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥
  - शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजल समं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्ध स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

- **ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभम् ।**
  तदिदं कल्पितं देवाः ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥

- **महाभिषेक** — पुरुष-सुक्त, श्रीसुक्त या अन्य मंत्रो द्वारा देवताओं का अभिषेक करें । **पृष्ठ क्र. 00** देखें ।

- कपड़े से पोंछ दें — **ॐ तन्तु संतान सन्नद्धैः शुक्लैः रक्तैस्तु पीतकैः ।**
  प्रतिमाजल विन्दूंस्तान् शोषयामि सुवस्त्रकैः ॥

- **वस्त्रम्** — **ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।**
  छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत ॥ पुरुषसुक्त
- **ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।**
  प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ श्रीसुक्त
- **सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।**
  मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यतां ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ॥
- वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि ।

- **उपवस्त्रम्** — **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमा सदत्स्वः ।**
  वासोग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो ॥
- **उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।**
  भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । उपवस्त्रम् समर्पयामि ॥

- **यज्ञोपवितम्** — **ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः ।**
  गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाताऽ अजावयः ॥ पुरुषसुक्त
- **ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम-लक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।**
  अभूतिम-समृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ॥ श्रीसुक्त
- **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।**
  आयुष्य मग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥
- यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि ।

- **सुगन्धित द्रव्यम्** — **ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम ।**
  उर्वारुक मिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॥
- **ॐ चन्दनागरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा ।**
  कस्तूर्यादि सुगन्धिश्च सर्वांगेषु विलेपयेत ॥

- ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शु: पृच्यतां परुषा परु: ।
  गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽ अच्च्युत: ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । सुगन्धं समर्पयामि ॥

- **गन्धम् - चंदन**
  ॐ तँ यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषन् जातमग्रत: ।
  तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ पुरुषसुक्त
- ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
  ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ श्रीसुक्त
- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
  विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम् ॥
- त्वां गनधर्वा अखनँस्त्वां मिन्द्रस्त्वां बृहस्पति : ।
  त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद् मुच्यत् ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । गन्धं समर्पयामि ॥

- **भस्मम्**
  ॐ प्रसद्य भस्मना योनि मपश्च पृथिवीमग्ने ।
  स ७ सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासद: ॥
- ॐ अघोरेभ्यो अथघोरेभ्यो घोर-घोर तरेभ्य: ।
  सर्वेभ्यो सर्व शर्वेभ्यो, नमस्ते अस्तु रूद्ररूपेभ्य: ॥
- सर्वपाप हरं भस्म दिव्य ज्योति समप्रभम् ।
  सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । भस्मं समर्पयामि ।

- **अक्षतम्**
  ॐ अक्क्षन्न मीमदन्त ह्यवप्प्रिया अधुषत ।
  अस्तोषत स्वभा नवो विप्रा न्नविष्ठया मती योजान् विन्द्रतेहरी ॥
- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता: सुशोभिता: ।
  मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । अक्षतान समर्पयामि ॥

- **आभुषणम्**
  ॐ युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो न: पृतन्यादप तंतमिद्धतं ।
  वज्रेण तंतमिद्धतम । दुरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥
- वज्र माणिक्य वैदूर्य मुक्ता विद्रूम मण्डितम् ।
  पुष्प राग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॐ सौभाग्य सूत्रम वरदे सुवर्ण मणि संयुतम ।
  कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यम देहि मे सदा ॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । आभुषणम् समर्पयामि ॥

- **कजलम्** — ॐ चक्षुर्भ्याम कज्जलम रम्यम सुभगे शान्ति कारकम ।
  कर्पूज्योति समुत्पन्नम गृहाण परमेश्वरि ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । कजलम् समर्पयामि ॥

- **पुष्पम्-पुष्पमाला** — ॐ यत्पुरुषं व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन् ।
  मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरु पादा उच्येते ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ मनस: काममाकूतिं वाच: सत्यमशीमहि ।
    पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री: श्रयतांयश: ॥ श्रीसुक्त
  - ॐ ओषधी: प्रतिमोदद्धवं पुष्पवती: प्रसूवरी: ।
    अश्श्वाऽ इव सजित्त्वरीर्वीरुध: पारयिष्णव: ॥
  - माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
    मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥
  - ॐ मन्दार-पारिजाताद्यै:, अनेकै: कुसुमै: शुभै:।
    पूजयामि शिवे, भक्तया, कमलायै नमो नम:।
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । पुष्पाणि समर्पयामि ॥

- **तुलसी दलम्** — ॐ तुलसी हेम-रुपां च रत्न-रुपां च मंजरीम् ।
  भवमोक्ष प्रदां तुभ्यम् अर्पयामि हरि-प्रीयाम् ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । तुलसीपत्रं समर्पयामि ॥

- **दुर्वाम्** — ॐ काण्डात काण्डात प्ररोहन्ती परुष:परुषस्परि ।
  एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥
  - तृणकान्त मणि प्रख्य हरित अभि: सुजातिभि:।
    दूर्वाभिराभिर्भवतीम पूजयामि महेश्वरि ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । दुर्वाम् समर्पयामि ॥

- **बिल्वपत्रम्** — ॐ नमो बिल्मिनेच कवचिनेच नमो व्वर्मिणेच वरूथिनेच
  नम: श्रुतायच श्रुतसेनायच नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्यायच ॥
  - त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम ।
    त्रिजन्मपाप संहारम् ऐक बिल्वं शिवार्पणम ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । बिल्वपत्रम् समर्पयामि ॥

- **शमी पत्राणी** — ॐ शन्नोदेवि रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शन्योर्भिस्रवन्तु न: ॥
  - ॐ शमी-शमयते पापं शमी-शत्रु विनासिनी ।
    धारिण्यार्जून बाणानां रामस्य प्रियवादिनी ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । शमी पत्रं समर्पयामि ॥

- **हरिद्राचूर्ण**
  ॐ हरिद्रा रंचिते देवि ! सुख सौभाग्य दायिनी।
  तस्मात त्वाम पूज्याम यत्र सुखम शान्तिम प्रयच्छ में ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । हरिद्राचूर्ण समर्पयामि ॥

- **कुंकुम्**
  ॐ कुंकुमं कामना दिव्यं कामना काम सम्भवम ।
  कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । कुम्कुम समर्पयामि ॥

- **सिन्दूरम्**
  ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमिय: पतयन्ति यह्वा: ।
  घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभि: पिन्वमान: ॥
  - ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
    शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । सिन्दूरं समर्पयामि ॥

- **सौभाग्य द्रव्यम्**
  ॐ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुन् ज्यावा हेतिम् परिबाधमान: ।
  हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान पुमा ७ सं परिपातु विश्वत: ॥
  - अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन्मेव च ।
    अबीरेणर्चितो देव क्षत: शान्ति प्रयच्छमे ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । नाना परिमल द्रव्याणि समर्पयामि ॥

- **धुपम्**
  ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत: ।
  ऊरु तदस्य यद्वैश्य: पदभ्या ७ शूद्रो अजायत ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ कर्दमेन प्रजाभूतामयि सम्भवकर्दम ।
    श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ श्रीसुक्त
  - ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वाम: ।
    देवानामसि वह्नितमं ७ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥
  - ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध: उत्तम: ।
    आघ्रेय: सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
  - ॐ अमुक देवताभ्याम् नम: । धूपं आघ्रायामि ।

- **दीपम्**
  ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो आजायत ।
  श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ पुरुषसुक्त
  - ॐ आप: सृजन्तुस्निग्धानि चिक्लीतवसमे गृहे ।
    निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ श्रीसुक्त
  - ॐ साज्यं च वर्ति संयुक्तम वाहिन्ना योजितम मया ।
    दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य ति मिरापहम ॥

- ॐ अग्निर्ज्योति: ज्योतिरग्नि: स्वाहा, सूर्यो ज्योति: ज्योति: सूर्य: स्वाहा। अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्च्च: स्वाहा, सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्च: स्वाहा। ज्योति: सूर्य्य: सूर्य्योज्योति: स्वाहा॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम:। दीपं दर्शयामि॥

- **नैवद्यम्** ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत।
  पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥ पुरुषसुक्त
- ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्म मालिनीम्।
  चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ श्रीसुक्त
- शर्कराखण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च।
  आहारं भक्ष्य भोज्यञ्च नैवेद्यं प्रति गृह्यताम॥
- प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा॥
- नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयम्-उत्तरापोशनं समर्पयामि।

- **ऋतुफलम्** ॐ याफलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:।
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ ह स:॥
- इदं फलं मया देवि स्थापितम् पुरतस्तव।
  तेन मे सफला वाप्तिर् भवेत जन्मनि जन्मनि॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम:। ऋतुफलानि निवेदयामि।

- **करोद्वर्तन** ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शू पृच्यतां परुषा परु।
  गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत:॥
- ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
  करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम:। करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

- **ताम्बूलम्** ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
  वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि:॥ पुरुषसुक्त
- ॐ आर्द्रां यस्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
  सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ श्रीसुक्त
- ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
  एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नम:। मुख शुद्धयर्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

- **दक्षिणाम्** ॐ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो:।
  अनन्त पुण्य फलद मत: शान्तिं प्रयच्छ मे॥

- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
  स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥
- ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूतं याश्च दक्षिणाः ।
  तदग्निर्वैश्व कर्मणः स्वर्देवेषु नौ दधत् ॥
- ॐ तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम् ।
  यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरूषानहम्॥श्रीसुक्त
- ॐ अमुक देवताभ्याम् नमः । द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि ।

- **कर्पुर नीराजंन**

  ॐ आ रात्रि पार्थिव ७ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
  दिवः सदा ७ सि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः ॥
- ॐ इद ७ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ७ सर्वगण ७ स्वस्तये ।
  आत्मसनि प्रजासनि पशुसति लोकसन्यभयसनि :।
  अग्नि प्रजा बहुलां में करोत्वनं न्यतो रेतोऽस्मासु धत ॥
- ॐ अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता,
  वसवो देवता रुद्रा देवता, ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता,
  विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥
- कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
  सदा बसन्तं हृदया रबिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

- **प्रदक्षिणा**

  ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।
  तेषा ७ सहस्र योजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥
- ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
  देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन् पुरषं पशुम् ॥

- **पुष्पांजलि**

  ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
  ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
- नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
  पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

- **प्रार्थना**

  ॐ ब्रह्माद्यावाहित देवाः सर्वतोभद्र मण्डले ।
  पूजां गृह्णीत् मद् दत्तां सर्वदा मे प्रसीदत ॥

- **साष्टांग प्रणाम**

  ॐ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे ।
  साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

- **अर्पण**

  अनेन कृतेन पूजनेन भगवान / भगवती .... प्रीयताम्, न मम ।

॥ कुशकण्डिका ॥

- ब्रह्मा वरण — अग्नि के दक्षिण दिशा में पान के उपर ब्रह्मा हेतु कुशा में गांठ लगाकर रख दें।
  - **अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम् । दक्षिणे तत्र ब्रह्मोपवेशनम् । यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव भवामि इति प्रतिवचनम्।**

- प्रणीता पात्र स्थापन — अग्नि के उत्तर में कुश के आसन पर प्रणीता-प्रोक्षणी पात्र में जल भर कर रखें। **उत्तरतः प्रणीतासनम् । वायव्यां द्वितीयमासनम् । ब्रह्मानुज्ञात वामकरणे प्रणीतां संगृह्य दक्षिणकरणे जलं प्रपूर्य भूमौ वायव्यासने निधाय आलभ्य उत्तरतोऽग्ने स्थापयेत्। बहिर्प्रददक्षिणग्ने।**

- परिस्तरणम् — **तच्च त्रिभिः दर्भैः एकमुष्टय्या वा तच्च प्राक् उदगग्रे। दक्षिणतः प्रागग्रैः। प्रत्यक् उदग् उग्रैः उत्तरतः प्राग् अग्रैः।** सर्व प्रथम कुश का चार भाग कर पहले अग्निकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र बिछावे। दसुरे भाग को ब्रम्हासन से अग्निकोण तक पूर्वाग्र बिछाये। तीसरे भाग को नैऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र बिछाये और चोथे भाग को वायव्यकोण से ईशानकोण तक पूर्वाग्र बिछाये। पनुः दाहिने हाथ से वेदी के ईशानकोण से प्रारम्भकर वामवति ईशान पर्यन्त प्रदक्षिणा करे।

- पात्रासादनम् — **पवित्रच्छेदना दर्भाः त्रयः** (पश्चिम में पवित्र छेदन हेतु 3 कुश)। **पवित्रे द्वे** (पवित्र करने हेतु कुश)। **प्रोक्षणीपात्रम्** (प्रोक्षणी पात्र)। **आज्यस्थाली** (घी का कटोरा)। **चरुस्थाली** (चरु पात्र)। **सम्मार्जनकुशाः पञ्च** (मार्जन हेतु 5 कुश)। **उपयमनकुशाः पंच** (5 कुशा गूंथ कर उत्तर से पश्चिम की तरफ रखें)। **समिधस्तिस्रः** (अंगूठे से तर्जनी के बराबर 3 लकडी)। **स्रुक् । स्रुवः आज्यम्** (स्रुवा का घृत धरे)। **तण्डुलाः** (चावल)। **पूर्णपात्रम्। उप कल्पनीयानि द्रव्याणि। दक्षिणा वरोवा।** पूर्णाहुति के लिये नारिकेल आदि हवन सामग्री मगाकर पश्चिम से पूर्व तक उत्तराग्र या अग्नि के उत्तर की ओर पूर्वाग रखलें।

- पवित्रक निर्माण — द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वयोर्मूलेन द्वो कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य अनामिकांगुष्टेन द्वयोरग्रे छेदयेत्। द्वे ग्राहये। त्रीणि अन्यच्च उत्तरतः क्षिपेत्।

- प्रोक्षणीपात्र — प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य प्रात्रान्तरेण चतुर्वारं जलं प्रपूर्य वामकरे पवित्राग्र दक्षिणे पवित्रयोर्मूलं धृत्वा मध्यतः। **पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम् प्रोक्षणीपात्रजलस्य** (प्रोक्षणी पात्र से 3 बार अपने ऊपर छींटा मारे)। **प्रोक्षणीनां सव्यहस्ते करणम्** (प्रोक्षणी पात्र को सीधे हाथ से बांये हाथ पर रखें)। दक्षिणहस्तं उत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकांगुल्योः मध्यपर्वाभ्यां अपां त्रिरुद्दिंगनम्। **प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्** (प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र

में 3 बार छींटा दें) । **प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्या: प्रोक्षणम्** (प्रोक्षणी पात्र के जल से सब जगह छींटा दें।

- चरु निर्माण — **चरु स्थाल्या प्रोक्षणम् । सम्मार्जन-कुशानां प्रोक्षणम् । उपयमन-कुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्रुवस्य प्रोक्षणम् । स्रुच: प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्रुवस्य प्रोक्षणम् । स्रुच: प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । तंडुलानां प्रोक्षणम् । पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम् । प्रणीताग्न्योर्मध्ये असञ्चरदेशे प्रोक्षणीनां निधानम्** (अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रख दें) । **आज्य स्थाल्यामाज्य निर्वाप:** (घृत कटोरे में देख लें कुछ अशुद्ध तो नहीं है)। **चरुस्थाल्यां तण्डुलप्रक्षेप: । तस्य त्रि: प्रक्षालनम् । चरुपात्रे प्रणीतोदक-मासिच्य दक्षिणत: ब्रम्हाणा आज्याधिश्रयणं मध्ये चरोरधि श्रयणं आचार्येण युगपत् ।** (अग्नि के उत्तर दिशा में प्रणीता के जल से आसेचन कर चरु को रखें) ।
- पर्यग्नि करणम् — **ज्वलितोल्मुकेन उभयो: पर्यग्नि करणम्** (अग्नि को जला दें) **इतरथावृत्ति: । अर्द्धाश्रिते चरौ स्रुवस्य प्रतपनम् ।**
- स्रुवा का सम्मार्जन — **सम्मार्गकुशै: सम्मार्जनम् । अग्रै: अग्रंम् । मूलै: मूलम् । प्रणीतोदकेना अभ्युक्षणम् । पून: प्रतपनम् । देशे नीधानम् ।** स्रुवा के पूर्वाग्र तथा अधोमुख लेकर आग पर तपायें । पुन: स्रुवा को बाये हाथ में रखकर दायें हाथ से सम्मार्जन करें ।
- घृत-चरु पात्र स्थापना — **आज्योद्वासनम् । चरोरुद्वासनम् ।** घी चरु पात्र को वेदी के उत्तर भाग में रख दें ।
- घृत उत्प्लवन — **घृत उत्प्लवन ।** स्रुवा से थोडा घृत लेकर चरु में डाल दें ।
- 3 समिधा की आहुति — **उपयमन कुशान् वामहस्तेनादाय तिष्ठन् समिधोभ्याधाय ।** तीन समिधा घी में डुबोकर खडे होकर मन में प्रजापति का ध्यान करते हुए अग्नि में डाल दें ।
- पर्युक्षण-जलधर देना — **प्रोक्षण्युदकशेषेण सपवित्रहस्तेन अग्ने: ईशानकोणादारभ्य ईशानकोण पर्यंतं प्रदक्षिणवत् पर्युक्षणम् । हस्तस्य इतरथावृत्ति: । पवित्रयो: प्रणीतासु निधानम् । दक्षिणजान्वच्य जुहोति । तत्र आज्यभागौ च ब्रम्हाणा अन्वारब्ध: स्रुवेण जुहयात् ।** (प्रोक्षणी पात्र से जल लेकर ईशान कोण से ईशान कोण तक प्रदक्षिणा करें । एवं संखमुद्रा से स्रुवा को पकड कर हवन करें) ।
- द्रव्यत्याग — बहुकर्तृक हवन में यथा समय प्रति आहुति के बाद प्रोक्षणी पात्र में त्याग करना असम्भव है । अत: सब हवनीय द्रव्य तथा देवताओं को ध्यान कर निम्न वाक्य को पढकर जल भूमि पर गिरा दें । **इदमुपकल्पितं समित्तिलादि द्रव्यं या या यक्ष्यमाण देवता स्ताभ्य स्ताभ्यो मया परित्यक्त न मम ।**

॥ आहुति मंत्र ॥

- **घी आहुति** वेदी के आगे अपनी ओर एक प्रोक्षणी पात्र में थोडा सा जल रखें। घी की आहुति देने के बाद स्त्रुवा का शेष घी इसी कटोरी के जल में छोड दें।

1. **ॐ प्रजापतये स्वाहा** **इदं प्रजापतये न मम।**
2. **ॐ इन्द्राय स्वाहा** **इदं इन्द्राय न मम।**
3. **ॐ अग्नये स्वाहा** **इदं अग्नये न मम।**
4. **ॐ सोमाय स्वाहा** **इदं सोमाय न मम।**
5. **ॐ भूः स्वाहा** **इदं अग्नये न मम।**
6. **ॐ भुवः स्वाहा** **इदं वायवे न मम।**
7. **ॐ स्वः स्वाहा** **इदं सूर्याय न मम।**

- **ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।**
  तद्वद्देवो पघातानां शान्तिर्भवति वारिका॥ यजमान के सिर पर जल छिड़कें।
- शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापं रोगं अकल्याणम् तद्दूरे प्रतिहतमस्तु, द्विपदे चतुष्पदे सुशान्तिर्भवतु।

- पंच वारुण आहुति **ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः।**
  यजिष्ठो वह्नितमः शोचानो विश्वा द्वेषा ७ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ १ ॥
  इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥

- **ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।**
  अव यक्ष्व नौ वरुण७ रराणो वीहि मृडीक७ सुहवो न एधि स्वाहा ॥ २ ॥
  इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥

- **ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभि शस्तिपाश्च सत्व मित्व मयाऽअसि।**
  अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज७स्वाहा॥ ॥ ३ ॥
  इदमग्नये न मम॥

- **ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।**
  तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ ॥ ४ ॥
  इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

- **ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ७ श्रथाय।**
  अथा वय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ ॥ ५ ॥
  इदं वरुणायादित्यायादितये न मम॥

- **ॐ प्रजापतये स्वाहा॥** इदं प्रजापतये न मम॥

- गणेश आहुति — **ॐ गणानां त्वा गणपति ঙ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ঙ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ঙ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥** गणपतये नमः स्वाहा।
- गौरी आहुति — **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन। ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥** गौर्यै नमः स्वाहा।

❖ **आहुति के समय प्रत्येक नाम के साथ नमः के उपरान्त स्वाहा का प्रयोग करें।**

- **नवग्रह आहुति** पृष्ठ क्र० 124 देखें।
- **अधिदेवता आहुति** पृष्ठ क्र० 126 देखें।
- **प्रत्यधि देवता आहुति** पृष्ठ क्र० 127 देखें।
- **पंचलोकपाल आहुति** पृष्ठ क्र० 128 देखें।
- **दशदिक्पाल आहुति** पृष्ठ क्र० 129 देखें।

- स्विष्टकृत् आहुति — स्रुवा में घी तथा एक लड्डू लेकर आहुति दें।
  ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

॥ कर्मकुटी - जलाधिवास (हवन वदी के उत्तर) ॥

- मूर्तियों का मुख पश्चिम या उत्तर की ओर रहे। यजमान (पत्नी सहित) पूर्व मुख बैठे।
- कुछ पद्धतिकार पूर्वमुख मूर्तियों को रखने को लिखते हैं तब यजमान उत्तर मुख बैठे।
- कुछ पद्धतिकारों ने सरसों छोड़कर यदत्र संस्थितम् मन्त्र द्वारा भूतादिकों को हटाकर जलाधिवास स्थल को शुद्ध करने को भी लिखा है।
- यजमान अपने सामने किसी चौकी पीड़ा आदि पर सभी नई मूत्तियों को रख ले।
- यजमान आचमन प्राणायाम कर ले, पवित्री पहन ले, अक्षत पुष्प लेकर शान्ति पाठ करे।

- शान्ति पाठ **द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥
ॐ शान्तिः ॥ शान्तिः ॥ शान्तिः ॥**

- संकल्प **अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि आसां मूर्त्तीनां देवता योग्यता धिष्ठान सिद्ध्यर्थम् जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये ॥**

- मूर्तियों को कुशा से पोंछ दे और कुशा ईशान कोण में फेंक दे।
- घी में शहद मिलाकर सभी मूर्तियों में हलका सा लेप कर दे।
- मूर्तियों में कहीं कोई छिद्र आदि हो तो घी-शहद से उसे बन्द कर दे।

- गंगा मिट्टी या किसी पवित्र नदी-तालाब की मिट्टी मूर्तियों में लगा दे।
  - **ॐ सत् संस्काराय देवानां मलस्य परि शुद्धये।
मृत्स्नया स्नापयाम्येव देवता तुष्टि हेतवे ॥**

- गोबर, गोमूत्र, दूध, हवन का भस्म क्रमशः अलग-अलग मूर्तियों में लगा दे।
- गोवर **गवां योनिसमुद्भूतैः पवित्रैः शुद्धिकारकैः।
गोमयैः स्नापयाम्येव देव संस्कार सिद्धये ॥** ॥ १ ॥
- गोमूत्रः **सुरभेर्गात्र सम्भूतः पावनैः शुभकारकैः।
गोमूत्रैः स्नापयाम्येव सज्योतिर्मत शुद्धये ॥** ॥ २ ॥
- दूध **गोस्तनेभ्यः समुत्पन्नैः पयोभिर्निर्मलैः शुभैः।
स्नापयामि देवांस्तान् प्रतिष्ठा शुभहेतवे ॥** ॥ ३ ॥
- भस्म **यथा वह्निस्तृणादीनां सुभस्म प्रकरोति यत्।
तथा मूर्त्ति समूहानां भस्मसु च विधास्यति ॥** ॥ ४ ॥

- गंगा जल अथवा शुद्ध तीर्थ नदी तालाब का जल चढ़ा दे।
  - **ॐ गंगादि सलिलैर्दिव्यैस्तीर्थोदक समन्वितैः।**
    स्नापयामि देवाँस्तान् सुगणादि सुशोभितान्॥
- मूर्तियों के आगे जल से भरा एक कलस रख दें।
- हाथ में अक्षत फूल लेकर मन्त्र पढ़े।
  - **ॐ काशी कुशस्थलीमायाऽ वन्त्यायोध्या मधोः पुरी।**
    शालिग्रामः सगोकर्णः नर्मदा च सरस्वती॥ ॥ १ ॥
  - **गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च।**
    बृषारुढ़ा सरोजाक्षी पद्म हस्ताशशि प्रभा॥ ॥ २ ॥
  - **आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पाप प्रणाशिनी।**
    नीलोत्पल दलश्यामा पद्म हस्ताम्बु जेक्षणा॥ ॥ ३ ॥
  - **आयातु यमुनादेवि कूर्मयान स्थिता सदा।**
    प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा॥ ॥ ४ ॥
  - **उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा।**
    एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्य क्षेत्राणि सर्वशः॥
  - **तानि सर्वाणि कुम्भेऽ स्मिन् विशन्तु ब्रह्म शाशनात्॥** ॥ ५ ॥
  - हाथ का अक्षत, फूल कलश पर छोड़ दें।

- कलश के चारो ओर अक्षत छोड़ कर आवाहन् करें।

१. **ॐ इन्द्राय नमः।** पूर्वे।
२. **ॐ अग्नये नमः।** इति अग्निकोणे।
३. **ॐ यमाय नमः।** इति दक्षिणे।
४. **ॐ निर्ऋतये नमः।** इति नैर्ऋत्य कोणे।
५. **ॐ वरुणाय नमः।** इति पश्चिमे।
६. **ॐ वायवे नमः।** इति वायव्य कोणे।
७. **ॐ कुबेराय नमः।** इति उत्तरे।
८. **ॐ ईशानाय नमः।** इति ईशानकोणे।

- पंचोपचार कलश की पूजा कर दे। **ॐ अष्ट लोक पालाय नमः॥** **पृष्ठ क्रं 37** देखें।

- कलश का जल मूर्तियों पर चढ़ाए। जल धारा दे धार टूटे नहीं।
  - **ॐ अश्मन्नूर्जं पर्वते शिश्रियाण मद्भ्य ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधिसम्भूतं पयः।**
    तां न इषमूर्जम् धत्त मरुतः स ७ रराणा अस्मँस्ते क्षुन्मयि त ऊर्ग्यैं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥

- शुद्ध जल से मूर्तियों को धोकर एवं शुद्ध वस्त्र से पोछ कर मूर्त्तियों को यथा स्थान रख दें।
- गन्ध पुष्प मूर्तियों पर चुप चाप चढ़ा दें।

- **कौतुक बंधन**
- आचार्य के हाथ से नाप कर एक-एक बीता का सफेद ऊन का सूत लेकर मूर्तियों के दाहिने हाथ (देवी के बाएँ हाथ) में बांध दे। शिवलिंग में लपेट दे।
- मंत्र **ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवी मिद् महन्त वलगमुत् किरामि।**
  - **यं मे निष्ट्यो, यम मात्यो निचखानेदं महन्त वलगमुत् किरामि।**
  - **यं मे समानो यम समानो निचखानेदं महन्त वलगमुत् किरामि।**
  - **यं मे सवन्धुर्यम सबन्धु निचखानेदं महन्त वलगमुत् किरामि।**
  - **यं मे सजातो यम सजातो निचखानोत् कृत्यां किरामि॥**
- यजमान **भो आचार्य ! देवस्या वयवान् सम्यक् निरीक्षस्व॥**
- आचार्य मूर्त्तियों को देख ले।

- बढ़े पात्रों में (जिसमें मूर्तियों को रखने पर मूर्तियाँ जल से ढक जाय) शुद्ध जल भर दे।
- जल में पंचगव्य, हिरण्य, दूर्वा, यव, पीपल, पलाश का पत्र छोड़ दे।

- संकल्प **ॐ शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्र:, अमुक-नामाऽहं सप्रासाद आसां मूर्तीनां प्रतिष्ठा कर्मणि जलमातृकादीन् पूजयिष्ये॥**

- **जल मातृणां पूजनम्** दो-दो दाना अक्षत जल पात्रों में छिड़के।

1. **ॐ मत्स्यै नमः।**
2. **ॐ कच्छप्यै नमः।**
3. **ॐ कूर्म्यै नमः।**
4. **ॐ वाराह्यै नमः।**
5. **ॐ दर्दुर्यै नमः।**
6. **ॐ शिशुमार्यै नमः।**
7. **ॐ ईश्वर्यै नमः।**
8. **ॐ सप्तजल मातृः आवाह्यामि, पूजयामि।**

- **जीवमातृणाम् पूजनम्** जलपात्र के समीप एक पत्तल पर ७ जगह अक्षत पुंज रखकर मातृकाओं का आवाहन करे।

1. **ॐ मत्स्यै नमः।**
2. **ॐ हृदयै नमः।**
3. **ॐ गोधायै नमः।**
4. **ॐ मकर्यै नमः।**
5. **ॐ डुण्डुभ्यै नमः।**
6. **ॐ दर्दुर्यै नमः।**
7. **ॐ जल्यै नमः।**

- **योगिनी आदि पूजनम्** जल पात्र में अक्षत छोड़कर योगिनी आदि का आवाहन करे।

1. **ॐ चतुषष्टि योगिनीभ्यो नमः।**
2. **ॐ क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
3. **ॐ अद्भ्यो नमः।**
4. **ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः।**
5. **ॐ मानसादि सप्तसरोभ्यो नमः।**
6. **ॐ पुष्करादि तीर्थेभ्यो नमः।**
7. **ॐ गंगादि महानदीभ्यो नमः।**
8. **ॐ वरुणाय नमः।**

- **वरुण पूजनम्** **ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तद शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह वोध्युरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः॥ जलाधिवसितो देव मम भाग्योदयं कुरु। त्वदधिष्ठान् संयोग्यं त्वत्प्रसादात् सुरेश्वर॥**

- पंचोपचार से जल, जीव मातृका तथा योगिनी आदि की पूजा कर दे। पृष्ठ क्रं 146 देखें।

- एक पत्ता पर दही - उरद रख कर जल पात्र के समीप रखे।
- संकल्प **जल पात्र स्थित देवता इदं दधि-माष-भक्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य रक्षां कुरु॥** जल दही-उरद के पास छोड़ दे।
- पंचामृत **ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रो तसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत् सरित॥** जल पात्र में पंचामृत छोड़ दे।
- प्रार्थना **ॐ जलाधिवासितो देवो मम भाग्योदयं कुरु। त्वदधिष्ठान संयोग्यं त्वत् प्रसादात् सुरेश्वर॥** जल पात्र में फूल छोड़ दे।
- वस्त्र-कुश **ॐ देवानांरक्षणार्थाय रक्त सूत्रं कुशैर्युतम्। तद्वै प्रतिसराख्यं च वध्नामि सुरहेतवे॥** मूर्तियों में कुशा तथा लाल वस्त्र लपेट दे।

- कुश, रक्त वस्त्र लपेट कर मूर्तियो को जल पात्र में अधिवास (जलाधिवास) करा दे।
- मूर्तियों का मुख पूर्व या उत्तर रहे।
- जलाधिवास के समय पूरुष-सूक्त, नारायण अथर्वशीर्ष, शिवस्थापनायां रुद्राध्याय, सूर्य स्थापनायां सूर्यसूक्तं, देवीस्थापनायां देवीसूक्तं, पंचाक्षर जप, अघोर जप, आदि का पाठ करें।
- मन्त्र **ॐ अवते हेडो वरुण नमोभि रवयज्ञे भिरीमहे हविभिः।**
  - **क्षयं नास्मभ्य मसुर प्रचेतो राजन्ने ना ७ सि शिश्रयः कृतानि॥**
  - **उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ७ श्रथाय।**
  - **अथावय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम्॥**
- लघुदर्पण **ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।**
  - **उपयाम गृहोतोऽसि सूर्यायत्वा भ्राजायैषतेयोनिः सूर्यायत्वा भ्राजाय॥**

- मूर्तियों को जल में अधिवास (जलाधिवास) कराने के बाद फूल लेकर प्रार्थना करे।
- प्रार्थना **ॐ प्रतिमासु कलानां च सिद्ध्यर्थं रक्षणायजगत् प्रभो। जलैशानां रक्षभो देव मत्तोऽप्सु समधिष्ठिताम्॥** ॥ १ ॥

- **नमस्तेऽर्चे सुरेशानि प्रणीते विश्वकर्मणा।**
  प्रभाविता शेष जगद्धात्रे इहतुभ्यं नमो नमः ॥ ॥ २ ॥
- **त्वयि सम्पूजयामीशं नारायण मनामयम्।**
  रहिता शेषदोषस्त्व मृद्धयुक्ता सदाभव ॥ ॥ ३ ॥
- **सर्वसत्यमयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम्।**
  त्वमेवालं करिष्यामि त्वं वन्द्यो भवते नमः ॥ ॥ ४ ॥

- संकल्प- सुवर्ण+गौ **अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं कृतैतत् जलाधिवास कर्मणि परिपूर्णता वाप्तये शुभता सिद्ध्यर्थम् इदं हिरण्यम् (तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यं) एवं च गाम् (गो निष्क्रयी भूतं द्रव्यम्) अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य अहं सम्प्रददे।**
  - ब्राह्मण लेकर कहे - **स्वस्ति**

- अन्य ब्राह्मणों को भी दक्षिणा दे।
- मूर्तियों से सम्बद्ध सूक्त तथा शान्ति सूक्त का पाठ करे।
- जलाधिवास एक रात, एक याम, एक मुहूर्त, अथवा गौ दुहने में जो समय लगता है उतने समय तक हो सकता है। यथा समय आवश्यकता सुविधा देकर आचार्य की आज्ञा से यथेष्ट काल तक जलाधिवास करना चाहिए।

॥ इति जलाधिवास ॥

॥ अन्नाधिवास (मण्डप के नैऋत्यकोण) ॥

- यजमान पत्नी सहित मण्डप के नैऋत्य कोण में पूर्व मुख बैठे।
- आचमन प्राणायाम कर ले, पवित्री पहन ले, अक्षत पुष्प लेकर शान्ति पाठ करे।

- शान्ति पाठ **द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥**
ॐ शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्तिरस्तु।

- संकल्प **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं मम गृहे प्रचुर धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि, सुख सम्पत्त्यादि निवासार्थम् आसां मूर्तीनां देवता योग्यता-धिष्ठान सिद्ध्यर्थञ्च धान्याधिवासं करिष्ये ॥**

- अन्नाधिवास स्थल को गोबर से लीप कर जल छिड़क कर शुद्ध करे।
- गोबर से लिपी हुई भूमि पर धान्य (अन्न) फैला दे।
- धान्य के ऊपर शुद्ध महीन - नया वस्त्र बिछा दे।
- जलाधिवास स्थल पर जाकर पूर्व मुख बैठ कर आचमन - प्राणायम करके प्रार्थना करें।

- प्रार्थना **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देव यन्तस त्वेमहे।**
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा ॥ ॥ १ ॥
  - **ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश समुत्तिष्ठ सुरेश्वर।**
  उत्तिष्ठ जगदाधार त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ॥ ॥ २ ॥
  - **ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यज निद्रां महाशय।**
  जलाधिवासन विधिं त्यक्तवा स्वीकुरु हि मण्डपम् ॥ ॥ ३ ॥
  - **ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।**
  उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगल कुरु ॥ ॥ ४ ॥

- क्रमशः १-१ मूर्ति जल पात्र से निकाले शुद्ध वस्त्र से पोछ कर किसी पात्र में रखता जाय।
- सभी मूर्त्तियों को उठा कर शंख, भेरी, मृदंग, मंगल गीत आदि के साथ मण्डप के नैऋत्य कोण में अन्नाधिवास के स्थान प आए और मूर्तियों को पश्चिम मुख रखे स्वयं यजमान पूर्व मुख बैठ जाय।
- धान्य के ऊपर जो वस्त्र बिछाया है उस पर १ कुशा फैला दे।
- उसी धान्य, वस्त्र, कुश के ऊपर ज्येष्ठता के क्रम से १-१ मूर्ति को रख दे।

- मन्त्र **ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा ॥ दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वा सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥**

- मूर्तियों के ऊपर फिर एक कपड़ा फैला दे।
- कपड़े के ऊपर धान्य (अन्न) फैला दे।
- मूर्तियां बन्द हो जांय (परिवार सहित यह अन्न फैलाना चाहिए)।
- अन्न फैला कर उसके ऊपर कुशा - गन्ध - अक्षत - फूल चढ़ा दे।
- कुछ लोग षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजा करते हैं। **पृष्ठ क्रं 146** देखें।
- देव सम्बन्धित सूक्त पाठ - शान्ति पाठ - मंगलगान करे।

॥ इति अन्नाधिवास ॥

॥ देव स्नान मण्डप ॥

- मण्डप में उत्तर की ओर बीच वाले भाग में तीन काठ की चौकी (वेदी) दक्षिण से उत्तर की ओर रखे।
- तीनों चौकी २८ अंगुल लम्बी, २४ अंगुल चौड़ी और ६ अंगुल ऊंची बनानी चाहिए।
- तीनों वेदी पर बालू या मिट्टी बिछाये। उस पर चावल से स्वस्तिक बना दे।
- तीनों पीठों के नीचे सप्तधान्य बिछा दे। लघुदर्पण / अग्निपुराण
- यजमान दक्षिण वाली वेदी के सामने पूर्व मुख बैठकर आचमन-प्राणायाम करके ध्यान करे।

- विश्वकर्मा ध्यान **ॐ विश्वकर्मातु कर्त्तव्यः श्मश्रुलो मुसलाधरः।**
  सं दंशपणिर्द्धि भुजस् तेजो मूर्त्तिः प्रतापवान्॥
  - **भो विश्वकर्मन् भूतात्मन् शिल्प कर्म विशारद।**
    आगच्छ भगवन् देव ह्यस्मिन् वै स्नान मंडपे॥
  - **ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रम कृणोरवध्यम्।**
    तस्मै विशः शमनमन्त पूर्वीरय मुग्रो विहव्यो यथासत्॥ लघुदर्पण

- पंचगव्य **ॐ पंचगव्यं पूतकरं सर्व संशुद्धि कारणम्।**
  अतः सम्प्रोक्षिता मह्यम् वेदिकाः शुभलक्षणाः॥ वेदी पर पंचगव्य छिड़के

- कुशा **ॐ इमान् कुशान् भद्रपीठे मूर्तिनां सुस्थिराय च।**
  आसादयामि ब्रह्मदेव रचितान्न्यून संयुतान्॥
  - **सुकाष्ठ निर्मितान् पीठान् सर्वलक्षण संयुतान्।**
    प्रतिमा स्थापनार्थम् तु पूजयामि वेदिकत्रयान्॥ कुशा बिछा दें। अग्रभाग-पूर्व

- तीनों वेदियों पर फूल छोड़ दे। वस्त्र बिछा दे।
- यजमान यहाँ से उठकर अन्नाधिवास स्थल पर आकर पूर्वाभीमुख बैठेकर आचमन-प्राणायाम करे।
- मूर्तियों के ऊपर से धान्य हटाकर साफ कर ले।

- प्रार्थना – देवों **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस् त्वेमहे।**
  उप प्रयन्तु मरुतः सु दानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा॥
  - **स्वागतं देव देवेश विश्वरूप नमोऽस्तुते।**
    शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धि कुर्मः सहस्वताम्॥ फूल मूर्त्तियों पर छोड दें।

- मूर्तियों को धान्य से बाहर निकाल कर। कुशा से पोंछ दे एवं शुद्ध जल से स्नान करा दे।
- किसी पात्र में मूर्तियों को रखें अथवा मूर्त्तियां बड़ी तथा भारी हों तो यजमान स्पर्श कर ले।
- अन्य पवित्र जन मूर्तियों को उठाकर शंख भेरी – मंगलगीत के साथ स्नान मंडप में ले जाय।

॥ प्रथम वेदी स्नान विधि - १२ कलश ॥

- मूर्तियों को स्नान मंडप में लाकर दक्षिण वाली पहली वेदी पर पश्चिम की ओर मुख कर के रखे।
- कुछ पद्धतिकारों ने पूर्व मुख मूर्त्तियों को रखने को लिखा है किन्तु लघुदर्पण एवं उद्योत ग्रन्थ में पश्चिम मुख लिखा है।
- रखते समय मन्त्र — **ॐ स्तीर्णम् वर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरू पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्। देवेभिर्युक्त मदितिः सजोषाः कृष्वाना सुविते दधातु॥**
  - **भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर्व्यशे महि देवहितं यदायुः॥**

- यजमान पूर्व मुख प्रथम वेदी (दक्षिण वाली वेदी) के सामने बैठ जाय।
- अपने सामने १२ कलश दक्षिण से उत्तर के क्रम से १ पंक्ति में स्थापित करे।
- कलशों के नीचे सप्तधान्य छोड़ दें। लाल कच्चा सूत लपेट दे। जल तथा पंचपल्लव छोड़ दे।

- इन १२ कलशों में क्रमशः (दक्षिण से उत्तर के क्रम से) निम्न वस्तुएं छोड़े।
- अग्निपुराण के अनुसार ५ वृक्ष हैं - जामुन, सेमर, खिरंटी, बेर, मौलसिरी।

1. **सप्तमृत्तिका**
2. **पंचवृक्ष छाल जल**
3. **गौमूत्र**
4. **गोबर**
5. **भस्म**
6. **चंदन मिला जल**
7. **सुगन्धित जल**
8. **सुगन्धित जल**
9. **सुगन्धित जल**
10. **सुगन्धित जल**
11. **सुगन्धित जल**
12. **सुगन्धित जल**- स्थपति संज्ञक

- इन कलशों में उत्तर वाला अन्तिम बारहवां कलश स्थपति संज्ञक है। उसे उठाकर मूर्त्ति के सामने रखे।

- फूल लेकर इस कलश में तीर्थो का आवाहन करे।
- आवाहन-तीर्थो — **ॐ काशी कुशस्थलीमायाऽवन्त्य योध्या मधोः पुरी। शालिग्रामं सगोकर्णं नर्मदा च सरस्वती॥** ॥ १ ॥
  - **भषारूढ़ा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा। आगच्छतु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पाप प्रणाशिनी॥** ॥ २ ॥
  - **नीलोत्पल दलश्यामा पद्महस्ताम्बु जेक्षणा। आयातु यमुना देवी कूर्मयान स्थिता सदा॥** ॥ ३ ॥
  - **प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमीतथा। चर्मिला चन्द्रभागा च सरयूगण्डकी तथा॥** ॥ ४ ॥

- जम्बुका च शतद्रुश्च कालिका सुप्रभा तथा।
  वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः॥ ॥ ५ ॥
- गोदावरी महावर्ता शर्करावर्तमार्जनी।
  कावेरी कौशिकी चैव तृतीया च महानदी॥ ॥ ६ ॥
- विटंका प्रतिकूला च सोमनन्दा च विश्रुता।
  करतोया वेत्रवती वेदिका वेणुका च या॥ ॥ ७ ॥
- आत्रेय गंगा वैतरणी काश्मीरी ह लादिनी च या।
  प्लावती शवित्रासा कल्माषा संशिनी तथा॥ ॥ ८ ॥
- वशिष्ठा च ऊपाया च सिन्धु वत्यारूणी तथा।
  ताम्रा च त्रिसन्ध्या च तथा मन्दाकिनीपरा॥ ॥ ९ ॥
- तैलिकाह, नी च पारा च दुन्दुभिर्न कुली तथा।
  नीलगन्धा च बोधा पूर्णचन्द्रा शशिप्रभा॥ ॥१०॥
- अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा।
  आषाढ़ि डिण्डिमारत्नं भारभूतं वलाकुलम्॥ ॥११॥
- हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यम केश्वरम्।
  श्री पर्वत समाख्यातं जलेश्वर मतः परम्॥ ॥१२॥
- आम्नात केश्वरं चैव महाकालं तथैवच।
  केदार मुत्तमं गुह्यं महाभैरवमेव च॥ ॥१३॥
- गयां चंव कुरुक्षेत्र गुह्यं कनखलं तथा।
  विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीम मष्टकम्॥ ॥१४॥
- वस्त्रापदं रूद्र कोटिम विमुक्तं महावलम्।
  गोकर्णम् भद्रकर्णम् च माहेशं स्थान मुत्तमम्॥ ॥१५॥
- छागलाह वं द्विरण्डं च कर्कोटं मण्डलेश्वरम्।
  कालञ्जर वनं चैव देवदारुवनं तथा॥ ॥१६॥
- शंकुकर्णं तथैवेह स्थलेश्वर मतः परम्।
  गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च॥ ॥१७॥
- एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणिसर्वशः।
  तानि सर्वाणि कुम्भेस्मिन् विशन्तु ब्रह्म शासनात्॥ ॥१८॥

- मन्त्र
  ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
  मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ ॥ १ ॥
- कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
  ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥ ॥ २ ॥

- **अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।**
  देवदानव संवादे मध्यमाने महोदधौ ॥ ॥ ३ ॥
- **उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।**
  त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः॥ ॥ ४ ॥
- **त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।**
  शिवः स्वयं त्वेमासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ ॥ ५ ॥
- **आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।**
  त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥ ॥ ६ ॥
- **त्वत् प्रसादादिमं कर्म कर्तुं मीहे जलोद्भव ।**
  सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ॥ ७ ॥
- **क्षेम कर्त्ता, तुष्टि कर्त्ता , पुष्टि कर्ता , वरदो भव ॥**

बलिप्रदान

- देवस्नान मंडप से बाहर जाकर पूर्व दिशा में एक पत्ता पर खीर तथा खीर के ऊपर २ बूंद घी छोड़ दें।
- हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

- संकल्प — **अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण देवस्नपनांग भूतं सिद्धार्थ घृत पायसैः रुद्राय बलिप्रदानं करिष्ये ॥**
- मन्त्र — **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।**
  उर्वारुक मिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
  - ॐ रुद्राय एष सिद्धार्थ घृत पायस बलिं न मम ॥
- प्रार्थना — **ॐ भूताधिपेभ्यः सर्वेभ्यः प्रेत प्रेभ्यस्तथैव च ।**
  इमं हि पायस बलिं ददाभि शुभ हेतवे ॥

- कुछ पद्धतिकारों ने बलि प्रदान के पूर्व शिल्पिवर्ग मूत्ति बनाने वाले की पूजा भी लिखते हैं।

अष्टदिक्पाल बलि

- कुछ पद्धतिकारों ने इस स्थान पर अष्टदिक्पालों को भी बलिप्रदान लिखा है जो निम्न प्रकार है।
- क्रमशः १-१ पत्ता पर १-१ ग्रास खीर तथा खीर के ऊपर २ बूंद घी छोड़कर ले ले।
- स्नान मण्डप के चारो दिशा तथा चारो कोणों में खीर सहित १-१ पत्ता रखे और जल छोड़ दे।

1. इन्द्र - पूर्व — **ॐ इन्द्राय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
   भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥
   - अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ।

2. **अग्नि** - अग्निकोण **ॐ अग्नये सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
भो अग्ने दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्यिदयं कुरु ॥
- अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम् ।

3. **यम** - दक्षिण **ॐ यमाय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
भो यम दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥
- अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम् ।

4. **निर्ऋति** - नैऋत्यकोण **ॐ निर्ऋतये सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
भो निर्ऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाभ्युदयं कुरु ॥
- अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् ।

5. **वरुण** - पश्चिम **ॐ वरुणाय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाम्युदयं कुरु ॥
- अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम् ।

6. **वायु** - वायव्य **ॐ वायवे सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाम्युदयं कुरु ॥
- अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम् ।

7. **सोम** - उत्तर **ॐ सोमाय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
भो सोम दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाम्युदयं कुरु ॥
- अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ।

8. **ईशान** - ईशान **ॐ ईशानाय सांगाय इमं बलिं समर्पयामि ।**
भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममाम्युदयं कुरु ॥
- अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम् ।

- **स्नान मण्डप रक्षाभिधान**

- बलि प्रदान कर हांथ-पांव धो कर प्राणायाम कर के स्नान मंडप में आकर बैठे जाय ।
- बांए हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से थोड़ा-थोड़ा स्नान मण्डप में चारो ओर छिड़के ।
- पौराणिक मंत्र

ॐ पूर्वे रक्षतु देवेन्द्र आग्नेया मग्नि देवता ।
अवाचीं तु यमो रक्षेत् नैर्ऋतीं निर्ऋतिस्तथा ।
प्रतीचीं वरुणो रक्षेद् वायवीं वायु देवता ।
सोमो रक्षे दुदीचीन्तु ईशानी मीश देवता ।
ऊर्ध्वंम् रक्षतु धातावो ह्यधो ऽनन्तश्च रक्षतु ।
अनुक्त मपि यत् स्थानं रक्ष त्वीशो ममाद्रि धृक् ।

- वैदिक मन्त्र — ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार मिंन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम् ।
  ह्वयामि शुक्रं पुरुहूत मिन्द्र ७ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॥ १ ॥
- ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपव्रु वे । देवाँ आसाद या दिह ॥ २ ॥
- ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नति त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
  असि सोमेन समया विवृक्त आहुस्ते त्रीणि बन्धनानि ॥ ॥ ३ ॥
- ॐ एषते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहा ।
  अग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा ।
  यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणा सद्भ्यः स्वाहा ।
  विश्वेदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चाद् सद्भ्यः स्वाहा ।
  मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वा मरून् नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरा सदभ्यः स्वाहा ।
  सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरि सद्भ्यो ऊवस्वद्भ्यः स्वाहा ॥ ॥ ४ ॥
- ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्याचमृडय । त्वामवस्यु राचके ॥ ५ ॥
- ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् ।
  शिवोनियुद्भिः शिवाभिः ॥ ॥ ६ ॥
- ॐ कुविदंग यवमन्तो यवंचिद् यथा दान्त्यनु पूर्वम् पियूय ।
  इहे हैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥ ॥ ७ ॥
- ॐ ईशावास्यमिद ७ सर्वम् यत् किञ्च जगत्यां जगत् ।
  तेन त्यक्तेन भञ्जीथा मागधः कस्य स्विद् धनम् ॥ ॥ ८ ॥
- ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः ।
  सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥ ॥ ९ ॥
- ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
  ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॥१०॥

स्नान पूर्व पुण्याह वाचन

- यजमान अपने दक्षिण ४ ब्राह्मण उत्तर मुख बिठाए एवं हाथ में जल, अक्षत, फूल दे दे ।

- यजमान कहे — भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥
- ब्राह्मण — ॐ पुण्याहम् । ॐ पुनन्तुमा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
  पुनन्तु विश्वाभूता निजातवेदा पुनीहि मा ॥

- यजमान कहे — भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥
- ब्राह्मण — ॐ कल्याणम् । यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ।
  ब्रह्म राजन्याभ्यां ७ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ॥

- यजमान कहे — **भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु ।**
- ब्राह्मण — **ॐ कर्म ऋद्ध्यताम् । सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम दिवं पृथिव्या । अध्यारुहामा विदाम देवान्त स्वर्ज्योतिः ॥**
- यजमान कहे — **भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।**
- ब्राह्मण — **ॐ स्वस्ति । स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥**
- यजमान कहे — **भो ब्राह्मणाः देव स्नपन कर्मणः श्री रस्तु - इति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥**
- ब्राह्मण — **अस्तु श्रीः । श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या बहोरात्र पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन् निषाण मुम् मइषाण सर्वलोकम् मइषाण ॥**
- संकल्प दक्षिणा — **अद्य कृतस्य देव स्नपन पुण्याह वाचन कर्मणः सांगता सिध्यर्थम् दक्षिणा द्रव्यं अमुक-गोत्रेभ्यो, अमुक-ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातु मह मुत्सृजे ।**

देवस्नान प्रयोग

- मूत्तियों को कलश जलों से स्नान कराए।
- वेदी के आगे रखे १२ कलशों से मंत्रो के द्वारा जल कुशा से मूर्तियों पर अभिषेक (सिंचन) करें।
- प्रतिज्ञा संकल्प — **अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, आसु मूर्त्तिषु (अस्यां मूर्त्तौ) (अस्मिन् लिंगे) देवताधिष्ठान योग्यता सिद्ध्यर्थम् नानाद्रव्योदक कलशः अर्चाशुद्धि स्नपनं करिष्ये ।**

१. सप्तमृत्तिका कलश — **ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेता ७ सिजिन्वति ॥**

- **ॐ सत् संस्काराय देवानां मलस्यपरिशुद्धये । मृतस्नया स्नापयाम्येव देवता तुष्टिहेतवे ॥**

२. वृक्षछाल जल — **ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्ष से । प्र प्र वय ममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ७ सिषम् ॥**

- **ॐ यज्ञियवृक्षत्वक् कषायैर् निर्मलैः परिशोधितैः । उष्णैर्मलहरैः सम्यक् स्नापयामि सुखाप्तये ॥**

३. गोमूत्र से — **ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**

- **ॐ गवां योनिसमुद्भूतैः पवित्रैः शुद्धि कारकैः । गोमूत्रैः स्नापयाम्येव देव संस्कार सिद्धये ॥**

४. गोबर से

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥

- ॐ सुरमेर्गात्र सम्भूतैः पावनै शुभ कारकैः।
गोमयैः स्नापयाम्येव सज्योतिर्मल शुद्धये॥

५. भस्म से

ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः।
मानो वीरान् रुद्रभामिनोवधी हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥

- ॐ वहि नस्तृणादीनां सुभस्म प्रकरोति यत्।
तथा मूर्त्ति समूहानां भस्मसु च विघास्यति॥

६. गन्धोदक से

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनॅस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वा मोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मा दमुच्यत्॥

- ॐ शुद्धैर्मनोहरैर्दिव्यैर्गन्धादि सहितैर्जलैः।
स्नापयामि प्रसन्नार्थ माशु सिद्धि कराय ते॥

- शेष अन्य ६ कलशों से क्रमशः स्नान कराए।

७. सातवां कलश

ॐ नमः शम्भवाय मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

- ॐ नमो देवाधिदेवाय गुणानां वृत्तिदाय च।
गन्धतोयैः स्नापयाम्यत्र त्राहिमां परमेश्वर॥

८. आठवां कलश

ॐ ह ७ सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषद तिथिर् दुरोणसत्।
नृ ष द्वर स दृत सद्व्योम सदब्जा गोजाऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

- ॐ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते दैत्यसूदन।
सर्वगन्ध समायुक्तैर्वारिभिः स्नापयाम्हम्॥

९. नवां कलश

ॐ यातेरूद्र शिवातनूरा घोरा पाप काशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभि चाकशीहि॥

- ॐ नमो दैवतनाथाय पुरुषेच्छा कराय च।
गन्ध संभार संयुक्तं जलं दास्यामि यत्नतः॥

१०.दसवां कलश

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नपत्रेस्थो।
विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवेत्वा॥

- ॐ प्रधानाया प्रमेयाय कार्याय कारणाय च।
जलैर्मृगमदर्युक्तैः स्नापयामि स्वकाम्यया॥

११.ग्यारहवां कलश ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरूचो वेन आवः।
स वुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्चविवः॥

- ॐ नमोहिरण्य गर्भाय हिरण्य कवचाय च।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय स्नापयामि शुभैर्जलैः॥

१२.बारहवां कलश ॐ शतं वो अम्व धामानि सहस्रमुतवारूहः।

- अधाशत क्रत्वोयूयमिमम्मे अगदङ्कृत॥
- ॐ देवदेव परं शान्तं विश्वस्याघौघनाशकम्।
शुद्धवारिस्थ कुम्भेन स्नापयामि शुभाप्तये॥

- स्नान कराने के बाद शुद्ध वस्त्र से मूर्तियों को पोछ दे।
- मूर्तियों पर दूब, सफेद फूल चढ़ाकर पीला कपड़ा छोड़ दे।
- कुछ पद्धतिकारो ने सफेद महीन वस्त्र से मूर्तियों को ढकने को लिखा है।
- शिवलिंग हो तो दूब फूल और अक्षत चढ़ाए।

- मन्त्र ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्-छुक्र-मुच्चरत्।
- पश्येम शरदः, शतं जीवेम शरदः, शत ও श्रृणुयाम शरदः, शतं प्रव्रवाम शरदः, शतमदीनाः स्याम शरदः, शतं भूयश्च शरदः शतम्॥
- ॐ नमोऽस्तु वरदा याशु नमस्ते जगद् धारिणे।
एभिर्दूर्वाक्षतैः पुष्पैरर्चा मीह शुभाप्तये॥
- श्वेतं सुनिर्मलं शान्तं तन्तुसंतान संयुतम्।
देवेभ्योऽहं प्रदास्यामि सुरसन्तुष्टिकारकम्॥

- प्रार्थना ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवासचा॥
- ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यक्तलौकिक वृत्तक।
अघौघ संक्षयं कृत्वा सर्वसौख्य प्रदोभव॥

॥ इति प्रथमवेदी स्नान कर्म॥

॥ द्वितीय वेदी स्नान विधि - ११ कलश ॥

- यजमान मूर्तियों के ऊपर से कपड़ा हटा दे।
- मूर्तियों को प्रथम वेदी से उठा कर द्वितीय वेदी पर पश्चिम की ओर मुख करके रखे।
- कुछ पद्धतिकारों ने मूर्त्तियों को मध्य वेदी पर भी पूर्व मुख रखने को लिखा है। उद्योत में पश्चिम मुख रखने को लिखा है वही प्रक्रिया इस पद्धति में ली गयी है।

- मन्त्र पढ़े **ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।**
  स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥
  - **ॐ इदं भद्रासनं दिव्यं यज्ञकाष्ठ विनिर्मितम्।**
    मध्यवेद्यां स्थापयाम्यत्र देवानां स्थिर हेतवे॥
  - **देव देव समागच्छ पीठेऽस्मिन् सुमनोहरे।**
    प्रसीद पूजयिष्यामि यथा मम मतिस्तथा॥

- मूर्ति के हाथ में बंधा ऊन का सूत खोल दे।
- मन्त्र **ॐ मुञ्चामि त्वा हविषा जीव नाथ कम ज्ञात यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।**
  ग्राहिर्जग्राह यदि वैतवेनं तस्या इन्द्राग्नी प्रभु मुक्त मेनम्॥

- लाल कच्चा सूत लेकर पुनः मूर्तियों के दाहिने हाथ में एवं देवी के बाएं हाथ में बांध दे।
- शिवलिंग में लपेट दे **ॐ शिपिविष्टाय ते नमः॥**
- लघुदर्पण में ११२ अंगुल लम्बा सूत्र बांधने को लिखा है।
- अग्निपुराण में **विष्णवे शिपिष्टः** - इस मन्त्र से ऊन के सूत से पट्ट वस्त्र में सरसों की पोटली बांध कर मूर्ति के दाहिने हाथ में पोटली (कौतुक, कंगन, कंकण) बांध दे।

नेत्रोन्मीलन

- १ चांदी की कटोरी में शहद घी मिला कर सोने की सलाई से मूर्तियों में नेत्र बना दे।
- शिवलिंग हो तो पूरे लिंग को बराबर-बराबर तीन भागों में बांटकर बीच वाले भाग में मुख की कल्पना करे उसी भाग में नेत्र स्थान की कल्पना कर शहद-घी लगाए।
- मूर्त्तियों में नेत्र बना है तो घी-शहद केवल लगा दे।
- चित्रं देवानाम्..... इस मन्त्र की आधी ही ऋचा पढ़ी जाती है।
- वाणलिंग में नेत्रोन्मीलन नहीं होता है।
- नेत्रोन्मीलन के समय मूर्त्ति के पास आचार्य के अतिरिक्त दूसरा कोई व्यक्ति नहीं रहे अथवा किसी वस्त्र से परदा कर दे, कोई देखे नहीं।

- नेत्रोत्मीलन मन्त्र — **ॐ चित्रं देवानां मुदगाद नींकं। चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने: ॥ १ ॥**
  - **ॐ अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिरग्नि: स्वाहा सूर्यो ज्योतिर् ज्योति: सूर्य: स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वच: स्वाहा। ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा॥ ॥ २ ॥**
  - **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।**
    हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॥ ३ ॥
  - **ॐ देवस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठ तेजोऽभिवृद्धये।**
    द्विचक्षुषोश्च निर्माणं करोमि स्वात्म सिद्धये॥ ॥ ४ ॥
  - **ॐ दिव्याञ्जनं मधुघृतं रजतस्य शुभान्वितम्।**
    दास्यामि सौम्य दृष्ट्यर्थम् सुवर्णस्य शलाकया॥ ॥ ५ ॥

- नेत्रों के मध्य में शहद - घी से पुतली बना दे।
- मंत्र — **ॐ सौम्य रूपस्य सिद्ध्यर्थं मस्ति यक्ष्म पुट द्वयम्।**
  ऊर्ध्वाधस्तु पृथग्भूतं कल्पयामि सुखाप्तये॥

- पुतली बनाने के अन्य मन्त्र। श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, पार्वती आदि देवताओं में योजना कर लें।
- शिवलिंग में — **ॐ लिंगस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठुतेजोऽभिवृद्धये।**
  चक्षुर्द्व यस्य निर्माणम् करोमि स्वात्म सिद्धये॥
- विष्णु में — **ॐ नमो भगवते विष्णवे लक्ष्मी प्रियाप ऋद्धि सिद्धि प्रियाय च**
  हिरण्य रेतसे पराय परमात्म विश्वरूपाय ते नमः॥
- देवी में — **ॐ नमो भगवत्यै देव्यै दुर्गायै**
  हिरण्य रेतस्यै परमात्मायै विश्व-रूपिण्यै ते नमः॥
- राधाकृष्ण में — **ॐ नमो भगवते श्री कृष्णाय**
  हिरण्य-रेतसे पराय-परमात्मने विश्व रुपाय राधा प्रियाय ते नमः॥
  - **ॐ नमो भगवत्यै राधायै**
    हिरण्यरेतस्यै परायै परमात्मायै विश्वरूपायै कृष्ण प्रियायै ते नमः॥

- मूर्तियों के समीप खीर तथा अन्य नैवेद्य वस्तु रख दे। १ शीशा मूख देखने के लिए रख दे।
- मंत्र — **ॐ पुष्करादि समीचीनैस्तीर्थस्थै र्वारिभिः।**
  मार्जयामि देव-देवेशं सदा ह्यमर वल्लभम्॥ मूर्तियों पर जल छिड़क दे

- कुछ लोग आठ दीप जला कर रखते हैं।
- मंत्र — **ॐ अष्टौ दीपान प्रदास्यामि पायस भक्ष्यमुत्तमम्।**
  भोज्यं सुन्दरमादर्शम् दर्शयामि सुखाप्तये॥

- गोदान संकल्प — अद्य कृतस्य नेत्रोन्मीलन कर्मणः सांगता सिध्यर्थम् तथा च देवानां सौम्यदृष्टि सिद्ध्यर्थम् इदं गो-निष्क्रय भूतं द्रव्यम् आचार्याय तुभ्यम् अहं सम्प्रददे।
- दक्षिणा प्रदान — अन्य ब्राह्मणों को दक्षिणा दे। शिल्पी को द्रव्य दे।

- द्वितीय वेदी के सामने ११ कलश दक्षिण से उत्तर के क्रम से एक पंक्ति में रखे। एवं निम्न वस्तुएं छोड़े।

1. **सप्तमृत्तिका**
2. **पंचवृक्ष छाल जल**
3. **गोमूत्र**
4. **गोबर**
5. **भस्म**
6. **चंदन मिश्रित जल**
7. **गुलाब जल**
8. **गुलाब जल**
9. **गुलाब जल**
10. **गुलाब जल**
11. **गुलाब जल**

- कलशों में रक्षा सूत्र (कलावा) बांध दे एवं पंच पल्लव छोड़ दे।
- कलश स्थापन करे — **ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद् रयिः॥**
- संकल्प — **अद्य आसु मूर्त्तिषु शिल्पि शस्त्र दोष निवृत्यर्थम् एकादश कलशोदकेन देवान् स्नापयामि॥** जल छोड़ दें।
- मूर्तियों में घी - शहद मिला कर लगा दे।
- मन्त्र — **ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृड्य। त्वा मवस्युरा चके॥**

- क्रमशः ११ कलशों के जल से स्नान कराए।

१. मृत्तिका कलश — **ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम्। अपां ७ रेता ७ सि जिन्वति॥**

२. पंच वृक्षछाल जल — **ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्ष से। प्र प्रवय ममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ७ सिषम्॥**

३. गोमूत्र से — **ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

४. गोबर से — **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥**

५. भस्म से — **ॐ प्रसद्य भस्मना योनि मपश्च पृथिवी मग्ने। स ७ सृज्य मातृ मिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनराऽसव॥**

६. गन्धोदक से — **ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईस्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्॥**

- शेष पांच कलशों के गुलाब जल से स्नान कराए।

७. सातवां कलश **ॐ नमः शम्भवाय मयोभवाय च नमः शंकराय च।**
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

८. आठवां कलश **ॐ ह ७ सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषद तिथिर् दुरोणसत्।**
नृ ष द्वर स दूत सद्व्योम सदब्जा गोजाऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

९. नवां कलश **ॐ यातेरूद्र शिवातनूरा घोरा पाप काशिनी।**
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभि चाकशीहि॥

१०. दसवां कलश **ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नपत्रेस्थो।**
विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवेत्वा॥

११. ग्यारहवां कलश **ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरूचो वेन आवः।**
स वुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्चविवः॥

- मूर्त्तियों को स्नान करा के शुद्ध वस्त्र से पोछ दे। एवं दूर्वा, अक्षत, फूल चढ़ा दे।
- मन्त्र पढ़े **ॐ शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वारुहः।**
अधाशत क्रत्वो यूय मिमस्मे अगदङ्कृत॥

- मूर्तियों को कपड़े से ढंक दे।
- चांदी की कटोरी, सोने की सलाई तथा सुवर्ण और गोदान करे।
- चांदी की कटोरी, सोने की सलाई मूर्तिकार शिल्पी को देना चाहिए उसके अभाव में आचार्य को दे।
- दक्षिणा संकल्प **अद्य इदं सहिरण्यं गोनिष्क्रय द्रव्यम् आचार्याय तुभ्यम् अहं सम्प्रददे॥**

- एक वेदी से दूसरी वेदी पर लाने के समय शंख-भेरी आदि बाजायें तथा सुहासिनी स्त्रियां मंगलगान करें।
- प्रार्थना **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे।**
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा॥
  - **ॐ उत्तिष्ठौत्तिष्ठ देवेश जगदाधार विग्रह।**
  करिष्यमाणां पूजां में गृहाणानुग्रहं कुरु॥

- मूर्तियों पर से कपड़ा हटा दे। एवं द्वितीय वेदी से उठा कर तीसरी वेदी पर लाया जाय।
- मन्त्र पढ़े **ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।**
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥
  - **ॐ आगच्छ वरदो देवो मम भक्तिः स्थिरा सदा।**
  स्नानार्थम् स्थापयामीह भद्रपीठे सुशोभने॥

॥ इति व्दितीय वेदी स्नान॥

॥ तृतीय वेदी स्नान विधि - ८ कलश ॥

- तीसरी बेदी (उत्तर वाली वेदी) पर मूर्तियों को स्थापित करे।
- वेदी के पास चारो ओर ८ कलश रखे। ४ कलश चारो कोने तथा ४ कलश चारोओर
- आठों कलशों में रक्षासूत्र बांध दे। थोड़ा-थोड़ा जल भर दे। पंच पल्लव छोड़ दे।
- इन कलशों को समुद्र संज्ञक कलश कहते हैं।

- इन ८ कलशों में जल पल्लव के अतिरिक्त क्रमशः १-१ कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े।

1. पूर्व **क्षारोदक** (समुद्र जल)
2. अग्निकोण **दुध**
3. दक्षिण **दही**
4. नैऋत्यकोण **घी**
5. पश्चिम **ईख रस**
6. वायव्यकोण **सुरोदक** (ईख+गुड+अदरक रस)
7. उत्तर **स्वादूदक** (गुलाब+केवड़ा जल)
8. ईशानकोण **गर्भोदक** (नारियल जल)

- इन आठ कलशों के अलावा ६२ कलश वेदी के पश्चिम (दक्षिण से उत्तरोत्तर) क्रम से रखे।
- इन सभी ६२ कलशों में रक्षासूत्र बांध दे। थोड़ा-थोड़ा जल भर दे। पंच पल्लव छोड़ दे।
- मूर्तियों को इसी क्रम से स्नान कराया जायेगा।
- पंच पल्लव तथा जल के अतिरिक्त इन ६२ कलशों में निम्न वस्तुएँ निम्न प्रकार से रखे।

1. **प्रथम पंक्ति** ५ कलशों में **शुद्ध जल**

2. **द्वितीय पंक्ति** २० कलशों में **क्रमशः.......** (४ तोला का एक पल होता है)

१. पहले में	**८ पल सप्तमृत्तिका**	११. ग्यारहवे में	**१६ पल दूध**
२. दूसरे में	**जल**	१२. बारहवे में	**जल**
३. तीसरे में	**७ पल गोबर**	१३. तेरहवे में	**२० पल दही**
४. चौथे में	**जल**	१४. चौदहवे में	**जल**
५. पांचवे में	**१२ पल गोमूत्र**	१५. पन्द्रहवे में	**७ पल घी**
६. छठे में	**जल**	१६. सोलहवे में	**जल**
७. सातवे में	**१ मुट्ठी भस्म**	१७. सत्रहवे में	**३ पल शहद**
८. आठवे में	**जल**	१८. अठारहवे में	**जल**
९. नवे में	**३ पल पंचगव्य**	१९. उन्नीसवे में	**३ पल शक्कर**
१०. दसवे में	**जल**	२०. बीसवे में	**जल**

3. तीसरी पंक्ति २ कलशों में **क्रमशः.......**

१. पहले में	**शुद्ध जल**	२. दूसरे में	**शुद्ध जल**

4. चौथी पंक्ति ६ कलशों में **क्रमशः.......**

१. पहले में	**पंचामृत**	४. चौथे में	**शुद्ध जल**
२. दूसरे में	**शुद्ध जल**	५. पांचवे में	**शुद्ध जल**
३. तीसरे में	**शुद्ध जल**	६. छठे में	**शुद्ध जल**

5. पांचवी पंक्ति १४ कलशों में **क्रमशः.......**

१. पहले में	**गन्ध मिश्रित जल**	८. आठवे में	**गौ श्रृंगोदक जल**
२. दूसरे में	**पंचवृक्ष छाल जल**	९. नवे में	**सप्तधान्य जल**
३. तीसरे में	**सर्वौषधि / सतावर**	१०. दसवे में	**सहस्त्र छिद्र कलश**
४. चौथे में	**सफेद फूल**	११. ग्यारहवे में	**दिव्यौषधि / दूर्वा जल**
५. पांचवे में	**शान्ति उदक / गंगाजल**	१२. बारहवे में	**पंचपल्लव जल**
६. छठे में	**अष्ट फल जल**	१३. तेरहवे में	**रत्न जल**
७. सातवे में	**सुवर्ण जल**	१४. चौदहवे में	**तीर्थोदक**

6. छठी पंक्ति १० कलशों में **क्रमशः.......**

१. पहले में	**कदम्ब**	७. सातवे में	**बेल**
२. दूसरे में	**सेमर**	८. आठवे में	**बरगद**
३. तीसरे में	**जामुन**	९. नवे में	**पान**
४. चौथे में	**अशोक**	१०. दसवे में	**पलास** (छिऊल)
५. पांचवे में	**पाकड़**		
६. छठे में	**आम या गुलर**		

- छठी पंक्ति के १ अतिरिक्त कलश में शुद्ध जल

7. सातवी पंक्ति ४ कलशों में **क्रमशः.......**

१. पहले में	**शुद्ध जल**	३. तीसरे में	**शुद्ध जल**
२. दूसरे में	**शुद्ध जल**	४. चौथे में	**शुद्ध जल**

- **कलशों के समीप** सुन्दर श्वेतवस्त्र, सुगन्धित तैल, जव का आटा, गेहूँ का आटा, चावल का आटा, मसूर का आटा, तथा जटामांसी चूर्ण, वेल का चूर्ण, आवला का चूर्ण रखे।

- **एक पात्र में यक्षकर्दम बनाकर रखे –**
- यक्षकर्दम बनाने की विधि - १ भाग कपूर, २ भाग करस्तूरी, २ भाग कूंकुम, ३ भाग घिसा हुआ चन्दन एक में ही सब मिलाकर लेप तैयार करें इसे यक्षकर्दम कहते हैं

- कलश स्थापना **ॐ अजिघ्र-कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दव: । पुनरुर्जा निवर्तस्वसान: सहस्रन्धुश्वोरधारा पयस्वती पुनर्भा विशताद् रयि: ॥**
  - **कलशे वरुणादि देवता: सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥**
  - अक्षत पुष्प सभी कलशों पर छोड़ दे ॥

- **टिप्पणी**
- काशी के पद्धतिकारों ने पांचवी पंक्ति में दसवां कलश सहस्रछिद्र कलश रखने को लिखा है उसके सहायक स्वरूप १ कलश अतिरिक्त रखने की प्रक्रिया लिखी है ।
- शान्ति उदक के लिए गंगाजल अथवा मंडप में स्थित कलशों से जल निकाल ले । अग्नि पुराण में शान्ति मन्त्र से १०० बार अभि-मन्त्रित जल को शान्ति उदक लिखा है
- सहस्त्रछिद्र कलश जल के लिए समुद्र जल रख ले । कहीं - कहीं सुक्ता (सीपी) जल रखते हैं ।
- सुवर्ण, गोश्रृंग, रत्न, फल, धान्य को धोकर उसी जल को कलश में छोड़ देना चाहिए ।

- पं ० वायुनन्दन मिश्र की प्रतिष्ठा महोदधि में ६२ कलश नहीं ५५ कलश ही रखने की विधि इस प्रकार दी गयी है ।

१. प्रथम वेदी — के चारो ओर ८ कलश
२. द्वितीय वेदी — के पश्चिम ५ कलशों में क्रमश: (मिट्टी, गोबर, गोमूत्र, भस्म, पंचगव्य भर कर)
३. तृतीय वेदी — के पश्चिम ५ कलशों में क्रमश: (दूध, दही, घी, शहद, शक्कर भर कर रखे)
४. चौथी वेदी — के पश्चिम १० कलशों में शुद्ध जल ।
५. पांचवी वेदी — के पश्चिम ३५ कलशों में ५ में पंचामृत, ५ में शुद्धजल, ५ में बृक्षकषाय, १० में क्रमश: (१. फूल, २. फल, ३. सोना, ४. गोश्रृंगोदक, ४. सप्तधान्य, ६. सहस्त्रछिद्रकलश, ७. सर्वोषधि, ८. पंचपल्लव, ९. दूर्वा, १०. नवरत्न तथा १० में शुद्ध जल भर कर रखे ।

॥ कलश स्नान ॥

❖ प्रथम पंक्ति (कलश) स्नान ५ कलश

- प्रथम पंक्ति के पहले कलश का जल मूर्तियों पर छिड़के।
  - मन्त्र **ॐ समुद्राय त्वा वाताय त्वा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा।**
    अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।
    अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा ऽशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा॥
    - **ॐ गंगादि सलिलैर्दिव्यैस्तीर्थोदक समन्वितैः।**
      स्नापयामि देवेशं तं महा शान्ति करं परम्॥

- मूर्तियों पर दूब अक्षत फूल चन्दन चढ़ा कर प्रार्थना करे –
  - प्रार्थना **नमस्तेऽर्चे सुरेशान् प्रकृते विश्वकर्मणः।**
    प्रभाविता शेष जगद्धात्रे (जगद्धात्रि) इह तुभ्यं नमो नमः॥
    - **त्वयि सम्पूजयामीशं (सदाशिव) (नारायण) मनामयम्।**
      रहिता शेष दोषैस्त्वमृद्धियुक्ता सदाभव॥
    - **सर्वसत्त्व मयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम्।**
      त्वमेवालं करिष्यामि त्वं वन्द्यो भवते नमः॥

- मूत्तियों के हाथ में बांधा लाल सूत्र खोल दे।
- तथा एक बीता नाप कर दूसरा ऊर्ण (उन) सूत्र मूर्तियों के दाहिने हाथ में बांध दे।
- देवी की मूर्ति हो तो बांये हाथ में बांधे **'प्रतिष्ठा-भास्कर'** में लिखा है।

- प्रथम पंक्ति के शेष ४ कलश जल से क्रमश १-१ से स्नान कराये।

  १. **ॐ इदमापः प्रवहता वद्यं च मलं चयत्।**
  यच्चाभिदुद्रो हानृतं यच्च शेपे अभीरूणम्।
  आपो मा तस्मा देनसः पवमानश्चमुंचतु॥
  - **देव देव परं शान्तं विश्वस्या घौघनाशनम्।**
    शुद्ध वारिस्थ कुम्भेन स्नापयामि शुभाप्तये॥

  २. **ॐ आपो देवीः प्रतिगृम्णीत भस्मै तत्स्योने कृणुध्व ७ सुरभा इलोके।**
  तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातव पुत्र विभृताप्स्वेनत्॥
  - **अनेन वारिणा युष्मान् सालङ्कृत विभूषितान्।**
    स्नापयामि देवांस्तान सुर गणादि सुशोभितान्॥

  ३. **ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥**
  गंगा सरस्वतीचैव यमुनादि नदीस्तथा।

- ताभिरद्भिः स्नापयामि त्वं सर्वसौन्दर्य लब्धये ॥

४. ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहड्मानो वरुणेह बोध्यरूश ७ समान आयुः प्रमोषीः ॥

- पवित्र वारिभिः शुद्धैश्शीतलैः सुमनोहरैः ।
एवं भूतैर्जलैर्देवं स्नापयामि सुरैर्चितम् ॥

❖ द्वितीय पंक्ति (कलश) स्नान २० कलश

- द्वितीय पंक्ति में रखे २० कलशों के जल से क्रमश १-१ कलश जल से स्नान कराये ।

1. सप्तमृत्तिका — ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम् ।
अपा ७ रेता ७ सि जिन्वति ॥
2. जल — ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥
3. गोबर — ॐ गन्ध-द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
4. जल — ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुण्स्य ऽऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद् ॥
5. गोमूत्र कलश — ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भार्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
6. जल कलश — ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥
7. भस्म — ॐ प्रसद्य भस्मना योनिम्, अपश्च पृथिवी मग्ने ।
स ७ सृज्य मातृ भिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः ॥
8. जल — ॐ शान्नो देवी रभिष्टय अपो भवन्तु पीतये । शंयो रभि स्रवन्तु नः ॥
9. पंचगव्य — ॐ पयः पृथिव्याम् पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे ।
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
10. जल — ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशती रिव मातरः ॥
11. दूध — ॐ आप्प्या यस्व समेतु ते विश्वतः सोम बृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ॥
12. जल — ॐ तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजनयथा च नः ॥
13. दही — ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ७ षि तारिषत् ॥
14. जल — ॐ युज्जानः प्रथमं मनस्तत्वाय सविता धियः ।
अग्नेर्ज्योति र्निचाय पृथिव्या अध्या भरत् ॥

15. घी ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घिते श्रितो घृतम् वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

16. जल ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्॥

17. शहद ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माद्ध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधु नक्त मुतो षसो मधुमत् पार्थिव ७ रजः। मधु द्यौरस्तुनः पिता।
मधुमान्नो व्वनस्पतिर् मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

18. जल ॐ आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्व ७ हिरिप्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि॥

19. शक्कर ॐ अपा ७ रसमुद् वयस ७ सूर्ये सन्तः ७ समाहितम।
अपा ७ रसस्य यो रसस्तम् वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो सिन्द्राय त्वा
जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।

- ॐ आयंगौ पृश्नि रक्रामीद सदम्मतारं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

20. जल ॐ शुद्धवालः सर्व-शुद्धवालो मणि-वालस्तऽ आश्विनः।
श्वेतः श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशु-पतये कर्णायामा अवलिप्ता
रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

- ॐ अपो हयद् बृहती र्विश्व मायन् गर्भं दधाना जनयन्ति रग्निम्।
ततो देवना ७ समवर्तता सुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

- शुद्ध वस्त्र से मुर्तियों का जल पोंछ कर सुगन्धित तेल लगा दें।
  - मंत्र ॐ यज्ञायज्ञावो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे।
    प्र प्रवय ममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ७ शिषम्॥

- मूर्ति की समक्ष रखे गये यव, शाली, गेहूं, मसूर, आंवला का चूर्ण मिलाकर मूर्तियों में लगा दें।
  - मंत्र ॐ द्रुपदा दिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मालादिव।
    पूतं पवित्रेणे वाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥

- जटामासी चूर्ण तथा यक्ष्म कर्दम (कस्तूरी + कुंकुम + कपूर + चंदन) मूर्तियों में लगा दें।
  - मंत्र याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी।
    तयानस्तन्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशीहि॥
  - ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
    गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

❖ तृतीय पंक्ति (कलश) स्नान २ कलश

- तृतीय (तीसरी) पंक्ति में रखे दो कलशों के जल से क्रमशः स्नान करा दे ...

१. **ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषु रीरिषः ।
मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधी र्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥**

२. **ॐ प्रतद् विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरूषु त्रिषु विक्रमणे ष्वधि क्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥**

❖ चतुर्थ पंक्ति (कलश) स्नान ६ कलश

- चतुर्थ पंक्ति में रखे ६ कलशों से क्रमशः १-१ से स्नान कराये ।

1. पंचामृत — **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ॥**
2. जल — **ॐ उरु ७ हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्था मन्वे तवा उ ।
अपदे पादा प्रतिधातवे ऽ करुताप वक्ता हृदया विधश्चित् ॥**
3. जल — **ॐ सन्ते पया ७ सि समु यन्तु वाजाः सं बृष्ण्यान्यभि मातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिविश्रवा ७ स्युत्तमानि धिष्व ॥**
4. शुद्ध जल — **ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिर ७ शुभिः ।
भवानः सप्रथस्तमः सखबृधे ॥**
5. शुद्ध जल — **ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधी रनु रुध्य से । गर्भे संजाय से पुनः ॥**
6. शुद्ध जल — **ॐ अपा ७ रसमुद्वय स ७ सूर्ये सन्त ७ समाहितम् ।
अपा ७ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाभ्युत्तम मुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा
जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥**

❖ पंचम पंक्ति (कलश) स्नान १४ कलश

- पंचम पंक्ति में रखे हुए १४ कलशों से क्रमशः १-१ से स्नान करायें ।

1. गन्धोदक जल — **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥**
2. वृक्ष छाल जल — **ॐ यज्ञा यज्ञा यो अग्नये गिरा गिरा च दक्ष से ।
प्र प्रवय ममृतञ जात वेदस प्रियम् मित्रन् श ७ सिषम् ॥**

3. सर्वौषधि जल — ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बब्भ्रूणावह ७ शतं धामानि सप्त च॥

4. पुष्पोदक जल — ॐ ओषधीः प्रतिमो दध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्व रीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

5. शान्ति (गंगा) जल — ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥

6. फलोदक जल — ॐ याफलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ हसः॥

7. सुवर्ण जल — ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत।
स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

8. गौ श्रृंगोदक जल — ॐ हविष्मती रिमा आपो हविष्मां आ विवासति।
हविष्मान्देवो अदध्वरोह विष्मां अस्तु सूर्यः॥

9. सप्तधान्य जल — ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा दोर्घामनु प्रसिति मायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृम्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि॥

10. सहस्त्र छिद्र कलश — ॐ सहस्राणि सहस्रशो वाह्वोस्तव हेतयः।
तासा मीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि॥

11. दूर्वा कलश — ॐ काण्डात काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

12. पंचपल्लव कलश — ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽ इत्किला सथ यत्सनवथ पूरुषम्॥

13. रत्नोदक कलश — ॐ अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्।
हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि॥

14. तीर्थोदक कलश — ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तः निषड्गिणः।
तेषा ७ सहस्र योजने वधन्वा नितन्मसि॥

❖ वेदी परित: कलशो से स्नान ८ कलश

- वेदी के चारों ओर रखे ८ (समुद्र-संज्ञक) कलशों से क्रमशः स्नान कराए।

1. क्षारोदक कलश — ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥
2. क्षीर कलश — ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥
3. दधि कलश — ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
   सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ७ षि तारिषत्॥
4. घृत कलश — ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घिते श्रितो घृतम् वस्य धाम।
   अनुष्वधमा वह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥
5. ईखरश कलश — ॐ अपा ७ रसमुद् वयस ७ सूर्ये सन्तः ७ समाहितम।
   अपा ७ रसस्य यो रसस्तम् वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो सिन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
6. सुरोदक कलश — ॐ देवं वर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रे अश्विना।
   तेजो न चक्षु रक्ष्योर्वर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसु वने वसुधेयस्य व्यन्तु यजः॥
7. स्वादूक कलश — ॐ स्वादिष्ठ यामदिष्ठ यापवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥
8. नारिकेल कलश — ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्त रश्विभ्यां पत्नी सुकृतं विभर्त्ति।
   अपा ७ रसेन वरुणो न सान्नेन्द्र ७ श्रियै जनयन्नप्सु राजा॥

❖ षष्ठ पंक्ति (कलश) स्नान १० कलश

- छठी पंक्ति में रखे वृक्ष पल्लव वाले १० कलशों से क्रमशः स्नान कराएं।

1. कदम्ब कलश — ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शुरमिन्द्रम्।
   हवयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ७ स्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्रः॥
2. सेमर कलश — ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभि में घोनो रक्षतन्नश्च वनद्य।
   त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाण स्तव व्रते॥
3. जामुन कलश — ॐ यमाय त्वाङ् गिरस्वते स्वाहा स्वाहा।
   स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥
4. अशोक कलश — ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छ स्तेन स्येत्या मन्विहि तस्करस्य।
   अन्य मस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निऋते तुभ्य मस्तु॥

5. पाकड़ कलश **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।**
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ समा न आयुः प्र मोषीः॥

6. आम्र पल्लव कलश **ॐ वायो ये ते सहस्रिणे रथासस्तेमिरा गहि । नियुत्वान् त् सोमपीतये ॥**

7. बेल पत्र कलश **ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं घियञ्जिन्व मव से हूमहे वयम् ।**
पूषानो यथा वेदसा मसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

8. बरगद पल्लव कलश **ॐ वय ७ सोमव्रते तव मनस् तनू षु विभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥**

9. पान पल्लव कलश **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।**
येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

10. पलास पल्लव कलश **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् द्विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः ।**
स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्चव्विवः ॥

❖ सप्तम पंक्ति (कलश) स्नान ४ कलश

- सप्तम पंक्ति के चार कलशों से क्रमशः स्नान करा दे।
- चारो कलशों का एक ही मन्त्र है।
    - मन्त्र **आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।**
    देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥

- मूत्तियों के पास रखे गए महीन श्वेत वस्त्र से मूर्तियों को पोंछ दे।
- विष्णु मूर्ति हो तो पुरुष सूक्त से।
- शिव लिंग हो तो रुद्रसूक्त से।

- शुद्ध जल से या तीर्थ जल से पुनः स्नान कराए।
    - मन्त्र **ॐ इमं मे वरण श्रुधी हव मद्या च मृडय। त्वा म वस्यु रा च के ॥**

- फिर सुन्दर सुवाहित सफेद वस्त्र से मूर्त्तियों का जल पोंछ दे।

॥ सकली करण (षडङ्गन्यास) करे ॥

- मूर्तियों के आगे षडङ्ग न्यास करे - इसे ही सकलीकरण कहते है।

१. **षडंगन्यास विधि**
२. **ॐ हृदयाय नमः।** हृदय स्पर्श करें।
३. **ॐ नं शिरसे स्वाहा।** शिर स्पर्श करें।
४. **ॐ शिखायै वषट्।** शिखा स्पर्श करें।
५. **ॐ रुं कवचाय हुम्।** दोनों कंधे स्पर्श करे।
६. **ॐ द्रां नेत्रत्रयाय वौषट्।** दोनों नेत्र स्पर्श करें।
७. **ॐ यं अस्त्राय फट्।** दाहिना हाथ सिर पर से घुमाकर दोनों हाथ से ताली बजा दें।

- कुछ लोग षडंग न्यास मन्त्र पढ़ने के पहले विनियोग पड़कर जल छोड़ते है।
  - विनियोग — ॐ विश्वत चक्षुरितिमंत्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप षडंग न्यासे विनियोगः ॥
  - मंत्र — **ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहु रुत विश्वतस्यात्।**
    सम्बाहुभ्यान् धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन् देव एकः ॥
  - आवाहन — **ॐ एहि एहि भगवन्देव लोकानुग्रह काम्यया।**
    यज्ञभागं गृहाणेमं स्थाप्य देवनमोऽस्तुते ॥
  - शिवलिंग — **एह्ये हि भगवञ्छम्भो लोकानुग्रह कारक।**
    यज्ञभागं गृहाणेमं महेश्वर नमोऽस्तुते ॥
  - विष्णु — **एह्य हि भगवन् विष्णो लोकानुग्रह काम्यया।**
    यज्ञभागं गृहाणेमं वासुदेव नमोऽस्तुते ॥
  - देवीमूर्ति — **एह्यं हि जगतां मातः सर्वकाम प्रदेशुभे।**
    यज्ञभागं गृहाणत्वं जगद्धात्रि नमोऽस्तुते ॥
    - ॐ (अमुक) देवाय नमः । देवम् आवाह्यामि।

- पूजनम् — पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। **पृष्ठ क्र.** 146 देखें।
  - पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, यज्ञोपवितं, वस्त्रं, उपवस्त्र, गंधं, अक्षतं, पुष्प-पुष्पमालां, नानापरिमलं, इत्रं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, द्रव्य, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम्।

- कुछ पद्धतिकार यहाँ पर मूत्तियों की प्रदक्षिणा भी लिखते है।
- कुछ पद्धतिकार यहाँ पर गोदान, आचार्य दक्षिणा, शिल्पि दक्षिणा देने को भी लिखा है।

॥ इति आग्नेय पुराणोक्त देव स्नान विधि ॥

॥ रथ यात्रा ॥

- स्नान के बाद मूर्तियों को सुन्दर वस्त्र-अलंकरण पहना दें।
- शिव लिंग हो तो उसमें धोती-अँगोछा लपेट दे।
- प्रार्थना **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस् त्वे महे।**
  उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा॥
  - **ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश उत्तिष्ठ जगतां पते।**
    उत्तिष्ठ सर्वभूतेश त्रैलोक्ये मंगल कुरु॥ फूल मूर्तियों पर चढ़ा दे।

- सभी मूर्तियों को उठाकर रथ पर स्थापित करे।
  - मंत्र **ॐ रथे तिष्ठन् नयति वाजिनः पुरो यत्र-यत्र कामयते सुखा रथिः।**
    अभिशूनाम् मनायत मनः पश्चा दनु यच्छन्ति रश्मयः॥
  - **ॐ चतुश्चक्र युतं दिव्यं देवानां वल्लभं परम्।**
    रथ मारुह्य देवेश यात्रां कुरु परमेश्वर॥

- शंख, मेरी, मृदंग आदि बाजों को बजाते हुए मङ्गलगीत गाते हुये मूर्तियों को रथ के साथ नगर, ग्राम, मण्डप की परिक्रमा कराए।
- परिक्रमा के बाद रथ को मंडप के पश्चिम द्वार पर ला कर खड़ा करे।
  - प्रार्थना **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
    हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
  - **ॐ प्रविश्य देव देवेश मंडपं सुमनो हरम्।**
    अलं कुरु प्रयत्नेन ह्यर्चनं च गृहाण मे॥ फूल मूर्तियों पर चढ़ा दे।

- मूर्तियों को रथ से उतार कर पश्चिम द्वार से मण्डप में लाए।
- मध्य बेदी के पश्चिम भाग में सुन्दर आसन (पीठ) पर पश्चिम मुख मूत्तियों को रखे।
- यजमान मूर्तियों के सामने पूर्व मुख बैठ कर आचमन- प्राणायाम करे एवं संकल्प करे।
- संकल्प **अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः, अमुक नामाऽहम् अस्मिन् प्रतिष्ठा कर्मणि देवानां मधुपर्केण अर्चयिष्ये।**

- विष्टर **ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरो विष्टरः प्रति गृह्यताम्॥**
  - **कुश विनिर्मिते दिव्ये भक्ति भाव समन्विते।**
    देवाः स्वात्म स्वरुपा भो तिष्ठन्तां विष्टरे शुभे॥
  - कुशा मुर्तियों के चरणों के पास रख दे।

- पाद्य

ॐ देव देव नमस्तुभ्यं लोकानुग्रह कारक ।
पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय ॥ ॐ पाद्यं प्रतिगृहन्तु ॥

- गन्ध, पुष्प, दूर्वा, जल (पाद्य) मुर्तियों के समक्ष पृथिवी पर रख दे ।

- अर्घ्य

ॐ व्यक्ताव्यक्त स्वरुपाय भक्ताभीष्ट प्रदायिने ।
इदम् अर्घ्यम् मयादत्तं गृह्णीष्वा मर वल्लभ ॥ ॐ अर्घ्यं प्रतिगृहन्तु ॥

- गन्ध, पुष्प, दूर्वा, जल (अर्घ्य) मुर्तियों के समक्ष पृथिवी पर रख दे ।

- आचमन

ॐ मन्दाकिन्यादि सम्भूतैर्जलैः शुद्धैः शुभावहैः ।
सम्यगा चम्यतां देव भक्ता भीष्ट प्रदायक ॥

- आचमन मुर्तियों के समक्ष पृथिवी पर रख दे ।

- मधुपर्क

ॐ अन्नपते ऽ न्नस्य नो देह्य नमी वस्य शुष्मिणः ।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

- **दधि मध्याज्य संयुक्तं दिव्यं मंगल दायकम् ।**
  मधुपर्कम् गृहाणेश सर्वदा मधु पर्कय ॥
- मधुपर्क पात्र मुर्तियों के समक्ष पृथिवी पर रख दे ।

- पूजनम्

पंचोपचार पूजन करें । **पृष्ठ क्र. 146** देखें ।

- पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, यज्ञोपवितं, वस्त्रं, उपवस्त्र, गंधं, अक्षतं, पुष्पं-पुष्पमालां, नानापरिमलं, इत्रं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, द्रव्य, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम् ।

- गोदान संकल्प

अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः, अमुक नामाऽहम्, शुभता सिद्ध्यर्थम् मधुपर्क पूजन प्रतिष्ठार्थम् च तदंगत्वेन गोनिष्क्रयौ भूतं द्रव्यं सांगता सहितं अमुक गोत्राय, अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

- ब्राह्मण को गोदान दे ।

॥ शिव पार्वती विवाह ॥

- लोकाचार में यहीं पर कहीं-कहीं शंकर पार्वती का विवाह-पौपुंजी आदि करते।
- संकल्प **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, अस्मिन शिवादि मूर्तिनां स्थिर प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् शिव-पार्वती विवाहास्यं कर्म करिष्ये ॥**

- शंकर (शिव लिंग) के बगल (दाहिने) पार्वती की मूर्ति रख दे।
- दोनों मूत्तियों के बीच एक पीला कपड़ा लगा दे। (अंतः पट) तथा मंगल श्लोकों का पाठ करे।
- श्लोक का पाठ करे **योगं योगविदां विधूत विविध व्यासङ्ग शुद्धाशय।**
  प्रादुर्भूत सुधारस प्रसुमर ध्यानास्पदा ध्यासिनाम् ॥
  आनन्द प्लव मानबोध मधुरा मोदच्छटा मेदुरम्।
  तं भूमान मुपास्महे परिणतं दन्ता वलास्यात्मना ॥ ॥ १ ॥
  - **उद्यद् दिनेश्वर रूचिं निजहस्त पद्मैः।**
    पाशाङ् कुशाभयवरान् दधतं गजास्यम् ॥
    रक्ताम्बरं सकल दःख हरं गणेशम्।
    ध्यायेत् प्रसन्न मखिला भरणाभि रामम् ॥ ॥ २ ॥
  - **ब्रह्मादयोऽपि यदपाङ् तरंग भंग्या।**
    सृष्टि स्थिति प्रलय कारणतां व्रजन्ति ॥
    लावण्य वारि निधि दीचि परिप्लुतायै।
    तस्यै नमोऽस्तु सततं जगदम्बिकायै ॥ ॥ ३ ॥

- यजमान मूर्तियों के सामने कन्यादान-पौपुजी के लिए एक नई परात तथा एक जल पात्र रखे।
- यजमान दाहिने हाथ में अक्षत-फूल लेकर शिवजी की प्रार्थना करे। (गोत्र आदि का स्मरण करे)
  - **ॐ अरुपोऽयं परब्रह्म निर्गुणः प्रकृतेः परः।**
    निराकारी निर्विकारो मायाधीशः परात् परः ॥
  - **अगोत्र कुल नामाहि स्वतंत्रो भक्त वत्सलः।**
    तदिच्छया हि सगुणस् सुतनुर्वहु नामभूत् ॥
  - **सुगोत्री गोत्रहीनश्च कुलहीनः कुलीनकः।**
    नो जानाति शिवं कोऽपि महायोगेश्वरं हरम् ॥
  - **सगुणस्य महेशस्य लीलया रूप धारिणः।**
    गोत्रं कुलं वि जानीहि नादमेव हि केदलम् ॥

- **शिवो नादमयं सत्यं नादश्शिव मयस्तथा ।
उभयोरन्तरं नास्ति नादस्य च शिवस्य च ॥**
- **यस्याज्ञया जगदिदं च विशालमेव, जातं परात् परतरो निज वोधरूपः ।**
- **शर्वः स्वतंत्र गतिकृत परभाव गम्यस्, सोऽसौ त्रिलोकपतिरद्य च नः सुदृष्टः ।**

- शंकर-पार्वती के बीच का पीला कपड़ा (अन्तःपट) हटा दे ।
- नवीन पीले वस्त्र से शंकर-पार्वती की गाँठ बाँध दे ।
- यजमान कन्यादान संकल्प करे । यजमान पत्नी जलधार देती रहे । जल परात में गिरना चाहिये ।
- संकल्प — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्र, अमुक-नामाऽहम् सपत्नीकोऽहम् च शिवादि मूर्तीनां स्थिर प्रतिष्ठा कर्मणि जगदुद्धार हेतवे तथा चास्माकं समस्त पितृणाम् निरति शयानन्द ब्रह्मलोका वाप्त्यादि कन्यादान कल्पोक्त फलावाप्तये उमामहेश्वर प्रीत्यर्थम् च यथाशक्ति सुपूजिताम् कन्यास्वरूपिणीं गौरीं त्रैलोक्य नाथाय महेश्वराय पुरुष संयोग प्रधानगुण कारिणे जगद् व्यापिने भार्यार्थिने शिवाय सादरं समर्पयामि ॥

- कुछ लोग कुशा से ग्रन्थि बन्धन करते हैं । कुछ लोग कच्चे सूत की माला दोनों को पहनाते है ।
- शिवपुराण में ग्रन्थि बन्धन के बाद कन्यादान हिमालय ने किया है ऐसा लिखा है तदनुसार ग्रन्थि बन्धन पहले लिखा गया है ।
- प्रार्थना शिव — **ॐ इमां गौरीं तुभ्य महं ददामि परमेश्वर ।
भार्यार्थे परिगृह्णीष्व प्रसीद व सकलेश्वर ॥**
- प्रार्थना-पार्वती — **जगदम्बा महेशी त्वं शिवः साक्षात् पतिस्तव ।
तवस्मरणात् नार्यो भवन्तिहि पतिव्रताः ॥**

- यजमान तथा यजमान पत्नी शंकर-पार्वती की पादपूजा (पौपुंजी) करे ।
- सोना, चांदी, द्रव्य आदि लेकर संकल्प करे ।
- संकल्प — **अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् उमा-महेश्वर प्रीत्यर्थम् इदं सुवर्णम्, रजतम्, द्रव्यं वा दातु महमुत्सृजे ॥**
- ब्राह्मण गण निम्न मन्त्रों का पाठ करे ।
- मंत्र — **ॐ कोदात् कस्माऽअदात कामोदात् कामायादात् ।
कामोदाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ॥**
- इसी तरह कुटुम्ब जन तथा नगर-ग्राम के व्यक्ति भी पौपुंजी करें ।

॥ शय्याधिवास ॥

- मण्डप में नवग्रह तथा सर्वतोभद्र पीठ के बीच की भूमि पर १ शय्या बिछाये।
- शय्या के नीचे सप्तधान्य छोड़ दे। शय्या पर चंदवा बांध दे। शय्या का सिरहाना पूर्व की ओर रखे।
- शय्या पर ओढ़ने-बिछाने के लिए बिस्तर लगा दे। लघुदर्पण में तीन वस्त्र ओड़ाने को लिखा है।
- एक शय्या पर कई मूर्तियों को नहीं सुलाना चाहिए।
- शय्या के समीप छड़ी, छाता, पंखा, दीपक, फल, फूल, मिठाई, भोजन-सामग्री, मेवा जलपात्र रखे।
- एक पात्र में घी, शहद रखे। एक पात्र में तिल का तेल, सरसों का चूर्ण (उबटन) रखे।
- शय्या के समीप शीशा, आसन तथा गृहस्थी का सामान रख दे।
- शय्या के ऊपर सफेद चावल से स्वस्तिक बना दे।
- स्वस्तिक के ऊपर १ कुशा रख दे। (कुशा का अग्रभाग पूर्व की ओर रहे)
- यजमान शय्या के दक्षिण उत्तर की ओर मुख करके बैठे। एवं भगवान का ध्यान करे।

  - ध्यान — **ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥**
  - संकल्प — अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण देव-प्रतिष्ठा कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् मूर्त्तिषु देवकला सानिध्यर्थञ्च शय्याधिवासाख्यं कर्म करिष्ये॥

- **शिवलिंग प्रतिष्ठा मंत्र** — अक्षत लेकर २-२ दाना अक्षत शय्या पर चारों ओर छिड़के।

१. पूर्व	**ॐ शर्वाय नमः।**	५. पश्चिम	**ॐ उग्राय नमः।**
२. अग्निकोण	**ॐ भवाय नमः।**	६. वायव्यकोण	**ॐ महादेवाय नमः।**
३. दक्षिण	**ॐ पशुपतये नमः।**	७. उत्तर	**ॐ रुद्राय नमः।**
४. निर्ऋत्य कोण	**ॐ ईश्वराय नमः।**	८. ईशान कोण	**ॐ भीमाय नमः।**

- हाथ का शेष अक्षत शय्या पर छोड़ दे। **ॐ भवाद्यावाहित देवताभ्यो नमः॥**

- **विष्णु, कृष्ण, रामचन्द्र देव प्रतिष्ठा में मंत्र**

१. पूर्व	**ॐ विष्णवे नमः।**	५. पश्चिम	**ॐ त्रिविक्रमाय नमः।**
२. अग्निकोण	**ॐ श्रीधराय नमः।**	६. वायव्यकोण	**ॐ पद्मनाभाय नमः।**
३. दक्षिण	**ॐ मधुसूदनाय नमः।**	७. उत्तर	**ॐ वामनाय नमः।**
४. निर्ऋत्य कोण	**ॐ हृषीकेशाय नमः।**	८. ईशान कोण	**ॐ दामोदराय नमः।**

- हाथ का शेष अक्षत शय्या पर छोड़ दे। **ॐ विष्णवादि आवाहित देवताभ्यो नमः॥**

- पूजनम् शय्या की पंचोपचार पूजन कर दें। पृष्ठ क्र. 146 देखें।
- यजमान सपत्नीक उठकर शय्या की तीन परिक्रमा करें।
- शंख, भेरी, बाजा बजाकर मूर्तियों को शय्या पर पूर्व की ओर सिर कर के लिटा दे।

- शिव - मंत्र **ॐ नमः शम्भवायच मयोभवायच, नमः शङ्करायच मयस्क्करायच, नमः शिवायच शिवतरायच ॥**

- विष्णु - मंत्र **ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।**
  समूढमस्य पा ७ सुरे स्वाहा ॥
  - **ॐ नमोऽस्तु ते ब्रह्मरूप सर्वकार्य प्रसाधक।**
    वेदिकोपरि शय्यायां स्थिरो भव नमोऽस्तुते ॥

- मूर्तियों को वस्त्र से ढँक दे (वस्त्र ओढ़ा दे)
- मंत्र **ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहु रुत विश्वतस्यात्।**
  सम्बाहुभ्यान् धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन् देव एकः ॥
  - **ॐ सर्ववर्णं प्रदे देव वाससी ते विनिर्मिते।**
    ददामि प्रीतये तुभ्यं देव देव नमोऽस्तुते ॥

- शय्या के पास निद्रा कलश स्थापित करे।

॥ निद्रा कलश स्थापन ॥

- शय्या के सिरहाने (अग्निकोण में) एक निद्रा कलश भूमि पर सप्तधान्य रखकर स्थापित करे।
- कलश में जल तथा पंचपल्लव छोड़ दे। कलश में कपड़ा लपेट दें।
- कलश के ऊपर एक पात्र में चावल रख दे। चावल के ऊपर एक सुपारी मौली लपेट कर रख दे।

- निद्रा कलश ध्यान **ॐ अपो देवी रुपसृज मधुमतीर यक्ष्माय प्रजाभ्यः।**
  तासामास्थाना दुज्जिहता मोषधयः सुपिप्पलाः ॥
  - **ॐ निद्रादेवि नमस्तुभ्यं सर्व देहेषु सुस्थि।**
    अस्मिन् कुम्भे प्रतिष्ठत्व मह सावाह्यामि वै ॥ फूल कलश पर छोड़ दे।

- पूजनम् कलश की पंचोपचार पूजन कर दें। पृष्ठ क्र. 146 देखें।

- एक पात्र में गन्ध, अक्षत, पुष्प (अर्घ) लेकर निद्रादेवी की प्रार्थना करे।
- प्रार्थना **ॐ परमेष्ठिनं नमस्कृत्य निद्रा मावाह याम्यहम्।**
  मोहिनीं सर्वभूतानां मनो-विभ्रम कारिणीम् ॥ ॥ १ ॥

- **विरुपाक्षे शिवे शान्ते आगच्छत्वं तु मोहिनी ।**
  वासुदेवहिते कृष्णे कृष्णाम्बर विभूषिते ॥ ॥ २ ॥
- **आगच्छ सहजा जन सुप्त संसार मोहिनी ।**
  सुषुप्तं संहरे देवि कुमार्ये कान्त मानसे ॥ ॥ ३ ॥
- **श्रम निश्वास वाह्येतु आगच्छ भुवनेश्वरि ।**
  तमः सत्त्व रजोपेते आगच्छ त्वर चारिणी ॥ ॥ ४ ॥
- **मनो बुद्धिरहंकार संहारस्त्वं सरस्वती ।**
  शब्द स्पर्श रूपञ्चं रसोगन्धश्च पञ्चमः ॥ ॥ ५ ॥
- **अगाच्छ गृह्य संक्षिप्य मोहपाश निवन्धिनी ।**
  भवस्योत्पत्ति हेतुस्त्वं यावदाभूत संप्लवम् ॥ ॥ ६ ॥
- **भुवः कल्पान्त सन्ध्यायां वससे त्वं चराचरे ।**
  भोगि शय्या प्रसुप्तस्य वासुदेवस्य शाश ने ॥ ॥ ७ ॥
- **त्वं प्रतिष्ठासि वै देवि मुनियोनि समुत्थिते ।**
  पितृदेव मनुष्याणां स यक्षो रग रक्षसाम् ॥ ॥ ८ ॥
- **पशु पक्षि मृगाणां च योग माया विवर्धिनी ।**
  वससे सर्व सत्वेषु मातेव हितकारिणी ॥ ॥ ९ ॥
- **एहि सावित्रि मूर्त्तिस्त्वं चक्षुर्भ्यां स्थान गोचरे ।**
  विश नासापुटे देवि कण्ठे चोत्कण्ठिता विश ॥ ॥१०॥
- **प्रति भावय मां सर्वम् मातृवद् देवि सुन्वरि ।**
  इदं अर्घ्यम् मयादत्तं पूजेयं प्रति गृह्यताम् ॥ ॥ ११ ॥
- अर्घ पात्र कलश के सामने चढ़ा दे ।

- प्रार्थना — **ॐ उप प्रागात् परमं यत् सधस्य मर्वां अच्छा पितरं मातरं च ।**
  अद्या देवाञ्जुष्ट तमो हिगम्या अथा शास्ते वाशुषे वार्याणि ॥
  - **ॐ निद्राय नमः ।**
- कुछ पद्धतियों में न्यास के बाद निद्रादेवी का आवाहन, अर्घ लिखा है ।

- निद्रा कलश पूजन के उपरान्त शहद, घी लेकर मूर्ति के नेत्रों में **अंजन** की तरह लगा दे ।
  - मंत्र — **ॐ सुदेव मधु सर्पिभ्यां सुखनिद्रा हिताय च ।**
    अभ्यजामि सुखायें तु देवानां शान्ति वायकम् ॥
  - **ॐ आप्यायस्व मदिन्तम् सोम विश्वेभि र ७ शुभिः ।**
    भवानः सप्रथस्तमः सखा वृधे ॥
  - शहद-घी का पात्र शय्या के पास रख दे ।

- पात्र में रखा हुआ तिल तथा सरसों का **तेल** लेकर मूर्ति के पैर के नीचे तलुवा में लगा दे।
- शिव लिंग में एकदम नीचे जहाँ पैर की कल्पना की है, वहाँ लगाना चाहिए।
    - मंत्र **ॐ याते रुद्र शिवातनूर घोरापाप काशिनी।**
      तया नस्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभि चाक शीहि॥
        - **ॐ तिल सर्षप सम्भूतैस्तैलैः सर्षपजैः शुभैः।**
          मयोपलिप्यते देवं तैलं कान्ति प्रदं शुभम्॥
        - तेल पात्र शय्या के पास रख दे।

- मूर्ति के दाहिने हाथ में **कंगन** बांध दे।
    - मंत्र **बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ२ अपबाधमानः।**
      प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माक मेध्यविता रथानाम्॥

- दाहिने हाथ से मुर्तियों का पैर, नाभि, वक्षस्थल, सिर का २ बार **स्पर्श** कर ले।
    - मंत्र **ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहु रुत विश्वतस्यात्।**
      सम्बाहुभ्यान् धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन् देव एकः॥
        - **ॐ पादं नाभिं च हृदयं शिरो देवस्य चालभे।**
          देवस्य सौभ्य दृष्ट्यर्थम् स्पृशामि हित काभ्यया॥

- शय्या के दाहिनी ओर **छत्र (छाता)** रख दे।
    - मन्त्र **ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि।**
      मात्वा हि ७ सीन्मा माहि ७ सीः॥
        - **ॐ वर्षात पत्राण करं सुदण्ड निर्मितं शुभम्।**
          छत्रं ददामि भो देव तव वल्लभ कारकम्॥

- शय्या की बायीं ओर **चंवर या पंखा** रख दे।
    - मंत्र **ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्त वि ७ शतिः।**
      ते अग्रे श्व मयुञ्जंस्ते अस्मिन् जव मा दधुः॥
        - **ॐ यत्नेन निर्मितं दिव्यं व्यजनं वायु कारकम्।**
          ददामि तव सौख्यार्थम् देवानां प्रीति वर्धकम्॥

- शय्या के पैर की ओर **खड़ाऊं** रख दे।
    - मंत्र **ॐ त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥**
        - **ॐ सर्वकण्टक नाशार्थे पादुके सुर पूजिते।**
          समर्पयामि ते देव सुख सन्तान वृद्धये॥

- शय्या के दक्षिण दो **कलशों में जल** भर कर रख दे।
    - मंत्र **ॐ आजिघ्र कलशं मह्य त्वा विशन्त्विन्दवः।**
        - **पुनरुर्जा निवर्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वारुधारा पयस्वती पुनर्मा विशता द्रयिः ॥**
        - **ॐ इमौ द्वौ शान्ति कुम्भौ च सर्वशान्ति करौ परौ।**
        - **पार्श्वयोः स्थापया मोह स्यातां शान्ति करौ मम ॥**

- शय्या के पास पात्र, आसन, दर्पण (शीशा), घंटा, नैवेद्य, जलपात्र, दही, घी, शहद, दूध, वस्त्र, आभूषण, ताम्बूल आदि गृहस्थी की सामग्री रखे।
    - मन्त्र **ॐ अभित्वा शूरनो नुमो दुग्धा इव धेनवः।**
      ईशानमस्य जगतः स्वर्दृश मीशान मदृशस्तस्थुषः ॥
        - **ॐ आसनं दर्पणं घण्टां भक्ष्यं भोज्यं धृतं दधि।**
          षड्रसान् जलपात्रं च ददामि तव प्रीतये ॥

- भस्म, तिल, कुशा लेकर शय्या के चारों ओर तीन बार ईशानकोण से ईशानकोण तक घुमा दे।
    - मंत्र **ॐ भस्मदर्भ तिलैर्देमं रक्षार्थम् वेस्टन त्रयम्।**
      करोमि राक्षसानां हि सुदूरी करणाय च ॥

- फूल लेकर देवों का **शयन** करा दे।
    - मंत्र **ॐ देव देव जगद् व्यापिन् पर्यंङ्के वै सिते शुभ।**
      सित वस्त्र समाच्छन्ने सोपधाने सुषुप्स्व हि ॥
        - **सुप्ते त्वयि देव देवेश जगत् सुप्तं भवेदिदम्।**
          विवुध्ये त्वं विवुध्येत् जगतसर्वम् चराचरम् ॥

- **बलिदान** मंडप से बाहर आठो दिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालों को बलि दें।
    - एक पत्ता पर दही, चावल, काला उरद रख ले।

- संकल्प अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं, अमुक-देवार्चाधि-वासनाङ्ग भूत मिन्द्रादि दिक्पालेभ्य सर्वभूतेम्यश्च बलि प्रदानं करिष्ये ॥

१. इन्द्र - पूर्व **ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम्।**
ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

- **ॐ नमः पूर्वं दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

- प्रार्थना — **ॐ समस्त भूत रक्षेभ्यो भूतानाथेभ्य एव च।
माषभक्त बलिं दास्ये युष्यत् सन्तुष्टि कारकम् ॥**

२. अग्नि - अग्निकोण — **ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ꣸ रक्षमाणस्तव व्रते ॥**

- **ॐ आग्नये दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

३. यम - दक्षिण — **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म पित्रो ॥**

- **ॐ दक्षिण दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

४. नैऋत्य - नैर्ऋत्यकोण — **ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छ- सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥**

- **ॐ नैर्ऋत्यकोण दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

५. वरुण - पश्चिम — **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणे हबोध्युरूश ꣸ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥**

- **ॐ पश्चिम दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

६. वायु - वायव्यकोण — **ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣸ सहस्त्रिणी भिरुपया हियज्ञम्।
वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥**

- **ॐ वायव्य दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

७. सोम - उत्तर — **ॐ वय ꣸ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ॥**

- **ॐ उत्तर दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ न मम ॥

८. ईशान - ईशानकोण **ॐ तमीशानं जगतस् तस्थु षस्पतिं धियञ्जिन्वम से हूमहे वयं। पूषानो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये॥**

- **ॐ ईशान दिग्वासिभ्यो, दिक्पति-दिक्भूताधिपति, दिग्गणपति, दिग् रुद्र, दिग्मातृ दिग्क्षेत्रपालेभ्यो नमः।**
- दधि, माष तण्डुल बलि रिय मुपतिष्ठतु स्वाहा॥ न मम॥

- बलि प्रदान करके हाथ पाँव धोले।
- अपने स्थान पर बैठकर आचमन प्रणायाम करे।
- शिवलिंग स्थापना में रुद्राध्याय अन्य प्रतिष्ठा में पुरुषसुक्त पाठ करे।

- **हवन**
- देव स्मरण करने के बाद यजमान हवन वेदी के पास आकर पूर्व मुख बैठ जाय।
- घी की ८, २८ या १०८ आहुति दे।
- कुछ लोग घी के साथ (तिल-जव-शाकल्य) अन्य द्रव्य से आहुति देने को लिखते है।
- कुछ लोग पलाश लकड़ी तथा जव, तिल, चावल आदि द्रव्यों से हवन लिखते हैं।
- लघु दर्पण में सर्वतोभद्र या लिङ्गतोभद्र देव नाम मन्त्रों से भी हवन करने को लिखा है।
- लघु दर्पण में दधि, मधु, घृत मिलाकर स्थाप्य देवनाम मन्त्रों से हवन करने को लिखा है।

  - विष्णु प्रतिष्ठा में **ॐ पराय विष्णवात्मने नमः स्वाहा।**
  - शिवलिंग में **ॐ पराय शिवात्मने नमः स्वाहा।**
  - श्रीराम जानकी में **ॐ पराय रामात्मने नमः स्वाहा।**
  - राधा कृष्ण में **ॐ पराय कृष्णात्मने नमः स्वाहा।**
  - देवी में **ॐ पराय देव्यात्मने नमः स्वाहा।**

- जो मूर्ति हो उसी के नाम से आहुति दे।
- हवन के बाद प्रतिमा में न्यास करे।

॥ देव न्यास विधि ॥

- निम्नलिखित न्यास विधि सभी देव मूर्तियों के लिए है।
- मुत्तियों के समीप शय्या के दक्षिण में उत्तर मुख बैठ कर आचमन-प्राणायाम कर के संकल्प करे।
- संकल्प — **ॐ अद्य शुभ पुण्यतिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहम्**, अमुक-**देवार्चाधिवासन कर्मणि देवकला सान्निध्यार्थम् प्रणवादि न्यासान् करिष्ये ॥**
- प्रार्थना — **ॐ ब्रह्मन्द्र सोभाग्नि कुबेर सौम्य देवादिभिर्वन्दित वन्दनीय।
  वुध्यस्व देवेश जगन्निवास मंत्र प्रभावेण सुखेन देव ॥**
  - **उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यज निद्रां जगत् पते।
    शय्याधिवासन विधिं त्यक्तवा गृहाण त्वं सुमण्डपम् ॥**

१. **प्रणव न्यास** — हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ अं नमः** पादयो र्न्यसामि।
2. **ॐ उं नमः** हृदये न्यसामि।
3. **ॐ मं नमः** ललाटे न्यसामि।

२. **व्याहृति न्यास** — हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ भूः नमः** पादयो र्न्यसामि।
2. **ॐ भुवः नमः** हृदये न्यसामि।
3. **ॐ स्वः नमः** ललाटे न्यसामि।

३. **मातृका न्यास** — हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ अं नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ आं नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ इं नमः** दक्षिण नेत्रे न्यसामि।
4. **ॐ ईं नमः** वाम नेत्रे न्यसामि।
5. **ॐ उं नमः** दक्षिण कर्णे न्यसामि।
6. **ॐ ऊम् नमः** वाम कर्णे न्यसामि।
7. **ॐ ऋं नमः** दक्षिण गण्डे न्यसामि।
8. **ॐ ॠं नमः** वाम गण्डे न्यसामि।
9. **ॐ लृं नमः** वाम नासापुटे न्यसामि।
10. **ॐ लृम् नमः** दक्षिण नासापुटे न्यसामि।
11. **ॐ एं नमः** ऊर्ध्व-ओष्ठे न्यसामि।
12. **ॐ ऐं नमः** अधरोष्ठे न्यसामि।
13. **ॐ नमः** ऊर्ध्व दन्त पंक्ति न्यसामि।
14. **ॐ नमः** अधर दन्त पंक्ति न्यसामि।
15. **ॐ अं नमः** ललाटे न्यसामि।
16. **ॐ अः नमः** जिह्वायां न्यसामि।
17. **ॐ यं नमः** त्वचि न्यसामि।
18. **ॐ रं नमः** चक्षुषो र्न्यसामि।
19. **ॐ लं नमः** नासिकायां न्यसामि।
20. **ॐ वं नमः** दशनेषु न्यसामि।
21. **ॐ शं नमः** श्रोत्रयोः न्यसामि।
22. **ॐ षं नमः** उदरे न्यसामि।

23. **ॐ सं नमः** कटौ न्यसामि ।
24. **ॐ हं नमः** हृदये न्यसामि ।
25. **ॐ क्षं नमः** नाभ्यां न्यसामि ।
26. **ॐ लं नमः** लिङ्गे न्यसामि ।
27. **ॐ पं फं बं भं मं नमः** दक्षिण वाहौ न्यसामि ।
28. **ॐ तं थं दं धं नं नमः** वाम वाहौ न्यसामि ।
29. **ॐ टं ठं डं ढं णं नमः** दक्षिण जघायां न्यसामि ।
30. **ॐ चं छं जं झं ञं नमः** वाम जघायां न्यसामि ।
31. **ॐ कं खं गं घं ङं नमः** सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि ।

४. ग्रह न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे ।

1. **ॐ रविचन्द्राभ्यां नमः** नेत्रयोः न्यसामि ।
2. **ॐ भौमाय नमः** हृदये न्यसामि ।
3. **ॐ बुधाय नमः** स्कन्धे न्यसामि ।
4. **ॐ गुरवे नमः** जिह्वायाम् न्यसामि ।
5. **ॐ भृगवे नमः** लिंगे न्यसामि ।
6. **ॐ शनैश्चराय नमः** ललाटे न्यसामि ।
7. **ॐ राहवे नमः** पादयोः न्यसामि ।
8. **ॐ केतवे नमः** केशेषु न्यसामि ।

५. नक्षत्र न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे ।

1. **ॐ रोहिणोभ्यो नमः** हृदये न्यसामि ।
2. **ॐ मृगशिरसे नमः** शिरसि न्यसामि ।
3. **ॐ आर्द्रायै नमः** केशेषु न्यसामि ।
4. **ॐ पुनर्वसवे नमः** ललाटे न्यसामि ।
5. **ॐ पुष्याय नमः** मुखे न्यसामि ।
6. **ॐ आश्लेषाभ्यो नमः** नासापुटयोः न्यसामि ।
7. **ॐ मघाभ्यो नमः** दन्तेषु न्यसामि ।
8. **ॐ पूर्वाफाल्गुनीभ्यो नमः** दक्षिण कर्णे न्यसामि ।
9. **ॐ उत्तराफाल्गुनीभ्यो नमः** वाम कर्णे न्यसामि ।
10. **ॐ हस्ताय नमः** हस्तयोः न्यसामि ।
11. **ॐ चित्रायै नमः** दक्षिण भुजे न्यसामि ।
12. **ॐ स्वात्यै नमः** वाम मुजे न्यसामि ।
13. **ॐ विशाखा-अनुराधाम्यां नमः** दक्षिण वामस्तनयोः न्यसामि ।
14. **ॐ ज्येष्ठाभ्यो नमः** दक्षिण कुक्षौ न्यसामि ।
15. **ॐ मूलाय नमः** वाम कुक्षौ न्यसामि ।
16. **ॐ पूर्वाषाढ़ाभ्यो नमः** कटिपार्श्वयोः न्यसामि ।
17. **ॐ उत्तराषाढ़ाभ्यो नमः** लिंगे (योन्यां) न्यसामि ।
18. **ॐ श्रवण-धनिष्ठाभ्यो नमः** वृषणयोः (यथास्थाने) न्यसामि ।
19. **ॐ शतभिषजेभ्यो नमः** नेत्रे न्यसामि ।
20. **ॐ पूर्वाभाद्रपदोत्तराभाद्र पदाभ्यो नमः** ऊर्वोः न्यसामि ।
21. **ॐ रेवती-अश्विनीभ्यो नमः** जंघयोः न्यसामि ।
22. **ॐ भरणी-कृत्तिकाभ्यो नमः** पादयोः न्यसामि ।

६. तारा न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे ।

1. **ॐ ध्रुवाय नमः** नाभ्यां न्यसामि ।
2. **ॐ सप्तर्षिभ्यो नमः** कण्ठे न्यसामि ।
3. **ॐ मातृ मण्डलाय नमः** कटि देशे न्यसामि ।
4. **ॐ विष्णु पदेभ्यो नमः** पादयोः न्यसामि ।
5. **ॐ नागवीथ्यै अंगवीथ्यै नमः** वनमालायां न्यसामि ।
6. **ॐ ताराभ्यो नमः** रोमकूपेषु न्यसामि ।
7. **ॐ अगस्त्याय नमः** कौस्तुभे न्यसामि ।

७. मास न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ चैत्राय नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ वैशाखाय नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ ज्येष्ठाय नमः** हृदये न्यसामि।
4. **ॐ आषाढ़ाय-श्रावणाय च नमः** स्तनयोः न्यसामि।
5. **ॐ भाद्रपदाय नमः** उदरे न्यसामि।
6. **ॐ आश्विनाय नमः** कट्यां न्यसामि।
7. **ॐ कार्तिकाय-मार्गशीर्षाय च नमः** ऊर्वोः न्यसामि।
8. **ॐ पौषाय-माघाय च नमः** जंघयोः न्यसामि।
9. **ॐ फाल्गुनाय नमः** पादयोः न्यसामि।

८. काल न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ संवत्सराय-परिवत्सराय-इडावत्सराय-अनुवत्सराय च नमः।** दक्षिणोर्ध्वात् प्रादक्षिण्येन वाहुषु न्यासामि।
2. **ॐ पर्वतेभ्यो नमः** संधिषु न्यसामि।
3. **ॐ ऋतुभ्यो नमः** लिंगे न्यसामि।
4. **ॐ अहोरात्रेभ्यो नमः** अस्थिषु न्यसामि।
5. **ॐ क्षणाय-लवाय-काष्ठायै च नमः।** रोमषु न्यसामि।
6. **ॐ कृताय नमः** मुखे न्यसामि।
7. **ॐ त्रेतायै नमः** हृदये न्यसामि।
8. **ॐ द्वापराय नमः** नितम्बे न्यसामि।
9. **ॐ कलियुगाय नमः** पादयोः न्यसामि।
10. **ॐ चतुर्दश मन्वन्तरेभ्यो नमः** बाह्वोः न्यसामि।
11. **ॐ पराय-परार्धाय च नमः** जंघयोः न्यसामि।
12. **ॐ महाकल्पाय नमः** शरीरे न्यसामि।
13. **ॐ उदगयनाय-दक्षिणायनाय च नमः** पादयोः न्यसामि।
14. **ॐ विषुवते नमः** सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

९. वर्ण न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ ब्राह्मणाय नमः** मुले न्यसामि।
2. **ॐ क्षत्रियाय नमः** वाह्वोः न्यसामि।
3. **ॐ वैश्याय नमः** ऊर्वोः न्यसामि।
4. **ॐ शूद्राय नमः** पादयोः न्यसामि।
5. **ॐ संकरजेभ्यो नमः** पादाग्रे न्यसामि।
6. **ॐ अनुलोभजेभ्यो नमः** सर्वांग सन्धिषु न्यसामि।
7. **ॐ गोभ्यो नमः** मुखे न्यसामि।
8. **ॐ अजाविकेभ्यो नमः** हस्तयोः न्यसामि।
9. **ॐ ग्राभ्यारण्य पशुभ्यो नमः** सर्वत्र न्यसामि।

१०. तोय न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ मेधेभ्यो नमः** केशेषु न्यसामि।
2. **ॐ अभ्रेभ्यो नमः** रोमसु न्यसामि।
3. **ॐ नदीभ्यो नमः** सर्वगात्रेषु न्यसामि।
4. **ॐ समुद्रेभ्यो नमः** कुक्षिदेशे न्यसामि।

११. विद्या न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ ऋग्वेदाय नमः शिरसि न्यसामि।
2. ॐ यजुर्वेदाय नमः दक्षिण-भुजे न्यसामि।
3. ॐ सामवेदाय नमः वाम-भुजे न्यसामि।
4. ॐ सर्वोपनिषदभ्यो नमः हृदये न्यसामि।
5. ॐ इतिहास-पुराणेभ्यो नमः जंघयो न्यसामि।
6. ॐ अथर्वाङिगरसेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि।
7. ॐ कल्पसूत्रेभ्यो नमः तथा च
8. ॐ व्याकरणेभ्यो नमः मुखे न्यसामि।
9. ॐ तर्केभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि।
10. ॐ मीमांसायै नमः हृदभागे न्यसामि।
11. ॐ निरुक्ताय नमः हृदये न्यसामि।
12. ॐ छन्दः शास्त्रेभ्यो नमः दक्षिण-नेत्रे न्यसामि।
13. ॐ ज्योतिष शास्त्रेभ्यो नमः वाम-नेत्रे न्यसामि।
14. ॐ गीताशास्त्रेभ्यो नमः दक्षिण-श्रोत्रे न्यसामि।
15. ॐ भूत शास्त्रभ्यो नमः वाम-श्रोत्रे न्यसामि।
16. ॐ आयुर्वेदाय नमः दक्षिण वाहौ न्यसामि।
17. ॐ धनुर्वेदाय नमः वाम-वाहौ न्यसामि।
18. ॐ योगशास्त्रेभ्यो नमः हृदये न्यसामि।
19. ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयो न्यसामि।
20. ॐ वश्य तन्त्राय नमः ओष्ठे न्यसामि।

१२. वैराज न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ दिवे नमः मुर्ध्नि न्यसामि।
2. ॐ सूर्यलोकाय नमः दक्षिण-नेत्र न्यसामि।
3. ॐ चन्द्रलोकाय नमः वाम-नेत्रे न्यसामि।
4. ॐ अनिल लोकाय नमः घ्राणे न्यसामि।
5. ॐ व्योम्ने नमः नाभौ न्यसामि।
6. ॐ समुद्रेभ्यो नमः वस्ति देशे न्यसामि।
7. ॐ पृथिव्यै नमः पादयो न्यसामि।

१३. देव न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ हिरण्य गर्भाय नमः शिरसि।
2. ॐ कृष्णाय नमः केशेषु।
3. ॐ रुद्राय नमः ललाटे।
4. ॐ यमाय नमः भ्रुवोः।
5. ॐ अश्विभ्यां नमः कर्णयो न्यसामि।
6. ॐ वैश्वानराय नमः मुखे।
7. ॐ मरुद्भ्यो नमः घ्राणे।
8. ॐ वसुभ्यो नमः कण्ठे।
9. ॐ सद्रेभ्यो नमः दन्तेषु।
10. ॐ आदित्येभ्यो नमः मुखे न्यसामि।
11. ॐ सरस्वत्यै नमः जिह्वायां।
12. ॐ इन्द्राय नमः दक्षिण भुजे।
13. ॐ वलये नमः वाम भुजे।
14. ॐ प्रह्लादाय नमः दक्षिण स्तने।
15. ॐ विश्वकर्मणे नमः वाम स्तने।
16. ॐ नारदाय नमः दक्षिण कुक्षौ।
17. ॐ अन्तादिभ्यो नमः वाम कुक्षौ।
18. ॐ वरुणाय नमः हस्तयोः न्यसामि।
19. ॐ मित्राय नमः पादयोः न्यसामि।
20. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ऊर्वोः न्यसामि।
21. ॐ पितृभ्यो नमः जान्वोः न्यसामि।

22. **ॐ पक्षेभ्यो नमः** जंघयोः न्यसामि।
23. **ॐ राक्षसेभ्यो नमः** गुल्फयोः न्यसामि।
24. **ॐ पिशाचेभ्यो नमः** पादयोः न्यसामि।
25. **ॐ असुरेभ्यो नमः** पादाङ्गुलिषु न्यसामि।
26. **ॐ विद्याधरेभ्यो नमः** पाष्णयोः न्यसामि।
27. **ॐ ग्रहेभ्यो नमः** पादतलयोः न्यसामि।
28. **ॐ गुह्यकेभ्यो नमः** गुह्ये न्यसामि।
29. **ॐ पूतनादिभ्यो नमः** नखेषु न्यसामि।
30. **ॐ कार्तिकेयाय नमः** दक्षिणकटि पार्श्वे न्यसामि।
31. **ॐ गणेशाय नमः** वामकटि पार्श्वे न्यसामि।

१४. मूर्ति न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ मत्स्याय नमः** मूर्ध्नि न्यसामि।
2. **ॐ कूर्माय नमः** पादयो र्नयसामि।
3. **ॐ नृसिंहाय नमः** ललाटे न्यसामि।
4. **ॐ वराहाय नमः** जंघयो न्यसामि।
5. **ॐ वामनाय नमः** मुखे न्यसामि।
6. **ॐ परशुरामाय नमः** हृदये न्यसामि।
7. **ॐ रामाय नमः** बाहुषु न्यसामि।
8. **ॐ कृष्णाय नमः** नाभ्यां न्यसामि।
9. **ॐ बोधाय नमः** बुद्धौ न्यसामि।
10. **ॐ कलंकिने नमः** जानुदेशे न्यसामि।
11. **ॐ केशवाय नमः** शिरसि न्यसामि।
12. **ॐ नारायणाय नमः** मुखे न्यसामि।
13. **ॐ माधवाय नमः** ग्रीवायां न्यसामि।
14. **ॐ गोविन्दाय नमः** वाह्वो र्न्यसामि।
15. **ॐ विष्णवे नमः** हृदये न्यसामि।
16. **ॐ मधुसूदनाय नमः** पृष्ठे न्यसामि।
17. **ॐ त्रिविक्रमाय नमः** कटकट्यो र्न्यसामि।
18. **ॐ वामाय नमः** जठरे न्यसामि।
19. **ॐ श्रीधराय नमः** दक्षिण जंघे न्यसामि।
20. **ॐ हृषीकेशाय नमः** वाम जंघे न्यसामि।
21. **ॐ पद्मनाभाय नमः** गुल्फयो र्न्यसामि।
22. **ॐ दामोदराय नमः** पादयो र्न्यसामि।

१५. क्रतु न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ अश्वमेधाय नमः** मूर्ध्नि न्यसामि।
2. **ॐ नरमेधाय नमः** ललाटे न्यसामि।
3. **ॐ राजसूयाय नमः** मुखे न्यसामि।
4. **ॐ गोसवाय नमः** कण्ठे न्यसामि।
5. **ॐ द्वादशाहाय नमः** हृदि न्यसामि।
6. **ॐ अहीनेभ्यो नमः** नाभौ न्यसामि।
7. **ॐ सवजिद्भ्यो नमः** दक्षिण कट्यां न्यसामि।
8. **ॐ सर्वमेधाय नमः** वाम कट्यां न्यसामि।
9. **ॐ अग्निष्टोमाय नमः** लिङ्गे न्यसामि।
10. **ॐ अतिरात्राय नमः** वृषणयों न्यसामि।
11. **ॐ आप्तोर्यामाय नमः** ऊर्वो न्यसामि।
12. **ॐ षोडशिने नमः** जान्वो न्यसामि।
13. **ॐ उक्थ्याय नमः** दक्षिण जंघायां न्यसामि।
14. **ॐ वाजपेयाय नमः** वाम जंघायां न्यसामि।
15. **ॐ अत्यग्निष्टोमाय नमः** दक्षिण वाहौ न्यसामि।
16. **ॐ चातुर्मास्याय नमः** वाम वाहौ न्यसामि।
17. **ॐ सौत्रामणये नमः** हस्तेषु न्यसामि।
18. **ॐ पश्चिष्टिभ्यो नमः** अंगुलीषु न्यसामि।
19. **ॐ दर्शपूर्ण मासाभ्यां नमः** - नेत्रयो र्न्यसामि।
20. **ॐ सर्वेष्टिभ्यो नमः** रोमकूपेषु न्यसामि।
21. **ॐ स्वाहा काराय नमः** स्तनयो र्न्यसामि।
22. **ॐ वषट्काराय नमः** स्तनयो र्न्यसामि।
23. **ॐ पञ्चमहायज्ञेभ्यो नमः** पादांगुलीषु न्यसामि।

24. **ॐ आहवनीयाय नमः** मुखे न्यसामि।
25. **ॐ दक्षिणाग्नये नमः** हृदये न्यसामि।
26. **ॐ गार्हपत्याय नमः** नाभौ न्यसामि।
27. **ॐ वेद्यै नमः** उदरे न्यसामि।
28. **ॐ प्रवर्ग्याय नमः** भूषणेषु न्यसामि।
29. **ॐ सवनेभ्यो नमः** पादयो र्न्यसामि।
30. **ॐ इध्मेभ्यो नमः** वाहुषु न्यसामि।
31. **ॐ दर्भेभ्यो नमः** केशेषु न्यसामि।

१६. गुण न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ धर्माय नमः** मूर्ध्नि न्यसामि
2. **ॐ ज्ञानाय नमः** हृदि न्यसामि।
3. **ॐ वैराग्याय नमः** गुह्ये न्यसामि।
4. **ॐ ऐश्वर्याय नमः** पादयो र्न्यसामि।

१७. मंत्र न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।** पादयो र्न्यसामि॥
2. **ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्या यध्व मघ्न्या इन्द्राय भागम् प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघश ᳕ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात वह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥** गुल्फयो र्न्यसामि।
3. **ॐ अग्न आयाहिवीतये गृणानोहव्य दातये। निहीता सत्सि बर्हिषि।** जङ्घयो र्न्यसामि।
4. **ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपोभवयन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।** जान्वो र्न्यसामि।
5. **ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँ स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद् रथन्तरे पक्षौ। स्तोमं आत्मा छन्दा ᳕ स्यङ्गानि यजू ᳕ षिनाम सामते तनूर्वांमदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छं धिष्ण्या शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान् दिवंगच्छ स्वः पत।** ऊर्वो र्न्यसामि।
6. **स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥** जठरे न्यसामि।
7. **शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः॥** हृदये न्यसामि।
8. **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रो पार्श्व नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥** कण्ठे न्यसामि।
9. **ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ᳕ हवे हवे सुहव ᳕ शूरमिन्द्रम्। ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ᳕ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥** वक्त्रे न्यसामि।
10. **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥** नेत्रयो र्न्यसामि।
11. **ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्निम्। कवि ᳕ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥** मुर्ध्नि न्यसामि।

१८. जीव न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

- विनियोग **ॐ अस्य प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णू-महेश्वरा ऋषयः ऋग् यजुः सामानि छन्दांसि चैतन्यं देवता प्राण प्रतिष्ठायां जीवन्यासे विनियोगः।**

1. **ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ ऋग्यजुः साम छन्दोभ्यो नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ प्राणाख्य देवतायै नमः** हृदये न्यसामि।
4. **ॐ आं वीजाय नमः** गुह्ये न्यसामि।
5. **ॐ क्राँ शक्त्यै नमः** पादयोः न्यसामि।
6. **ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप् तेजो वायु-आकाशात्मने** आं हृदयाय नमः।
7. **ॐ चं छं जं झं इं शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने** ईम् शिरसे स्वाहा।
8. **ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक् चक्षुर्जिह्वा घ्राणात्मने** ॐ शिखायै वौषट्।
9. **ॐ तं थं दं धं नं एं वाक् पाणि पाद पापू पस्थात्मने** ऐं कवचाय हुम्।
10. **ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादान विहरणोत्सर्गा नन्दात्मने** औं नेत्र त्रयाय वौषट्।
11. **ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं आं मनो बुद्धि अहंकार चित्तात्मने** अः अस्त्राय फट।
12. **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य प्राणः इह स्थितः।**
13. **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य जीव इह स्थितः।**
14. **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य सर्वेन्द्रियाणि।**
15. **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्य देवस्य वाङ् मनः त्वक् चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**

- फूल लेकर प्रतिमा-मूर्ति का हृदय भाग को स्पर्श करे।
- मंत्र **ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।**
  अस्यै देवत्व मर्चायै माम हेति च कश्चन्॥

१९. तत्व न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

- पं. वायुनन्दन मिश्र ने प्रतिष्ठा महोदधि में तीन आहुति देकर तत्वत्रय न्यास करने को लिखा है।
- अग्निपुराण में तत्वन्यास के बाद लिखा है।
- इस पद्धति में अग्निपुराण के अनुसार ही तत्वत्रय होम प्रक्रिया लिखी है।

1. **ॐ मं जीवात्मने नमः।**
2. **ॐ भं प्राणात्मने नमः**
   देवशरीरे व्यापकं न्यसामि।
3. **ॐ बं बुद्ध्यात्मने नमः।**
4. **ॐ फं अहंकारात्मने नमः।**
5. **ॐ पं मन-आत्मने नमः।** हृदि न्यसामि।

6. **ॐ नं शब्दतन्मात्रात्मने नमः** शिरसि न्यसामि।
7. **ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः** मुखे न्यसामि।
8. **ॐ दं रूप तन्मात्रात्मने नमः** हृदये न्यसामि।
9. **ॐ थं रस तन्मात्रात्मने नमः** हस्तयो र्न्यसामि।
10. **ॐ तं गन्ध तन्मात्रात्मने नमः** - पादयो र्न्यसामि।
11. **ॐ णं श्रोत्रात्मने नमः** श्रोत्रयो र्न्यसामि।
12. **ॐ ढं त्वगात्मने नमः** त्वचि न्यसामि।
13. **ॐ डं चक्षुरात्मने नमः** नेत्रयो र्न्यसामि।
14. **ॐ ठं जिह्वात्मने नमः** जिह्वायां न्यसामि।
15. **ॐ टं घ्राणात्मने नमः** घ्राणे न्यसामि।
16. **ॐ ञं वागात्मने नमः** वाचि न्यसामि।
17. **ॐ झं पाण्यात्मने नमः** पाण्यो र्न्यसामि।
18. **ॐ जं पादात्मने नमः** पादयो र्न्यसामि।
19. **ॐ छं पाय्वात्मने नमः** पायौ न्यसामि।
20. **ॐ चं उपस्थात्मने नमः** उपस्थे न्यसामि।
21. **ॐ ङं पृथिव्यात्मने नमः** पादयो र्न्यसामि।
22. **ॐ घं अबात्मने नमः** वस्तौ न्यसामि।
23. **ॐ गं तेजात्मने नमः** हृदि न्यसामि।
24. **ॐ खं प्राणात्मने नमः** घ्राणे न्यसामि।
25. **ॐ कं आकाशात्मने नमः** शिरसि न्यसामि।
26. **ॐ शं पुण्डरीकाक्षाय नमः** हृदि न्यसामि।
27. **ॐ षं सूर्याय मण्डलात्मने नमः** कण्ठे न्यसामि।
28. **ॐ सं सोमात्मने नमः** स्तन मध्ये न्यसामि।
29. **ॐ रं ध्रस्थात्मने नमः** स्तनयो र्न्यसामि।
30. **ॐ वं वह् न्यात्मने नमः** हत् पुण्डरीकमध्ये न्यसामि।

- फूल लेकर देवमूर्ति का ध्यान करे एवं फूल मूर्तियों पर चढ़ा दे।

1. **ॐ यं सर्वात्मने नमः।**
2. **ॐ गं सर्वात्मने नमः।**
3. **ॐ पं पुरुषात्मने नमः।**
4. **ॐ वं अनुग्रहात्मने नमः।**
5. **ॐ सं सर्वात्मने नमः।**
6. **ॐ लं सर्वसंहरणात्मने नमः।**
7. **ॐ अं कोषात्मने नमः।**
8. **ॐ तत् पुरुषात्मने नमः।**

२०. त्रितत्व न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ आत्मतत्त्वाय नमः** - पादयो र्न्यसामि।
2. **ॐ विद्यातत्वाय नमः** - हृदि न्यसामि।
3. **ॐ शिवतत्वाय नमः** - शिरसि न्यसामि।
4. **ॐ पृथिवी तत्वात्मने नमः** - पादयो र्न्यसामि।
5. **ॐ अप् तत्वात्मने नमः** - वस्तौ न्यसामि।
6. **ॐ तेजस् तत्वात्मने नमः** - हृदये न्यसामि।
7. **ॐ वायु तत्वात्मने नमः** - घ्राणे न्यसामि।
8. **ॐ आकाश तत्वात्मने नमः** - शिरसि न्यसामि।
9. **ॐ गन्ध तत्वात्मने नमः** - पादयो र्न्यसामि।
10. **ॐ रस तत्वात्मने नमः** - शिरसि न्यसामि।
11. **ॐ घ्राण तत्वात्मने नमः** - घ्राणे न्यसामि।
12. **ॐ जिह्वा तत्वात्मने नमः** - जिह्वायां न्यसामि।
13. **ॐ चक्षुष तत्वात्मने नमः** चक्षुषो र्न्यसामि।

14. **ॐ त्वक् तत्वात्मने नमः** त्वचि न्यसामि।
15. **ॐ श्रोत्र तत्वात्मने नमः** कर्णयो र्न्यसामि।
16. **ॐ पायु तत्वात्मने नमः** पायौ न्यसामि।
17. **ॐ उपस्थ तत्वात्मने नमः** उपस्थे न्यसामि।
18. **ॐ हस्त तत्वात्मने नमः** हस्तयो र्न्यसामि।
19. **ॐ पाद तत्वात्मने नमः** पादयो र्न्यसामि।
20. **ॐ वाक् तत्वात्मने नमः** वाचि न्यसामि।
21. **ॐ मनस् तत्वात्मने नमः** मनसि न्यसामि।
22. **ॐ बुद्धि तत्वात्मने नमः** बुद्धौ न्यसामि।
23. **ॐ अहंकारात्मने नमः** अहंकारे न्यसामि।
24. **ॐ सत्वाय नमः**
25. **ॐ रजसे नमः।**
26. **ॐ तमसे नमः**
27. **ॐ पुरुषतत्वाय नमः।**
28. **ॐ राग तत्वाय नमः** सर्वान् हृदये न्यसामि।
29. **ॐ विद्यातत्वाय नमः**
30. **ॐ नीति तत्वाय नमः।**
31. **ॐ तर्क तत्वाय नमः**
32. **ॐ काल तत्वाय नमः।**
33. **ॐ माया तत्वाय नमः**
34. **ॐ ईश्वर तत्वाय नमः।**
35. **ॐ सदाशिव तत्वाय नमः**
36. **ॐ शक्ति तत्वाय नमः।**
37. **ॐ शिव तत्वाय नमः** सर्वान् सर्वाङ्गे न्यसामि।

- यहाँ तक का न्यास सभी देव मूर्तियों के लिए है।

- श्री प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव के अनुसार जिस देव की मूर्ति हो उसके नाम में चतुर्थी विभक्ति लगा कर न्यास करे - जैसे **ॐ शिं शिवात्मने नमः। ॐ विं विष्णवात्मने नमः। ॐ रां रामात्मने नमः।**

॥ विशेष न्यास - शिवलिंग ॥

१. अंग न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ ॐ** हृदये न्यसामि।
2. **ॐ नं** शिरसि न्यसामि।
3. **ॐ मं** शिखायां न्यसामि।
4. **ॐ शिं** कवचे न्यसामि।
5. **ॐ वां** नेत्रयो र्न्यसामि।
6. **ॐ यं** अस्त्रे न्यसामि।

२. आयुध न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ वज्राय नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ शक्तये नमः** मस्तके न्यसामि।
3. **ॐ दण्डाय नमः** दक्षिणभुजे न्यसामि।
4. **ॐ खड्गाय नमः** वामभुजे न्यसामि।
5. **ॐ पाशाय नमः** जठरे न्यसामि।
6. **ॐ अंकुशाय नमः** पृष्ठे न्यसामि।
7. **ॐ ध्वजाय नमः** नाभ्यां न्यसामि।
8. **ॐ त्रिशूलाय नमः** लिङ्गे वृषणे च न्यसामि।
9. **ॐ चक्राय नमः** जङ्घयोर्जानुनीय न्यसामि।
10. **ॐ पद्माय नमः** गुल्फयोः पादयोश्य न्यसामि।

३. शक्ति न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ वामायै नमः** ललाटे न्यसामि।
2. **ॐ ज्यैष्ठायै नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ रुद्राण्यै नमः** गुह्ये न्यसामि।
4. **ॐ काल्यै नमः** कण्ठे न्यसामि।
5. **ॐ कलविकरणाय नमः** दन्तेषु न्यसामि।
6. **ॐ बलायै नमः** हृदये न्यसामि।
7. **ॐ बलप्रमथनायै नमः** जठरे न्यसामि।
8. **ॐ सर्वभूतदमनायै नमः** नाभौ न्यसामि।
9. **ॐ उन्मनायै नमः** सर्वाङ्गेषु न्यसामि।

४. ब्रह्म न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ ईशानाय नमः** अंगुष्ठयो र्न्यसामि।
2. **ॐ तत्पुरुषाय नमः** तर्जन्यो र्न्यसामि।
3. **ॐ अघोरेभ्यो नमः** मध्यमयो र्न्यसामि।
4. **ॐ वामदेवाय नमः** अनामिकयो र्न्यसामि।
5. **ॐ सद्योजाताय नमः** कनिष्ठिकयो र्न्यसामि।
6. **ॐ सद्योजाताय नमः** हृदि न्यसामि।
7. **ॐ वामदेवाय नमः** शिरसि न्यसामि।
8. **ॐ अघोराय नमः** शिखायां न्यसामि।
9. **ॐ तत्पुरुषाय नमः** कवचे न्यसामि।
10. **ॐ ईशानाय नमः** अस्त्रे न्यसामि।
11. **ॐ हृदयाय नमः** कनिष्ठिकयो र्न्यसामि।
12. **ॐ शिरसे स्वाहा** अनामिकयो र्न्यसामि।
13. **ॐ शिखायै वषट्** मध्यमयो र्न्यसामि।
14. **ॐ कवचाय हूँ** तर्जन्यो र्न्यसामि।
15. **ॐ अस्त्राय फट्** अंगुष्ठयो र्न्यसामि।

- नोट **परेण तेजसा संयोज्य कवचेनाव गुण्ठ्य सर्व कर्मसु नियोजयेत्।**
  लिगमुद्रां वद्ध्वा ईशान नाम्नीमुष्टीं बध्नीयात्॥
  - अर्थ - यह न्यास बंधी मुट्ठी की क्रमशः १-१ अंगुली खोल कर अंगूठे के साथ मिला कर शिवलिंग का स्पर्श करे।

- आचमन करके दोनों हाथों को मुट्ठी बांध ले।
- मंत्र **ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।**
  ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोऽधिपति र्ब्रह्मा शिवोमे अस्तु सदाशिवोम्॥

- दोनों हाथों के अंगूठों को बंधी मुट्ठी में से खोल ले और दोनों अंगूठों से शिवलिंग का स्पर्श करे।
- मंत्र **ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।**
  ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोऽधिपति र्ब्रह्मा शिवोमे अस्तु सदाशिवोम्॥ ईशानं मूर्ध्नि न्यसामि।

- दोनों अंगूठों से तर्जनी अंगुलियों को मिला ले।
- मंत्र **तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।**
  तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ तत्पुरुषं मुखे न्यसामि।

- अंगूठों के साथ मध्यमा अंगुलियों को मिला ले।
- मंत्र **अघोरेभ्योऽ थघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।**
  सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्र रूपेभ्यः॥ अघोरं हृदि न्यसामि।

- अंगूठों के साथ अनामिका अंगुलियों को मिला ले।
- मंत्र **वामदेवाय नमो, ज्येष्ठाय नमः, श्रेष्ठाय नमो, रुद्राय नमः, कालाय नमः,**
  कलविकरणाय नमो, बलविकरणाय नमो, बलाय नमो, बलप्रमथनाय नमः,
  सर्वभूतदमनाय नमो, मनोन्मनाय नमः॥ वासुदेवं गुह्ये न्यसामि।

- अंगूठों के साथ कनिष्ठिका अंगुलियों को मिला ले।
- मंत्र **ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।**
  भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥
  - सद्योजातं पादादारभ्य मस्तकान्तं न्यसामि॥

५. कला न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ ईशानं सर्व विद्यानाम् नमः** ईशानीकलां उपरिमूर्ध्नि न्यसामि।
2. **ॐ ईश्वरः सर्वभूतानाम् नमः** अभयदां कलां पूर्वमूर्ध्नि न्यसामि।
3. **ॐ ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपति ब्रह्मा नमः** इष्टदां कलां दक्षिण मूर्ध्नि न्यसामि।
4. **ॐ शिवोमेऽस्तु नमः** मरीचीं कलां उत्तर मूर्ध्नि न्यसामि।
5. **ॐ सदाशिवोऽम् नमः** ज्वालिनीं कलां पश्चिम वक्त्रे न्यसामि।
6. **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नमः** पूर्व वक्त्रे शान्तिं न्यसामि।
7. **ॐ महादेवाय धीमहि नमः** दक्षिण वक्त्रे विद्यां न्यसामि।
8. **ॐ तन्नो रूद्रो नमः** उत्तर वक्त्रे प्रतिष्ठां न्यसामि।
9. **ॐ प्रचोदयात् नमः** पश्चिम वक्त्र धृतिं न्यसामि।
10. **ॐ अघोरेभ्यो नमः** तमां हृदये न्यसामि।
11. **ॐ अथघोरेभ्यो नमः** जरां उरसि न्यसामि।
12. **ॐ घोरेभ्यो नमः** सत्वां स्कन्धयो र्न्यसामि।
13. **ॐ घोरतरेभ्यो नमः** निद्रां नाभौ न्यसामि।
14. **ॐ सर्वेभ्यो नमः** सर्वव्याधिं कुक्षौ न्यसामि।
15. **ॐ सर्वशर्वेभ्यो नमः** मृत्युं पृष्ठे न्यसामि।
16. **ॐ नमस्तेऽस्तु नमः** क्षुधां वक्षसि न्यसामि।
17. **ॐ रुद्ररूपेभ्यो नमः** तृषां उरसि न्यसामि।
18. **ॐ वामदेवाय नमः** जरां गुह्ये न्यसामि।
19. **ॐ ज्येष्ठाय नमः** रक्षां लिङ्गे न्यसामि।
20. **ॐ श्रेष्ठाय नमः** रतिं दक्षिणोरौ न्यसामि।
21. **ॐ रुद्राय नमः** पालिनीं वामोरौ न्यसामि।
22. **ॐ कालाय नमः** कलां दक्षिण जानौ न्यसामि।
23. **ॐ कलविकरणाय नमः** संजीवनी वाम जानौ न्यसामि।
24. **ॐ बलविकरणाय नमः** धात्रीं दक्षिण जंघायां न्यसामि।
25. **ॐ वलाय नमः** वृद्धिं वाम जंघायां न्यसामि।
26. **ॐ बलप्रमथनाय नमः** छायां क्रियां च क्रमेण दक्षिण वामस्फिचि न्यसामि।

27. ॐ **सर्वभूतदमाय नमः** भ्रामणीं कटिदेशे न्यसामि।
28. ॐ **मनो नमः** शोषणीं दक्षिण पार्श्वे न्यसामि।
29. ॐ **उन्मनाय नमः** ज्वरां वाम पार्श्वे न्यसामि।
30. ॐ **सद्योजातं प्रपद्यामि नमः** सिद्धिं दक्षिण पादे न्यसामि।
31. ॐ **सद्योजाताय वै नमो नमः** ऋद्धिं वामपादे न्यसामि।
32. ॐ **भवे नमः** दितिं दक्षिण पाणौ न्यसामि।
33. ॐ **अभवे नमः** लक्ष्मीं वामपाणौ न्यसामि।
34. ॐ **नातिभवे नमः** मेधां नासायां न्यसामि।
35. ॐ **भवस्व मां नमः** कान्तिं शिरसि न्यसामि।
36. ॐ **भव नमः** स्वधां दक्षिण वाहौ न्यसामि।
37. ॐ **उद्भवाय नमः** प्रमां वाम वाहौ न्यसामि।
38. ॐ **तमाद्याः** सर्वाः कला अस्मिन् मूर्तौ विशन्तु।
39. ॐ **हंसां** हृदयाय नमः।
40. ॐ **हंसीं** शिरसे स्वाहा।
41. ॐ **हंसूं** शिखायै वषट्।
42. ॐ **हंसैं** कवचाय हुम्।
43. ॐ **हंस हंसेति** नेत्रत्रयाय वौषट्।
44. ॐ **हंसः** अस्त्राय फट्।
45. ॐ **विद्यादेवं हंसं भावयामि।**

॥ इति शिव न्यास ॥

॥ विशेष न्यास - पार्वती ॥

- **पार्वती न्यास** हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ **घं गौर्य्यै नमः** हृदये न्यसामि।
2. ॐ **हं गौर्य्यै नमः** शिरसे स्वाहा।
3. ॐ **यं गौर्य्यै नमः** शिखायै वषट्।
4. ॐ **भं गौर्य्यै नमः** कवचाय हुम्।
5. ॐ **फं गौर्य्यै नमः** नेत्राभ्यां वौषट्।
6. ॐ **हुं गौर्य्यै नमः** अस्त्राय फट्।

॥ विशेष न्यास - गणेश ॥

१. गणेश मूलमंत्र हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ **वं** भ्रूमध्ये न्यसामि।
2. ॐ **क्रं** कण्ठे न्यसामि।
3. ॐ **तुं** हृदये न्यसामि।
4. ॐ **डां** नाभौ न्यसामि।
5. ॐ **यं** लिंगे न्यसामि।
6. ॐ **हुं** पादयो र्न्यसामि।

२. गणेश आयुध न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ **बीजपूराय नमः** शिरसि न्यसामि।
2. ॐ **गदायै नमः** मस्तके न्यसामि।
3. ॐ **त्रिशूलाय नमः** दक्षिण भुजे न्यसामि।
4. ॐ **धनुषे नमः** वाम भुजे न्यसामि।
5. ॐ **चक्राय नमः** नाभ्यां न्यसामि।
6. ॐ **कमलाय नमः** जठरे न्यसामि।
7. ॐ **पाशाय नमः** पृष्ठे न्यसामि।
8. ॐ **उत्पलाय नमः** लिंगे-वृषणे च न्यसामि।

9. **ॐ वाणाय नमः** जंघे न्यसामि।
10. **ॐ अंकुशाय नमः** जान्वो न्यसामि।
11. **ॐ विषणाय नमः** गुल्फयो र्न्यसामि।
12. **ॐ रत्न कलशाय नमः** पादयो र्न्यसामि।

३. गणेश शक्ति न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ तीव्रायै नमः** ललाटे न्यसामि।
2. **ॐ ज्वालिन्यै नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ नन्दायै नमः** गुह्य न्यसामि।
4. **ॐ गदायै नमः** कण्ठे न्यसामि।
5. **ॐ कामरुपिण्यै नमः** दन्तेषु न्यसामि।
6. **ॐ उग्रायै नमः** हृदये न्यसामि।
7. **ॐ तेजोवत्यै नमः** नाभौ न्यसामि।
8. **ॐ सत्यायै नमः** उदरे न्यसामि।
9. **ॐ सर्व विघ्न विनाशायै नमः** सर्वाङ्गेषु न्यसामि।

४. गणेश अंग न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् वीजस्य गां** हृदयाय नमः।
2. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् वीजस्य गीं** शिरसे स्वाहा।
3. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् वीजस्य गूं** शिखायै वषट्।
4. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् वीजस्य गैं** कवचाय हम्।
5. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् वीजस्य गौं** नेत्रत्रयाय वौषट्।
6. **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षट् वीजस्य गः** अस्त्राय फट्।

॥ इति गणेश न्यास ॥

॥ विशेष न्यास - विष्णु ॥

१. विष्णु आयुध न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ खड्गाय नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ शार्ङ्गाय नमः** मस्तके न्यासामि।
3. **ॐ मुसलाय नमः** दक्षिण भुजे न्यासामि।
4. **ॐ हलाय नमः** वाम भुजे न्यासामि।
5. **ॐ चक्राय नमः** नाभि जठर पृष्ठेषु न्यसामि।
6. **ॐ शंखाय नमः** लिंगे वृषणदेशे न्यसामि।
7. **ॐ गदायै नमः** जंघयो र्जानुनोश्च न्यसामि।
8. **ॐ पद्माय नमः** गुल्फयोः पादयोश्च न्यसामि।

२. विष्णु अंग न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ हृदयाय नमः** हृदये न्यासामि।
2. **ॐ शिरसे स्वाहा** शिरसि न्यसामि।
3. **ॐ शिखायै वषट** शिखायां न्यसामि।
4. **ॐ कवचाय हुम्** सर्वाङ्गेषु न्यसामि।

5. **ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्** नेत्रयो र्न्यसामि।
6. **ॐ अस्त्राय फट्** करयो र्न्यसामि।
7. **ॐ नमः** हृदये न्यसामि।
8. **ॐ नं नमः** शिरसि न्यसामि।
9. **ॐ भगवते नमः** शिखायां न्यसामि।
10. **ॐ वासुदेवाय नमः** कवचे न्यसामि।
11. **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अस्त्रं न्यसामि।
12. **ॐ वत्साय नमः** दक्षिण वाम स्तनयो न्यसामि।
13. **ॐ कौस्तुभाय नमः** उरसि न्यसामि।
14. **ॐ वनमालायै नमः** कण्ठे न्यसामि।
15. **ॐ नमः** पादयो र्न्यसामि।
16. **ॐ नं नमः** जानुनो र्न्यसामि।
17. **ॐ मां नमः** गुह्य न्यसामि।
18. **ॐ भं नमः** नाभ्यां न्यसामि।
19. **ॐ गं नमः** हृदये न्यसामि।
20. **ॐ वं नमः** कण्ठे न्यसामि।
21. **ॐ तें नमः** मुखे न्यसामि।
22. **ॐ वां नमः** नेत्रयो र्न्यसामि।
23. **ॐ सुं नमः** भाले न्यसामि।
24. **ॐ दें नमः** मूर्ध्नि न्यसामि।
25. **ॐ वां नमः** दक्षिण पार्श्व न्यसामि।
26. **ॐ यं नमः** वाम पार्श्व न्यसामि।

३. विष्णु द्वादशाक्षर मंत्र न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ कें केशवाय नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ नं नाराणाय नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ मों माधवाय नमः** ग्रीवायां न्यसामि।
4. **ॐ भं गोविन्दाय नमः** कण्ठे न्यसामि।
5. **ॐ गं विष्णवे नमः** पृष्ठे न्यसामि।
6. **ॐ वं मधुसूदनाय नमः** कुक्षौ न्यसामि।
7. **ॐ त्रें त्रिविक्रमाय नमः** कटि देशे न्यसामि।
8. **ॐ वां वामनाय नमः** जंघयो र्न्यसामि।
9. **ॐ सुं श्रीधराय नमः** वाम गुल्फे न्यसामि।
10. **ॐ दें हृषीकेशाय नमः** दक्षिण गुल्फे न्यसामि।
11. **ॐ वां पद्मनाभाय नमः** वामपादे न्यसामि।
12. **ॐ यं वामोदराय नमः** दक्षिण पादे न्यसामि।

४. विष्णु अष्टांग न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ हूँ हृदयाय नमः** हृदये न्यसामि।
2. **ॐ विष्णवे नमः** शिरसि न्यसामि।
3. **ॐ ब्रह्मणे नमः** शिखायां न्यसामि।
4. **ॐ ध्रुवाय नमः** कवचे न्यसामि।
5. **ॐ चक्रिणे नमः - अस्त्राय फट्** - अस्त्र हस्तयो र्न्यसामि।
6. **ॐ नमः शम्भवाय - गायत्रीम्** - दक्षिण नेत्रे न्यसामि।
7. **ॐ विजयाय नमः - सावित्रीम्** - वाम नेत्रे न्यसामि।
8. **ॐ चक्र शूलाय नमः - पिंगलास्त्रम्** - दिक्षु न्यसामि।

५. विष्णु पुरुषसूक्त न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्।**
स भूमि ᳪ सर्व तस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम्॥ पादयो र्न्यसामि।

2. पुरुषऽ एवद ७ सर्वम् यद्धूतम् यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति ॥ जंघयो र्न्यसामि ।
3. एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ॥ जान्वो र्न्यसामि ।
4. त्रिपादुउर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥ ऊर्वो न्यसामि ।
5. ततोविराड् जायत विराजोऽ अधिपुरुषः ।
सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः ॥ बृषणे न्यसामि ।
6. तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥ कट्यामथवा कण्ठ्यो र्न्यसामि ।
7. तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत ॥ नाभौ न्यसामि ।
8. तस्मादश्वाऽ अजायन्त येकेचोभयादतः ।
गावोह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः ॥ हृदि न्यसामि ।
9. तं यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषम् जात मग्रतः ।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ स्तनयो र्न्यसामि ।
10. यत् पुरुषम् व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखम् किमस्यासीत् किम् बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥ बाह्वो र्न्यसामि ।
11. ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ७ शूद्रो अजायत ॥ मुखे न्यसामि ।
12. चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ चक्षुषो र्न्यसामि ।
13. नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्ऽ अकल्पयन् ॥ कर्णयो र्न्यसामि ।
14. यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
वसन्तो ऽ स्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ भ्रुवो र्न्यसामि ।
15. सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञन् तन्वाना अबध्नन् पुरुषम् पशुम् ॥ माले न्यसामि ।
16. यज्ञेन यज्ञ मऽयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ शिरसि न्यसामि ।

६. विष्णु उत्तरनारायण न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे।**
   तस्य त्वष्टा विदधद्रूप मेतितन् मर्त्यस्य देवत्व माजानमग्रे॥ हृदये न्यसामि।
2. **ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्त मादित्यवर्णन् तमसः परस्तात्।**
   तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥ शिरसि न्यसामि।
3. **ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजाय मानो बहुधा विजायते।**
   तस्य योनिम् परि पश्यन्ति धीरा स्तस्मिन् हतस्थुर्भुवनानि विश्वा॥ शिखायां न्यसामि।
4. **ॐ यो देवेभ्य आतपति यो देवानाम् पुरोहितः।**
   पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये॥ कवचे न्यसामि।
5. **ॐ रुचम् ब्राह्मन् जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्।**
   यस्त्वैवम् ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे॥ नेत्रयो र्न्यसामि।
6. **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।**
   इष्णन् निषाणा मुम् मइषाण सर्वलोकम् मइषाण॥ अस्त्रं न्यसामि।

७. विष्णु मूलमंत्र न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ धर्माय नमः** मूर्ध्नि न्यसामि।
2. **ॐ ज्ञानाय नमः** हृदये न्यसामि।
3. **ॐ वैराग्याय नमः** गुह्य न्यसामि।
4. **ॐ ऐश्वर्याय नमः** पादयोः न्यसामि।

८. विष्णु शक्ति न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ लक्ष्म्यै नमः** ललाटे न्यसामि।
2. **ॐ सरस्वत्यै नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ रत्यै नमः** गुह्यै न्यसामि।
4. **ॐ प्रीत्यै नमः** कण्ठे न्यसामि।
5. **ॐ कीर्त्यै नमः** दिक्षु विदिक्षु च न्यसामि।
6. **ॐ शान्त्यै नमः** हृदि न्यसामि।
7. **ॐ तुष्ट्यै नमः** जठरे न्यसामि।
8. **ॐ पुष्ट्यै नमः** सर्वत्र न्यसामि।

९. विष्णु लक्ष्मी न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ घं लक्ष्म्यै नमः** हृदये न्यसामि।
2. **ॐ हं लक्ष्म्यै नमः** शिरसे स्वाहा
3. **ॐ यं लक्ष्म्यै नमः** शिखायै वषट्।
4. **ॐ भं लक्ष्म्यै नमः** कवचाय हुम्
5. **ॐ फं लक्ष्म्यै नमः** नेत्राभ्यां वौषट्।
6. **ॐ हुं लक्ष्म्यै नमः** अस्त्राय फट्
7. **ॐ ह्रां श्रीं ह्रां क्षः परब्रह्माण्यै सर्वाधारायै नमः।**
8. **ॐ ह्रां श्रीं ह्रीं दिव्य तेजो धारिण्यै सुभगायै नमः।**

॥ विशेष न्यास - देवी मूर्ति ॥

१. निवृत्ति न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ ह्रीम् अं निवृत्यै नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ ह्रीम् आं प्रतिष्ठायै नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ ह्रीम् इं विद्यायै नमः** - दक्षिण नेत्र न्यसामि।
4. **ॐ ह्रीम् ईम् शान्त्यै नमः** - वाम नेत्रे न्यसामि।
5. **ॐ ह्रीम् उं धुन्धिकायै नमः** - दक्षिण श्रोत्रे न्यसामि।
6. **ॐ ह्रीम् ऊं दीपिकायै नमः** - वाम श्रोत्रे न्यसामि।
7. **ॐ ह्रीम् ऋं रेचिकायै नमः** - दक्षिण नासापुरे न्यसामि।
8. **ॐ ह्रीम् ॠं मोचिकायै नमः** - वाम नासापुरे न्यसामि।
9. **ॐ ह्रीम् लृं परायै नमः** - दक्षिण कपोले न्यसामि।
10. **ॐ ह्रीम् ॡं सूक्ष्मायै नमः** - वाम कपोले न्यसामि।
11. **ॐ ह्रीम् एं सूक्ष्मामृतायै नमः** - ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ न्यसामि।
12. **ॐ ह्रीम् ऐं ज्ञानामृतायै नमः** - अधो दन्तपङ्क्तो न्यसामि।
13. **ॐ ह्रीम् ॐ सावित्र्यै नमः** - ऊर्ध्व ओष्ठे न्यसामि।
14. **ॐ ह्रीम् ॐ व्यापिन्यै नमः** - अधरोष्ठे न्यसामि।
15. **ॐ ह्रीम् अं सुरुपायै नमः** - जिह्वायां न्यसामि।
16. **ॐ ह्रीम् अः अनन्तायै नमः** - कण्ठे न्यसामि।
17. **ॐ ह्रीम् कं सृष्ट्यै नमः** - दक्षिण बाहुमूले न्यसामि।
18. **ॐ ह्रीम् खं ऋध्यै नमः** - दक्ष कूर्परे न्यसामि।
19. **ॐ ह्रीम् गं स्मृत्यै नमः** - दक्ष मणिबन्धे न्यसामि।
20. **ॐ ह्रीम् घं मेधायै नमः** - दश करांगुलि मूलेषु न्यसामि।
21. **ॐ ह्रीम् ङं कान्त्यै नमः** - दशांगुलि अग्रेषु न्यसामि।
22. **ॐ ह्रीम् चं लक्ष्यै नमः** - वाम बाहुमूले न्यसामि।
23. **ॐ ह्रीम् छं द्युत्यै नमः** - वाम कूर्परे न्यसामि।
24. **ॐ ह्रीम् जं स्थिरायै नमः** - वाम मणिवन्धे न्यसामि।
25. **ॐ ह्रीम् झं स्थिरायै नमः** - वामाङ्गुलि मूलेषु न्यसामि।
26. **ॐ ह्रीम् ञं सिध्यै नमः** - वामाङ्गुलि अग्रेषु न्यसामि।
27. **ॐ ह्रीम् टं जरायै नमः** - दक्षपादमूले न्यसामि।
28. **ॐ ह्रीम् ठं पालिन्यै नमः** - दक्ष जानुनि न्यसामि।
29. **ॐ ह्रीम् डं शान्त्यै नमः** - दक्ष गुल्फे न्यसामि।
30. **ॐ ह्रीम् ढं ऐश्वर्यै नमः** - दक्ष पादाङ्गुलीषु न्यसामि।
31. **ॐ ह्रीम् णं रत्यै नमः** - वाम पादमूले न्यसामि।
32. **ॐ ह्रीम् तं कामिन्यै नमः** - दक्ष पादमूले न्यसामि।
33. **ॐ ह्रीम् थं रदायै नमः** - वाम जानुनि न्यसामि।

34. ॐ ह्रीम् वं हादिन्यै नमः - वाम गुल्फे न्यसामि।
35. ॐ ह्रीम् धं प्रीत्यै नमः - वाम पादाङ्गुलि मूलेषु न्यसामि।
36. ॐ ह्रीम् नं दीर्घायै नमः - वाम पादाङ्गुलि-अग्रेषु न्यसामि।
37. ॐ ह्रीम् पं तीक्ष्णायै नमः - दक्षिण कुक्षौ न्यसामि।
38. ॐ ह्रीम् फं सुप्त्यै नमः - वाम कुक्षौ न्यसामि।
39. ॐ ह्रीम् बं अभयायै नमः - पृष्ठे न्यसामि।
40. ॐ ह्रीम् भं निद्रायै नमः - नाभौ न्यसामि।
41. ॐ ह्रीम् मं मात्रे नमः - उदरे न्यसामि।
42. ॐ ह्रीम् यं शुद्धायै नमः - हृदि न्यसामि।
43. ॐ ह्रीम् रं कोधिन्यै नमः - कण्ठे न्यसामि।
44. ॐ ह्रीम् लं कृपायै नमः - ककुदि न्यसामि।
45. ॐ ह्रीम् वं उत्कायै नमः - स्कनधयो न्यसामि।
46. ॐ ह्रीम् शं मृत्यवे नमः - दक्षिण करे न्यसामि।
47. ॐ ह्रीम् षं पीतायै नमः - वाम करे न्यसामि।
48. ॐ ह्रीम् सं श्वेतायै नमः - दक्षिण पादे न्यसामि।
49. ॐ ह्रीम् हं अरुणायै नमः - वाम पादे न्यसामि।
50. ॐ ह्रीम् त्रं असितायै नमः - मूर्द्धादि पादान्ते न्यसामि।
51. ॐ ह्रीम् क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै नमः - पादादि मूर्द्धान्तं न्यसामि।

२. वशिन्यादि न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः क्लृं वासिनी वाग्देवतायै नमः** - ब्रह्मरन्ध्रे न्यसामि।
2. **ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीम् कामेश्वरी वाग्देवतायैश्वर्यै नमः** - ललाटे न्यसामि।
3. **ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मेदिनी वाग्देवतायै नमः** - भ्रूमध्ये न्यसामि।
4. **ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यूं विमला वाग्देवतायै नमः** - कण्ठे न्यसामि।
5. **ॐ तं थं दं धं नं ज्म्रीम् अरुणा वाग्देवतायै नमः** - हृदि न्यसामि।
6. **ॐ पं फं बं भं मं हस्त ब्ल्यूं जयनी वाग्देवतायै नमः** - नाभौ न्यसामि।
7. **ॐ यं रं लं वं हस ल्व्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः** - आधारे न्यसामि।
8. **ॐ शं षं सं हं क्षं क्ष्म्रीम् कौलिनो वाग्देवतायै नमः** - सर्वाङ्गे न्यसामि।

३. आयुध न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ त्रिशूलाय नमः** शिरसि न्यसामि।
2. **ॐ खड्गाय नमः** मस्तके न्यसामि।
3. **ॐ ॐ चक्राय नमः** दक्षभुजे न्यसामि।
4. **ॐ वाणाय नमः** वामभुजे न्यसामि।
5. **ॐ शक्तये नमः** नाभौ न्यसामि।
6. **ॐ खेटकाय नमः** गुह्यं न्यसामि।
7. **ॐ चापाय नमः** जंघयो र्न्यसामि।
8. **ॐ पाशाय नमः** जानुनो र्न्यसामि।
9. **ॐ अङ्कुशाय नमः** गुल्फयोर् न्यसामि।
10. **ॐ परशवे नमः** पादयो र्न्यसामि।

४. शक्ति न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ प्रभायै नमः** ललाटे न्यसामि।
2. **ॐ उमायै नमः** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ जयायै नमः** गुह्ये न्यसामि।
4. **ॐ सूक्ष्मयै नमः** कण्ठे न्यसामि।
5. **ॐ विशुद्धायै नमः** दन्तेषु न्यसामि।
6. **ॐ नन्दिन्यै नमः** हृदये न्यसामि।
7. **ॐ सुप्रभायै नमः** नाभौ न्यसामि।
8. **ॐ विजयाय नमः** उदरे न्यसामि।
9. **ॐ सर्व सिद्धि प्रदायिन्यै नमः** सर्वाङ्गेषु न्यसामि।

५. अंग न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ ह्रीम् दुर्गायै नमः** हृदयाय नमः।
2. **ॐ ह्रीम् दुर्गायै नमः** शिरसे स्वाहा।
3. **ॐ ह्रूम् दुर्गायै नमः** शिखायै वषट्।
4. **ॐ ह्रवैम् दुर्गायै नमः** कवचाय हुम।
5. **ॐ ह्रौम् दुर्गायै नमः** नेत्रत्रयाय वौषट्।
6. **ॐ हः दुर्गायै नमः** अस्त्राय फट्।

६. मूल मंत्र न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ मूर्ध्नि** न्यसामि।
2. **ॐ ऐम्** मुखे न्यसामि।
3. **ॐ ह्रीम्** कण्ठे न्यसामि।
4. **ॐ क्लीम्** हृदि न्यसामि।
5. **ॐ चां** दक्षिण पार्श्वे न्यसामि।
6. **ॐ मुं** वाम पार्श्वे न्यसामि।
7. **ॐ डां** नाभौ न्यसामि।
8. **ॐ यैम्** गुह्ये न्यसामि।
9. **ॐ वि** गुल्फयो र्न्यसामि।
10. **ॐ च्चें** पादयो र्न्यसामि।

॥ इति देवी विशेष न्यास ॥

॥ विशेष न्यास - सूर्य मूर्ति ॥

१. मूल मंत्र न्यास हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. **ॐ इति** - पादयो र्न्यसामि।
2. **ॐ नं** - जान्वो र्न्यसामि।
3. **ॐ मों** - गुह्ये न्यसामि।
4. **ॐ भं** - नाभौ न्यसामि।
5. **ॐ गं** - हृदये न्यसामि।
6. **ॐ वं** - कण्ठे न्यसामि।
7. **ॐ तें** - मुखे न्यसामि।
8. **ॐ सूर्** - नेत्रयो र्न्यसामि।
9. **ॐ याम** - भाले र्न्यसामि।
10. **ॐ यम्** - मूर्ध्नि न्यसामि।
11. **ॐ नं** - दक्षिण पार्श्वे न्यसामि।
12. **ॐ मं** - वाम पार्श्वे न्यसामि।

२. आयुध न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ **वज्राय नमः** - शिरसि न्यसामि।
2. ॐ **शक्तये नमः** - मस्तके न्यसामि।
3. ॐ **दण्डाय नमः** - दक्षिण भुजे न्यसामि।
4. ॐ **खड्गाय नमः** - वाम भुजे न्यसामि।
5. ॐ **पाशाय नमः** - जठरे न्यसामि।
6. ॐ **अंकुशाय नमः** - पृष्ठे न्यसामि।
7. ॐ **ध्वजाय नमः** - नाभ्याम् न्यसामि।
8. ॐ **त्रिशूलाय नमः** - लिंगे वृषणे च न्यसामि।
9. ॐ **चक्राय नमः** - जंघयो र्जानुनो च न्यसामि।
10. ॐ **पद्माय नमः** - गुल्फयोः पादयोश्च न्यसामि।

३. शक्ति न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ **दीप्तायै नमः** ललाटे न्यसामि।
2. ॐ **सूक्ष्मायै नमः** मुखे न्यसामि।
3. ॐ **विजयायै नमः** गुह्ये न्यसामि।
4. ॐ **भद्रायै नमः** कण्ठे न्यसामि।
5. ॐ **आविर्भूतायै नमः** दन्तपंक्तिषु न्यसामि।
6. ॐ **विमलायै नमः** हृदये न्यसामि।
7. ॐ **अघोरायै नमः** नाभौ न्यसामि।
8. ॐ **विद्युतायै नमः** उदरे न्यसामि।
9. ॐ **सर्वतो मुख्यै नमः** सर्वाङ्गेषु न्यसामि।

४. अंग न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ **सत्याय नमो घृणये सूर्याय दिव्याय ब्रह्मणे** - शिरसे स्वाहा।
2. ॐ **नमः सूर्या दित्याय विष्णवे** - शिखायै वषट्।
3. ॐ **नमो घृणये सूर्याय आदित्याय रुद्राय** - कवचाय हुम्।
4. ॐ **नमो घृणये सूर्याय-आदित्याय अग्नये** - नेत्र त्रयाय वौषट्।

५. सूर्य गायत्री न्यास

हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।

1. ॐ **तत्** पादांगुष्ठयो र्न्यसामि।
2. ॐ **सं** गुल्फयो र्न्यसामि।
3. ॐ **विं** जंघयो र्न्यसामि।
4. ॐ **तुं** जान्वो र्न्यसामि।
5. ॐ **वर्म्** ऊर्वो र्न्यसामि।
6. ॐ **रेम्** गुदे न्यसामि।
7. ॐ **णिम्** वृषणे न्यसामि।
8. ॐ **यम्** कण्ठे न्यसामि।
9. ॐ **भम्** नाभौ न्यसामि।
10. ॐ **र्गोम्** जठरे न्यसामि।
11. ॐ **देम्** स्तनयो र्न्यसामि।
12. ॐ **वं** हृदि न्यसामि।
13. ॐ **स्यम्** कण्ठे न्यसामि।
14. ॐ **धीम्** वक्त्रे न्यसामि।
15. ॐ **मं** तालुदेशे न्यसामि।
16. ॐ **हिम्** नासिकाग्रे न्यसामि।
17. ॐ **धिम्** चक्षुषो र्न्यसामि।
18. ॐ **योम्** भ्रू मध्ये न्यसामि।
19. ॐ **योम्** ललाटे न्यसामि।
20. ॐ **नः इति** पूर्व न्यसामि।
21. ॐ **प्रम्** दक्षिणे न्यसामि।
22. ॐ **चोम्** पश्चिमे न्यसामि।

23. ॐ **दम्** उत्तरे न्यसामि।
24. ॐ **याम्** मूर्ध्नि न्यसामि।
25. ॐ **तू इति** सर्वत्र न्यसामि।
26. ॐ **तत्** सवितुर्हृदि न्यसामि।
27. ॐ **वरेण्यम्** शिरसि न्यसामि।
28. ॐ **भर्गो देवस्य धीमहि** कवचे न्यसामि।
29. ॐ **धियो योनः** नेत्रयो र्न्यसामि।
30. ॐ **प्रचोदयादिति** अस्त्रे न्यसामि।

॥ विशेष न्यास - नृसिंह मूर्ति ॥

- **षडंग न्यास** हाथ में फूल लेकर न्यास करे - न्यास के उपरान्त फूल मूर्तियों पर छोड़ दे।
- नृसिंह भगवान की मूर्ति में हृदयादि न्यास नहीं होता केवल षडंग न्यास करना चाहिए।
- षडंग न्यास के लिए भी केवल एक ही मन्त्र है, यही मन्त्र हर बार पढ़े

1. ॐ **नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा - हृदयाय नमः** हृदये न्यसामि।
2. ॐ **नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा - शिरसे स्वाहा** शिरसि न्यसामि।
3. ॐ **नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा - शिखायै वषट्** शिखायां न्यसामि।
4. ॐ **नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा - कवचाय हुम्** सर्वाङ्गेषु न्यसामि।
5. ॐ **नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा - नेत्रत्रयाय वौषट्** नेत्रयो र्न्यसामि।
6. ॐ **नृसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल स्वाहा - अस्त्राय फट्** करयो र्न्यसामि।

- ऊपर लिखे के मंत्रो के अनुसार न्यास कर नृसिंह भगवान के लिए बलि प्रदान करे।

॥ आहुति ॥

- न्यास कर्म समाप्त कर हवन वेदी के समीप आकर बैठे।
- आचमन-प्राणायाम के बाद घी की आहुति दे।

1. ॐ **आत्म तत्वाय स्वाहा।**
2. ॐ **आत्म तत्त्वाधिपतये ब्रह्मणे स्वाह।**
3. ॐ **विद्या तत्त्वाय स्वाहा।**
4. ॐ **विद्या तत्त्वाधिपतये विष्णवे स्वाहा।**
5. ॐ **शिव तत्त्वाय स्वाहा।**
6. ॐ **शिव तत्त्वाधिपतये रुद्राय स्वाहा।**

1. **ॐ शन्नोव्वात: पवता ७ शन्नस् तपतुसूर्य्यः ।
   शन्नः कनिक्क्रद देवः पर्ज्जन्न्योऽ अभिवर्षतु ॥** स्वाहा ।
2. **शन्नऽ इन्द्राग्नी भवता मवोभिः शन्नऽ इन्द्रा वरुणा रात हव्व्या ।
   शन्नऽ इन्द्रा पूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंय्योः ॥** स्वाहा ।
3. **शन्नो देवी रभिष्ट्यऽ आपो भवन्तु पीतये । शंय्यो रभिस्त्र वन्तुनः ॥** स्वाहा ।
4. **शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ अस्तु मा मा हि ७ सीः ।
   निवर्तयाम्यायुषेऽ न्नाद्याय प्रजननाय - रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीय्यय ॥** स्वाहा ।
5. **त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
   उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।** स्वाहा ।
6. **ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ७ सुरे स्वाहा ॥** स्वाहा ।

- नोट — जिस देवता की मूर्त्ति हो उसके नाम से ८ आहुति दे ।

- अर्पण — **ॐ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् करिष्यमाण देव प्रतिष्ठा कर्मणि होमकृतः निवेदयामि ।** हाथ का जल वेदी के सामने छोड़ दे ।

- प्रार्थना — **ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
  ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥**
  - फूल मूर्त्तियों के सामने छोड़ दे एवं प्रणाम करे ।

- अपने आसन के नीचे जल छोड़कर उस जल को माथ लगाले ।
- मंडप से उठकर मन्दिर के ऊपर के शिखर कलश तथा मन्दिर प्रासाद का अधिवासन-पूजन करे ।

॥ प्रासाद - शिखर कलश पूजन ॥

- देवन्यास तथा आहुति के बाद मंडप से उठकर यजमान पत्नी सहित मंदिर में आए एवं शिखर कलश (मंदिर के ऊपर जो कलश लगता है) का अधिवासन-पूजन करे।
- यदि मंदिर के प्रांगण में ही वेदी आदि बनायी गयी है तो उस स्थल से थोड़ा हट कर यह संस्कार करे।
- यजमान पूर्व मुख एवं आचार्य उत्तर मुख बैठे।
- यजमान ९-९ खानो का ९ कोष्ठक कुल ८१ कोष्ठक बनाये। इन कोष्ठकों में ८१ कलश रखे।
- सभी कलशों के नीचे सप्तधान्य रखे। कलशों में रक्षासूत्र बांध दे। जल, गन्ध, पुष्प छोड़ दे।
- इन कलशों के उत्तर किसी पीठ पर शिखर कलश रख दे।
- इन ९ कोष्ठकों के बीच वाले कलश में यथा क्रम निम्न वस्तुएं रखे।
- सुविधा की दृष्टि से मूर्तियों को जिन १०८ कलशों से स्नान कराया है। उन्हीं कलश के जल से कलश तथा प्रासाद (मन्दिर) परिसर को भी स्नान करा ले।
- कुछ लोग मूर्तियों के साथ शिखर कलश को भी रख लेते है।

१. बीच कोष्ठक बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **शमी**
2. **गुलर**
3. **पीपल**
4. **चम्पा**
5. **अशोक**
6. **पलाश**
7. **पाकड़**
8. **बरगद**
9. **कदम्ब**
10. **आम**
11. **बेल**
12. **अर्जुन**

२. पूर्व कोष्ठक बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **पद्मक**
2. **गोरोचन**
3. **दुर्वा**
4. **कुशा**
5. **पीली या सफेद सरसों**
6. **सफेद चन्दन**
7. **लाल चन्दन**
8. **चमेली फूल**
9. **सेवार** (नदी-तालाब की घास)
10. **कुन्द पुष्प**

३. अग्निकोण कोष्ठक बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **जव**
2. **धान**
3. **तिल**
4. **सुवर्ण**
5. **चांदी**
6. **मिट्टी** (समुद्र या नदी)
7. **गोबर** (भूमि पर जो स्पर्श नहीं हो)

४. दक्षिण कोष्ठक बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **सहदेवी**
2. **विष्णु क्रान्ता**
3. **भृङ्गराज**
4. **शमी**
5. **शतावर**
6. **गुरिच**
7. **श्यामाक** (सांवा)
8. **महौषधि** (सोंठ)

५. नैर्ऋत्यकोण कोष्ठक बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **केला**
2. **सुपारी**
3. **नारियल**
4. **वेल**
5. **नारंगी**
6. **बैर**
7. **आमला**
8. **मातुलिंग** (बिजौरा नींबू अथवा चकोतरा)

६. **पश्चिम कोष्ठक** बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **पंचगव्य** (गोबर, गोमूत्र, दही, दूध, घी) **छोड़ दे।**

७. वायव्यकोण कोष्ठक बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **शमी**
2. **गुलर**
3. **पीपल**
4. **बरगद**
5. **पलाश की छाल**

८. **उत्तर कोष्ठक** बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **सहदेवी**
2. **शतावर**
3. **शंखपुष्पी**
4. **गुरिच**
5. **वच**
6. **वला**
7. **घी कुमारी**
8. **व्याघ्री** (भटकटैया)

९. ईशानकोण कोष्ठक बीच के कलश में निम्न वस्तुएं छोड़े। शेष ८ कलशो में जल, गन्ध, फूल रखें।

1. **सप्तमृत्तिका** (हाथी, घोड़ा, रथशाला, वाल्मीकि, गोशाला, तालाब, चौराहा की मिट्टी)

❖ पूजन प्रारम्भ

- यजमान आचमन-प्राणायाम करे के शान्ति पाठ करे।
  - शान्ति पाठ — **द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥**
  - संकल्प — **अद्य शुभ पुण्यतिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहं करिष्यमाण** अमुक-अमुक **देव प्रतिष्ठा कर्मणि अस्मिन् प्रासादे देवताधिष्ठान योग्यता सिद्ध्यर्थम् स्नपन पूर्वकं प्रासादधि वासनं करिष्ये ॥**
- निम्न मंत्र द्वारा कोष्ठकों के बीचो-बीच वाले सभी ९ कलशों का आवाहन कर के फूल छोड़ दे।
  - आवाहन — **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः ॥**

- निम्न मंत्र द्वारा बचे ८-८ कलशों का आवाहन कर के फूल छोड़ दे।
- कुछ पद्धतियों में श्रीसुक्त के १६ मन्त्रों से भी कलशों को अभिमन्त्रित करने को लिखा है। पृष्ठ क्र. -
  - आवाहन **कलशस्य मुखे विष्णु: कंठे रुद्र समाश्रिता: ।**
    मूलेतस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणा स्मृता: ।।
  - **कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्विपा वसुंधरा ।**
    ऋग्वेदो यजुर्वेदो सामवेदो अथर्वणा: ॥
  - **अङैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिता:।**
    अत्र गायत्री सावित्री शान्ति: पुष्टिकरी तथा ॥
  - **आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारका:,**
    गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
    नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु ॥
  - कलशाधिष्ठात्र्यो देवताः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु ॥

- पंचगव्य लेकर मन्दिर में चारों ओर तथा शिखर कलश पर (कुशा या आम्रपल्लव) से छिड़के।
  - मन्त्र **ॐ गोशरीरात् समुद्भूतै पंचगव्यैः सुपावनैः ।**
    विलेययामि प्रासादं सशिखरं संस्कार सिद्धये ॥

- सप्तमृत्तिका मन्दिर (प्रासाद) के दीवारों में लगा दे।
  - मन्त्र **ॐ मूर्धानन्दिवो अरतिम् पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।**
    कवि ৩ सम्राजमतिथिन् जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवा: ॥
  - **ॐ मृत्तिका सर्वपापघ्नी मृत्तिका काय शोधिनी ।**
    पवित्रं कुरू प्रासादं सर्व दोषात् समुद्धरेत् ॥

❖ कलश जल से प्रासाद स्नान

- यजमान क्रमशः सभी कोष्ठकों से बीच वाला एक-एक कलश उठाकर (कुश या आम्रपल्लव) द्वारा शिखर कलश पर तथा प्रासाद (मन्दिर) की दीवरों पर एवं चारो ओर छिड़के।
- जल छिड़क कर कलश यथास्थान रखता जाय।
- कलशों का उठाने का क्रम और मन्त्र निम्न है ...

१. ईशानकोण कोष्टक बीच वाला कलश। (जिसमें सप्तमृत्तिका छोड़ी है)

- **ॐ समुद्रा दूर्मिर् मधु मां उदार दुपा ৩ शुना सम मृतत्व मानट ।**
  घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवाना ममृतस्य नाभिः ॥

२. वायव्यकोण कोष्ठक बीच वाला कलश। (जिसमें पंचवृक्ष क्षाल छोड़ी है)

- **ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे ।**
  प्रप्र वय ममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ७ सिषम् ॥

३. **पश्चिम कोष्ठक** बीच वाला कलश। (जिसमें पंचगव्य छोड़ा है)

- **ॐ पयः पृथिव्याम् पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ।**
  पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

४. नैर्ऋत्यकोण कोष्ठक बीच वाला कलश। (जिसमें आठ फल छोड़ा है)

- **ॐ याफलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी।**
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ हसः ॥

५. **उत्तर कोष्ठक** बीच वाला कलश। (जिसमें औषधि छोड़ी है)

- **ॐ ह ७ सः शुचि षद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषद तिथिर् दुरोणसत् ।**
  नृषद् वरं स दृत सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥

६. **पूर्व कोष्ठक** बीच वाला कलश। (जिसमें गोरोचन आदि छोड़ा है)

- **विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः ।**
  स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवे त्वा ॥

७. आग्निकोण कोष्ठक बीच वाला कलश। (जिसमें जव, धान्य, तिल आदि छोड़ा है)

- **ॐ वय ७ सोम व्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥**

८. **दक्षिण कोष्ठक** बीच वाला कलश। (जिसमें शमी, सतावर आदि छोड़ा है)

- **ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहु रुत विश्वतस्यात् ।**
  सम्बाहुभ्यान् धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन् देव एकः ॥

९. बिचों-बीच कोष्ठक बीच वाला कलश। (जिसमें पेडों की पत्तियां छोड़ी है)

- **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु ।**
  ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

- बाकी बचे प्रत्येक कोष्ठक के शेष ८-८ कलशों का जल शिखर कलश पर छिड़के।
- सभी कलशो के लिए एक ही मंत्र है।
- कलशों का क्रम – पूर्व, अग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य कोष्ठक होगा।

  - मन्त्र **ॐ इदमापः प्रवहता वद्यं च मलं च यत् ।**
    यच्चाभि दु द्रोहा नृतं यच्च शेपे अभीरुणम् ॥

- **ॐ आपो मा तस्मा देनसः पवमानश्च मुञ्चतु।**
  दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयन्यायै यद् वो
  शुद्धाः पराजग्घनुरिदं वस्त छुन्धामि॥

- इसके बाद वस्त्र अथवा सूत्र से शिखर कलश तथा प्रासाद को लपेट दे।
- शुद्ध जल से फिर शिखर कलश तथा प्रासाद को स्नान करा दे।
- ध्वजा, पताका, माला, फूल, वंदनवार आदि से प्रासाद को चारो ओर से सजा दे।
- शिखर कलश तथा प्रासाद की पंचोपचार पूजा कर दे।

- प्रार्थना **ॐ ह्रीम् सर्वदेव मया चिन्त्य सर्व रत्नो ज्वला कृते।**
  यावच् चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव॥

- यजमान सपत्नीक, आचार्य आदि सहित प्रासाद के बाहर आकर प्रासाद की ओर मुख करके खड़े हो।
- फूल लेकर प्रार्थना करे। यह पूजा मन्दिर के मुख्य द्वार पर की जाती है।

1. **ॐ प्रासाद पादशिलासु** प्रासाद पादौ ध्यायामि।
2. **ॐ पादोर्ध्व शिलासु** जंघे ध्यायामि।
3. **ॐ तदूर्ध्व शिलासु** ऊरु ध्यायामि।
4. **ॐ तदूर्ध्व** कटि मेखलां ध्यायामि।
5. **ॐ स्तम्भान्** पाद स्थाने ध्यायामि।
6. **ॐ घण्टां** जिह्वा स्थाने ध्यायामि।
7. **ॐ दीपान्** प्राणस्थाने ध्यायामि।
8. **ॐ जल निर्गम** मपान स्थाने ध्यायामि।
9. **ॐ नाभिं** ब्रह्म स्थाने ध्यायामि।
10. **ॐ पिण्डिकां** हृत् पद्म स्थाने घ्यायामि।
11. **ॐ प्रतिमां** पुरुष स्थाने ध्यायामि।
12. **ॐ पादचारान्** अहंकार स्थाने ध्यायामि।
13. **ॐ ज्योतिः** चक्षुः स्थाने ध्यायामि।
14. **ॐ तदूर्ध्व** प्रकृति स्थाने ध्यायामि।
15. **ॐ तदूर्ध्व प्रतिमा अपि** आत्म स्थाने ध्यायामि।
16. **ॐ तल कुम्भा दधो** द्वारं प्रजनन स्थाने ध्यायामि।
17. **ॐ शुकनासां** नासा स्थाने ध्यायामि।
18. **ॐ गवाक्षाणि** कर्ण स्थाने ध्यायामि।
19. **ॐ कायपालीम** स्कन्ध स्थाने ध्यायामि।
20. **ॐ अमल सारिकाः** ग्रीवा स्थाने घ्यायामि।
21. **ॐ मज्जादि प्राण सहितं कलशं** शिरः स्थाने ध्यायामि।
22. **ॐ मृदं** सुधा स्थाने ध्यायामि।
23. **ॐ तत् प्रलेपे** मांस स्थाने ध्यायामि।
24. **ॐ सर्व शिलाः** अस्थि स्थाने ध्यायामि।
25. **ॐ कीलादयः** स्नायु स्थाने ध्यायामि।
26. **ॐ शिखराणि** चक्षुः स्थाने ध्यायामि।
27. **ॐ ध्वजाः** केश स्थाने ध्यायामि।

- मन्त्र **ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं**
  यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वेदेवा सऽइह मादयंता मों३ प्रतिष्ठ॥ ॐ अमुक प्रासादाय नमः।

- प्रासाद के भीतर जाकर अपने स्थान पर बैठ जाय। आचार्य को दक्षिण, गोदान, भोजन दें।

शिखर कलश स्थापन

- यजमान फूल लेकर शिखर कलश का स्पर्श करे मंत्र के उपरान्त फूल शिखर कलश पर चढ़ा दे।
  - मन्त्र **ॐ आजिध्र कलशं मह्यात्वा विशन् त्विन्दवः।**
    पुन रूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशता द्रयिः॥

- शिखर कलश शिल्पी के द्वारा मन्दिर के ऊपर स्थापित (लगा) कर दे।
- शिव मन्दिर हो तो कलश के साथ त्रिशूल लगाये। विष्णु मन्दिर हो तो चक्र लगाये।
- कुछ लोग तांबे का पताका, ध्वजा (झंडा) शिखर कलश के पास लगाते हैं।
- यदि मन्दिर बनते समय ही शिखर पर कलश आदि लगा दिया गया है तो मन्दिर के बाहर खड़ा होकर यजमान नीचे से ही शिखर कलश प्रतिष्ठा की विधि सम्पन्न करे।

प्रसाद वास्तु पूजन

- प्रासाद के आग्नेय कोण में (आकाश पद) में जानु पर्यन्त एक गढ़ा खोदे।
- आकाश पद - ईशान कोण से अग्नि कोण तक की जगह को ९ भागों में नाप ले। ईशान कोण से जो आठवां स्थान बने उसे आकाश पद कहते हैं।
- एक मिट्टी के पात्र में (हांडी) दही, दुर्वा, सप्तधान्य, शैवाल (नदी या तालाब का घास) गंन्ध, अक्षत, तथा वास्तु पीठ पर पूजित सुवर्ण की वास्तु प्रतिमा आदि को रख कर हांडी का मुख बन्द कर दे।
- हांडी को उसी गढ़े में स्थापित कर के फूल लेकर प्रार्थना करे।

  - प्रार्थना **पूजितोसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनैः शुभैः।**
    प्रसीद पाहि विश्वेश देहि मे गृहजं सुखम्॥
    - **वास्तोष्पते नमस्तुभ्यं भूशैया भिरत प्रभो।**
      मद्गेहं धनधान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा॥
    - **यथा मेरू गिरेः श्रृंगं देवाना मालयं सदा।**
      तथा ब्रह्मादि देवानां मम यज्ञे स्थिरो भव॥
    - **भगवन् देव देवेश ब्रह्मादि देवतात्मक।**
      तवार्चनं कृतं वास्तो प्रासादं कुरुमे प्रभो॥
    - **प्रार्थया मीत्यहं देवं प्रासाद स्याधिपस्तु यः।**
      प्रायश्चित्तं प्रसंगेन प्रासादर्षे तु यत् कृतम्॥
    - **मूलच्छेद तृणच्छेद कृमि कीट निपातनम्।**
      हवनं जल जीवानां भूमौ शस्त्रेण धातनम्॥
    - **अनृतं भाषितं यच्च किञ्चिद् बृक्षस्य पातनम्।**
      एतत् सर्वम् क्षमस्वै नो यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥

- **प्रासादर्थे कृतं पाप मज्ञाने नाप्य चेतसा।**
  तत् सर्वम् क्षम्यतां देव प्रासादं च शुभं कुरु॥
- **सशैल सागरां पृथिवीं यथा वहसि मूर्धनि।**
  तथा वह प्रासादं त्रैलोक्ये मंगलं कुरु॥

- गढ़ा को मिट्टी से बन्द कर भूमि पर सीमेन्ट आदि लगाकर पक्का कर दे।
- पक्की जमीन हो जाने पर उस स्थान को गोबर से लीपकर गन्ध, अक्षत, पुष्प चढ़ाकर पूजा कर दे।
- एक पात्र में जल-दूध लेकर प्रासाद के चारो ओर धारा दे। (जल-दुग्ध धारा टूटे नहीं)
- तीन ताग का कच्चा सूत लेकर मन्दिर प्रासाद के चारो ओर लपेट दे।

❖ प्रासाद-उत्सर्ग

- देव के निमित्त प्रसाद (मन्दिर) का उत्सर्ग करे।
  - संकल्प **अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहं इमं शिलेष्टका दार्वादि निर्मितं वलभी-जगती-प्रकार गोपुर परिवार देवता लयादि संयुतं तत्-तद् देवता लोक वाप्ति कामः कुल द्वयानु ग्रहायाम अमुक-देवता प्रीतये उत्सृजामि।**

  - प्रार्थना **ॐ सर्व भूतेभ्य उत्सृष्टः प्रसादोऽयं मयार्जितः।**
    रमन्तु सर्व भूतानि छाया सं श्रयणा दिभिः॥
    - फूल प्रसाद द्वार के सम्मुख छोड़ दे।

॥ पिण्डिका पूजन ॥

- जहाँ पर प्रधान एवं अन्य मूर्त्तियों को स्थापित किया जाना है उस स्थान की पूजा करे।
- शिवलिंग स्थापित करने में जलहरी जहाँ बनानी है उस स्थान की पूजा की जाती है।
- जलहरी (अर्घा) का मुख उत्तर दिशा की ओर रखे।
- पं. दौलतराम गौड़ ने अपनी पद्धति में पिण्डिका में भी न्यास हवन आदि लिखा है।
- जिस स्थान पर मूर्त्ति स्थापित करना है उस स्थान पर शहद, घी, पंचगव्य लगा दे। जल से धो दे।
- एक पात्र में गन्ध, पुष्प, कुश लेकर
  - मन्त्र **ॐ महाँ इन्द्रो वज्र हस्तः षोडशी शर्म यच्छतु हन्तु पाप् मानं योऽमान् द्वेष्टि। उपयाम गृहोतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर् महेन्द्राय त्वा॥**
    - पात्र का गन्ध, जल उसी गर्त (स्थान) पर छोड़ दे।

- जलहरी के भीतर पंचरत्नी, शिलाजीत, गोरोचन, हरताल, पारा तथा सोने का कछुआ छोड़ दे।
- गूगुल का रस उस स्थान पर छोड़ दे जिससे सारी वस्तुएँ उस स्थान पर दृढ़ हो जाय।
- गन्ध-अक्षत आदि छोड़ कर पूजा कर दे।
  - मन्त्र **ॐ नमो व्यापिनि स्थिरे अचले ध्रुवे। ॐ श्रीं लं स्वाहा॥**
  - प्रार्थना **ॐ त्वमेव परमा शक्तिः त्वमेवा सन धारिका। देवाज्ञया त्वया देवि स्थातव्य मिह सर्वदा॥**
    - प्रार्थना करके जलहरी अथवा शिलापट उसी स्थान पर स्थिर कर दे।
  - प्रार्थना **ॐ वर्णाध्वने नमः। ॐ पदाध्वने नमः। ॐ मन्त्राध्वने नमः। ॐ भुवनाध्वने नमः। ॐ तत्वाध्वने नमः। ॐ सकलाध्वने नमः।**
    - जलहरी अथवा शिलापट की पूजा कर दे।

- जो मूर्ति हो उसके मन्त्र से प्रार्थना करे (कुछ मूर्तियों की प्रार्थना) नीचे दी जा रही है।
  - नन्दी **ॐ आशुः शिशानो वृषभोन भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽ निमिष एकवीरः शत ७ सेना अजयत् साकमिन्द्रः॥**
  - गरुड़ **ॐ सुपर्णोऽसि मरुत् मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद। भासान्तरिक्ष मातृण ज्योतिषा दिव मुत्तभान तेजसा दिश उद् ७ ह॥**
    - गरूड़ पिण्डिकाम् आवाह्यामि पूजयामि।
  - दुर्गा **ॐ जात वेदसे सुनवाम सोम भराती यतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिता स्यग्निः॥**
    - दुर्गा पिण्डिकाम् आवाह्यामि पूजयामि।

- **गणेश** **ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे,**
  निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे,
  वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥
  - दुर्गा पिण्डिकाम् आवाह्यामि पूजयामि।
- **लक्ष्मी** **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।**
  इष्णन् निषाणा मुम् मइषाण सर्वलोकम् मइषाण ॥
  - लक्ष्मी पिण्डिकाम् आवाह्यामि पूजयामि।
- **सूर्य** **ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे ॥**
  - सूर्य पिण्डिकाम् आवाह्यामि पूजयामि।
- **हनुमान** **ॐ आतिथ्य रूपम् मा सरम् महावीरस्य नग्न हुः।**
  रूप मुप सदा मे तत् तिस्रोरात्रीः सुरासुता ॥
  - हनुमत् पिण्डिकाम् आवाह्यामि पूजयामि।
  - हनुमान जी का मुख पश्चिम की ओर रखना चाहिए।
  - **ग्रामान्ते ग्राम सीमान्ते हनुमाँश्च महावलः।**
    पश्चिमाभि मुखः स्थाप्यो रक्षा कर्म तु सुखार्थिनः ॥ लघुदर्पण-185
- **पार्वती** **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन्।**
  सस् त्यवश्यकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥
  - पार्वती पिण्डिकाम् आवाह्यामि पूजयामि।
- **प्रार्थना** **आसन शक्तिभ्यो नमः। पिण्डिकायाम् आधारशक्त्यै नमः ॥**
  - **सर्व देव मयो शानि त्रैलोक्या ह्लाद कारिणि।**
    त्वां प्रतिष्ठाम्यत्र मन्दिरे विश्व-निर्मिते ॥
  - **यावच् चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेष वसुन्धरा।**
    तावत् त्वं देव देवेशि मन्दिरेऽस्मिन् स्थिरा भव ॥
  - **पुत्रा नायुष्मतो लक्ष्मी मचला मजरा मृताम्।**
    अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तु र्नित्यं विधेहि मे ॥
  - **विजयं नृपतेः सर्वम् लोकानां क्षेम मेव च।**
    सुभिक्षं सर्वलोकानां कुरु देवि नमोऽस्तुते ॥

❖ मूर्ति स्थापन

- यजमान पिण्डिका के समीप से उठकर मूर्त्तियों के समीप आकर पूर्व अथवा उत्तर मुख बैठे।
- आचमन-प्राणायाम करे के हाथ में फूल लेकर शान्ति पाठ एवं प्रार्थना करे।
- प्रार्थना करते समय शंख, भेरी, घंटा, घड़ियाल बजाना चाहिये।
  - शिवलिंग — **ॐ प्रबुध्यस्व महाभाग देव देव जगत् पते।
नील ग्रीव सुराधीश प्रबुद्ध शशि शेखर॥
प्रबुद्ध पार्वती कान्त पंचवक्त्र नमोऽस्तु ते।**
  - कृष्ण-विष्णु — **ॐ प्रबुध्यस्व महाभाग देव देव जगत् पते।
मेघ श्याम गदापाणे प्रबुद्ध कमलेक्षणै॥
प्रबुद्ध भूधरानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते।**
  - दुर्गा जी — **ॐ प्रबुध्यस्व महामाये देवि दुर्गे शुभप्रदं।
स्थापनं ते करिष्यामि प्रसन्ना भव मे सदा॥**
  - अन्य देवो में — **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देव यन्तस् त्वे महे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा॥**
- एक पात्र में जल, दूध, कुश का अग्रभाग, तिल, अक्षत, यव, फूल छोड़ कर अर्घ बना लें।
  - अर्घ मन्त्र — **ॐ इमा आपः शिवतमाः पूताः पूततमा मेध्या मेध्यतमा।
अमृता अमृतरसा पाद्यास्ता जुषन्तां प्रति गृहान्ताम्॥**
- मूर्त्तियों को उठा कर प्रासाद में लाए।
- जिस मूर्ति को जहाँ स्थापित करना हो उस पिण्डिका के पास आसन पर रखे।
  - मन्त्र — **ॐ ईश्वरं भावयन् प्रतिष्ठितः परमेश्वरः।
प्रधान पुरुषो यावच्चन्द्र दिवाकरौ।
तावत्त्वमनया शक्त्या युक्तोऽत्रैव स्थिरोभव॥** फूल मूर्त्तियों पर चढ़ा दे।
- निम्न मंत्र द्वारा शिवलिंग आदि सभी मूर्त्तियों को यथा-यथा स्थान पर स्थापित करे।
  - मंत्र — **ॐ ध्रुवोऽसि ध्रुवोऽयं यजमानो स्मिन् नायतने प्रजया पशुभिर् भूयात्।
धृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथा मिन्द्रस्य च्छदिरसि विश्व जनस्यच्छाया॥
ॐ स्थिरो भव शाश्वतो भव॥**
- स्थापित करके बालू-सीमेन्ट आदि से शिवलिंग एवं सभी मूर्त्तियों को सुदृढ़ करे।
  - प्रार्थना — **ॐ लोकानुग्रह हेत्वर्थम् स्थिरोभव सुखाय नः।
सानिध्यं कुरु देवेश प्रत्यक्षं परिपालयं॥**

❖ मूर्त्ति प्रतिष्ठा

- विनियोग — ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्म, विष्णु, रुद्रा ऋषयः ऋग्, यजुः सामानि छंदासि क्रियामय वपुः प्राणाख्यो देवता देवस्य प्राण प्रतिष्ठायां विनियोगः।

- फूल लेकर मूर्तियों का स्पर्श करे।

  १. **ॐ आं ह्रीम् क्रीं यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः॥**
  २. **ॐ आं ह्रीम् क्रीं यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य जीव इह स्थितः॥**
  ३. **ॐ आं ह्रीम् क्रीं यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्, त्वक् चक्षुष्, श्रोत्र जिह्वा, घ्राण प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥**
  ४. **ॐ आत्वा हार्ष मन्तर भू ध्रुवस् तिष्ठ विचा चलिः।**
  विशस् त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद् राष्ट्र मधिव् भ्रशत्॥
  ५. **ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।**
  अस्यै देवत्व मर्चायै मामहेति कश्चन्॥ फूल मूर्ति के समीप छोड़ दे।

- आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न ध्रुवसूक्त के मंत्रों का उच्चारण करें।
- ध्रुवसूक्त — **ॐ ध्रुवासिध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतनेप्रजयापशुभिर्भूयात्।**
  घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्यच्छदिरसि विश्वजनस्यछाया॥१॥
  - **ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूद्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः।**
  विशस्त्वा सर्वावांवाञ्छन्तुमात्वद्राष्टमधिभ्रशत्॥ ॥२॥
  - **ॐ ध्रुवासिधरुणास्तृताविश्वकर्मणा।**
  मात्वासमुद्राऽउद्वधीन्मासुपर्णोव्यथमानापृथिवीन्दृ ᳪ ह॥ ॥३॥

- शिवलिंग पर **रुद्राष्टाध्याय,** अन्य मूत्तियों पर **पुरुष सूक्त,** देवी मूर्ति में **देवीसुक्त** का पाठ करे।
- फूल लेकर देव मूर्ति का स्पर्श करते हुए सूक्त पाठ करे। बाद में फूल मुर्त्ति के पास छोड़ दे।
  - प्रार्थना — **ॐ स्वागतं देवदेवेश मद् भाग्यात् त्व मिहागतः।**
  प्राकृतं त्वम् दृष्ट्वा मा बालवत् परिपालय॥
  धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थम् स्थिरों भव सुखाय नः॥

❖ प्रतिष्ठा के पौराणिक मंत्र

- शिवलिंग — **ॐ त्र्यक्षं च दशवाहं च चन्द्रार्धकृत शेखरम्।**
  महायोगेश्वरं देवं स्थापयामि त्रिलोचनम्॥
- राधाकृष्ण — **ॐ अतसो पुष्प संकाशं पीतवासं जनार्दनम्।**
  देवकी तनयं कृष्णं स्थापयामि सुरोत्तम्।

- ॐ कृष्णस्य महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम् ।
संस्थापयामि राधे त्वां वरदा भव शोभने ।

- विष्णु मूर्त्ति — ॐ अतसी पुष्प संकाशं शंख चक्र गदा घरम् ।
संस्थापयामि देवेशं विष्णुः भूत्वा जनार्दनम् ॥

- लक्ष्मी मूर्ति — ॐ विष्णोर्महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम् ।
संस्थापयामि लक्ष्मि त्वां वरदा भव शोभने ॥

- श्रीराम मूर्ति — ॐ अतसी पुष्प संकाशं धनु र्वाणधरं विभुम् ।
कौशल्यातनयं रामं स्थापयामि रघुत्तमम् ॥

- सीता मूर्त्ति — ॐ रामस्य महिषीं देवीं जगदुद्भव कारिणीम् ।
संस्थापयामि सीते त्वां वरदा भव शोभने ॥

- लक्ष्मण मूर्त्ति — ॐ रामस्य दयितो भ्राता लक्ष्मणः शुभ लक्षणः।
संस्थापयामि देव त्वां सुमित्रा नन्द वर्धन ॥

- भरत मूर्त्ति — ॐ द्विभुजं श्यामलं कान्तं राम सेवा परायणम् ।
कैकेयी तनयं देवं भरतं स्यापयाम्यहम् ॥

- हनुमानजी मूर्त्ति — ॐ रामदूत महाबाहो पिङ्गाक्ष कविनायक ।
संस्थापयामि त्वां भो वीर अंजनी हर्षदायक ॥

- देवी मूर्त्ति — ॐ चिद्रुपिणीं मुनिध्येया मभोप्स वर वाहनाम् ।
दिव्यायुधां महामायां स्थापयामि सुरेश्वरीम् ॥

- सूर्य मूर्त्ति — ॐ सहस्र किरणं शान्त मप्सरोगण सेवितम् ।
पद्महस्तं महावाणं स्थापयामि दिवाकरम् ॥

- गणेश मूर्ति — ॐ लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं चारु वाहनम् ।
पाशांकुशाद्या युधाढ्यं स्थापयामि गजाननम् ॥

- नन्दी मूर्ति — ॐ शिवद्वार गतस्त्वं वै शिव वाहन मुत्तमम् ।
पार्वत्याः प्रीतिकरं च नन्दिनं स्थापयाम्यहम् ॥

- लक्ष्मीनारायण मूर्त्ति — ॐ आगच्छतां महासत्त्वौ लक्ष्मीनारायणा विह ।
युवां संस्थापयाम्यत्र भक्त्या मयि प्रसीदताम् ॥

- पार्वती मूर्त्ति — ॐ हिमालय सुतां रम्यां शिव वामाङ्क संस्थिताम् ।
जगद्धात्रीम् अन्नपूर्णाम् गिरिजां स्थापयाम्यहम् ॥

❖ प्राण सूक्त जप

- फूल लेकर देव मूर्त्ति के दाहिने कान में **प्राणसूक्त** का जप करे।
- प्राणसूक्त विभिन्न देवों के लिए नीचे दिया जा रहा है। अन्य देवों हेतु वाक्य रचना कर लेनी चाहिये।
  - शिवलिंग — **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥**
  - नारायण — **ॐ नारायणय विद्महे नारायणय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥**
  - सूर्य — **ॐ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि। तन्न आदित्यः प्रचोदयात्॥**
  - गणेश — **ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥**
  - दुर्गा — **ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्या कुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्॥**
  - नन्दी — **ॐ तीक्ष्ण श्रृंगाय विद्महे वेदपादाय धीमहि। तन्नो वृषभः प्रचोदयात्॥**
  - श्रीकृष्ण — **ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णःप्रचोदयात्॥** फूल मूर्त्ति के समीप छोड़ दे।
- विधिवत् देव मूर्ति का षोडशोपचार पूजन पुरुष सूक्त से करे।
- **पूजनम्** — पुरु-सूक्त मंत्रो से पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें। **पृष्ठ क्र. 146** देखें। आह्वान, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयं, स्नानीयं, पंचामृतं, शुद्धोदकं, अभिषेक, वस्त्रं, यज्ञोपवित, गंधं, अक्षतं, पुष्पं-पमष्पमालां, नानापरिमलं, सुगन्धित द्रव्यं (इत्रं), आभुषणम्, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं, दक्षिणा, नीराजंनम्, प्रदक्षिणा, मंत्र-पुष्पाञ्जलिम्।
- **अर्पण** — अनेन कृतेन पूजनेन देवः प्रीयताम्, न मम। .... अर्पणमस्तु।

❖ विशेष प्रार्थना

ॐ नमस्ते त्यक्त सङ्गाय शान्ताय परमात्मने।
ज्ञान विज्ञान रूपाय ब्रह्म तेजोऽ नुशालिने॥

- **गुणातिक्रान्त रूपाय पुरुषाय महात्मने।**
  अव्यक्ताय पुराणाय भगवन् सन्निहितो भव॥
- **भगवन् देव देवेश त्वं पिता सर्व देहिनाम।**
  त्वया व्याप्त मिदं सर्वम् जगत् स्थावर जङ्गमम्॥
- **त्वमिन्द्रः पावकश्चैव यमो निर्ऋतिरेव च।**
  वरुणोऽ थानिलः सोम ईशानः प्रभुरव्ययः॥
- **येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम्।**
  तेन रूपेण देवेश अर्चायां सन्निधो भव॥

- **सर्वमंत्रादि संयुक्तो लोकानुग्रह काम्यया।**
  मया स्थापितो देवो भव सन्निहितः सदा॥
- **सूर्या चन्द्र मसौ यावद् यावत् तिष्ठति मेदिनी।**
  तावत् त्वयात्र देवेश स्थेयं सर्वानुकम्पया॥

॥ मंदिर नामकरण ॥

- यजमान हाथ में फूल लेकर कहे ....
  - यजमान **ॐ अस्य देवस्य (अमुकेश्वर) इति नाम सुप्रतिष्ठित मस्तु॥**
  - यजमान **ॐ अस्य देवालयस्य (अमुक) नाम सुप्रतिष्ठित मस्तु॥**
  - ब्राह्मण **ॐ सुप्रतिष्ठित मस्तु॥**
- यजमान ब्राह्मण के हाथ में अक्षत देकर कहे ...
  - यजमान **अस्य देवस्य नामकरण कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**
  - ब्राह्मण **पुण्याहम्। कल्याणम्। ऋद्धिः स्वस्ति श्रीरस्तु॥ पुण्याह वाचन समृद्धिरस्तु॥**
    - ब्राह्मण हाथ का अक्षत यजमान के सिर पर छिड़क दें।
- अर्पण **अनेन नामकरणाङ्ग कर्मणः पुण्याहवाचनेन श्री परमेश्वरः प्रीयताम्॥**

❖ दक्षिणा संकल्प

- यजमान ब्राह्मण को पुण्याह वाचन की दक्षिणा दे।
- संकल्प **अद्य शुभ-पुण्य-तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहम्, कृतैतत्** देव **मूर्त्ति नामकरण साद्गुण्यार्थम् पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा काले दक्षिणां दास्ये॥**

❖ पूजन सामग्री संकल्प

- देव पूजन के लिए शंख, घंटा, घड़ियाल आदि का दान करे
- संकल्प **अद्य शुभ पुण्यतिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहं, अस्य देवस्य करिष्यमाण नित्य पूजोपकरणानि ताम्र-कलशं, शंखम्, धूप, दीप, नैवेद्य पात्राणि घण्टां, व्यजनं उपधानादि सामग्री सहितां शय्यां** (अमुक-अमुक) **अन्य वस्तूनि च देवोद्देश्येन उत्सृजामि॥**

॥ प्रतिष्ठा होम ॥

- यजमान हवन कुण्ड के पास आकर बैठे एवं प्रतिष्ठा होम करे।
- यजमान घी की आहूति दे, पत्नी तथा अन्य व्यक्ति शाकल्य छोड़े।

1. **ॐ देवाय स्थिरो भव स्वाहा।**
2. **ॐ देवाया प्रमेयो भव स्वाहा।**
3. **ॐ देवाया नादिवोधो भव स्वाहा।**
4. **ॐ देवाय नित्यो भव स्वाहा।**
5. **ॐ देवाय सर्वगो भव स्वाहा।**
6. **ॐ देवाया विनाशो भव स्वाहा।**
7. **ॐ देवाय क्लृप्तो भव स्वाहा।**
8. **ॐ भू: स्वाहा - इदमग्नये न मम॥**
9. **ॐ भुव: स्वाहा - इदं वायवे न मम।**
10. **ॐ स्व: स्वाहा - इदं सूर्याय न मम॥**

- **पंच वारुण आहुति**
  - **ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठा:।**
    यजिष्ठो वह्नितम: शोचानो विश्वा द्वेषा ७ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ १ ॥
    इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥
  - **ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।**
    अव यक्ष्व नौ वरुण७ रराणो वीहि मृडीक७ सुहवो न एधि स्वाहा ॥ २ ॥
    इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥
  - **ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभि शस्तिपाश्च सत्व मित्व मयाऽअसि।**
    अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज७स्वाहा॥ ॥ ३ ॥
    इदमग्नये न मम॥
  - **ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया: पाशा वितता महान्त:।**
    तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा॥ ॥ ४ ॥
    इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्यश्च न मम॥
  - **ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवाधमं विमध्यम ७ श्रथाय।**
    अथा वय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ ॥ ५ ॥
    इदं वरुणायादित्यायादितये न मम॥
  - **ॐ प्रजापतये स्वाहा** इदं प्रजापतये न मम॥

- शिवलिंग में रुद्राध्याय से घी की आहूति दे। **पृष्ठ क्र. 00** देखें।
- अन्य देवो में पुरुषसूक्त से घी की आहूति दे। **पृष्ठ क्र. 238** देखें।
- देवी में देवीसूक्त से घी की आहूति दे। **पृष्ठ क्र. 00** देखें।

- कुछ पद्धतिकार सर्वतोभद्र, लिंगतोभद्र आदि पीठ देवताओं के नाम से घी की आहुति लिखते हैं।

॥ पुरुष सूक्त - १६ - आहुति ॥

- ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्।
  स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम्॥ ॥ १ ॥
- पुरुषऽ एवद ७ सर्वम् यद्भूतम् यच्च भाव्यम्।
  उतामृतत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति॥ ॥ २ ॥
- एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः।
  पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥ ॥ ३ ॥
- त्रिपाद्उर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
  ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि॥ ॥ ४ ॥
- ततोविराड् जायत विराजोऽ अधिपुरुषः।
  सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः॥ ॥ ५ ॥
- तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम्।
  पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये॥ ॥ ६ ॥
- तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
  छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत॥ ॥ ७ ॥

- तस्मादश्वाऽ अजायन्त येकेचोभयादतः ।
  गावोह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः ॥ ॥ ८ ॥
- तं यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषम् जात मग्रतः ।
  तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ ॥ ९ ॥
- यत् पुरुषम् व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
  मुखम् किमस्यासीत् किम् बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥ ॥१०॥
- ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
  ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ७ शूद्रो अजायत ॥ ॥११॥
- चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
  श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ॥१२॥
- नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
  पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्ऽ अकल्पयन् ॥ ॥१३॥
- यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
  वसन्तो ऽ स्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ ॥१४॥
- सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
  देवा यद्यज्ञन् तन्वाना अबध्नन् पुरुषम् पशुम् ॥ ॥१५॥
- यज्ञेन यज्ञ मऽयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
  तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ ॥१६॥

॥ श्रीसूक्तम् ॥

- हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
  चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥ ॥ १ ॥
- तां म आवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
  यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ ॥ २ ॥
- अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
  श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ॥ ३ ॥

- कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
  पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॥ ४ ॥
- चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
  तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतांत्वां वृणे ॥ ॥ ५ ॥
- आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
  तस्य फलानि तपसानुदन्तुमायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ॥ ६ ॥
- उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
  प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ॥ ७ ॥
- क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
  अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ॥ ॥ ८ ॥
- गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
  ईश्वरींसर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॥ ९ ॥
- मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
  पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतांयशः ॥ ॥१०॥
- कर्दमेन प्रजाभूता-मयि सम्भवकर्दम ।
  श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ॥११॥
- आपः सृजन्तुस्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे ।
  निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ ॥१२॥
- आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
  सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ ॥१३॥
- आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
  चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ ॥१४॥
- तां म आवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
  यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ ॥१५॥
- यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
  सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ ॥१६॥

॥ बलिदान प्रयोगः ॥

- दोना या आम की पत्ती पर कापुस की १० बत्ती घी में भिगो कर बना ले। एवं जला कर रख ले।
- दोना या आम की पत्ती पर थोड़ा सा दही, उरद मिला कर बत्ती के साथ रख ले।
- हवन वेदी के चारों ओर एवं चारो कोन में रख लें।

❖ दश-दिक्पालादीनां बलिदानम्

1. **पूर्व** - इन्द्रम् **ॐ त्रातार-मिन्द्र मवितार-मिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूर-मिन्द्रम्। ह्वयामि शक्क्रं पुरु-हूत मिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥**
   - संकल्प **पूर्वे इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
   - हाथ जोडकर **भो इन्द्र दिशंरक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
   - अर्पण अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन इन्द्र देवताः प्रीयतां न मम्।

2. **अग्निकोण-** अग्निम् **ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाणस्तवव्व्रते ॥**
   - संकल्प **अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
   - हाथ जोडकर **भो अग्नये दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
   - अर्पण अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन अग्नि देवताः प्रीयतां न मम्।

3. **दक्षिण** - यम **ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्माय पित्रे ॥**
   - संकल्प **दक्षिणे यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
   - हाथ जोडकर **भो यम दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
   - अर्पण अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन यम देवताः प्रीयतां न मम्।

4. **नैर्ऋत्यकोण-** निर्ऋतिम् **ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ मा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥**

- संकल्प — **निऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर — **भो निऋते दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन नैऋतये देवता: प्रीयतां न मम्।

5. **पश्चिम - वरुणम्** — **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि: । अहेणमानो वरुणेह बोध्युरूश ७ समानऽआयु: प्रमोषी:॥**
- संकल्प — **पश्चिमायां वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर — **भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन वरुण देवता: प्रीयतां न मम्।

6. **वायव्यकोण- वायुम्** — **ॐ आ नो नियुद्भि: शतिनीभिरद्ध्वर ७ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभि: सदा न: ।**
- संकल्प — **वायव्यां वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर — **भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन वायु देवता: प्रीयतां न मम्।

7. **उत्तर - कुबेर** — **ॐ वय ७ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत:। प्रजावन्त: सचेमहि॥**
- संकल्प — **उत्तरस्यां कुबेराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर — **भो कुबेर दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन कुबेर देवता: प्रीयतां न मम्।

8. **ईशानकोण - ईशानम्** — **ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयं। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये॥**
- संकल्प — **ऐशान्यामीशानाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**

- हाथ जोडकर — **भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन ईशान देवताः प्रीयतां न मम्।

9. मध्य - ब्रह्मा — **ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषः। य:श ७ सते स्तुवते धायि पज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः॥**

- संकल्प — **ईशान पूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मणे वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर — **भो ब्रह्मन दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन ब्रह्मन देवताः प्रीयतां न मम्।

10. अनन्तम् नैर्ऋत्य-पश्चिम — **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः सर्मसप्रथाः॥**

- संकल्प — **निऋति पश्चिमयोर्मध्ये अनंताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।**
- हाथ जोडकर — **भो अनंत दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।**
- अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन अनंत देवताः प्रीयतां न मम्।

❖ नवग्रह बलिदानम्

- दोना या आम की पत्ती पर थोड़ा सा दही, उरद मिला कर १ बत्ती के साथ नवग्रह के पास रख दे।
  - मंत्र — **ॐ ग्रहाऽऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज ७ समग्रभ मुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम॥**
  - संकल्प — **सूर्यादि नवग्रह मंडल देवेभ्य सांगेभ्य। सपरिवारेभ्य। सायुधेभ्य। सशक्तिकेभ्य अधिदेवता प्रत्याधिदेवता गणपत्यादि पंचलोकपाल वास्तोष्पति सहितेभ्य इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि॥**
  - हाथ जोडकर — **भो भो सूर्यादि नवग्रह मंडल देवाः इमं बलिं गृहणीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। मम गृहे आयु: कर्तारः। क्षेमकर्तारः। शांतिकर्तारः। पुष्टिकर्तारः। तुष्टिकर्तारः। निर्विघ्नकर्तारः। कल्याणकर्तारः वरदा भवत।**
  - अर्पण — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन सूर्यादि नवग्रह मंडल देवाः प्रीयतां न मम्।

❖ क्षेत्रपाल बलिदानम्

- एक बांस के पात्र में पत्ता बिछाकर उसमें उरद, दही, भात रखकर हल्दी, सिन्दूर, कज्जल, द्रव्य चौमुखा (चार मुख की बत्ती) दीपक आदि रखकर पंचोपचार पूजा कर दें।
  - संकल्प — **ॐ अद्येत्यादि मम सकलारिष्ट शान्ति पूर्वकं प्रारब्ध कर्मणाः सांगता सिद्ध्यर्थञ्च क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानञ्च करिष्ये।**
  - मंत्र — **ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप।**
    पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥
    - **आयु आरोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।**
      मा विघ्नं मास्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥
    - **मा विघ्नं मास्तु मे पापं मा सन्तु परिपंथिनः।**
      सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥
  - हस्ते जलमादाय — **ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-मारीगण वेतालदि परिवार सहिताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुख दीप-दधि भक्त बलिं समर्पयामि॥**
  - प्रार्थना — **भो भो क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। मम गृहे आयुः कर्ता। क्षेमकर्ता। शांतिकर्ता। पुष्टिकर्ता। तुष्टिकर्ता। निर्विघ्नकर्ता। कल्याणकर्ता वरदा भव।**
  - अर्पण — **अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन क्षेत्रपाल देवताः प्रीयतां न मम्।**

- नाई या नौकर पत्तल सहित दीपक को उठा कर यजमान के ऊपर पीठ की ओर से तीन बार उतार कर घर से बाहर ले जाकर दीपक को रख दे। हाथ पाव धोकर घर में आवे।
- इस कार्य हेतु नाई को कुथ द्रव्य देना चाहिये।

- नाई दीपक ले जाने लगे तो यजमान उसके ऊपर पीली सरसों छीड़क दे।
  - मंत्र — **ॐ भूताय त्वा नारातये स्वरभि विख्येषं दृ ७ हन्तां दुर्याः पृथिव्या मुर्वन्तरिक्ष मन्वेमि। पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्य दित्या ऽउपस्थेऽग्ने हव्य ७ रक्ष॥**

- स्विष्टकृत् होम — हवन से अवशिष्ट हवि द्रव्य को लेकर स्विष्टकृत् होम करें।
  ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा — इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।
  प्रोक्षण्यां त्यागः — उदक स्पर्शः

- **पूर्ण पात्र दान** चावल भर कर रखा हुआ पूर्णपात्र दक्षिणा सहित संकल्प करे।
  - संकल्प **अद्य कृतस्य अस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् ब्रह्मन् इदम् पूर्णपात्रं सदक्षिणकं तुभ्यमहं संप्रददे।**
    ब्रह्मा - प्रतिगृह्णामि

- कुशा में गांठ लगा कर जो रखा है उस ब्रह्मा की गांठ खोल दे।

- प्रणीता पात्र के जल को पवित्रद्वय से अपने ऊपर छिड़के।
  - मंत्र **ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु॥**

- प्रणिता पात्र ईशान दिशा में उलट दें।
  - मंत्र **ॐ दुर्मित्रि यास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म॥**

- प्रणिता उलटने के बाद गिरे हुए जल को यजमान कुश पत्रद्वय से अपने ऊपर छिड़के।
  - मंत्र **ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्त तमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्॥**

- वेणी रुप उपनयन कुशा को अग्नि में डाल दे।

॥ पूर्णाहुति ॥

- एक नारियल में कलाई या लाल वस्त्र लपेट कर सामने रख कर पंचोपचार पूजन कर दे।
- नारियल के छेद में घी भर ले।

- संकल्प अद्य अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम्, मम मनोऽभिलषित धर्मार्थकामादि
  - यथेप्सितायु आरोग्य एश्वर्य पुत्र-पशु सखि सुहृत् सम्बन्धि बन्ध्वादि प्राप्तयेऽ स्मिन् कर्मणि आवाहित देवतानां प्रीतये च दत्तैताभिः आहुतिभिः परिपूर्णता सिद्धये वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होमं करिष्ये।

- पूर्णाहुति मंत्र **समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपां ७ शुना सममृतत्वमानट्।**
  घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥ ॥ १ ॥
  - **वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः।**
    उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्॥ ॥ २ ॥
  - **चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।**
    त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश॥ ॥ ३ ॥

- त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।
  इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः ॥ ॥ ४ ॥
- एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।
  घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ॥ ॥ ५ ॥
- सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।
  एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः ॥ ॥ ६ ॥
- सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
  घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥ ॥ ७ ॥
- अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम् ।
  घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥ ८ ॥
- कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभि चाकशीमि ।
  यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते ॥ ॥ ९ ॥
- अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।
  इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥ ॥१०॥
- धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ।
  अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥ ॥११॥
- पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ।
  घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ ॥१२॥
- मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।
  कवि ꣳ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रां जनयन्त देवाः ॥ ॥१३॥
- पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
  वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ꣳ शतक्रतो स्वाहा ॥ ॥१४॥

- **बर्हि होम** वेदी के चारों ओर बिछाये कुशा को घी में बोर कर अग्नि में डाल दे ।
  - मंत्र **ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातु मित ।**
    मनसस्पत इमं देव यज्ञ ꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

- **वसोर्धारा** कटोरी में जो भी घी वचा है, उसे धारा देते हुए हवन में छोड दें ।
  - सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ।
    सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनी रापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥ १ ॥
  - घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ।
    अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ ॥ २ ॥

- **अनाघृष्यो जातवेदा ऽ अनिष्ट्रतो विराडग्ने क्षत्रभूद्दीदिहीह।
  विश्वा ऽ आशा: प्रमुंचन्मानुषीर्भिय: शिवेभिरद्य परि पाहि नो वृधे ॥ ३ ॥**
- **बृहस्पते सवितर्बोधयैन स शितञ्चित्सन्तरा स शिशाधि।
  हवर्धयैनं महते सौभगाय विश्वऽएनमनु मदन्तु देवा: ॥ ॥ ४ ॥**
- **इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
  समूढमस्य पा:सुरे स्वाहा ॥ ॥ ५ ॥**
- **ॐ वसो: पवित्रामसि शतधारं वसो: पवित्रामसि सहश्रधारम्।
  देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रोण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष: ॥ ६ ॥**

- **भस्म धारणम्** अग्नि के इशानकोण से स्त्रुवा द्वारा हवन की राख लेकर अपने लगा लें।

1. **ॐ त्रयायुषं जमदग्नेरिति** ललाटे।
2. **कश्यपस्य त्र्यायुषम्** ग्रीवा में।
3. **यद्-देवेषु त्र्यायुषम्** दक्षिण बाहु में।
4. **तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्** ह्रदय में।

- **श्रद्धां मेधां यश: प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम।
  तेज आयुष्य आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन।**

- **तर्पण - मार्जन**
- तर्पण एक पात्र में जल लेकर कुशा से बोर-बोर कर अग्नि पर २८ बार गायत्री मंत्र बोलते हुए छिडके।
  - मंत्र **ॐ भूर्भुव: स्व: तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
    धियो यो न: प्रचोदयात्।** तर्पयामि ॥
- मार्जन एक पात्र में जल लेकर कुशा से बोर-बोर कर अग्नि पर २८ बार गायत्री मंत्र बोलते हुए छिडके।
  - मंत्र **ॐ भूर्भुव: स्व: तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
    धियो यो न: प्रचोदयात्।** मार्जयामि ॥

- **संश्रव प्राशनम्** प्रोक्षणी पात्र का जल जिसमें हवन के बाद १-१ बूंद घी छोड़ा गया है।
  - उसे अनामिका अंगुली से छूकर अपने मुख पर लगा ले।
  - **ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिण:।
    तं संश्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम् ॥**
    हाथ धोकर आचमन कर प्रणीता पात्र में स्थित दोनों पवित्री का ग्रन्थि खोलकर उसे शिर पर लगाकर अग्नि में छोड़ दें।

- **मुख्य आरती** अंतिम पृष्ठ पर देखें। **पृष्ठ क्र. 251** देखें।

- **पुष्पांजलि**

ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

- ॐ राधाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रणाय कुर्महे ।
समे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।
- ॐ स्वास्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं
महाराज्य माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः ।
सार्वायुष आन्तादा परार्धात । पृथिव्यै समुद्र पर्यान्ताया एकराडिति
तदप्येष श्लोकोऽ भिगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्या वसन्नगृहे ।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इतिः ।
- ॐ विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात ।
सम्बाहूभ्यां धमति सम्पत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयंदेव एकः ॥
- नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

- **प्रदक्षिणा**

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणं पदे पदे ॥

- पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्यो श्वमेधादिफलं ददाति ।
तां सर्व पापक्षय हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥

- **प्रणाम**

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

- पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहिमां पार्वती नाथ सर्वपापहरो भव ॥

- **अभिषेक मन्त्र**
- अभिषेक के समय यज्ञकर्ता की पत्नी वाम भाग में रहे तथा पुत्र पौत्रादि भी निकट रहें ।
- आचार्य पांचो कलश के जल से आम्र पल्लव या कुशा द्वारा यजमान पर छिड़के ।

१. ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥
२. ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ।
३. ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्ये नाभिषिञ्चामि ॥

४. **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि॥ सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि॥**

५. **आपो हि ष्ठा मयोभुवस्था न ऊर्जे दधातन। महे रणाथ चक्षसे॥**

६. **यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥**

७. **तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥**

- ॐ सुशान्तिर्भवतु। शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु॥

- **गोदान** कुश अक्षत जल लेकर प्रत्यक्ष गौ के अभाव में निष्क्रय द्रव्य लेकर संकल्प करे।
  - संकल्प **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहम्, कृतस्य कर्मणः सिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च गोनिष्क्रय भूतम् इदं द्रव्यं** अमुक-**गोत्राय**, अमुक-**शर्मणे, ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।** ब्राह्मण गोदान लेकर कहे – स्वस्ति।

- **दक्षिणा संकल्प** **अद्य शुभ पुण्य तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहम्, कृतस्य कर्मणः सिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च अमुक कर्तृकेभ्यो नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये।**
  - आचार्य दक्षिणा लेकर कहे – स्वस्ति।

- **भूयसी दक्षिणा** **अद्य शुभ पुण्य तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहम्, कृतस्य कर्मणः न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसीं दक्षिणां नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च विभज्य यथाकाले दातुमुत्सृज्ये।**

- **भोजन संकल्प** **अद्य शुभ पुण्य तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहम्, कृतस्य कर्मणः समृद्धये यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। दक्षिणां च दास्ये।**

- **उत्तर पूजन** **ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः। उत्तर पूजां गृहणन्तु प्रीयन्ताम्।**

- **अग्नि विसर्जन** **ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रम्हादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन॥**

- **क्षमा प्रार्थना** **मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे॥**
  - **आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर॥**

- **अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।**
  दासोऽ यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥
- **अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।**
  तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥

- **विसर्जन** — **ॐ यान्तु देव गणः सर्वे, पूजामादाय मामकीम ।**
  इष्ट-काम-समृद्धयर्थं, पुनरागमनाय च ॥

- **पीठदान संकल्प** — **अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ** अमुक-**गोत्रः**, अमुक-**नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः समृद्ध्यर्थम् इमानि सोपस्करादि सहितानि पीठादीनि सदक्षिणानि आचार्याय** अमुक-**गोत्राय,** अमुक-**शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥**

- ध्वजा दान संकल्प — **अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रः, अमुक-नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः समृद्ध्यर्थम् इदं मण्डपं ध्वज-पताकादि उपस्करयुतम् सदक्षिणाम् आचार्याय सम्प्रददे ॥**

- **अर्पण** — **ॐ मया यत् कृतं यथा कालं यथा ज्ञानं यथा शक्ति ।**
  अप्रतिष्ठा कर्म तेन श्री पापापहा महा विष्णुः प्रीयताम्, न मम ।

- **प्रार्थना** — **प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।**
  स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥
  - **यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।**
    न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
  - ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

- यजमान जिस आसन पर बैठा है उसके निचे जल छिड़क कर उस जल को अपने माथे में और आँखों में लगा ले ।

- आशिर्वाद — **श्री वर्चस्व मायुष्य मारोग्यं गावधात् पवमानं महीयते ।**
  धन धान्यं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरे दीर्घमायु ।
  - **ॐ मन्त्रार्थाः सफला सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।**
    शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणां मुदयस्तव ॥

- ब्राह्मण यजमान और उसकी पत्नी की गाँठ खोल दे । यजमान ब्राह्मणों का पाँव छुवे ।

॥ इति ॥

॥ गणेश जी की आरती ॥

- जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा, माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
- एक दंत दयावंत चार भुजाधारी ।
  मस्तक सिंदूर सोहे, मुसे की सवारी ॥
  जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा, माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
- पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
  लड्डुवन का भोग लगे, संत करे सेवा ॥
  जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा, माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
- अंधन को आंख देत, कोढ़ियन को काया ।
  बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥
  जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

॥ लक्ष्मीजी की आरती ॥

- ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता
  तुमको निसदिन सेवत, हर विष्णु विधाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....
- उमा, रमा, ब्रम्हाणी, तुम जग की माता
  सूर्य चद्रंमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....
- दुर्गारूप निरंजन, सुख संपत्ति दाता
  जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धी धन पाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....
- तुम पाताल निवासनी, तुम ही शुभदाता
  कर्मप्रभाव प्रकाशनी, भवनिधि की त्राता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....
- जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता
  सब सभंव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....
- तुम बिन यज्ञ ना होते, वस्त्र न हो पाता
  खान पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....
- शुभ गुण मंदिर, सुंदर क्षीरनिधि जाता
  रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....
- महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता
  उर आंनद समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ जय लक्ष्मी माता....

॥ प्राणसूक्तम् ॥

- ॐ प्राणो रक्षति विश्वमेजत् । इर्यो भूत्वा बहुधा बहूनि स इत्सर्वं व्यान शे । यो देवषु विभूरन्तः । आवृदूदात्क्षेत्रियध्वगध्दृषा । तमित्प्राणं मनसोपशिक्षत । अग्रं देवानामिदमत्तु नो हविः । मनसश्चित्तेदम् । भूतं भव्यं च गुप्यते । तद्धि देवेष्वग्रियम् ॥१॥

- आ न एतु पुरश्चरम् । सह देवैरिम ॐ हवम् । मनश्श्रेयसि श्रेयसि । कर्मन् यज्ञपत्तिं दधत्। जुषतां मे वागिद ॐ हविः । विराड् । देवी पुरोहिता हव्यवाडनपायिनी । यमारूपाणि बहुधा वदन्ति । पेशा ॐ सि देवाः परमे जनित्रे। सा नो विराडनपस्फुरन्ती ॥२॥

- वाग्देवी जुषतामिद ॐ हविः । चक्षुर्देवानां ज्योतिरमृते न्यक्तम् । अस्य विज्ञानाय बहुधा निधीयते । तस्य सुम्नमशीमहि । मानो हासीद्विचक्षणम् । आयुरिन्नः प्रतीर्यताम् । अनन्धाश्चक्षुषा वयम् । जीवा ज्योतिरशी महि । सुवर्ज्योतिरुतामृतम् । श्रोत्रेण भद्रमुत श्रृण्वान्ति सत्यम् । श्रोत्रेण वाचं बहुधोद्यमानाम् । श्रोत्रेण मोदश्च महश्च श्रूयते।श्रोत्रेण सर्वा दिश आ श्रृणोमि । येन प्राच्या उत दक्षिणा । प्रतीच्यै दिशश्रृण्वन्त्युत्तरात् । तदिच्छ्रोत्रं बहुधोद्यामानम् । आरान्न नेमिः परि सर्वं बभूव। अग्रियमनपस्फुरन्ती सत्य ॐ सप्त च ॥३॥

॥ देवी सूक्तम् ॥

- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
  नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ॥ १॥
- रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
  ज्योत्स्नायै चेन्दु-रुपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ ॥ २॥
- कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
  नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ॥ ३॥
- दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
  ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ॥ ४॥
- अति-सौम्याति-रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
  नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ॥ ५॥
- या देवी सर्वभूतेषु विष्णु-मायेति शब्दिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ६॥
- या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभि-धीयते ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ७॥
- या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ८॥
- या देवी सर्वभूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ९॥
- या देवी सर्वभूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१०॥
- या देवी सर्वभूतेषु-च्छाया-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥११॥
- या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१२॥
- या देवी सर्वभूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१३॥
- या देवी सर्वभूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१४॥
- या देवी सर्वभूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता ।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१५॥

- या देवी सर्वभूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१६॥
- या देवी सर्वभूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१७॥
- या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१८॥
- या देवी सर्वभूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥१९॥
- या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२०॥
- या देवी सर्वभूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२१॥
- या देवी सर्वभूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२२॥
- या देवी सर्वभूतेषु दया-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२३॥
- या देवी सर्वभूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२४॥
- या देवी सर्वभूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२५॥
- या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता।
  नमस्तस्यै नमस्त्स्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२६॥
- इन्द्रियाणा-मधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
  भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः ॥ ॥२७॥
- चिति-रूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्ल।
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥२८॥
- स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-, त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
  करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ॥२९॥
- या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
  या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः ॥ ॥३०॥

॥ इति तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् समाप्तम् ॥

॥ पूजन सामग्री ॥

1. अवीर 100 gr
2. गुलाल 100 gr
3. कुंकुम 100 gr
4. हल्दी (पाउडर) 100 gr
5. सिंदुर 100 gr
6. अष्टगंध 100 gr
7. भस्म 50 gr
8. रंगोली 3 kg
9. काला रंग 50 gr
10. पीला रंग 50 gr
11. हरा रंग 50 gr
12. लाल रंग 50 gr
13. अगरवत्ती 1 kg
14. कपुर 250 gr
15. माचीस 1 बंडल
16. कापुस 25 gr
17. धुप 3 box
18. अतर (इत्र) 1 सीसी
19. केशर 10 gr
20. लवंग 100 gr
21. इलायची 100 gr
22. सोपारी (बड़ी) 1500 नग
23. नारीयल 15 नग
24. मौली (बड़ा) 2 बंडल
25. यज्ञोपवीत 3 बंडल
26. धागा 3 बंडल
27. पंचरत्न 1 पुडीया
28. लाल चंदन 1 नग
29. मलयागीर चंदन 1 नग
30. बोरसा पत्थर 1 नग
31. मेहंदी
32. दोना - पत्तल – १०० नग
33. गुलाब जल 1 botel
34. केवडा जल 1 botel
35. पंचरत्न – सोना, चांदी, तांबा, पीतल, मूंगा

अन्न

1. चावल (टुकड़ा) 25 kg
2. चावल (बासमती) 25 kg
3. चावल (आँटा) 100 gr
4. गेहुं 3 kg
5. गेहुं (आँटा) 500 gr
6. पीली राई 500 gr
7. जव (आंटा) 500 gr
8. उडद (आंटा) 500 gr
9. मसूर (आंटा) 500 gr
10. सरसौं उबटन 100 gr
11. सप्तधान्य 500 gr
    गेहुं, जव, चना, मूंग, सावां, ककुनी, तिल, चावल,
12. काला उडद 500 gr
13. सेतुवा 500 gr
14. जायफल –
15. जावत्री –
16. आवला चुर्ण
17. सांवा
18. गुड़
19. सेंधा नमक
20. काजु 3 kg
21. बादाम 3 kg
22. पिस्ता 3 kg
23. किशमीस 3 kg
24. अंजीर 3 kg
25. अन्नाधिवास हेतु धान्य

बरतन

1. ताम्र पात्र
2. कलश 7 नग
3. पंचपात्र
4. आचमनी
5. तरभाणा
6. ताम्र टुकडा 5 नग
7. जलधारी
8. पीतल पात्र
9. कमण्डलु
10. परात 3 नग
11. गगरा (बड़ा) 5 नग
12. आरतीदानी
13. धूपदानी
14. घण्टा
15. शिखर
16. विजयघंट
17. घडीघंट
18. दीपक
19. चक्र
20. कपुर आरती
21. जग (बड़ा) 2 नग

22. बाल्टी (बड़ा) 2 नग
23. टोप ढक्कन सहित(छोटा) -8
24. टोप ढक्कन सहित (बड़ा) -3
25. पीतल टुकडा 5 नग
26. त्रिशुल (बड़ा) 1 नग
27. त्रिशुल (छोटा) 4 नग
28. कलछुन (बड़ा) 2 नग
29. **कांसे के पात्र**
30. कटोरा
31. थाली
32. कटोरी
33. चम्मच
34. **स्टील के पात्र**
35. थाली
36. प्लेट
37. चमच
38. गिलास (बड़ा) 24 नग
39. कटोरी (बड़ा) 36 नग
40. टंकी (बड़ी)
41. **लोहे के पात्र**
42. कटिया 5 नग
43. **मिट्टी के पात्र**
44. कलश 250 नग
45. सकोरे 100 नग
46. **सुवर्ण के सामान**
47. दुर्गा
48. शलाका 3 नग
49. सिक्का 5 नग
50. जिह्वा 1 नग
51. **चांदी के सामान**
52. गणपती
53. मातृका
54. हनुमान
55. महाकाली
56. महालक्ष्मी
57. महासरस्वती
58. ध्रुव
59. वास्तु
60. भैरव
61. नवग्रह
62. शिव
63. प्रधान देवता हेतु सिंहासन
64. छत्र
65. चामर
66. सिक्का 25 नग
67. नाग
68. कछुआ
69. कमल
70. तस्तरी
71. थाली
72. कटोरी 2 नग
73. पंचपात्र
74. अर्घा
75. तष्टा
76. कलश (बड़ा) 1 नग
77. टुकडा 5 नग

वस्त्र एवं ब्राह्मण वरण

1. सफेद 25 मी.
2. लाल 25 मी.
3. पीला 25 मी.
4. हरा 25 मी.
5. काला 20 मी.
6. कम्बल 2 नग
7. पीतांबरी 3 नग
8. धोती
9. दुपट्टा
10. साडी
11. ब्लाउज 7 नग
12. दरी 5 नग
13. नेपकिन 50 नग
14. आसन 15 नग
15. मखमली कपडा 15 मि. 5 रंग का
16. मुर्ति हेतु वस्त्र आभुषण
17. सोभाग्यपीटारा - सुवर्ण युक्त
18. ध्वजा - रंगबीरंगा 1 वडा
19. भगवा - त्रिकोण 10 नग
20. भगवा - चौकोण 10 नग

ब्राह्मण वरण

1. धोती
2. दुपट्टा
3. अंगोछा
4. लोटा
5. गिलास
6. पंचपात्र
7. आचमनी
8. छत्री
9. गोमुखी

10. रूद्राक्षमाला
11. यज्ञोपवीत
12. आरान
13. सुवर्णदान

हवन सामग्री

1. काला तील 100 कि.
2. चावल 50 कि.
3. यव 25 कि.
4. चीनी 10 कि.
5. घृत 1 टिन
6. पंचमेवा 5 कि.
7. गुग्गुल 2 कि.
8. कमलगट्टा 2 कि.
9. चन्दन चूरा 2 कि.
10. आमकी लकडी 100 कि.
11. नवग्रह लकड़ी-मदार, पलाष, खैर, अपामार्ग, पीपल, गूलर, समी, दूर्वा, दर्भ
12. चन्दन लकड़ी
13. कण्डा 50 नग
14. सुची
15. सुर्वा
16. कुश
17. प्रणीता
18. प्रोक्षणी
19. अग्निमंथन
20. कम्बल
21. श्रीफल

तेल

1. तिल का तेल 50 ग्राम
2. सरसों का तेल 50 ग्राम
3. सुगन्धित तेल 50 ग्राम

पेड़ की पत्ती – छाल

1. आम की पत्ती अधिक मात्रा में
2. पीपल 25 नग
3. गूलर 25 नग
4. पाकड़ 25 नग
5. बरगद 25 नग
6. शमी 25 नग
7. चम्पा 25 नग
8. अशोक 25 नग
9. पलास 25 नग
10. बेल 25 नग
11. अर्जुन 25 नग
12. कदम्ब 25 नग
13. जामुन 25 नग
14. सेमर की पती 25 नग
15. केला का पता 25 नग
16. केले का स्तम्भ 8 नग
17. बैर 25 नग
18. खिरैटी 100 ग्राम
19. मौलसिरी 100 ग्राम

शय्याधिवास

1. पलंग या तखत
2. दरी
3. गद्दा
4. रजाई
5. कंबल
6. सुजनी
7. मसहरी
8. चदर
9. तकिया
10. आईना 3 नग
11. भोजन सामग्री
12. भोजनपात्र - 1 सेट
13. आभुषण- सभी मूर्तियों के लिये
14. छाता 1 नग
15. छड़ी 1 नग
16. चप्पल (खड़ाऊ) 1 नग
17. पंखा

प्रतिदिन

1. फल (5 प्रकार) 100 नग
2. फूल
3. हार
4. तुलसी
5. बिल्वपत्र
6. दूर्वा
7. पान 200 नग
8. दुध
9. दहि
10. प्रसाद

मिट्टी तथा मिट्टी के पात्र

1. हाथी
2. घोड़ा
3. रथ
4. गौशाला
5. विमौर
6. तालाब
7. चौराहा
8. ईटा (हवन कुण्ड हेतु)
9. रेती (कुण्ड हेतु)
10. कुल्हड़ 200 नग
11. पियाला 50 नग
12. गगरी 1 नग
13. कच्ची हांड़ी 1 नग
14. पत्तल 25 नग

लकड़ी का सामान

1. चौकी पीठ हेतु
2. चौकी स्नान हेतु

दशदान

1. गाय
2. भूमि
3. सोना
4. चांदी
5. वस्त्र
6. तिल
7. गुड
8. नमक
9. घी
10. अनाज (धान्य)

सर्वोषधि

1. कूट
2. जटामासी
3. हल्दी
4. आंबा हल्दी
5. मुर्रा
6. वच
7. चम्पक
8. नागरमोथा
9. भटकटैया
10. गोरोचन
11. पद्मक
12. शंखपुष्पी
13. गुरिच
14. घी कुमार
15. अदरक
16. आंवला चूर्ण
17. बेल का चूर्ण
18. सहदेवी
19. सोंठ
20. विष्णुक्रान्ता
21. हरताल
22. पारा
23. शिलाजीत
24. शतावर
25. गुग्गुल
26. केशर
27. कस्तूरी
28. सुरमा
29. अगर
30. तगर
31. खश
32. ब्राम्ही
33. अर्जुन
34.

- कृपया - यथाज्ञान सामग्री लिखी गयी है, आवश्यकतानुसार अपने आचार्य से यथा समय दिखा लेना चाहिए, संशोधन करा लेना चाहिए।

प्रथम दिवस

प्रायश्चित प्रयोग, प्रधान संकल्प, गणपती-पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचनम्, मातृका-पूजनम, वसोर्धारा-पूजनम्, आयुष्यमंत्रजपः, नान्दीश्राद्धं, आचार्य-वरणं, मण्डप-प्रवेशः, दिगरक्षणं, पंचगव्यकरणम्, मंडपपूजनम्, वास्तुमंडलपूजनम्, भमिकूर्मानंतपूजनम्, कुण्डपूजा।

द्वितीय दिवस

योगिनी, क्षेत्रपाल, सर्वतोभद्रमंडल-पूजनम्, अग्निस्थापनम्, नवग्रहमंडलस्थापनम्, रूद्रकलशस्थापनम् कुशकंडिका, नवग्रहहोमः, कुटीरहोमः, जलाधिवास प्रयोग, सायंपूजनम्, आरार्तिकम्।

तृतीय दिवस

प्रसादवास्तु शांति कर्म, देवता स्नपनम्, सायंपूजा, आरार्तिकम्, शय्याधिवास।

चतुर्थ दिवस

शांतिपौष्टिक होमः, प्रसादस्नपनम्, अधिवासनम्, तत्वन्यासा, प्रसाद प्रार्थना, पिण्डिकाधिवासनम्, स्नापनपूजनम्।

पंचमदिवस

प्रसाद दिक्षुहोमः, देवबोधनं, जीवनयासः, कलशमूर्ति, प्राणप्रतिष्ठाविधिः पूजा, ध्वजोच्छयणम्, उत्तरांगकर्म।